

पञ्चतन्त्रप्रभृति नोतिशास्त्रोद्धृतः

मित्रलाभ सुहृद्भेद विग्रह सन्ध्यवयवान्वितः

हितोपदेशः



विष्णुशर्म्मा संगृहीतः



कलिकाता राजधान्यां शास्त्रप्रकाश यन्त्रालये

श्रीलक्ष्मीनारायणन्यायालङ्कारेण

शोधितोमुद्रितश्च



शकाब्दाः १७५२ सम्वत् १८८७


সাধু গোড়ীয় ভাষায় সংগৃহୀତ

হিতোপদেশ




শ্রীলক্ষ্মীনারায়ণ ন্যায়ালঙ্কারকর্তৃক

সংশোধিত হইয়া



কলিকাতা মহানগরে শাস্ত্রপুকাশ যন্ত্রালয়ে

মুদ্রিত হইল



সন ১২ ৩৭ শাল

अथ द्वितीयोपदेशस्य सूचीपत्रं

प्रथमाध्याये निचलाभे

इतिहासः	पृष्ठे	पंक्ता
वन्दना	१	१
काककूर्ममूषिक } १	२०	४
कपोतदरिणानां }		
व्याघ्रपक्षिकयोः २	२४	१
काकमृगमृगालानां ३	५७	१
शकुनिमा }		
जीरपक्षिणां } ४	५२	६
परिव्राजकमूषिक }		
हिरण्यकयोः } ५	६०	२
वृद्धवल्कि तयुव }		
तिलो उभयोः } ६	६४	३
व्याधमृगशूकर }		
सर्पमृगालानां } ७	११८	८
पेतवल्कि पत्नी }		
राजपुत्रयोः } ८	१३८	१
शृगाल हस्तिनां ९	१४२	६

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
वणिकवृष सिंह } शृगालानां }	१	१६२	१
कोलोत्पाटिवानरस्य	२	१७६	११
गर्दभ कुकुर } चौराणां }	३	१८०	३
मूषिकविडाल } सिंहानां }	४	२१२	१०
घण्टाकण } कुट्टिन्याः }	५	२२०	७
कन्दर्पकेलिर्गोप } नार्पतयोःपत्न्या }	६	२३४	५
वेवं साधुरेतेषां }			
गोपस्य पत्न्या उप } पतिद्वयस्य च }	७	२४८	७
वायसदम्पती } कृष्णसर्पाणां }	८	२५४	२
सिंहशशकस्य	९	२५६	१
समुद्रटिट्ठिभयोः	१०	२७४	१

तृतीयाध्याये विग्रहे

३

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
मयूरहंसादीनां	१	३००	१
पलिवानराणां	१	३०४	३
व्याघ्रचर्मवृत } गर्दभस्य	३	३०८	१
शशकहस्तिनां	४	३१२	५
काकहंसानां	५	३२२	१०
काकवर्त्तकानां	६	३२४	८
रथकारस्य	७	३२६	११
नेलीङ्गालस्य	८	३४८	६
स्त्रीयपत्रवलिप्रदान } कारिवीरवरस्य	९	३७२	६
भिक्षुकघाति } नापितस्य	१०	३८६	३

चतुर्थाध्याये सप्तौ

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
हंसमयूराणां	१	४१६	१
शङ्खटविकटनाम्नोहंस } द्योरेवंतयोर्भिन्नकम्बु } ग्रीवनामकूर्मस्य	२	४१८	३

४	ज्ञातदासः	पृष्ठे	पंक्तौ
मत्स्यत्रयाणां	३	४२०	३
वणिकपर्वारत्न } प्रभाषाः	४	४२०	११
नकुलवकानां	४	४२६	४
मुनिमूषिकयोः	६	४३२	६
वककर्कटानां	७	४३६	१
शत्रुशराव नष्टकारिहे ब्राह्मणस्य	८	४४०	८
सुन्दोपमुन्दयोः	९	४४६	३
ब्राह्मणकागलयोः	१०	४६४	९
उद्धकाकथ्यघ्न } शृंगालानां	११	४६६	३
वृद्धसर्पमण्डूकानां	१२	४७४	८
ब्राह्मणस्यनकुलस्यच	१३	४८२	३

হিতোপদেশের নিঘণ্ট পত্র

পুথম অধ্যায়ে নিম্নলিখিত

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পঙ্ক্তিতে
বন্দনা	১	১	১
কাক কচ্ছপ ইন্দুর কপোত হরিণ ইহারদিগের	১	২০	২
বায়ু আরপথিকের	২	২৪	২
কাক ও মৃগ আর শৃগালের ও		৫৪	২
শঙ্গনি ও বিড়াল এবং পক্ষিরদিগের	৪	৫৪	১
সন্ন্যাসি এবং হির ণ্যকর্ম্মবিকের	৫	৯২	১
বৃদ্ধবণিকের এবং তাহার যুবতিস্ত্রীর	৬	৯৪	৪
ব্যাঘ্র হরিণ শূকর সর্প শৃগাল ইহার দিগের	৭	১১৯	১
সওদাগরের স্ত্রীর এবং রাজপুত্রের	৮	১৩৮	২
শৃগালের ও হস্তির	৯	১৪৩	১

৪	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পাঙ্কিতে
বকের ও কৈকড়ার	৭	৪৩৬	১
শত্ৰুশরাবনষ্টকারিব্রাহ্মণের	৮	৪৪১	২
সুন্দোপসুন্দের	৯	৪৪৬	৪
ছাগলবাহক ব্রাহ্মণ	১০	৪৬৪	২
ও ধূতব্রয়ের			
উট ও কাক ও ব্যাঘ্র	১১	৪৬৬	৪
এবং শৃগালের			
বৃক্ষসর্প ও ভেকের	১২	৪৭৫	১
ব্রাহ্মণ ও নম্রনের	১৩	৪৮১	৪

I NTRODUCTION	1
----------------------	---

CHAP. I.

THE ACQUISITION OF A FRIEND.	19
FABLE I. The story of the pigeons, the crow, the mouse, the tortoise, and the deer	21
II. The traveller and the tiger	25
III. The deer, the jackal, and the crow	55
IV. The blind vulture, the cat, and the birds	57
V. The history of Hiranyaka the mouse	93
VI. The old man and his young wife	95
VII. The huntsman, the deer, the boar, the serpent, and the jackal	119
VIII. The rājāh's son and the merchant's wife	139
IX. The jackal and the elephant	143

CHAP. II.

THE SEPARATION OF FAVOURITE	161
FABLE I. The story of the bull, the two jackals and the lion	163
II. The ape and the wedge	177
III. The thief, the ass, and the dog	181
IV. The lion, the mouse, and the cat	213
V. The poor woman and the hell	221
VI. The adventures of Kandarpakētu, comprising the story of the cow-keeper, the barber, and their wives; and the history of the devotee whose avarice occasioned the loss of all his wealth	235
VII. The farmer's wife and her two gallants	249
VIII. The crow, the golden chain, and the black serpent	255
IX. The lion and the rabbit	257
X. The partridges and the sea	275

C H A P. III.

Page

O F D I S P U T I N G

299

FABLE I.	The history of the geese & the peacocks	301
II.	The birds and the monkies —	305
III.	The ass dressed in a tiger's skin —	309
IV.	The elephants and the rabbits —	313
V.	The goose and the crow — — —	323
VI.	The Varttaka and the crow — — —	325
VII.	The wheelwright and his wife —	327
VIII.	The blue jackal — — — —	349
IX.	The man who sacrificed his own son —	373
X.	The barber who killed a beggar —	387

C H A P. IV.

O F M A K I N G P E A C E.

415

FABLE I.	Continuation of the history of the geese and the peacocks — — — —	417
II.	The tortoise and the two geese —	419
III.	The three fish — — — —	421
IV.	The merchant and his artful wife —	ib
V.	The boobies and weasel — — — —	427
VI.	The mouse and the hermit — — — —	433
VII.	The booby and the crab — — — —	437
VIII.	The Brāhman who brake the pots & pans	441
IX.	The two giants — — — —	447
X.	The Brāhman and his goat — — — —	465
XI.	The camel, the crow, the tiger, and the jackal — — — — —	467
XII.	The old serpent and the frogs — — — —	475
XIII.	The Brāhman and his weasel — — — —	493

अथ हितोपदेशस्य सूचीपत्रं

प्रथमाध्याये मित्रलाभे

इतिहासः	पृष्ठे	पंक्ता
वन्दना	१	१
काककूर्ममूषिक } १	२०	४
कपोतहरिणानां }		
व्याघ्रपथिकयोः २	२४	१
काकमृगशृगालानां ३	५४	१
शकुनिमा }		
जैरपक्षिणां } ४	५६	६
परिव्राजकमूषिक }		
हिरण्यकयोः } ५	६२	१
वृद्धवणिक् तद्युव }		
तिस्त्रो उभयोः } ६	६४	३
व्याधमृगशूकर }		
सर्पशृगालानां } ७	११८	८
पोतवणिक्पत्नो }		
राजपुत्रयोः } ८	१३८	१
शृगाल हस्तिनां ९	१४२	६

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
वणिकवृष सिंह } शृगालानां	१	१६२	१
कोलोत्याटिवानरस्य	२	१७६	११
गर्दभ कुकुर } चौराणां	३	१८०	३
मूषिकविडाल } सिंहानां	४	२१२	१०
घण्टाकर्ण } कुट्टिन्याः	५	२२०	७
कन्दर्पकेलिर्गोप } नापितयोःपत्न्या वेवं साधुरतेषां	६	२३४	४
गोपस्य पत्न्या उप } पतिद्वयस्य च	७	२४८	७
वायसदम्पती } कृष्णसर्पाणां	८	२५४	२
सिंहशशकस्य	९	२५६	१
समुद्रटिट्टिमयोः	१०	२७४	१

तृतीयाध्याये विग्रहे

३

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
मयूरहंसादीनां	१	३००	१
पक्षिवानराणां	२	३०४	२
व्याघ्रचर्मावृत गर्दभस्य	३	३०८	१
शशकहस्तिनां	४	३१२	५
काकहंसानां	५	३२२	१०
काकवर्त्तकानां	६	३२४	८
रथकारस्य	७	३२६	११
नीलीशृगालस्य	८	३४८	६
स्त्रोयपुत्रवलिप्रदान कारिवीरवरस्य	९	३७२	६
भिक्षुकघाति नार्पितस्य	१०	३८६	३

चतुर्थाध्याये सप्तौ

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
हंसमयूराणां	१	४१६	१
शङ्खटविकटनाम्नोर्हंस योरेवं तयोर्भिन्न कम्बु ग्रीवनामकूर्मस्य	२	४१८	३

४	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
मत्स्यत्रयाणां	३	४२०	३
वणिक् पत्नीरत्न } प्रभायाः	४	४२०	११
नकुलवकानां	५	४२६	४
मुनिमूषिकयोः	६	४३२	६
वक्ककर्कटानां	७	४३६	१
शक्तुशराव नष्टकारि } ब्राह्मणस्य	८	४४०	८
मुन्दोपमुन्दयोः	९	४४६	३
ब्राह्मणकागलयोः	१०	४६४	१
उष्ट्रकाकव्याघ्र } शृगालानां	११	४६६	३
वृडसर्पमण्डूकानां	१२	४७४	८
ब्राह्मणस्यनकुलस्यच	१३	४८२	३

হিতোপদেশের নির্ঘণ্ট পত্র

পুথন অধ্যায়ে মিত্রনাভেতে

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পাঁক্তিতে
বন্দনা	১	১	১
কাক কচ্ছপ ইন্দুর কপোত হরিণ ইহারদিগের	১	২০	২
ব্যাঘ্র আর পথিকের	২	২৪	২
কাক ও নৃগ আর শৃগালের	৩	৫৪	২
শঅনি ও বিড়াল এবং পক্ষিরদিগের	৪	৫৪	১
সন্ন্যাসি এবং হির ণ্যকর্মষিকের	৫	৯২	১
বৃদ্ধবণিকের এবং তাহার যুবতিস্ত্রীর	৬	৯৪	৪
ব্যাঘ্র হরিণ শূকর সর্প শৃগাল ইহার দিগের	৭	১১৯	১
সওদাগরের স্ত্রীর এবং রাজপুত্রের	৮	১৩৮	২
শৃগালের ও হস্তির	৯	১৪৩	১

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পঙ্কিতে
বণিক ও ঘাড়ওসিংহ } শৃগাল ইহারদিগের	১	৯২	২
কীলোৎপাটিবানরের	১	১৭৭	৪
গন্ধভ ও কুকুর এবং চোরের	৩	১৮০	৪
মুখিক ও বিড়াল } আর সিংহের	৪	২১৩	৪
ঘণ্টাকর্ণ এবং কুঁউনিজীর	৫	২২০	৯
কন্দর্পকেনি ও গোপ ও নাপিত এবং এইউভয়ের	৬	২৩৪	৫
স্ত্রী আরসাধু ইহারদিগের			
গোপের স্ত্রীর এবং তাহার দুই উপপতির	৭	৪৮	২০
কাকদম্পতী আর কুম্ভমপের	৮	২৫৪	২
সিংহ আর শশকের	৯	২৫৬	১
সমুদ্র আর চিত্তিভের	১০	২৭৪	২

তৃতীয়াধ্যায়ে বিগৃহে

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পঙ্কিতে
ময়ূরের এবং হংসের	১	৩০০	২
পক্ষির ও বানরের	২	৩০৪	৪

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পাঁক্তিতে ৩
ব্যাঘ্রচন্দ্রাবতগঙ্গভের	৩	৩০৮	২
শশকের ও হস্তির	৪	৩১২	৬
কাকের ও সিংহের	৫	৩২৩	৩
কাকের ও বর্তকের	৬	৩২৫	২
সূত্রধর এবং তার স্ত্রীর	৭	৩২৬	৬
নীলবর্ণশৃগালের	৮	৩৪৮	৮
আপনপুত্রকে বলি	৯	৩৭২	৭
দানকারক বীরবরের			
ভিক্ষুকহস্তানাপিতের	১০	৩৮৬	৬

চতুর্থাধ্যায়ে সন্ধিতে

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পাঁক্তিতে
হংসময়ূরেরদিগের	১	৪১৬	২
সংকটবিকটনামক হংসদ্বয়	২	৪১৮	৩
এবং তাহারদিগের মিত্র			
কম্বুগীবনামককচ্ছপের	৩	৪২০	৩
পুতুংপন্নমতিপুত্			
তি মৎস্যত্রয়ের	৪	৪২১	৪
বণিক এবং তৎ			
পত্নী রত্নপুভার	৫	৪২৬	৫
বেজির ও বকের			
মুনির ও ইন্দুরের	৬	৪৩২	৮

৪	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পাঁক্তিতে
বকের ও কৈকড়ার	৭	৪৩৬	১
শক্তুশরাবনষ্ঠকারিবাক্সগের	৮	৪৪১	২
সুন্দোপসুন্দের	৯	৪৪৬	৪
ছাগলবাহক বাক্সগ	১০	৪৬৪	২
ও ধুতুরায়ের			
উট ও কাক ও ব্যাঘ্র	১১	৪৬৬	৪
এবং শৃগালের			
বৃদ্ধসর্প ও ভেবের	১২	৪৭৫	১
বাক্সগ ও নদলের	১৩	৪৯২	৪

अथ हितोपदेशस्याशुद्धशुद्धपत्रं

मित्रलाभे

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
कोधन्यो	कोधन्यौ	१०	१
खगाः	खवः	२०	३
चलायितुं	पलायितुं	३०	५
परित्यक्ता	परित्यक्ता	४०	३
जालं	जालं	४०	६
बहिर्ङ्गमाः	विहङ्गमाः	४०	७
यताः	गताः	६८	५
अभ्यागतो	अभ्यागतो	८८	१२
परञ्च	अपरञ्च	९०	२
करप्रप्ते	करप्राप्ते	११२	८
नियुक्तं	नियुक्तं	११८	५
नृग	मृग	११८	११
दीर्घरवाः	दीर्घरवः	१२२	३
आत्मनः	आत्मनः	१२४	१३

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
समुद्रयो	समुद्रयो	१२६	८
विमुखाः	विमुखाः	१३२	५
तृ	त्वं	१३४	४
हरण्यको	हिरण्यको	१३६	८
मन्थरस	मन्थरस्य	१३६	८
कुड्मल	कुट्मल	१३६	१६
भर्त्तति	भर्त्तरि	१४०	६
मुत्सृज्य	मुत्सृज्य	१५०	६
शर्वथा	सर्वथा	१७८	११
चञ्चा	चञ्चा	१८४	१३
स्वपन्या	स्वपन्या	२२६	५
व्यथानश्च	व्यथमानः	२२६	८
मनुचितं	मनुचिते	२३०	१०
स्नातच्य	स्नातच्य	२६४	३
विहृत	विहृत	२६०	८
बलवानसि	बलवानपि	२६०	१०
बाह	नाह	२६०	१२
सत्रौच	शत्रौच	२६४	११
त्यज्या	त्याज्या	२६६	४

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
तिन्दन्ति	निन्दन्ति	३०४	११
क्राण्डं	काण्डं	३०८	७
तमभिमुखं	तदभिमुखं	३०८	८
दुर्वृत्तिं	दुर्वृत्तं	३२२	६
वत्क्र	वक्त	३३४	६
वत्क्र	वक्त	३३४	८
व्यसनीमो	व्यसनोयो	३३६	९
सामस्तै	समस्तै	३४०	६
कण्टक	कण्टक	३६२	१०
भिग्या	भिन्द्या	३६४	८
वके नागत्य	वकेनागत्य	३८८	४
त्यक्तं	त्यक्तुं	४००	१०
स्वाम्यगात्य	स्वाम्यमात्य	४१०	६
व्याहयित्वा	ग्राहयित्वा	४१२	५
विद्यधरी	विद्याधरी	४१३	८
महीभूजां	महीभुजां	४१४	३
वृत्तं	वृत्ते	४१५	३
यन्त्रि	योद्गुं	४५६	४
षाङ्गुण्यं	षाङ्गुणाः	४५८	३

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
उपन्यसं	उपन्यस्तं	४६०	४
द्वीपस्य	द्वीपस्य	४६०	५
चित्रवर्ण	चित्रकर्ण	४६६	७
नाश्यात	नश्यात	४६०	११
ब्रूते	ब्रूते	४६८	६
ग्रामवन्निति	ग्रामवन्तइति	५१२	८

॥ अजगदीश्वरोजयति ॥

॥ अथ हितोपदेशः ॥



श्रुताहितोपदेशोयं पाठवं संस्कृतोक्तिषु । वाचां सर्वत्र
वैचित्र्यं नीतिविद्यां ददाति च ॥ *~*~*

अतः ये এই হিতোপদেশ ইনি সংস্কৃতবাক্যেতে পড়িত
ও নব্বত্র বাক্যের বিচিত্রতা ও নীতিবিদ্যা পুদান করেন ।

THIS work, entitled Hitopades, affordeth elegance
in the Sanskrit idioms, in every part variety of lan-
guage, and inculcateth the doctrine of prudence and
policy.

অজরামরবৎ প্রজ্ঞোবিদ্যামর্থঞ্চ চিন্তয়েৎ । মৃহীত
 ইব কেশেযু সূত্বনা ধর্ম্মমাচরেৎ ॥ সর্বদ্রব্যেযু বিদ্যৈব
 দ্রব্যমাজ্জরনুত্তমং অহাৰ্য্যত্বাদনর্ঘত্বাদক্ষ্যত্বাচ্চ সর্বদা
 সঙ্কময়তি বিদ্যৈব নীচগাপি নরং সরিত্ । সমুদ্রমিব
 দুর্দ্ধর্ষং নৃপং ভাগ্যমতঃ পরং ॥ বিদ্যা দদাতি বিনয়ং
 বিনয়ায়াতি পাচ্যতাম্ । পাচ্যত্বাচ্ছনমাশ্নোতি ধনাহুর্ম্ম
 ততঃ সুখং ॥ বিদ্যা শস্ত্রঞ্চ শাস্ত্রঞ্চ দ্বৈ বিদ্যে প্রতিপন্নম্ ।
 আদ্যা হ্যস্যায বৃদ্ধত্ব দ্বিতায়া দ্রবতে সদা ॥ *❀*

পুঞ্জলোক অজর ও অমরের ন্যায় হইয়া বিদ্যা এবং অর্থ
 চিন্তা করিবেন আর যমকর্তৃক কেশে গৃহীতের মত হইয়া
 ধর্ম্মাচরণ করিবেন । এবং সকলদ্রব্যের মধ্যে বিদ্যাই অত্যন্ত
 দ্রব্য ইহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন যেহেতুক বিদ্যারূপধনকে
 চোরেরা অপহরণ করিতে পারেনা এবং বিদ্যার মূল্যনাহি
 আর সর্বকালেক্ষয় হয় না আর যদি নীচলোকের বিদ্যা হয়
 তবে সেই মনুষ্যকে দুঃখী পায় রাজাকে পাওয়ায় যেমন নীচগা
 নদী মনুষ্যকে দুঃখী পায় সমুদ্রে পাওয়ায় রাজার সঙ্গে মেলন
 হেতুক বিদ্যা উৎকৃষ্টভাগ্যকে পাওয়ায় বিদ্যা বিনয় দেন
 বিনয়েতে যোগ্যতা হইতে পায় ধন হইতে

ধর্ম পায় ধর্মহীনে সুখ পায় ॥ আর বিশেষকহিতেছেন
যে শাস্ত্রবিদ্যা ও শাস্ত্রবিদ্যা এই দুই বিদ্যা পুতিপত্তির
নিমিত্তে হন কিন্তু আদ্যা শাস্ত্রবিদ্যা ব্রহ্মবহ্নিতে হাঙ্গের
নিমিত্তে হন দ্বিতীয়া শাস্ত্রবিদ্যা সর্বকালে আদরণীয়া হন ॥

The wise man should study the acquisition of science and riches, as if he were not subject to sickness and death, but to the duties of religion he should attend, as if death had seized him by the hair.

Of all things Knowledge is esteemed the most precious treasure; because of its incapacity to be stolen, to be given away, or ever to be consumed.

Knowledge introduceth a man to acquaintance; and, as the humble stream to the ocean, so doth it conduct him into the hard-acquired presence of the prince, whence fortune floweth.

Knowledge produceth humility; from humility proceedeth worthiness; from worthiness riches are acquired; from riches religion, and thence happiness.

There are two species of Knowledge in use: —the knowledge of arms, and the knowledge of books. The first is ridiculous in old age, whilst the last is for ever honourable.

প্র.

যন্ত্রণে ভাজনে লয়ঃ সংস্কারো নান্যথা ভবেৎ কথ্যচ্ছলো
 বাসানাং নীতিস্তদিহ কথ্যতে ॥ মিত্রলাভঃ সুহৃদ্বৈদে
 বিগ্রহঃ সন্ধিরেব চ । পঞ্চতন্ত্রাচ্চত্যান্যস্বাদ্বন্যাদা
 কথ্য লিখ্যতে ॥ অস্মি ভাগীরথীতীরে পাটলিপুত্রনাম
 ধেয়ং নগরং তত্র সৰ্ব্বস্বামিগুণোপেতঃ সুদর্শনো নাম নরপতি
 রাশীত্ স ভূপতিরেকদা কেনাপি পথ্যমানং শ্লোকদ্বয়ং
 শ্রুত্বা ব। অনেকসংশয়োচ্ছেদি পরোত্তার্যস্য দর্শকং । সর্বস্য
 লোভনং শাস্ত্বং यस্য নাস্ত্যর্থএব সঃ ॥ যৌবনং ধনসম্পত্তিঃ
 প্রভুত্বমবिवেকতা একৈকমপ্যনর্থায় কিমু তত্র চতুষ্টয়ং ॥

অপর যেহেতুক নূতনপাত্রের সংলগ্ন যে চিহ্ন সে অন্যথা
 হয় না। সেইহেতুক গল্পের ছলেতে স্নানকেরদের সম্বন্ধে এ
 গুহ্যে নীতি কথ্যাইতেছে । মিত্রলাভ ও সুহৃদ্বৈদ ও বিগ্রহ
 ও সন্ধি এতদ্বত্বষ্টয়াস্বক নীতিশাস্ত্র পঞ্চতন্ত্রহইতে ও
 আর ২ গুহ্যহইতে আকর্ষণ করিয়া লিখা যাইতেছে । ভাগী
 রথীতীরে পাটলিপত্র নামে এক নগর আছে সেখানে সকল
 রাজগুরুবশিষ্ঠ সুদর্শন নামে রাজা ছিলেন সেই ভূপতি
 এক সময় কারাগারও কর্তৃকপঠানান শ্লোকদ্বয় শ্রবণ করি
 লেন তাহার অর্থ এই যে অনেক সময়েই নান্যক এবং অপ

তাক্ষবিষয়ের দর্শক এমনত যে শাস্ত্র সে সকলের চক্ষু ইহা
মাহার নাহি সেই অন্ধ। আর যৌবন ও ধনসম্পত্তি ও পুতুস্ত
ও অবिवেকতা এই চতুষ্টয় পুতাকেই অনর্থের নিমিত্ত হয়
আর যেখানে এ চতুষ্টয় একাধারবর্তি সেখানে কি হয়
তাহা কহিতে পারি না।

As the impressions made upon a new vessel are not easily to be effaced; so here youth are taught Prudence through the allurements of fable.

This work is divided under four heads:
*The Acquisition of a Friend The Separation of a Fa-
vourite. Of Disputing. of making Peace.*

And it is, chiefly, drawn and written from the Pancha Tantra and other books.

On the banks of the river Bhagirathi, there is a remarkable city called Patalipura, where there was formerly a Raja, endued with every noble quality, whose name was Sudarsana. One day he heard the two following verses, as they were repeated by some one:

He who is not possessed of Learning which dispels many doubts, points out hidden things, and is, as it were, the organ of sight to all, is even as a blind man.

Youth, abundant wealth, authority, and inexperience, is, each of them, the source of ruin. What then must be the fate of him in whom all four are combined?

অস্ত্রিন পদে পদে দুঃখ দায়ক হয় । অপর গত্তসাব ও
ভাল স্ত্রীঅভিগমন না করাও ভাল জন্মিয়া মরাও ভাল কন্যা
হওয়াও ভাল ভার্য্যা বক্ষ্যাহওয়াও ভাল গত্ত হইতে ভ্রমিষ্ট না
হওয়াও ভাল রূপ ও ধন সমহবিশিষ্টে মূর্থ পুত্র কিছু নয় ॥
এবং যে পুত্র জন্মিলে বংশ উন্নতি পায় সে জন্মকনতুবা
জন্ম মরণ ধর্মশালি সংসারে কেবা মরিয়া না জন্মে ।

The Raja had no sooner heard these lines than he began to consider, with an afflicted heart, the situation of his sons, who were yet unacquainted with books, and wandering in the paths of error.

What benefit is there in a son who is neither learned nor virtuous ! Or, of what use is a single eye ! Such an eye is but pain !

Again:

Of the child unborn, the dead, and the fool, the two first, and not the last, are the least to be lamented, for the two first cause but a transient sorrow, whilst the last is an eternal plague.

A son though rich and beautiful if he be ignorant had better have been an abortion. Continence, the death of a child as soon as born, the birth of a daughter, a barren wife, continuance in the womb are all to be preferred to such a son,

He is truly born, by whose birth his generation is exalted; or else, who is there in this transitory life, who being dead, is not born again:

So it is said,

অন্যস্ব । গুণিগণগণনারম্ভে ন পততি কঠিনী স
 সমুদ্ভাস্যস্ব তেনাম্বা যদি সুতিনী বদ বন্ধ্যা কৌটুখী
 ভবতি ॥ অপি চ । দানে তপসি শৌর্য্যে চ যস্য ন প্রথিত
 মনঃ । বিদ্যাযামর্থলাভে চ মাতুরুচ্চারএব সঃ ॥
 অপরস্ব । বরমেকোগুণী পুত্রো ন চ মূর্খশতৈরপি ।
 একস্বন্দ্রস্তমোহন্তি ন চ তারাগণৈরপি ॥ পুণ্যতীর্থং কৃতং
 যেন তপঃ ক্লাপ্যতিদুষ্কারং তস্য পুত্রো ভবেদ্বশ্যঃ সমৃদ্ধো
 ধার্মিকঃ সুধীঃ ॥ তথাচোক্তং ॥ অর্থাগমো নিত্যমরোগিতা
 চ প্রিয়া চ ভার্য্যা প্রিয়বাदिनी চ বশ্যস্ব পুত্রোऽর্থকরী
 চ বিদ্যা षड্ভীবলোকেषু সুখানি রাজন । *❀*

অপর গুণিসমূহের গণনারম্ভে সস্ত্রুমেতে খড়ী যাহার নামে
 না পড়ে সে পুত্রোতে নাতা যদি পুত্রবতী হয় তবে বন বন্ধা
 কেমন হয় । এব° দান ও তপস্যা ও শৌর্য্য ও ধনার্জনেতে
 মন যাহার অর্চোষ্টে না হয় সে মাতারবিষ্ঠা মাত্র । এব°
 গুণবান এক পুত্রও ভাল শত মূর্খ পুত্রোতে পুয়োজন নাহ
 যেনন এক চন্দ্র অক্ষকারণষ্ট করেন তার। সমূহ কিছু করিতে
 পারে না । এব° কোন পুণ্যতীর্থে যে অতিদুষ্কর তপস্যা করি
 য়াছে তাহার পুত্র অবশ্য ধনবান ও ধার্মিক ও পণ্ডিত হয় ॥

সেই পুকার পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন। পুতিদিন অর্থের আগমন ও অরোগিতা এবং পুয়া ভাৰ্যা ও পুয়বাৰ্দ্দিনী ভাৰ্যা ও বিনয়ী পুত্র ও অর্থকরী বিদ্যা এই ছয় সংসারে সুখদায়ক হয়।

Why should the mother of that son, whom the chalk marks not in the first enumeration of the virtuous, have complained, had she been childless;

Again:

That son is but as a lump of clay whose mind is not indowed with generosity and charitable dispositions or who neglects to perform religious penance, or who studies not the art of war, and the art of gaining wealth.

One child of genius is a blessing; not so even a hundred fools. A single moon dispelleth darkness better than a host of stars

The child of him, whose transgressions are expiated by penances performed at places of holy pilgrimage, should be obedient, prosperous, virtuous, and happy.

And it is said also

An influx of riches, and constant health; a wife who is dear to one, and one who is of kind and gentle speech; a child who is obedient, and useful knowledge, are, my son, the six pleasures of life.

কৌশল্যোবজ্জমিঃ পুত্রৈঃ কুশূলাপূরণাঢকৈঃ । বরমেকঃ
কুলালম্বো যত্র বিশ্রুয়তে পিতা ॥ ইদানোমেতে মম পুত্রা
শুণবন্তঃ ক্রীযন্তাং । যতঃ । আহারনিদ্রাভয়মৈথুনঞ্চ সা
মান্যমেতৎ পশুभिর্নরাণাং । ধর্মাহি তেষামধিকো বিশেষো
ধর্মেণ হীনাঃ পশুभिঃ সমানাঃ । যতঃ । ধর্মার্থকামমোক্ষা
ণাং যস্যৈকোপি ন বিদ্যতে । অজাগলস্তনস্যেব তস্য জন্ম
নিরর্থকং । যচ্চোচ্যতে । আয়ুঃ কৰ্ম্ম চ বিত্তঞ্চ বিদ্যা
নিধনমেব চ । পশ্চৈতান্যপি সৃজ্যন্তে গৰ্ভস্যস্বৈব দেহিবঃ
কিঞ্চ । অবশ্যম্ভাবিনোভাবাভবন্তি মহতামপি । নম্রত্বং
নীলকণ্ঠস্য মহাহিষ্ণয়নং হরেঃ । অন্যচ্চ । যদম্ভাবি ন
তদ্রাভি ভাবিচেন্ন তদন্যথা । ইতি চিন্তা বিঘণ্ণোৎসম
গদঃ কিত্ত্রপীযতে ।

আর গোলাগৃহের পুরণার্থ যে আটি ততুন্য অনেক পুত্রোতে
কে ধন্য হয় কিন্তু কুলাচারা বনশ্রী এক পুত্র ও ভান যাহাতে
পিতা খ্যাত হন । অতএব এখন এই আগার পুত্রেরদিগেকে
গুণবন্তু করাযাউক । যেহেতুক আহার ও নিদ্রা ও ভয় ও
নৈথুন এই সকল ব্যবহার পশুরদের যাদৃশ মনুষ্যেরদেরও
তাদৃশ কিন্তু পশুরদের ইহাতে মনুষ্যেরদের অধিক ধর্ম এই
বিশেষ অতএব ধর্মেতে হীন মনুষ্যেরা পশুরদের সমান । যে
হেতুক ধর্ম ও অর্থ ও কান ও মোক্ষ ইহার মধ্যে একও যাহার

নাহি তাহার জন্ম ছাগলের গলদেশস্থিত স্তনের ন্যায় নিরর্থক হয়। অপরও কহাযাইতেছে। ^{eye and a long} আয়ু ^{eye} আর ^{eye} কন্ম ^{eye} আর ^{eye} ধন ^{eye} আর ^{eye} বিদ্যা ^{eye} আর ^{eye} মরণ এই পাঁচ গুণে স্থাবস্থাতেই জীবের সৃষ্ট হয়। ^{through all of things great some} আর ^{eye} অবশ্যভাবি ^{eye} পদার্থসকল ^{eye} মহতেরও ^{eye} হয় ^{eye} হইবার ^{eye} দৃষ্টান্ত ^{eye} মহাদেবের ^{eye} নগ্নত্ব ^{eye} এবং ^{eye} হারর ^{eye} মহাসপশয়া। ^{eye} এবং ^{eye} যে ^{eye} হইবার ^{eye} উপযুক্ত ^{eye} নয় ^{eye} সে ^{eye} হইবে ^{eye} না ^{eye} যে ^{eye} হইবার ^{eye} উপযুক্ত ^{eye} তাহার ^{eye} অন্যথা ^{eye} হইবে ^{eye} না ^{eye} এতাদৃশ ^{eye} চিন্তাকপিবিশনাশক ^{eye} ঔষধি ^{eye} কি ^{eye} লোককর্তৃক ^{eye} পীত ^{eye} হয় ^{eye} না ^{eye} অর্থাৎ ^{eye} অবশ্য ^{eye} হয়।

Who should boast of many sons, unfit to secure good fortune? one son who supports his family, and who does credit to his father, is preferable. Therefore, let my sons be improved by education.

For, Eating, Sleep, Fear, Passion, are common to men and bruts but virtue is there principal distinction, without which men are no better than beasts

The life of that man who has neither virtue, wealth, desire nor final happiness, is as unprofitable as the false nipples on the neck of a goat As it is said,

The age, the actions, the wealth, the knowledge, and even the death, of every one is determined in his mother's womb.

The determined fate of all beings, let them be ever so great, inevitably happeneth. Nakedness is the fate of Nilakauht, and of Han sleeping on a great serpent.

What is not to be, that is not to be, if it be to come to pass, it cannot be otherwise. This reasoning is an antidote. Why doth not the afflicted drink of it?

এতৎ কার্য্যোচ্চমাণাং কেষাञ্চিদালস্যবচনং । যথা
 ছ্যোকেন চক্রেণ ন রথস্য গতির্ভবেত্ । এবং পুরুষকারেণ
 বিনা দৈবং ন সিধ্যতি ॥ তথা চ। পূর্ব্বে জন্মকৃতং কর্ম্ম তদৈব
 মিতি কথ্যতে তস্মাত্ পুরুষকারেণ যত্নং কুর্য্যাদতন্দ্ৰিতঃ ॥
 অন্যত্র উদ্যোগিনং পুরুষসিংহমুপৈতি লক্ষ্মীদৈবেন দেয়মি
 তি কাপুরুষাবদন্তি। দৈবং নিহত্য কুরু পৌরুষমাत्मশক্ত্যা
 যত্নে কৃত্যে যদি ন সিধ্যতি কোত্র দোষঃ ॥ যথা সৃত্যিণ্ডতঃ
 কৰ্ত্তা কৰুতে যদ্যদিচ্ছতি । এবমাत्मকৃতং কর্ম্ম মানবঃ
 প্রতিপদ্যতে ॥ অপাञ্চ । কাকতা লীযবত্ প্রাপ্তং দৃষ্ট্বাপি
 নিধিনয়তঃ ন স্বয়ং দৈবমা দত্তে পুরুষার্থমপেक्षতে ।

এ কোন কার্য্য কৰ্ম্ম লোকেদিগের আলস্যবচন
 যেহেতুক যেমন এক চক্রেতে রথের গতি হয় না । এমন
 পুরুষার্থ ব্যতিরেকে দৈবসিদ্ধ হয় না । পূর্ব্বে জন্ম কৃত যে
 কর্ম্ম তাহার নান দৈব কহা যায় সেইহেতুক নিরাশ্রয়
 হইয়া পুরুষার্থে ত যত্ন করিবেক । আর লক্ষ্মী উদ্যোগি
 পুরুষসিংহকে পায়ের অদৃষ্টে প্রযুক্ত হয় ইহা কাপুরুষেরা কহে
 অতএব অদৃষ্টকে অনাদর করিয়া আপন শক্ত্যানুসারে পুরু
 ষার্থপূকাশ করহ যত্ন করিলে যদি কার্য্যসিদ্ধ না হয় তবে কি
 দোষ । যেমন কুলান ঘটে শরাবাদি যা যা ইচ্ছা করে তাহাই

one earthen lump from crumbled and man his own a house
 एक नृपिण्डहृते निर्माण करे एवं मनस्य आपन कृतकम्
various effects produces it in - in providence - house - and it is
 हृते नाना फल पाय । अपर सम्यक्ते कालतानीयेः
like unexpectably acquire treasure having seen even fate of death -
 न्याय अकस्मात् प्राप्त निधिके देखियाँ देव आपनि
did not present it but human exertion expected -
 आनिरा देन ना किञ्च पुरुषार्थ अपेक्षा करे ।

But such are the idle sentiments of certain men, who admit not of works; for,

As the chariot will not move upon a single wheel; even so fate succeedeth not without human exertion.

It is said fate is nothing but the deeds committed in a former state of existence; wherefore it behoveth a man vigilantly to exert the powers he is possessed of.

Fortune attendeth that lion amongst men who exerteth himself. They are weak men who declare fate the sole cause.

Subdue fate and exert human strength to the utmost of your power; and if when pains have been taken success is not obtained, in whom is the blame?

Whilst a man confideth in providence, he should not slacken his own exertions; for without labour he is unworthy to obtain the oil from the seed.

As the potter formeth the lump of clay into whatever shape he liketh, even so may a man regulate his own actions.

Again:

Although in the story of the Crow and Tal' fruit' one was seen to have found a treasure before him fate of itself did not present it. some exertion was still expected.

উদয়মেণ হি সিদ্ধপ্রস্তু কার্য্যাণি ন মনোরথৈঃ । নহি
 সুপ্তস্য সিংহস্য প্রবিশন্তি মুখে মৃগাঃ । তথাচোক্তং । মাতা
 শত্রুঃ পিতা বৈরী যেন বালোন পাঠিতঃ । ন শোভতে সমা
 মধ্যে হংসमध्ये বকোযথা ॥ রূপযৌবনসম্পদ্বাবিশালকুল
 সম্ভবাঃ । বিদ্যাহীনান শোভন্তে নির্গম্ব্যদ্বব কিংশুকাঃ ॥
 অপরঞ্চ । পুস্তকেষু চ নাধীতং নাধীতং গুরুসন্নিধৌ ।
 ন শোভতে সমামধ্যে জারগর্ভদ্বব স্ত্রিয়ঃ ॥ এতচ্চিন্ত
 যিত্বা স রাজা পণ্ডিতসমাং কারিতবান্ । রাজোবাচ ।
 ভো ভোঃ পণ্ডিতাঃ শ্রুয়ন্তাং সম বচনমস্মি কস্মিন্
 এবম্ভূতোবিদ্বান্ যোমম পুত্রাণাং নিত্যমুন্মার্গগামি
 নামনধিগতশাস্ত্রাণামিদানীং নীতিশাস্ত্রোপদেশেন পুন
 র্জন্ম কারয়িতুং সমর্থঃ ।

যেহেতুক উদ্যোগেতে কার্য্যসকল সিদ্ধ হয় মনোরথ
 নাহেতেই হয় না কেননা সুপ্তসিংহের মুখেতে মৃগের
 স্ত্রত প্রবেশ করেনা । পণ্ডিতেরা সেই পুকার কহি
 য়াছেন যে পিতা ও মাতা বালককে পাঠ করায় না সে
 পিতা ও মাতা শত্রু ঐ বালক সভাগৃহে শোভা পায়না
 যেনন হংসের মধ্যে বক । রূপ ও যৌবনেতে সম্পন্ন
 এবং মজ্জাকুলমস্তব যে সকল তাহার ও বিদ্যাশীন হইলে
 শোভা পায়না যেনন গন্ধহীন পলাশ পুষ্প । অপর

যে ব্যক্তি গুরু নিকটে অধ্যয়ন করে নাহি ও আপনিও
 পুস্তকে অধ্যয়ন করে নাহি সে সভানধ্যে শোভা পায়না জীর
 উপপতি হইতে হয় যে গুরু সে যেমন। ইহা চিন্তা করিয়া সেই
 রাজা পণ্ডিত সভা করাইলেন অনন্তর রাজা কহিলেন ভোভো
 পণ্ডিতেরা আমার কথা শ্রবণ করণ। এমন পণ্ডিত কেহ
 আছে যে নিত্য বিপথগামি অবিদিতশাস্ত্র আমার পুত্রেরদের
 এখন নীতিশাস্ত্রোপদেশদ্বারা পুনর্জন্ম করাইতে সমর্থ হয়।

Good fortune is the offspring of our endeavours' although there be nothing sweeter than ease. The deer are not wont to precipitate themselves into the mouth of the sleeping lion.

That mother is an enemy, and that father a foe, by whom not having been instructed' their son shineth not in the assembly, but appeareth there, like a booby among geese.

Men deficient in learning shine not, although they may be possessed of youth and beauty, and of a noble race: They are like the flower Kimsukh, destitute of fragrance. The boy who hath been exercised neither in books, nor under a teacher, shimes not in society, any more than a woman pregnant by a gallant

The Raja having thus meditated for a while, convened a council of pandits, whom he addressed in the following words:—"Ye learned men, attend! Is there a man to be found who shall, by precepts drawn from Niti-Sastras, be able to perfect the birth of my sons, who are yet unformed, and constantly wandering in the paths of error; For,

যতঃ । কাচঃ কাঞ্চনসংসর্গাঙ্কনে মারকতীর্ঘ্যুতৌঃ
 তথা সত্সন্নিধানেন মূর্খোয়াতি প্রবীণতাং ॥ উক্তঞ্চ ।
 হীযতে হি মতিস্তাত হীনৈঃ সহ সমাগমাৎ সমৈশ্চ
 সমতামেতি বিশিষ্টৈশ্চ বিশিষ্টতাম্ ॥ অত্রান্তরে
 বিষ্ণুশম্ভেনামা পণ্ডিতঃ সকলনীতিশাস্ত্রতত্ত্বজ্ঞো
 বৃহস্পতিরিবাব্রবীৎ দেব মহাকুলসম্মুতাএতে রাজ
 পুত্রাস্তন্ময়া নীতিং গ্রাহয়িতুং শক্যন্তে । যতঃ । নাড্রব্যে
 নিহিতা কাচিত্ ক্রিয়া ফলবতী ভবেৎ । ন ব্যাপারশতে
 নাপি শুকবৎ পাত্যতে বকঃ ॥ অন্যচ্চ । অস্মিন্স্থ নিৰ্গুণং
 গোত্রে নাপত্যমুপজায়তে আকরে পদ্মরাগাণাং জন্ম কাচ
 মণেঃ কুতঃ । অতোহং পশ্যমাশাম্যন্তরে তব পুত্রান্ নীতি
 শাস্ত্রাভিজ্ঞান্ করিষ্যামি । রাজা সত্বিনয়ং পুনরুবাচ ।

যেহেতুক কাঞ্চন সংসর্গেতে কাচ যেমন মারকতমণির
 দ্রুতিকে ধারণ করে তেমন পণ্ডিতসন্নিধানেতে মূর্খ ও
 প্রবীণতাকে পায় । পণ্ডিতেরা সে পুকার করিয়াছেন ।
 হীনলোকেরদের সহসমেতে মতি হীন হয় এবং সমমান
 লোকেরদের সহিত বাসেতে মতি সমতাকে পায় এবং
 উত্তম লোকেরদের সহিত বাসেতে মতি উত্তমতাকে
 পায় । ইহার মধ্যে বৃহস্পতি তুল্যনকল নীতিশাস্ত্রের
 যথার্থজ্ঞাত বিষ্ণুশম্ভা নামে এক পণ্ডিত কহিলেন

হে মহারাজ সৎকুলোদ্ভব এই রাজপুত্রেরা এইহেতুক
 আনাইহেতু নীতিশাস্ত্র গৃহণ করিতে শক্ত হইবেন যেহেতুক
 কোন ক্রিয়া অস্থানে পতিত হইলে ফলবতী হয় না যেমন
 নানাপকার যত্নেতেও শুকপক্ষির ন্যায় বক কখনোপড়ে না।
 আর এগোত্রে নিগণ সম্ভান জন্মে না যেহেতুক পদ্মরাগ
 নগির আকরেতে কাচ নগির জন্ম কোথায় এই হেতুক আমি
 ছয় মাসের মধ্যে তোমার পুত্রদিগকে নীতি শাস্ত্রজ্ঞ
 করিব। রাজা পুনর্বার বিনয় পূর্বক কহিলেন।

as a piece of glass, from the vicinity of gold, acquireth
 the colour of a topaz, so a fool may derive some conse-
 quence from the presence of a wise man.

Again

the mind is depraved by the society of the low, it riseth
 to equality with equals, and to distinction with the
 distinguished.

Of this assembly there was a great pandit by name
 Vishnu-Sarma, well versed in the principles of all the
 Niti-Sastras, as it were another Vrihaspati, who replied,
 —“ These young Princes, O mighty Raja! being the
 offsprings of an illustrious race, are capable of being
 instructed in the Niti-Sastras; but

labour, bestowed on nothing, is fruitless: With infinite
 pains a booby will not, presently, talk like a parrot.

In a noble race, levity without virtue is seldom found.

In a mine of rubies, when shall we find pieces of glass?

Wherefore, I will engage, that in the space of six mon-
 ths, I will render thy sons well acquainted with the doc-
 trines of the Niti-Sastras.”

The Raja then respectfully said:

কীটোপি সুমনঃ সজ্জাদারোহতি সতাং শিরঃ ।
 অশ্মাপি য়াতি দেবত্বং মহদ্বিঃ সুপ্রতিষ্ঠিতঃ ॥ অন্যস্ব ।
 যথোদয়গিরেদ্রব্যং সন্নির্কর্ণেণ দীপ্যতে তথা সত্বস্নিধানেন
 হীনবর্ণোপি দীপ্যতে । তদেতেষামস্মাত্যুবাণাং নীতিশাস্ত্রো
 পদেশায় ভবন্তঃ প্রমাণমিত্যুক্তা তস্য বিষ্ণুশর্ম্মণো
 বজ্রমানপুরঃসরং পুত্ৰান্ সমর্পিতবান্ ॥ অথ প্রাসাদদৃষ্টে
 সুখোপবিষ্টানাং রাজপুত্রাণাং পুরস্তাত্ প্রস্তাবক্রমেণ
 সপণ্ডিতোব্রবীত্ । কাব্যশাস্ত্রবিনোদেন কালাগচ্ছতি
 ধীমতাং । ব্যসনেন চ মূর্খানাং নিদ্রয়া কলহেন বা ॥
 তদ্রবতাং বিনোদায় কাংকর্মাदीনাং বিচিচাং কথ্যং কথ
 যামি ॥ রাজপুত্রৈরুত্ কথ্যতাং বিষ্ণুশর্ম্মোবাচ যুযং শৃণুত

পূজা সহবাসেতে কীট ও সল্লোকের মস্তকে আরোহণ করে এবং
 সল্লোকেরদের কতক সুপ্রতিষ্ঠিত পুত্র ও দেবত্বকে পায় ।
 আর যেমন উদয়াচলস্থ দুর্বা সূর্যাসন্নিধানেন দীপ্তি পায় তেম
 নি সৎসন্নিধানেনেতে হীন বর্ণ ও দীপ্তি পায় সেইহেতুক এই
 আমার পুত্রেরদিগকে নীতি শাস্ত্রোপদেশের নিমিত্ত তোন
 রাই জানি হইয়াছ । ইহা कहিয়া সেই বিষ্ণুশর্ম্মার বহুসম্মান
 পত্রক পুত্রেরদিগকে সমর্পণ করিলেন । অনন্তর পুত্রাদির
 উপর সুখেতে উপবিষ্ট রাজপুত্রেরদিগের সম্মুখে পুস্তাব
 ক্রমেতে সেই পণ্ডিত कहিলেন । কাব্য শাস্ত্রের আনোদোত
 পণ্ডিতেরদের কল্যাণন হয় ব্যসন অথাৎ স্ত্রী ও দূত ও

পান ও বথা পর্য্যটন ও মৃগয়া ও দিবসে নিদ্রা ও কলহ ইত্যাদিতে
 মথেরদের কাল যা পন হয় সেই হেতু কতোনারদের আমোদের
 নিমিত্ত বিচিত্র কাক কক্ষাদি কথা কহি । রাজপুত্রেরা কহি
 লেন কহন । বিষ্ময় কহিতেছেন রাজপুত্রেরা শুবণ করহ ।

Even a reptile, when attached to a flower, may mount
 upon the head of the holy; even a stone, when set up
 and consecrated by the great, attaineth divinity

for it is said,

As a thing on the eastern mountains shineth by the pre-
 sence of the sun, so one of humble birth, even, may be
 enlightened by the allurements of good books.

Then be thou an example to these, my sons, for the ac-
 quisition of virtue. Having said this, he respectfully de-
 livered his sons into the charge of Vishnu-Sarma, and
 that learned Pandit, soon after, siezed the opportunity,
 when they were, for amusement, sitting together upon
 the terrace of their father's palace, to introduce his ad-
 vice to the young princes in the following lines:

Wise men pass their time in amusements drawn from
 the works of the poets, whilst fools squander theirs in
 useless pursuits is, sloth, or riot.

For your amusement, therefore, said he, I am going
 to relate some curious stories of a Crow, a Tortoise,
 and other animals.

CHAP I.

Vishnu-Sarma then told the young princes to attend,
 and said,

সংপ্রতি মিত্রলাভঃ প্রসূ্যতে । যস্যায়মাযঃ শ্লোকঃ ।
 অসাধনা বিত্তহীনা বহিমন্তঃ সুহৃৎতমাঃ । সাধয়ন্ত্যাগু
 কার্য্যাণি কাককূর্মমৃগাঃ ॥ রাজপুত্রা উচুঃ কথমেতৎ ।
 সোব্রবীৎ অস্তি গোদাবরীতীরে বিশালঃ শাল্মলীতরুঃ
 তত্র নানাदिग्देशादागत्य রাজৈ পল্লিণো নিবসন্তি ।
 অথ কদাচিদবসন্তায়াং রাজৈ অস্তাচলচূড়াবলম্বিনি
 ভগবতি কুমুদিনী নায়কে চন্দ্রমসি লবুপতনকনামা
 বাযসঃ প্রবুধঃ কৃতান্তমিবা দ্বিতীয়মটন্তং ব্যাধমপশ্যত্
 তমবলোক্য চিন্তয়ত্ অথ প্রাতরেবা নিষ্টদর্শনং জাতং ন
 জানে কিমনভিমতং দর্শয়িষ্যতি ইত্যুক্তা তদনুসরণক্রমেণ
 ব্যাকুলশ্চলিতঃ । যতঃ । শ্লোকস্থানং সহস্রাণি ভয়স্থানং
 শতানি চ । দিবসে দিবসে মূढমা বিশন্তি ন পণ্ডিতং ॥

জম্পুতি মিত্রলাভে পুস্তাব করি যাহার পুথনেতে এই শ্লোক
 কাক ও কূর্ম ও মৃগ ও নথিক ইহারা উপায় রহিত অথচ ধন
 হীন ইহঁরাও বুদ্ধিমত্তাপ্রযুক্ত শীঘ্র কার্য সাধন করে । রাজ
 পুত্রেরা কহিলেন এ কি পকার । বিষ্ণুশর্মা কহিলেন । গোদা
 বরীর তীরে এক বড় শাল্মলী বৃক্ষ থাকে নানাदिग्देश হইলে
 আসিয়া থাকিরা এ বৃক্ষে রাজিকালে বাস করে । অনন্তর কোন
 দিন রাজি অবসন্ন হইলে কুমুদিনী নায়ক চন্দ্র অন্তাচল চূড়া
 বলম্বী হইলে অথাৎ অস্ত গৌলে পর লঘু পতন নামে কাক
 জাগু হইয়া দেখিল দ্বিতীয় যমের ন্যায় ভ্রমণ করিতেছে এক

for the man having regarded him, began to consider the
 व्याधताहाके अवलोकन करिया छिन्ता करितेनागिल अद्या =
 seeing me and on me, I see I know not what disaster is
 पातःकालेईअमङ्गल दर्शनहईल नाजानि किअमङ्गलदेखा
 at this time saying the fool after he went by great trouble -
 हवे ईहाकहियाबाधेरपश्चात् गमन क्रमेते ब्याकुलछिन्ता
 being he went away for sorrow, plan a hundred and one ways, leave a hundred
 हईयाछलिल।येहेतुकशोकहानसहस्र२ एव भयस्थानशत२
 these truly the foolish defects the seven are ॥२॥
 आछेईहारापुत्राह नूतलोककेअभिभव करेपण्डितकेनया।

—The present subject to be discussed is, *The Acquisition of a Friend* to which these following lines are an introduction:

Wise and sincere friends, although poor and destitute of implements, may speedily effect our purposes, as in the instances of the Crow, the Tortoise, the Deer, and the Mouse.

The young princes demanded how this was, and Vishnu-Sarma related as follows:

FABLE I.

ON the banks of the river Godavari there was a Salmali tree, to whose spreading branches birds of various species were wont to flock, from every quarter, to roost. Early one morning, when darkness was dispersing, and the moon, whose emblem is the flower Koonoodum-nayaka, was reclining upon the summit of the mountain Charama, a certain Crow, whose name was Laghoopatanaka, being awake, chanced to espy a Fowler coming that way, who appeared to him as another angel of death. Having regarded him, and considered for a moment, he said to himself,—This unwelcome visit appeneth to day very early, and I know not what may be the consequence. So pondering upon what he saw, he was seized with a panic, and flew out of the way: for, a thousand occasions for sorrow, and a hundred for fear, lay by day assail the fool, not so the wise man.

অন্যত্র । বিষয়িণামিদমবশ্যং কৰ্ত্তব্যং । উত্থা
 যোত্থায় বোদ্ধব্যং মহত্ত্বয়নুপস্থিতং । মরণব্যাদি
 শোকানাং কিময় নিপতিষ্যতি॥ অথতেন ব্যাধেন তণ্ডুল
 কণান্ বিকীর্য জালং বিস্তীর্ণং কৃत्वा সচ প্রচ্ছন্নোভূত্বা
 স্থিতঃ অস্মিন্বেব কালে চিত্রগ্রীবনামা কপোতরাজঃ
 সপরিবারোবিযতি বিসর্পস্তাংস্তণ্ডুলকণানবলোকয়া
 মাৎ ততঃ কপোতরাজস্তণ্ডুলকণলুব্ধান্ কপোতান্
 প্রত্যাহ কুতোঽত্র নির্জনে বনে তণ্ডুলকণানাং সম্ভবঃ
 তন্নীরূপ্যতাং তাবত্ । ভদ্রমিদং ন পশ্যামি প্রায়েণানেন
 তণ্ডুলকণলোভেনাস্মাভিরপি তথা ভবিতব্যং । কঙ্কণস্য
 তু লোভেন মমঃপক্ষে সুদুস্তরো বৃদ্ধব্যাঘ্রেণ সম্প্রাপ্তঃ পথিকঃ
 স্মৃতোযথা ॥ কপোতাউচুঃ কথমেতত্ । সোঽব্রবীত্

আর বিষয়িরদের ইহা অবশ্য কর্তব্য উপস্থিত যে মহাভয়
 তাহা উঠিয়া বসিবে কেননা মরণ ও ব্যাধি ও শোক
 ইহার মধ্যে না জানি কি অদ্য পড়িবে । অনন্তর সেই ব্যাধি
 তণ্ডুল কণা ছড়াইয়া এবং জাল বিস্তার করিয়া আপনি
 লুক্কায়িত হইয়া থাকিল । এই কালে সপরিবারে চিত্রগ্রীবনা
 নে কপোতরাজ আকাশে বিহরত সেই তণ্ডুলকণাসকল
 অবলোকন করিল। অনন্তর কপোতরাজ তণ্ডুল কণানোভি
 কপোতের দিগের পুতি কহিল কি কপে এনির্জন বনে তণ্ডুল
 কণার সম্ভব তাহা নিকর্ণ কর এ ভান দেখি না এই তণ্ডুল

^{as if by design, we see who so well as}
 कणार लोभेते आमार, ओ पाय तेमनि हईब* येमन
^{in old days by means of mud in sink and travels who an old}
 कङ्कणलोभेते दुस्तुर पङ्केतेनध ये पथिक से बूझ ब्याघ्र
^{he found being unskilled - the pigeon said - how was it}
 कत कपाण्ट हईया मरियाछे कपोतेरा कहिल ए कि पुकार
^{the pigeon king replied -}
 कपोतराज कहिल ।

Yet, it is said, that men of the world must absolutely act according to these lines:

Every time we rise, great fear is to be apprehended; for, to-day, of death, sickness, and sorrow, we knoweth which may fall upon us:

The fowler, having first strewed some rice upon the ground, spread his nets, and whilst this was transacting, it happened that Chitra-griva, the chief of a flock of pigeons, was in the air flying about with his attendants. He saw the grains of rice upon the ground, and perceiving that his flock shewed an inclination to partake of them, he addressed them thus.—Beware, my friends!

Whence, think you, should rice be produced in a place like this, void of inhabitants: Let this, therefore, be investigated, for I conceive no good can come of it, lest we should experience a fate similar to what is mentioned in the following lines:

A Traveller, through lust of gold, being plunged into an inextricable mire, is killed and devoured by an old Tiger.

How did this happen? demanded the pigeons, and their place related as follows:

অহমেকদা দক্ষিণারণ্যে চরন্নপশ্যৎ একোবৃদ্ধোব্যাঘ্রঃ
 স্নাতঃ সরসীরে ব্রূতে ভোভোঃ পান্য ইদং সুবর্ণকঙ্কণং কুশ
 হস্তোন্মহ্যতাং ততোলোভাক্ষেণ কেনচিত্ পান্যেনালোচিত
 ভাগ্যেনৈতৎ সম্ভবতি কিং ত্বস্মিন্নাত্মসন্দেহে প্রবৃत्तिর্ন
 বিধেয়া । যতঃ । অনিষ্টাদিষ্টলাভে ঽপি ন গতির্জাযতে
 শুভা । যত্রাস্তে বিষসংসর্গোমৃতং তদপি সৃত্যবে ॥ কিন্তু সর্ব
 বার্থার্জনে প্রবৃत्তিঃ সন্দেহএব । তথা চোক্তং ॥ ন সংশয়
 মনারুহ্য নরোভদ্রাণি পশ্যতি । সংশয়ং পুনরারুহ্য যদি
 জীবতি পশ্যতি ॥ তদ্বিরূপচামি তাবৎ প্রকাশং ব্রূতে
 কুব তব কঙ্কণং । ব্যাঘ্রোহস্তং প্রসার্য্য দর্শয়তি । পান্যো
 ঽবদৎ কাযং নারাট্মকে ত্বয়ি বিশ্বাসঃ । ব্যাঘ্রউবাচ

আনি এক জনর দক্ষিণারণ্যে বিহরত দেখিলান এক সরো
 বরের তীরে এক বৃদ্ধ ব্যাঘ্র স্নাত ও বৃশহস্ত হইয়া কহিতেছে
 ভো৷ পথিক এই সুবর্ণ কঙ্কণ গৃহণকর । পরে লোভী কোন
 পথিক পরানিশ করিলভাগ্যক্রমে এতাদৃশ লাভ হয় কিন্তু পুণ্যের
 সন্দেহ এ বিষয়েতে পুৰ্ব্বভিকৃতব্য । নয় যেহেতুক অনিষ্ট হইতে
 ইষ্ট লাভেতেও মঙ্গল হয় না যেমন বাহাতে বিষের সংসর্গ
 আছে সে অমৃত ও সরণের নিমিত্ত হয় কিন্তু সচর্য ধনোপার্জনে
 পুৰ্ব্বভি সন্দেহেতেই হয় । সে পুকার পাণ্ডিতেরা কহিয়াছেন

uncertainty surmounting not doing more good yet not but
 সশয়কে আরোহণ না করিয়া মনুষ্য মজ্জল দেখে না কিন্তু
 uncertainty surmounting it he surmounts then good he does him
 সশয়কে আরোহণ করিয়া যদি বাচে তবে মজ্জল দেখে অত
 he is a man who has the tiger's paw open
 এব তাহা নিকপণ করি । পথিক পুকাশ করিয়া কহিতেছে
 you travel where the tiger has extended his paw
 তোনার কঙ্কণ কোথায় ব্যাঘ্র হস্ত বিস্তার করিয়া দেখাই
 to see it then the traveller said man in my hand - v - f -
 তেছে । অনন্তর পথিক কহিলেন তুমি হিঁসুক তোমাতে
 he v - can I believe - the tiger said -
 কি পুকার বিশ্বাস হয় । ব্যাঘ্র কহিল

FABLE II.

AS I was travelling on the southern road, once upon a time, I saw an old Tiger seated upon the bank of a large river, with a bunch of Koosagrass in his paw, calling out to every one who passed,—Ho' ho' traveller, take this golden bracelet. But every one was afraid to approach him to receive it. At length, however, a certain traveller, tempted by avarice, regarded it as an instance of good fortune; but, said he, in this there is personal danger, in which we are not warranted to proceed.

It is not good to pass by that we dislike, even to gain that which we like; for the water of life becometh mortal when mixed with a poison. Yet, said he, there is risk in every undertaking, for the acquisition of wealth: Hence, it is said, No man beholdeth prosperity who doth not encounter danger, but having encountered danger, if he surviveth, he beholdeth it. The Traveller then asked him where was the bracelet, and the Tiger having held out his paw, shewed it to him, and said,—Look at it, it is a golden bracelet. How shall I place confidence in thee, said he Traveler; and the Tiger replied,

শৃণু রে পান্থ প্রাগেব যৌবনদশাযামতিদুর্ধতোস্মি
 অনেকেগোমানুষাণাং বধান্মে পুত্রামৃতা দারাশ্চ বংশহীন
 স্বাহম্ ততঃ কোনচিদ্ধার্মিকেনাহমাदिष्टः । দানধর্মা
 দিকচ্ছরতু ভবান্ তদুপদেশাদিদানীমহং স্তানশীলো
 দাতা বৃদ্ধো গলিতনখদন্তো ন কথং বিশ্বাসভূমিঃ । যতঃ
 ইজ্যাধ্যয়নদানানি তপঃ সত্যং ধৃতিঃ क्षमा। অলোভ ইতি
 মার্গোऽयং ধর্মস্বাষ্টবিধঃ স্মৃতঃ ॥ তত্র পূর্বশ্চতুর্বর্গো
 দম্ভার্থমপি সেয্যতে । উত্তরস্তু চতুর্বর্গো মহাত্মন্দেব
 तिष्ठति ॥ মম চৈতাবান্ লোভবিরহো যেন স্বহস্ত
 স্যনপি সুবর্ণকঙ্কণং যস্মৈ কস্মৈচিদাতুমিচ্ছামি তথা
 পি ব্যাঘ্রোমানুষং ছাদতীতি লোকাপবাদো দুর্নিবারঃ ।

শুন রে পথিক, পূর্বকালে যৌবনদশাতে আমি অতিদুর্ভাগ্য
 হিনান অনেক গো ও মনুষ্যদিগের বধ করাতে আমার
 জ্ঞাও পুত্রেরা মরিয়াছে অতএব বংশহীন হইয়াছি অনন্তর
 কোন ধার্মিক আনাকে কহিয়াছেন যে তুমি দান ও ধর্মাদি
 আচরণ করহ সেই উপদেশ পুষ্টক এখন আমি স্তানশীল
 ও দাতা ও বৃদ্ধ ও গলিতনখদন্ত হইয়াছি ইহাতে কেন বিশ্বাস
 স্থান না হই । যেহেতুক যজ্ঞ ও দান ও অধ্যয়ন ও তপস্যা ও
 সত্য ও ধৃতি ও ক্ষমা ও অলোভ এই আট পকার ধর্মের পথ
 তাহার মধ্যে পব চতুষ্টয় দম্ভের নিমিত্তেও সেবা করে উত্তর
 চতুষ্টয় মহাত্মাতেই থাকে । আমার এমন লোভবিরহ

that my hand off gold bracelet some person to give
 हইয়াছে যেআপন হস্তগত সুবর্ণকঙ্কণ কোন লোককে দিতে
my wish is - with trying man eat -
 ইচ্ছা করি তেছি । তথাপি ব্যাঘ্র মনুষ্যকে খায় এই
a usakom people is - that prevent to do growl -
 অপবাদ লোকে আছে তাহা নিবারণ করা যায় না

—Formerly, in the days of my youth, I was of a very wicked disposition, and as a punishment for the many men and cattle I had murdered, my numerous children died, and I was also deprived of my wife; so, at present, I am destitute of relations. This being the case, I was advised, by a certain religious person, to practise charity and other religious duties; I am now grown extremely devout: I perform ablutions regularly, and am charitable, Why then am I not worthy of confidence;

The study of what is ordained, charity, mortifications of the flesh, and sacrifices; fortitude, forgiveness, rectitude, and modesty, form the true way, and are recorded the eight-fold division of our duty.

Of these, the first class, consisting of four, is attended to for the sake of hereafter; and the latter class of four, presideth in every great mind.

So far, you see, continued the Tiger, I have an interest in wishing to give away, to some one, this golden bracelet from off my own wrist;

This I have considered, and now let me ask thee plainly, where is thy gold; But stop, Tigers eat men, and the opinion of the world is hard to be defeated; for,

যতঃ । গতানুগতিকোলোকঃ কুট্টিনীমুপদেশিনী ।
 প্রমাণয়তি নো ধর্মো যথা গোঘ্নমপি দ্বিজং ॥ মযা চ
 ধর্মশাস্ত্রাণ্যধীতানি শৃণু । প্রাণায়ত্মনোভীষ্টাভূতা
 নামপি তে তথা । আত্মোপম্যেন ভূতানাং দয়াং কুর্হন্তি
 সাধবঃ ॥ অপরঞ্চ । প্রত্যাখ্যানে চ দানে চ সুখদুঃখে
 প্রিয়াপ্রিযে আত্মোপম্যেন পুরুষঃ প্রমাণমধিগচ্ছতি ॥
 অন্যঞ্চ । মাতৃবত্পরদারেষু পরদ্রব্যেষু লোভবৎ । আত্মবৎ
 সর্বভূতেষু যঃ পশ্যতি স পণ্ডিতঃ ॥ ত্বচ্ছাতিব দুর্গতস্মিন
 তত্তুভ্যং দাতুং সযতোহম্ । তথা চোক্তাং । দরিদ্রান্ভর
 কৌন্তেয় মা প্রযচ্ছেশ্বরে ধনং । ব্যাধিতস্যৌষধং পথ্যং নীরু
 জস্য কিমৌষধৈঃ ॥

যেহেতুক ধারাবাহিক লোকেরা উপদেশিনী কুট্টিনীকে
 ধর্মবিষয়ে পুমাণ করে না যেমন গোঘ্ন বাক্ষগকে পুমাণ করে
 না । আমি ধর্মশাস্ত্র পাঠি যাছি শুন যেমন আপনার পুাণ ইষ্ট
 তেমন সকল জীবের পুাণও ইষ্ট হয় অতএব সাধলোকেরা
 আত্মবৎ সকল জীবকে দয়া করেন । অপর নিষেধ করাতে
 অথাৎ যাচকের যে অপিয় দুঃখ এবং দান দেওয়াতে যে পিয় সুখ
 তাহা সৎপুরুষেরা আত্মদৃষ্টান্তেতে পুমাণ জানেন । এবং যে
 লোক পরদ্রব্যকে মাতার ন্যায় ও পরের দুব্যকে শুক্রমত পিণ্ডের
 তুল্য ও সকল জীবকে আপনার ন্যায় দেখে সেই পণ্ডিত ।

than very poor therefore thee to give I do
 तनि अतिदरिद्रु सेहैतक तोनाके दिते आनि सचेष्टे
 हैयाछि। सेहै पुकार पाण्डितेरा कहियाछेनु। ये हे बुधिष्ठिर
 दरिद्र लोकके प्रतिपालन कर धनिके धनदिओ ना येनन
 रोगिर औषध पथ्य ह्य अरोगिर औषधे कि प्रयोजन।

The people, mere followers of one another, holds up a bawd and a Brahman who is a cow-killer, as examples in our religion.

I too, replied the Tiger, have read religious books: Hear what they say,—As their own lives are most dear to them, so also are those of all creatures. Good men, because of their own likeness, shew mercy unto all things which have life.

In granting and in refusing, in joy and in sorrow, in liking and in disliking, good men, because of their own likeness, shew mercy unto all things which have life.

He is a learned man, who considers the wife of another man, as his own mother, the property of another man, as dust; and the life of every animal as dear as his own.

and as thou appearest to be rather a poor man, I prefer giving it to thee according to this saying:

Make choice of the poor, O son of Koonti, and bestow not thy gifts on others. Medicine is to be administered to the sick; for of what benefit is physic to those who are in health;

अन्यच्च । दातव्यमिति यद्दानं दीयते ऽनुपकारिणे ।
 देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं विदुः ॥ तद्वच सरसि
 स्नात्वा सुवर्णकरुणं गृहाण ततो यावदसौ तद्वचः प्रती
 तोलोभात् सरः स्नातुं प्रविशति तावन्महापङ्के निमग्नः
 झलायितुमक्षमः पङ्के पतितं दृष्ट्वा व्याघ्रोऽवदत् अहह
 महापङ्के पतितोसि अतस्त्वामहमुत्थापयामीत्युक्त्वा शनैः
 शनैरुपगम्य तेन व्याघ्रेण धृतः सपान्थोऽचिन्तयत् । न
 धर्मशास्त्रं पठतीति कारणं नचापि वेदाध्ययनंदुरात्मनः ।
 स्वभावएवात्र तथातिरिच्यते यथा प्रकृत्या मधुरङ्गवां
 पयः ॥ किञ्च । अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव
 क्रिया । दुर्भगाभरणप्रायोज्ञानंभारः क्रियां विना ॥

अपरदे^{अपरदे} उपाय^{उपाय} पशु^{पशु} इहाने^{इहाने} करिया^{करिया} काश्यादि^{काश्यादि} तीर्थे^{तीर्थे} गुह्यादि^{गुह्यादि}
 काले^{काले} अग्निहोत्रादि^{अग्निहोत्रादि} पात्रे^{पात्रे} अनुपकारिके^{अनुपकारिके} ये^{ये} दानं^{दानं} करे^{करे} सेह^{सेह}
 दानके^{दानके} सात्त्विक^{सात्त्विक} करिया^{करिया} पशुतेरा^{पशुतेरा} ज्ञानेन^{ज्ञानेन} अतएव^{अतएव} एह^{एह} सरो^{सरो}
 वरे^{वरे} ज्ञान^{ज्ञान} करिया^{करिया} सुवर्ण^{सुवर्ण} करुण^{करुण} गुह्य^{गुह्य} करह^{करह} । अनन्तर^{अनन्तर} यथन^{यथन}
 पथिक^{पथिक} ताहार^{ताहार} बाकोते^{बाकोते} पुत्राय^{पुत्राय} करिया^{करिया} लोभेते^{लोभेते} नून^{नून} करि^{करि}
 बार^{बार} निगि^{निगि}ते सरोवर^{सरोवर} पुविष्ट^{पुविष्ट} इह^{इह} तथन^{तथन} महापा^{महापा}ङ्के^{ङ्के} मग्न^{मग्न}
 इह^{इह} पा^{पा}नाइते^{नाइते} असमर्थ^{असमर्थ} इह^{इह} । पङ्के^{पङ्के} पतित^{पतित} पथिक^{पथिक} के^{के}
 देखिया^{देखिया} ब्याघ्र^{ब्याघ्र} कहिल^{कहिल} हाय^{हाय} हाय^{हाय} बह^{बह} पाङ्के^{पाङ्के} पतित^{पतित} इह^{इह} याह^{याह}

Therefore you I will help out, the having said slowly near
 অতএব তোমাকে আমি উঠাই ইহা কহিয়া অল্পে নিকটে
 গিয়া সেই ব্যাঘ্র তাহাকে ধরিল তখন সে বুদ্ধি চিন্তা করিল
 দুরাচার ধর্মশাস্ত্রের পাঠ ও বেদের অধ্যয়ন ধর্মিষ্ঠতা হওনের
 কারণ নহে কিন্তু গোকর দুগ্ধ স্বভাবেতেই যেমন মধুর হয়
 তেমনি স্বভাব অতিরিক্ত হয় এবং মন ও ইন্দ্রিয় অবশ্য বাহার
 দিগের তাহার দিগের ক্রিয়া হস্তির স্নানের ন্যায় অর্থাৎ হস্তির
 সূঁড়ো দ্বারা জল দ্বারা যেমন স্নান সম্পন্ন হয় না আর দূতগা স্ত্রীর
 অলঙ্কারের ন্যায় ধর্মশাস্ত্রান ব্যতিরেকে জ্ঞান হওয়া ভার ।

And this:

The gift which is to be given, should be given gratuitously; in time, in place, and to a proper object; and such a gift is recorded a righteous gift.

Then go, and having purified thyself in this stream, take the golden barcelet.—The Traveller no sooner begins to enter the river to purify himself, than he sticks fast in the mud, and is unable to escape. The Tiger told him he would help him out; and creeping softly to wards him, the poor Traveller is seized, and instantly exclaims to himself,—Alas! the career of my heart is cut short by fate!

He readeth not the Dharma-Sastra,—is this the cause; or doth he not study the veds; In this matter the natural disposition of his wicked spirit prevaieth, even as the milk of the cow is by nature sweet.

What is done for those who have not their passions in subjection, is like washing the elephant. Service rendered to the unfortunate is, for the most part, like knowledge without practice.

তন্ময়া ভদ্রং ন কৃতং যদত্র মারাভ্যকো বিশ্বাসঃ কৃতঃ।
 তথা চোক্তা। শৃঙ্গিনাশ্চ নদীনাশ্চ নলিনাং শস্তুপাণিনাং।
 বিশ্বাসেনৈব কৰ্ত্তব্যঃ স্ত্রীপুৰাজকুলেষু চ ॥ অপরश्च ।
 सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावानेतरे गुणाः । अतीत्य हि
 गुणान् सर्वान् स्वभावोमूर्द्धि वर्त्तते । अन्यच्च । स हि
 गणविहारी कल्मषध्वंसकारी दशशतकरधारो
 ज्योतिषां मध्यचारी । विधुरपि विधि योगात् ग्रस्यते
 राज्ञासौ लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः ।
 इति चिन्तयन्नेवासौ व्याघ्रेण व्यापादितः खादितश्च ।
 अतोहं ब्रवीमि कङ्कणस्य तु लोभेन इत्यादि । अतः
 सर्वथा अविचारितं कर्म न कर्त्तव्यमिति ।

অতএব আমি ভাল করিনাই যেহেতুক মারাত্মক বাহ্যে বিশ্বাস
 করিয়াছি । সেইরূপ পণ্ডিতেরদিগের কতক কথিত আছে
 নদী ও শস্তুধারী ও নখী ও শৃঙ্গী ও স্ত্রী ও রাজকুল এসকলে
 বিশ্বাস কৰ্ত্তব্য নহে । অপর সকলের স্বভাব পরীক্ষা অবশ্য
 করিবেক অন্য গুণ পরীক্ষা করিবেক না যেহেতুক সকল
 গুণকে অতিক্রমণ করিয়া স্বভাব মন্তকে থাকে আর আকাশ
 বিহারী পাপনাশকারী সহস্ররশ্মিধারী জ্যোতিষাচারী
 চন্দ্রও দৈবযোগেতে ব্রাহ্মকৃতক গুলু হন অতএব কপালে

what written is that to those who able as - in the way
 যে লিখিত আছে তাহা খণ্ডিতে কে শক্ত হয় । এই পুকার
meditating that travellers by the tiger, tiger & deer-meat was -
 চিন্তা করত এই পথিক ব্যাঘ্রকতক ভৃত ও ভক্ষিত হইল ।
Therefore I say that Brahma's teaching as a traveller
 অতএব আমি কহি যে ব্রহ্মের লোভেতে যেমন পথিক
traveller is more - much being &c - therefore I call him
 ব্রাহ্মণ পক্ষেতে নগ্ন হইল ইত্যাদি এই নির্মিত্তে সর্বপুকারে
unexamined as action, knowledge is not -
 অবিচারিত কথ্য কথব্য নয় ।

I did not well in that, I placed confidence in one of such an evil disposition ! for it is said, Confidence should not be put in rivers; in animals which have claws or horns, in men with weapons in their hands; nor in women; nor in those of royal birth.

The natural, and no other qualities should be examined, for the natural qualities pass over all others, and mount upon the head.

The Moon that rolls across the sky, destroys sins, possesses a thousand rays, and goes between the light of the sun and the earth, and is accidentally seized by Rahoo, therefore no one is able to deny that it is written by God in fate.

But whilst the unfortunate Traveller was thus meditating on his fate, he was devoured by the Tiger. I have said, therefore, *Through the lust of a bracelet, &c.* and hence also, it is at no time proper to undertake any thing without examination; as in the following saying;

যতঃ । সুজীর্ণমন্নং সুবিচক্ষণঃ সুতঃ সুশাসিতা স্ত্রী
 নৃপতিঃ সুসেবিতঃ। সুচিন্ত্য চোক্তং সুবিচার্য্য যত্নতং সুদী
 র্ঘকালেপি ন যাতি বিক্রিয়াং ॥ এতদ্বচনং শ্রুত্বা কাশ্মিত
 কপোতঃ সদৰ্পমাহ আঃ কিমেবমুচ্যতে । বৃদ্ধস্য বচনং
 গ্রাহ্যমাপতকালে হ্যুপস্থিতে । সৰ্ব্বত্রৈব বিচারেণ ভোজনেষ্য
 প্রবর্ততে ॥ যতঃ । শঙ্কাভিঃ সৰ্ব্বমাক্রান্তমন্নং পানঞ্চ ভূতলো
 প্রবৃন্তি কুত্র কৰ্ত্তব্য জীবিতম্ কথং নু বা ॥ তথাচোক্তং ।
 ইধী ঘৃণী ত্বসন্তুষ্টঃ ক্রোধনো নিত্যশঙ্কিতঃ । পরমাত্মো
 যজোবীচ পডেতে দুঃখভাগিনঃ ॥ এতচ্ছ্রুত্বা সৰ্ব্ব কপোতা
 স্ত্রোপবিষ্টাঃ । যতঃ । সুমহান্যপি শাস্ত্রাণি ধারয়ন্তো
 বজ্রশ্রতাঃ । ক্লেতারঃ সংশয়ানাঞ্চ ক্লিষ্ট্যন্তে লোভমোহিতাঃ ॥

যেহেতুক বিনয়ী জীর্ণ অন্ন ও উত্তম পণ্ডিত পুত্র ও অতি
 শয় বশীভূতা স্ত্রী ও সুসেবিত রাজা ও বিনয়ী বিচার করিয়া
 যাহা করা যায় ইহারা বহুকালেতেও বিকার পায় না ।
 এ কথা শুনিয়া কোন কপোত দৰ্প করিয়া কহিল আঃ একি
 কহিতেছ । আপেকাল উপস্থিত হইলে বৃদ্ধলোকের বাকা
 গুাহ হয় আর অন্যত্রও বিচারক্রমে গুাহ হয় কিন্তু ভোজন
 রিষয়ে গুাহ নয় । যেহেতুক পৃথিবীমণ্ডলে সকল অন্ন ও
 জলাদি আশঙ্কা দ্বারা ব্যাপ্ত আছে তাহাতে কোথা পূৰ্ব্বে
 কহিয়া কি প্রকারে বা জীবন ধারণ কহিয়া । সেই প্রকার

the friends have said পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন *envy-having & suspect-having & dissatisfied* ঈর্ষাবিশিষ্ট ও ঘণায়ুক্ত ও অসন্তুষ্ট
& passionate & altogether suspicious - when fortune brings on the six persons ও ক্রুদ্ধ ও সর্বদা সশঙ্ক আর পরভাগ্যোগোপজীবী এই ছয়জন
suffering affliction all this having heard all the persons that place on settle দুঃখভাগী হয়। ইহা শুনিয়া সকল কপোত সে স্থানে উপবিষ্ট
were - where the learned many brothers knowing the doubt's হইল যেহেতুক পণ্ডিতেরা মহাশাস্ত্র জানিয়া ও আর সংশয়ের
dispellers are even by advance supposed being trouble receive do- ছেদনকর্তা হইয়াও নোভে মুখ হইয়া ক্লেশপাপ্তহয়েন।

Well-digested food, a well-discerning child, a well-governed wife, a prince well served, a speech well considered, and an action well weighed, are not, even in very long time, attended by disagreeable consequences.

One of the pigeons, who was of a haughty spirit, having heard what had been said, exclaimed,—Ha! what is this; Is it not said,

In times of necessity the words of the wise are worthy to be observed; by whose determination we may freely engage in all things, even in eating.

All things upon the face of the earth, our meat and our drink, bear cause of suspicion; then how is forbearance to be exercised, and life to be supported?

Again it is said,

These six—The peevish, the niggard, the dissatisfied, the passionate, the suspicious, and those who live upon others means—are for ever unhappy.

So having heard these words, the whole flock flew down upon the grain.

Those, even, who possess very many Sastras, are learned in the Vedas, and are the dispellers of doubt, experience trouble, when their reason is blinded by avarice

অন্যত্র । লোভাত্ ক্রোধঃ প্রभवति लोभात् कामः
 प्रजायते । लोभान्मोहश्च नाशश्च लोभः पापस्य
 कारणं ॥ अनन्तरं सर्वे जालनिवद्भावभूवुः ततोयस्य
 दधनान्तत्रावलम्बितास्त सर्वे तिरस्कुर्वन्ति । यतः । न
 गणस्याग्रतो गच्छेत् सिद्धे कार्ये समं फलं । यदि
 कार्यविपत्तिः स्यात् सुखरस्तत्र हन्यते ॥ तथाचोक्तं ।
 आपदां कथितः पन्था इन्द्रियाणामसंयमः । तज्जयः
 संपदां मार्गायेनैष्टं तेन गम्यतां ॥ तस्य तिरस्कारं श्रुत्वा
 चित्रधीवत् उवाच । नायमस्य दोषः । यतः । आपदा
 मापतन्तोनां हितोप्यायाति हेतुतां । मातृजया हि
 वत्सस्य लक्ष्मी भवति वन्धने ॥ *❀*❀*❀*❀*

লোভহইতে ক্রোধ হয় লোভহইতে কাম জন্মে লোভ
 হইতে মোহ ও নাশ হয় লোভ পাপের কারণ । পরে
 সকলেই জালেতে বদ্ধ হইল অনন্তর যাহার বাক্যেতে সে
 স্থান অবলম্বন করিয়াছিল তাহাকে সকলে তিরস্কার
 করিতে নাগিল । যেহেতুক সকলের আগে যাইবে না কেননা
 কাঁচা সিদ্ধ হইলে সকলেরি সমান কল যদি কাঁচা বিঘ্ন হয়
 তবে পুধানব্যক্তি দোষভাগী হয় । সেই পুকার কথিত
 আছে হৈমিয় সকলের যে দমন না করা সেই বিপত্তির পথ
 আর তাহারদিগের যে দমন করা সে সম্পত্তির পথ যে

पाথেতে ইচ্ছা সেই পাথেতে যাও । তাহার অপমান শুনিয়া
 চিত্তগোব কহিল ইহার এ দোষ নয় যেহেতুক হিত ও পতন
 শীল আগদের কারণতাকে পায় যেমন মাতার জঙ্ঘা বৎসের
 বন্ধনের নিমিত্তে উন্মত্ত হয় ।

From covetousness proceedeth ill-nature, and of ill-nature is born stubbornness; from stubbornness is created a delusion of reason, and that delusion is the cause of sin.

At length they were all, in consequence of their covetousness, confined by the threads of the net; and they presently began to lay the blame upon him, by whose advice they had descended.—So it is said. A man should not strive to precede his fellows; for, should the work succeed, the booty is equal, and if it fail, the leader is punished.

It is said, that those who do not govern their passions, will meet with misfortunes, but that those who do govern their passions, shall obtain wealth. Go then, and whichever of these two you choose, act accordingly.

Chitra-griva hearing their reproaches, said, it is not his fault. It is said,—To those who are fallen into misfortunes, what was a blessing, becometh an evil: To a child in confinement, its mother's knee is a binding post.

অন্যত্রাস বস্তুর্থাবিপন্নানামাপদহরণক্ষমঃ। ন তু ভীত
 পরিব্রাণবৎসূপালম্পাশিতঃ ॥ বিপত্কালে বিস্ময়এব
 কাপুরুষলক্ষণং তদত্র ধৈর্যমবলম্ব্য প্রতীকারস্থিততাং ।
 যতঃ। বিপদি ধৈর্যমথ্যাম্যুদয়ে ক্ষমা সদসি বাক্পটুতা
 যুধি বিক্রমঃ যশসি চাভিরুচির্যসনং শ্রুতৌ প্রকৃতি
 সিদ্ধমিদং হি মহাত্মনাং ॥ সম্পদি যস্য ন হর্ষোবিপদি
 বিষাদো ন রণে চ ধীরত্বং । তং ভুবনত্রয়তিলকং জনয়তি
 জননী সূতং বিরলং ॥ অন্যত্র । ষড়্বোষাঃ পুরুষেহ
 ছাতব্যাভূতিমিচ্ছতা । নিদ্রা তন্দ্রা ভয়ং ক্রোধশালস্য
 দোর্বসূত্রতা ॥ ইদানীমপি एवं ক্রিয়তাং সর্বৈরেকচিন্তী
 ভূয় জালমাদায় তদ্ব্যয়তাং । *—*—*—*—*

and submissiveness = person's calm by whom he does what he likes
 আর বিপদগস্ত লোকের আপদ উদ্ধার করিতে যে যোগ্য
 সেই বন্ধু ভীতব্যক্তির পরিব্রাণের নিমিত্তে ধন গৃহে পশিত
 যে সে বন্ধু নয় । বিপৎকালে বিস্ময়াপন্ন হওয়া কাপুরুষের
 লক্ষণ সেই হেতুক এ সময় ধৈর্য অবলম্বন করিয়া উপায়
 চিন্তা করহাযেহেতুক বিপৎকালে ধৈর্য আর বুদ্ধিকালেক্ষমা
 সভ্যতাব্যাকোর পটুতা যুদ্ধে পরাক্রম আর যশোতে অভিক্রি
 শান্ত্রশ্রবণে আসক্তি এই সকল উত্তম লোকেরদিগের স্বভাব
 সিদ্ধ হয় । যাহার সম্পৎকালে আহ্লাদ হয় না বিপৎকালে
 বিষাদ হয় না যুদ্ধেতে পাণ্ডিত্য হয় এমনত্রিভুবন শ্রেষ্ঠ পুত্রকে

যে জননী জন্মান সে দুর্লভা আর ঐশ্বর্যোচ্ছ পক্ষয নিদ্রা তজ্জা
 ভয় ক্রোধ আনন্দ অলঙ্কার সাধ্য ক্রিয়া বহুকালে করা এই
 ছয় দোষ ত্যাগ করিবেক । এখনও ইহা কর সকলে একচিন্ত
 হইয়া জান নইয়া উড় ।

He who hath the resolution to extricate one from his misfortunes, who is fallen into difficulties by another's fault, is a Pundit; not he, who hesitateth about the means he should employ for the deliverance of the distressed.

Hesitation, in times of misfortune, is the mark of a coward; wherefore, depend upon resolution, and let a remedy be thought of; according to these lines, Fortitude in adversity, and moderation in prosperity; eloquence in the senate, and courage in the field; great glory in renown, and labour in study; are the natural perfections of great minds.—Again:

The mother that produces a child, who is not delighted at the time of prosperity, nor miserable at the time of misfortune, and who is the greatest hero in the world, is scarcely to be found.

There are here six faults, which a man ought to avoid. The desire of riches, drowsiness, sloth, idleness tediousness, fear, and anger. Let this be done immediately: Let us all, with one accord, take up the net, and fly away with it; according to these hues:

যতঃ। অল্পানামপি বস্তুনাং সংহতিঃ কার্যসাধিকা
 ত্বণৈর্গুণত্বমাপনৈর্বধ্যন্তো মনদন্তিনঃ ॥ সংহতিঃ শ্রেয়সী
 পুংসাং স্বকুলৈরল্যকৈরপি তুণ্যৈরপি পরিত্যক্তান প্ররোহন্তি
 তল্লুলাঃ ॥ ইতি বিচিন্ত্য পল্লিণঃ সর্ধে জালমাদায় উত্
 পতিতাঃ । অনন্তরং সব্যাধঃ সুদূরাজ্জালাপহারকাংস্তা ন
 বস্লোক্য পশ্চাদ্ধাবিতোঽচিন্তয়ন্তা সংহতা স্তু হরন্তীব জাল
 মম বহিঃস্রমাঃ। যদাতু নিপতিষ্যন্তি বশমেষ্যন্তি মেতদা ॥
 ততস্তে শুচলুর্বিষযাতিক্রান্তেষু পল্লিষু সম্বাধোনিবৃন্তঃ অথ
 লুন্ধ্যকং নিবৃন্তং দৃষ্ট্বা কপোতাঞ্জলিঃ কিমিদানীং কর্তু মুচি
 তং । চিত্রগ্রীব উবাচ । মাতা মিত্রং পিতা চেতি স্বভাবা
 ত্রিতয়ং হিত কার্যকারণতস্থান্যে ভবন্তি হিত বুদ্ধয়ঃ ॥

যেহেতুক তচ্ছ বস্তুর যে সমূহ তাহাতে ও কার্যসাধন
 হয় যেমন রজ্জ্ব পাছিলে তৎসমূহকর্তৃক মন্তুহস্তী বন্ধ
 হয় । মজাতিয় তচ্ছ বস্তুরও সমূহ পুরুষের মন্তন দায়ক
 হয় ইহার সাক্ষী দেখ তত্ত্ব ল ভূষেতে বিধীন হইলে অন্ধুর
 হয় না । ইহা চিন্তা করিয়া সকল পক্ষিরা জাল নইয়া
 উপরে উড়িল । অনন্তর সে ব্যাধ অতিদূরহইতে জালের
 অপহারক কপোতেরদিগকে দেখিয়া পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া
 ভাবনা করিল যে এ কপোতেরা সকল একত্র হইয়া আগার
 জাল হরণ করিয়াছে কিন্তু যখন পৃথিবীতে পড়িলে তখন

আমার বশীভূত হইবে। তৎপর সেই পক্ষিরা ব্যাধের চক্র
দৃষ্টি অতিক্রমণ করিলে সেই ব্যাধ নিবৃত্ত হইল। তাহার পর
ব্যাধকে নিবৃত্ত দেখিয়া কপোতেরা কহিল এখন কি করিতে
উচিত হয়। চিত্রগাব কহিল মাতা ও পিতা ও মিত্র ইহারা
তিন জন স্বভাবেতে হিতকারী হইলেন আর অন্যলোকও
কাৰ্য্য কারণপুষ্ট হিতকারী হয়।

A combination even of small things serveth an occasion: An intoxicated elephant may be bound with a few straws, when formed into a rope.

Combination is best for men, either with their own tribe or with strangers; for even a grain of rice groweth not, when divided from its husk.

Having considered this, the pigeons, with one accord, took up the net, and flew away with it. Presently the fowler, seeing the robbers of his net at a great distance, pursued them; and as he ran, these were his thoughts:

These travellers of the air have combined to rob me of my net; but when they shall fall down, they will come into my power. But soon finding they had passed the confines of his sight, the poor fowler turned back from the pursuit.

The pigeons now demanded what was to be done; and Chitra-griva replied, A mother is a friend, and a father is a friend, but both these are by nature kind; but there are others who are benevolent from casual motives.

তদস্মাকং মিত্রং হিরণ্যকোনাং মূষিকরাজোগড়কী
 তীরে চিত্রবনে নিবসতি সোঽস্মাকং পাশাংশ্চেৎস্যতি ইত্যা
 লোচ্য সৰ্ব্বৈ হিরণ্যকবিবরসমীপং গতাঃ হিরণ্যকশ্চ
 সৰ্ব্বদাপাশাংগুণ্য শতদ্বারং বিবরং কৃत्वा নিবসতি ততো
 হিরণ্যকঃ কপোতাভিপাতভয়াচ্চকিতলুপ্তাণীং স্থিতঃ চিত্র
 গ্রীবউবাচ । সখ্যে হিরণ্যক কথমস্মান্ন সম্ভাষসে ততো
 হিরণ্যকস্তদ্বচনং প্রত্যভিজ্ঞায় সসম্ভ্রমং বহির্নিঃসৃত্যা
 ব্রবীৎ আঃ পুণ্যবানস্মি প্রিয়সুহৃন্মে চিত্রগ্রীবঃ সমা
 যাতঃ । যস্য মিত্রেণ সম্ভাষোযস্য মিত্রেণ সংস্থিতিঃ । যস্য
 মিত্রেণ সংলাপস্ততোনাস্তীহ পুণ্যবান্ ॥ অথ পাশবদ্বাংশ্চৈ
 তান্ দৃষ্ট্বা সবিষ্ণুযঃ ক্লেপং স্থিত্বা উবাচ সখ্যে কিমেতৎ ।

অতএব আনারদিগের মিত্র হিরণ্যক নামে মূষিকের
 দিগের রাজা চিত্রবনে গণ্ডকীনদীর তীরে বাস করে সে
 আনারদিগের পাশ কাটবেক ইহা বিবেচনা করিয়া
 সকলে হিরণ্যকের গভীর নিকটে গেল । হিরণ্যক সৰ্বদা
 উপদ্রবশঙ্কিতে শতদ্বারগত করিয়া বসতি করে । অন
 তর হিরণ্যক কপোতেরদের পতনশব্দের ভয়েতে ভীত
 হইয়া চুপ করিয়া থাকিল । পরে চিত্রগ্রীব বলিল হে মিত্র
 হিরণ্যক কেন আনারদিগকে সম্ভাষা কর না । অনন্তর হির
 ণ্যক মিত্রের বাক্য বুঝিয়া শীঘ্র বাহির হইয়া বলিল আঃ কি

^{I happy I am my dear friend} पुण्यवान् आनि, आमार परमसुखे चित्रगीव आसियाछेन
^{could afford with whose counsel is friend with with} कनना नित्रेर सहित याहार सञ्जाया ओ नित्रेर सहित याहार
^{ring I spend with whose mutual conversation} बास ओ नित्रेर सहित याहार परम्पर कथोपकथन হয়
^{that I am in the earth happy more is not this after} তাহা হইতে পৃথিবীতে পুণ্যবান আর নাই। তাহার পর
^{The pigeons nest in barrel seen & filled with surprise being} কপোতেরদিগকে জালে বদ্ধ দেখিয়া বিস্ময়াগন্ন হইয়া
^{for a short time standing he said of friend what is this} কিঞ্চিৎ কাল থাকিয়া কহিল সখে একি।

Our friend Hiranyaka, the noble mouse, lives upon the banks of the Gandaki. He may be able to gnaw our snare asunder with his teeth. Having considered this proposal, they all flew to the residence of Hiranyaka, who, from his constant dread of the Crows, had made himself a hole with a hundred outlets, wherein he remained secured, according to this verse:

There was an old mouse, well read in the Niti-Sastras, who, before the approach of danger, kept himself within a hole with a hundred doors.

He was startled with fear at the descent of the pigeons, and stood silent, upon which Chitra-griva called out, Friend Huanayka! what, wilt thou not speak to us; And Hiranyaka, upon recollecting his voice, slipped out of his hole, and exclaimed,—O how happy I am, that my dear friend Chitra-griva is arrived! There is not in life a man more happy than he, who hath a friend to converse with, a friend to live with, and a friend to embrace.

But when he saw that they were confined in a net, he stood amazed for a moment, and demanded what it meant,

চিত্রগ্রীবত্বাচ সখ্যেঃ স্নাতকং প্রাক্তনজন্মকৰ্ম্মণঃ ফল
 মেতৎ । যস্মাচ্চ যেন চ যথা চ যদাচ যচ্চ যাবচ্চ
 যত্র চ শুভাশুভমাत्मকৰ্ম্ম । তস্মাচ্চ তেন চ তথা চ তদা
 চ তচ্চ তাবচ্চ তত্র চ বিধাতবশাদুপৈতি । রোগশোক
 পরীতাপবন্ধ্যনব্যসনানি চ । আত্মাপরাধবৃদ্ধাণাং দণ্ড
 ত্যেভ্যনি দেহিনাং ॥ মূষিকস্ত্রিগ্রীবস্য বন্ধ্যনং ক্লেবুং
 সত্বরং উপসর্পতি । চিত্রগ্রীবত্বাচ নিত্র মৈবং কুরু কিঞ্চা
 স্য রাশ্রিতানাংমেধাং তাবত্ পাশাংষ্টিন্ধি তদা মম পাশং
 পশ্বাচ্ছৈত্স্যসি । হিরণ্যকোপ্যাহ অহমল্পশক্তির্দ
 ন্তাশ্চ মে কৌমলাস্তদেবেধাং পাশাংষ্টিন্ধুং কথং সমর্থঃ তত্
 যাবন্মে দন্তান ব্রুত্ব্যন্তি তাবত্তব পাশং ক্লিন্দি অনন্ত
 রমপ্যেধাং বন্ধ্যনং যাবচ্ছক্যং ক্লেত্স্যানি । *❀❀*

“ চিত্রগ্রীব কহিল হে মিত্র আমারদের পূর্ব জন্মকৃত
 কৰ্ম্মের ফল এই যাহাইহতে যৎকরণক যে পুকারে যে কালে
 যে স্থানে যত শুভ কিম্বা অশুভ আত্মকৃত কৰ্ম্ম সে সকল
 তাহাইহতে তৎকরণক সেই পুকারে সেই কালে সেই
 স্থানে কৈশ্বরেচ্ছাপযুক্ত জীবকে পায় । নিজকৃত অপরাধ
 বন্ধনরূপ দেহির রোগ শোক পরীতাপ বন্ধন বাসন ইহার।
 ফল হয় । উদ্ভূত চিত্রগ্রীবের বন্ধন ছেদন করিতে শীঘ্র সমা
 পে যাইতেছে চিত্রগ্রীব তাহা দেখিয়া কহিল হে মিত্র এমন

to not but my independent house regions' stand
 करिও না কিন্তু আমার আশ্রিত এই কপোতেরদের পাশ
 to first do than my not after nothing lo--
 ছেদন আগে কর তখন আমার জাল পশ্চাৎ ছেদন করিব।
 to stand little strong into my teeth also tender
 হিরণ্যক कहिल আমি अन्नवली आर আমার दन्तु ओ कोमल
 to see on them hands nothing to do how able may be
 এই কারণ ইহারদের বন্ধন ছেদন করিতে কি কপে শক্ত হইব।
 to then my teeth as long as not broken so long your strong
 তবে আমারদন্ত যতক্ষণ না ভাঙ্গে ততক্ষণ তোমার পাশ
 to see on him after that also as long as shall be able will not be
 ছেদন করি পশ্চাৎ ইহারদেরও যত পারিব ছেদন করিব ।

Chitra-griva replied,—What else, my friend, can it be, but the effect of the evil committed in a prior existence; seeing thou art endued with great wisdom, what was the use of thy question; For is it not said,

Whatsoever cometh to pass, either good or evil, is the consequence of a man's own actions, and descendeth from the power of the Supreme Ruler. Sickness, sorrow, and distress; bonds and punishment to corporeal beings, are fruit of the tree of their own transgressions.

Hiranyaka having heard these words, quickly ran to gnaw asunder the cords by which Chitra-griva, was confined. Not so my friend, said Chitra-griva, until thou hast cut asunder the bonds of these who are under my protection. Hiranyaka then said, I am weak, my friend, and my teeth are but delicate; how then am I able to bite open the snares which entangle them; As long as my teeth shall not break, so long will I gnaw thy snares; and afterwards, if it should be in my power, I will divide the cords which confine the rest.

চিত্রগীব উবাচ অস্ত্বে বং তথাপি যথাশক্তি বন্ধনমেতেষাং
 লব্ধয়। হিরণ্যকেন উক্তং আত্মপরিত্যাগেন যদাশ্রিতানাং
 পরিরক্ষণং তন্ন নীতিবেদিনাং সম্মতং । যতঃ। আপদার্থে ধনং
 রক্তেদ্বারা ব্রহ্মদেবৈরপি। আত্মানং সততং রক্তেদ্বারৈরপি ধনৈরপি।
 অন্যত্র । ধর্ম্মার্থকামমোক্ষাণাং প্রাণাঃ সংস্থিতিহেতবঃ ।
 তান্নিঘ্নতা কিল্ল হতং রক্ততা কিল্ল রক্তিতাং চিত্রগীব উবাচ
 সখে নীতিস্তাবদোদৃশ্যেব কিং ত্বহমস্মদাশ্রিতানাং দুঃখং
 সোদুং সর্ব্বথাঃ সমর্থস্তেনেদং ব্রবীমি । যতঃ । ধনানি
 জীবিতম্ভৈব পরার্থে প্রাপ্তবন্তসৃজেত্ । সন্নিমিত্তে বরং ত্যাগো
 বিনাশে নিয়তে সতি ॥ অযমপরস্বাসাধারণোহেতুঃ ।
 জাতিদ্রব্যবত্নানাস্থ সাম্যমেবাং ময়া সহ । মত্ প্রমূল
 ফলং ব্রূহি কদা কিল্ল ভবিষ্যতি । *❀*❀*❀❀

চিত্রগীব কহিল এই হউক তথাপি যেমন সাংগঠ্য ইহার
 দিগের বন্ধন কাট। হিরণ্যক কহিল যে আপনাকে পরিত্যাগ
 করিয়া আশ্রিত লোকের যে রক্ষা করা সে নীতিজ্ঞ লোকের
 দেব সম্মত নহে যেহেতুক বিপত্তির নিমিত্তে ধন রক্ষা করিবে
 আর ধনদ্বারা জীকে রক্ষা করিবেক আর আপনাকে সর্ব্বদা
 জীদ্বারা এবং ধনদ্বারাও রক্ষা করিবেক । অপর ধর্ম্ম অর্থ
 কামমোক্ষের সংস্থিতির কারণ যে পুণ্য সেই পুণ্যকে যে
 জন নষ্ট করে তৎকর্তৃক কি নষ্ট না হয় আর পুণ্যকে যে
 রক্ষা করে তৎকর্তৃক কি রক্ষিত না হয় । চিত্রগীব বলিল

हे मित्र नीतिशाली এইকপই বটে কিন্তু আমি আমার
 ক্ষান্ত লোকেরদিগের দুঃখ কোন পুকারে সহিতে পারি না
 সেই নিমিত্তে ইহা বলি । যেহেতুক ধন ও পুণ্য পরের
 নিমিত্তে পণ্ডিতলোকেরা ত্যাগ করে, কেননা বস্তুমাত্রের
 বিনাশ অবশ্য হয় অতএব সাধু লোকের কারণ পুণ্যাদির
 ত্যাগ ভাল । আর এই অসাধারণ কারণ আমার সহিত
 ইহারদিগের জাতি ও দুব্য ও বলের তুল্যতা তবে আমার
 পুণ্যের ফল কখন কি হইবে তাহা বল ।

Let it be as I say, replied Chitra-griva; and to the utmost of thy power try to subdue their bonds first. Those, said the mouse, who are acquainted with the rules of prudence, do not approve, that for the preservation of those who are under our protection, we should abandon ourselves.

A man should keep his riches against accidents, and with his riches he should save his family ; but he should, on all occasions, save himself, both with his family and his riches. Our lives are for the purposes of religion, labour, love, and salvation. If these are destroyed, what is not lost, If these are preserved, what is not preserved; This may be so, replied Chitra-griva; but I am not, by any means, able to suffer the afflictions of those who are here under my protection.

A wise man should relinquish both his wealth and his life for another: All is to be surrendered for a just man, when he is reduced to the brink of destruction.

Here is another unparalleled argument: In birth, substance, and quality, they are like unto me; say then, what will ever be the fruit of my superiority;

অন্যত্র । বিনা বর্জনমেবৈতে ন ত্যজন্তি মমান্তিকং ।
 তন্মে প্রাণব্যয়েনাপি জীবয়েতান্মমাশ্রিতান্ ॥ কিঞ্চ ।
 মাংসমুত্রপুৰীষাস্থিনির্মিতৈ চ কল্লেবরে বিনশ্বরো বিহায়া
 স্থাং যশঃ পালয় মিত্র মে ॥ পশ্য । যদি নিত্যমনিত্যেন
 নির্মলং মলবাহিনা । যশঃ কায়েন লভ্যেত তন্ন লভ্য
 ভবেন্ন কিং ॥ যতঃ ॥ শরীরস্য গুণানাঞ্চ দূরমত্যন্ত
 মন্তরং শরীরং ল্লেণবিধ্বংসি কল্যান্তস্থাধিনোগুণাঃ ।
 ইত্যাকর্ণ্য হিরণ্যকঃ প্রহৃষ্টমনাঃ পুলকিতঃ সন্নববীত
 সাধু মিত্র সাধু অনেনাশ্রিতবাত্সল্যেন ত্রৈলোক্যস্তাপি
 প্রভুত্বং ত্বয়ি যুজ্যতে এবমুক্তা তেন সর্বेषাং বম্বনানি
 ছিন্নানি । ততোহিরণ্যকঃ সর্বান সাদরং সंपূজ্যাহ

অপর ইহারা বড়ন ব্যতিরেকেও আমার নিকট আগ করে না
 সেই হেতুক আমার পাণের বিনাশ হইলেও আমার আশ্রিত
 ইহারদিগকে বাঁচাও । আর হে মিত্র মাংস ও মূত্র ও বিষ্ঠা ও
 অস্থিতে নির্মিত বিনাশশীল শরীরে আস্থা পরিত্যাগ
 করিয়া কীৰ্ত্তী রক্ষা কর । ওহে দেখ অনিত্য ও মলবাহি
 শরীর কর্তৃক নিত্য অথচ নির্মল যশ যদি লভ হয় তবে কি
 না লভ হয় । যেহেতুক শরীরের ও গুণের যে দূর সে অত্যন্ত
 অন্তর কেননা শরীর অল্পকালস্থায়ী গুণ কল্পান্তস্থায়ী ।
 ইহা শুনিয়া হিরণ্যক হৃষ্টচিত্তে এবং পুলকিত হইয়া বলিল

স্বাধু নিত্র সাধ এই আশ্রিত বাৎসল্যে ত্রিনোকের পুত্ৰ
তোনাতে উপযুক্ত হয় । ইহা কহিয়া সেই হিরণ্যক সকল
কপোতের বন্ধন ছেদন করিল । অনন্তর হিরণ্যক সকল
কপোতকে সম্মান করিয়া কহিল ।

Again: Without misfortune, they will not forsake me, then I will protect these who have taken sanctuary with me, even with the loss of my life.

Why dost thou hesitate over this perishable body composed of flesh, bones, and excrements; O my friend, support my reputation!—Another: If constancy is to be obtained by inconstancy, purity, by impurity, reputation by the body, then, what is there which may not be obtained; the difference between the body and the qualities is infinite: the body is a thing to be destroyed in a moment, whilst the qualities endure to the end of the creation.

Hiranyaka having been attentive to what had been spoken, and being exceedingly pleased, exclaimed,—Nobly! nobly! my friend. By such generosity to those who are under thy protection, thou art worthy to be elevated to the supreme command over the three regions of the world. Having said this, Hiranyaka gnawed asunder their bonds; and when he had addressed himself to all in respectful compliments of congratulation, he said.

সখে চিত্রগ্রীব সর্বথা অত্র জালবन्ধনবিধৌ সতি দোষ
 মাশঙ্ক্য 'আত্মন্যবজ্ঞা ন কৰ্ত্তয়া । যতঃ । যোধিকাযো
 জনশতাৎ পশ্যতোহামিধং ত্বগঃ । সএব প্রাপ্তকালস্তু পাশ
 বন্ধং ন পশ্যতি ॥ অপরঞ্চ । শশিদিবা করযোর্যহণীডনং
 গজভুজঙ্গমযোরপি বন্ধনামতিমতাঞ্চ বিলোক্য দরিত্রতাং
 বিধিরহোবলবানিতি মে মতিঃ ॥ অন্যच्च । ব্যোমৈকান্ত
 বিহারিণোপি বিহগাঃ সম্প্রাপ্তদন্ত্যাপদং । বध्यন্তে নিপুনৈর
 গাধসলিলান্মত্স্যাঃ সমুদ্রাদপি । দুৰ্ণীতং কিমিহাস্তি
 কিং সুচরিতং কঃ স্যানলাভে গুণঃ । কালোহি ব্যসনপ্রসা
 রিতকরোগটঙ্কানি দূগাদপি ॥ ইতি প্রবেধ্যাতিথ্য
 কৃত্বালিংগ্য চ সম্প্রেষিতশ্চিত্রগ্রীবোপি সপরিবারো যথেষ্ট
 দেশান যযৌ । হিরণ্যকোপি স্ববিবরং প্রবিষ্টঃ ॥ ❀❀❀

হে সখে চিত্রগ্রীব এই জালে বন্ধন হওয়াতে দোষ আশঙ্কা
 করিয়া আপনাতে অবজ্ঞা কর্তব্য নহে যেহেতু যে পক্ষী
 শত যোজনহইতে অধিকৈতে আহার দেখে সেই পক্ষী নত
 কাল উপস্থিত হইলে পাশবন্ধন দেখিতে পায়না । আর চন্দ্র
 ও সূর্য্যের রাহু পীড়া আর হস্ত ও মৃগের বন্ধন ও বন্ধিমানের
 দারিদ্র্য দেখিয়া এই আগার বিবেচনা যে বিধাতাই বলবান
 এবং আকাশবিহারী ও গন্ধির বিপৎ পায় আর বন্ধিমান
 লোককর্তৃক অতলম্পর্শ জল যে সমুদ্র তাহা হইতে ও







জ্ঞান্য ধৃত হয় ইহাতে দীর্ঘত কি আছে সুচরিত্র ও স্থানলাভে
কিঞ্চ যাহেতুক বাসনরূপ বিস্তারিত হস্ত যে কাল তিনি
দরহইতে ও গৃহণ করেন । এই পুকারে পুৰোধ করিয়া
আতিথ্য করিয়া আলিঙ্গন করিয়া বিদায় করিল চিত্রগুৰি ও
সপরিবারে আপন অভিলষিত দেশে গেল ॥ হিরণ্যক ও
আগ্নিবিবরে পুৰিষ্ট হইল ।

Friend Chitra-griva, always when you see a net, suspect great harm will come of it; and learn not to think meanly of yourself But, alas!

A bird who seeth her prey before her, even at the distance of a hundred yojan, perceiveth not, if her time be come, the snares which are laid to entrap her.

When I behold in eclipses the distress of the moon and the author of day, elephants and serpents in confinement, and the worthy in indigence; alas! in my mind, destiny is all-powerful. Birds meet their fate whilst sporting in the air, and fishes, by artful means, are destroyed from the bottomless waters of the ocean.

When laws are ill-enforced, where are their good morals; To whom is the mere glare of the fire a virtue; Time is trouble, and the author of destruction; he seizeth even from afar. The mouse having taught this, and performed the duties of hospitality, Chitra-griva took his leave, and with his flock departed for that country his inclination led him to; and Hiranyaka retired into his hole.

যানি কানি চ মিত্রাণি কৰ্ণধ্যানি শতানি চ। পশ্য মূ
ষিকমিত্রেণ কপোতামুক্তবন্ধনাঃ॥ অথ লঘুপতনকনামা
কাকঃ সৰ্ব্বদৃষ্টান্তদৰ্শী সাশ্চর্য্যমিদমাহ অহো হিরণ্য
কঃ শ্লাঘ্যোঽসি অতোহমপি ত্বয়া সহ মৈত্রীমিচ্ছামি
অতোমাং মৈত্রেয়ানুমৃদীতুমৰ্হসি । এতচ্চুত্বা হিরণ্য
কোপি বিবরাভ্যন্তরাদাহ কল্বংস ব্রূতে লঘুপতনকনামা
বায়সোঽহাং হিরণ্যকোবিহস্য আহ কা ত্বয়া সহ মৈত্রী।
যতঃ । যথেন যুজ্যতে লোকে বুধস্তত্তেন যোজয়েত্। অহমন্ন
স্বদান্ ভোক্তা কথং প্রীতিৰ্ভবিষ্যতি। অপরস্ব। মচ্ছ্যমচ্ছ
কথোঃ প্রীতিৰ্বিপক্ষেঃ কারণং যতঃ। শৃগালাত্ পাশবডোঽসৌ
মৃগঃ কাকেন রলিতঃ ॥ বায়সোঽব্রবীত্ কথমেতত্। হির
ণ্যকঃ কথয়তি । *******

অতএব লোক যে কোন শত শত মিত্র করিবে দেখ উদ্ভব
মিত্রেতে কপোতের বন্ধনহইতে মুক্ত হইল। অনন্তর লঘুপ
তননামে কাক সকল বৃত্তান্ত দেখিয়া ইহা বলিল কি আশ্চর্য্য
হে হিরণ্যক তুমি শ্লাঘ্য। অতএব আমিও তোমার সহিত মি
ত্রতা ইচ্ছা করি এই নিমিত্তে আগাকে মিত্রতাতে অনগহ ক
রিতে যোগ্য হও। ইহা শুনিয়া হিরণ্যক গভের মধ্যে থাকি
য়া কহিল কে তুমি সে বলিল আমি লঘুপতন নামে কাক
হিরণ্যক হাসিয়া বলিল তোমার সহিত মিত্রতা কি যেহেতুক
লোকেতে যে যাশর সহিত উপযুক্ত হয় পণ্ডিত লোক

তাহাকে তাহার সহিত মিলন করাইবেক আনি ভোজ্য
 তুমি ভোক্তা ইহাতে কি পুকারে পীতি হইবে আর যেহেতু
 ভক্ষ্য ও ভক্ষকের যে পণ্য সে বিপত্তির কারণ কেননা শূগাল
 ইহাতে পাশেতে বদ্ধ মৃগ কাক কতক রক্ষিত হইল ! কাক
 কহিল এ কি পুকার ! হিরণ্যক কহিতেছে ।

Behold how many pigeons, his friends, even hundreds, have been delivered by the friendship of a mouse !

The crow, Laghu-patanaka, having been a spectator of all which had passed, now presently appeared, and called out—What ho ! Hiranyaka ! Thou art worthy to be praised, to be adored, and to be a place of refuge, throughout the three regions of the world !

In consequence of this, I too am anxious to form a friendly acquaintance with thee.—Then favour me with thy friendship. Hiranyaka having heard him, called out from the inside of his hole,—Who art thou; and he replied, I am a crow, and my name is Laghu-patanaka. Hiranyaka, upon hearing who he was, laughing said,—Having seen thy complexion, like broken Anjan, a beetle, a wild ox, a buffaloe, or a woman's hair, what friendship can I have with thee,

The wise man is united with that in this life, with which it is proper he should be united. I am bread, thou art the eater. How then can harmony exist between us; as may be seen in a certain story, of which the following verse is the introduction.

Harmony between the food and the feeder is the fore-runner of misfortune.—A deer, though the artifice of a jackal, is caught in a snare, but is preserved by a crow.

How did this happen, demanded Laghu-patanaka; and the mouse, Hiranyaka, related as follows:

অস্মি মগধদেশে চম্পকাবতী নামারণ্যানী তस्याং চিরা
 ন্মহতা স্নেহেন মৃগকাকৌ নিবসতঃ সচ মৃগঃ স্নেচ্ছয়া
 ধাম্যন্ দৃষ্টপুষ্টাঙ্কঃ কোনচিত্ শৃগালেनावলোকিতঃ তং
 দৃষ্ট্বা শৃগালোঽচিন্ততযত্ আঃ কথমেতন্মাংসং भक्षयामি
 भवतु विश्वासं तावदुत्पादयामি इत्यालोच्योपসृत্যাवবীत्
 मित्रं कुशलं ते । मृगेण उक्तं कस्त्वं । स ब्रूते क्षुद्रबुद्धिनामा
 जम्बुकोऽहं अत्रारण्ये वन्धुहीनो मृतवन्निवसासि इदानीं
 त्वां मित्रमासाद्य पुनः सवन्धुर्जीवलोकं प्रविष्टोऽस्मि
 अधुना तवानुचरेण मया सर्वथा भवितव्यमिति । मৃगे
 एोक्तं एवमस्तু ततः पश्चादस्तং গতে সবিতরি ভগবতি মরী
 চিমালিনি তৌ মৃগস্যং বাসভূমি গতৌ তত্র চম্পকবৃক্ষ
 শাখায়াং সুবুদ্দিনামা কাকোমৃগস্য চিরমিভং নিবসতি ।

মগধদেশে চম্পকাবতী নামে এক বন থাকে তাহাতে হরিণ
 ও কাক দুই জন বহুকাল বড় স্নেহেতে বাস করে সেই হরিণ
 আপন ইচ্ছাতে ভ্রমণ করত কোন শৃগাল তাহাকে দৃষ্ট
 পুষ্টাঙ্ক দেখিয়া চিন্তা করিল আঃ কিপুকারে এই উত্তম জলি
 তমাংস থাইব যা হউক বিশ্বাস জন্মাই । এই পরামর্শ
 করিয়া সন্নিপোগিয়া বলিল হে মিত্র তোমার মঙ্গল । মৃগ
 কছিল কে তনি শৃগাল কহিতেছে ক্ষুদ্রবুদ্ধি নামে শৃগাল
 আমি এই বনেতে মৃত শরীরের ন্যায় বান্ধবহীন হইয়া বাস

*dwelt * now -* *thru a friend feeding again with*
 करि सम्पत्ति তোমাকে মিত্র পাইয়া পুনর্বার সবারূপ
being no more I am now & continuously by follow
 হইয়া সজীব হইলাম এখন আমি সর্বদা তোমার অন্তর
will be the jackal to the deer said well but so -
 হইব শগালকে মগ कहिल ভাল এই হউক। অনন্তর ভগবান
say = contempt I am with an setting after the deers dwells
 নরীচিমালী সর্ষাপশ্চিমে অন্তর্গত পরে মগের বাসস্থানে
in deer & at all went thence "Chompok" tree branch
 সেই মগ ও শগাল গেল সেখানে চম্পকবৃক্ষের ডালেতে
the deer charmed friends "Sobodi" called a crow dwelt -
 মগের চিরকালের মিত্র সুবন্ধিনামা কাক বাস করে।

FABLE III.

In Magadha-desa there is a forest called Champakava-
 tee, and under the branches of one of the Champaka
 trees there dwelt, in great good fellowship, a deer and
 a crow. One day, as the deer, who was plump and fat,
 was freely roaming about the woods, he was spied by a
 certain jackal, who having examined him, said to him-
 self,—Ah! with what exquisite pleasure could I feast
 upon his flesh!—Be it so, but first let me remove all
 suspicion. So having thus resolved, he advanced towards
 him, and said,—Peace be with thee, friend! Who art
 thou; said the deer I am Kshudrabudhi, the jackal,
 said he, and being without relation, I dwell here in this
 forest, as it were, like one dead, but now that I have
 fallen in with a true friend, I am no longer destitute of
 connections, and am again entered into the land of the
 living; and henceforward it shall be my duty to attend
 thy steps.

Accordingly, as soon as the sun had retired to the
 western montan, the jackal followed the deer to his
 place of residence, beneath the branches of the Champa-
 ka-tree, where with him lived also his friend the crow,
 whose name was Su-budhi.

তৌ দৃষ্ট্বা কাকোঽবদৎ সখ্যে কোঽয়ং দ্বিতীয়ঃ । মৃগোব্রূতে
 জম্বুকোঽয়ং মস্সত্ সখ্যমিচ্ছন্নাগতঃ । কাকোব্রূতে মিত্র অক
 স্সাদাগন্তুনা সহ মৈত্রী ন যুক্তা । তথা চোক্তং । অজ্ঞাত
 কুলশীলস্য বাসোদেয়ো ন কস্যचित্ মার্জ্জারস্য হি
 দোষেণ হতোমুদ্রোজরদ্ধবঃ ॥ তাবাহতুঃ কথমেতৎ ।
 কাকঃ কথয়তি অস্মি ভাগীরথীতীরে মূধুকূটনাম্নি
 পৰ্য্যতে মহান্ পৰ্কটোবহঃ তস্য কোটরে দৈবদুৰ্ব্বিপাকাঙ্ক
 লিতনলনয়নোজরদ্ধবনামা মূধুঃ প্রতিবসতি অথ
 ক্রপয়া তজ্জীবনায় তদ্বৃদ্ধবাসিনঃ পল্লিণঃ স্বাহারাৎ
 কিঞ্চিদুদ্ভূত্ব দদতি তেনাসৌ জীবতি অথ কদাচিদীর্ঘ-
 কৰ্ণনামা মার্জ্জারঃ পল্লিশাবকান্ ভক্ষিতুং তত্রাগতঃ ।

ইরিণ আর জম্বুককে দেখিয়া কাক বলিল মিত্র দ্বিতীয়,
 একে ইরিণ কহিতেছে ইনি কম্বুক আমার সহিত মিত্রতা
 করিতে বাঞ্ছাকরিয়া আনিয়াছেন কাক বলিতেছে সখে
 অকস্মাৎ আগন্তকের সহিত মিত্রতা উচিত নয় এইবিজ্ঞ
 কণ্টক কথিত আছে যাহার কল ও স্বভাব জাত নহে
 তাহাকে বাসস্থান দেওয়া উপযুক্ত নহে। যেহেতুক বিড়ালের
 দোষেতে জরদবনামে গধু নষ্ট হইল। মগ আর শগাল
 কহিল এক পুকার। কাক কহিতেছে। গঙ্গাতীরে গধুকট
 নান পথতে বৃহৎ এক পাকুড় বৃক্ষ থাকে তাহার কোটরে

by some one came near & eyes visible of 'jorad-gob' - called a mixture
 দেববিপাকে নথ ও চক্রেতে রুহিত জরদগব নামে এক শকুনি
 dwelt afterwards finished life for
 সতি করে ১২ অনন্তর তাহার জীবনের নিমিত্তে সেই
 see living herds grasses being their own food from
 বৃক্ষবাসি পক্ষিরা কৃপা করিয়া আপনঃ আহারহইতে
 a little extracting to him gave in meat that
 কৃষ্ণিঃ কৃষ্ণিঃ উদ্ধারকরিয়া তাহাকে দেয় তাহাতে ঐ জর
 lived afterwards one day "long ear" called a cat bird
 ব বাচে। পরে কোন দিন দীর্ঘকর্ণ নামে এক মাজার পক্ষি
 being and or sitting to do - have come
 মিলকেরদিগকে ভক্ষণ করিবার নিমিত্তে সেখানে আইন।

Upon seeing him, the crow said, who is this second; and the deer replied, it is a jackal, who is come here desirous of our friendship. Friend, said the crow, it is not proper to place confidence in one who cometh without any apparent cause. It is not well done, for it is said.

To one whose family and profession are unknown, one should not give residence. the jakal Jarad-gava was killed through the fault of a cat.

How was this; said they; and the crow related as follows.

FABLE IV.

On the banks of the river Bhagirathi, and upon the mountain Gridhra- kuta, there is a large Parkatti tree, in the hollow of whose trunk there dwelt a jackal, by name Jarad-gava, who, by some accident, was grown blind, and for whose support the different birds, who roosted upon the branches of the same tree, were wont to contribute a trifle from their own stores, by which he existed. It so fell out, that one day a certain cat, by name Dirgha-karna, came there to prey upon the young birds,

ততস্তমাযানং দৃষ্ট্বা পশ্চিমাধিকৈৰ্ভযাতৈঃ কোলাহল
 কৃতঃ তচ্ছুত্বা জরদ্বয়েন উক্তং কোঃয়মায়াতি । দীর্ঘকর্ণো
 মধ্ৰমবলোক্য সমযস্যাহ হা হতোস্মি। যতঃ। তাবদ্বয়স্য
 ভেতব্যং যাবদ্বয়মনাগতং । আগতঞ্চ ভয়ং বীচ্য নরঃ কুৰ্য্যা
 যথোচিতং । ততোऽধুনা সন্নিধানে পলায়িতুমক্ষমঃ তদ্যথা
 ভয়িনং তদ্ববতু তাবদ্বিশ্বাসমুত্পাদ্যস্য সমীপমুপগ
 চ্ছামি ইত্যালোচ্য উপসৃত্যাব্রবীত । অর্থ্য ত্বামভি
 বন্দে । মধ্বোঃবদত্ কল্বং । সোঃবদত্ মার্জারোঃহং ।
 মধ্বোদ্রুতং দূরমপসর ন চেহন্তব্যোঃসি ময়া । মার্জারোঃ
 বদত্ শ্রুত্যাং তাবদসদ্বচনং ততোযদ্যহং বধ্যস্তদা
 হন্তব্যঃ । যতঃ । জাতিমাत्रেণ কিং কশ্চিদ্বন্যতে পূজ্যতে
 চ্যোচিতং । ব্যবহারং পরিজ্ঞায় বধ্যঃ পূজ্যোঃস্থবা ভবেত্ ॥ #

তাহার পর সেই বিড়ানকে আসিতে দেখিয়া পশ্চিমবান
 কেরা ভয়ান্ত্র হইয়া কোলাহল করিল তাহা শুনিয়া জরদ্ব
 বিড়ানকে কহিল এ কে আইসে । দীর্ঘকর্ণ শকুনিকে
 দেখিয়া ভয় হইয়া খেদেতে কহিল আমি নষ্ট হইলাম
 যেহেতুক ভয় যাবৎ না আইসে তাবৎপর্যন্ত ভয়কে ভয়
 করা উচিত ভয়কে আগত দেখিয়া মনুষ্য যেন উচিত
 হয় তাহা করিবেক । সেইহেতুক এখন নিকটে পলাইতে
 অসমর্থ তবে যে ভবিতব্য তাহা ইউক বিশ্বাস জন্মাইয়া

इहान्न समीपे गमनं करि । इहा आलोचनां करिया निकटे
 गिया बलिल हे श्रेष्ठ तौमाके अभिवादन करि शकुनि कहिल
 'क तुमि से कहिल बिडाल आमि शकुनि बलि ते छे दरे याँ
 यदि ना याँ तबे तौमाके आमि नुष्ट करिब नार्जार बलिल
 आमार बाका सुन तारुपर यदि आमि बध्यहँ तबे बध
 कर्तव्य येहेतुक कोथाय केँकि जातिनात्रेते बध्य किन्हा
 पूजा हय 'वावहार जानिया बध्य अथवा पूजा हय ।

whom perceiving, the little nestlings were greatly terri-
 fied, and began to be very clamorous; and their cries
 being heard by Jarad-gava, he asked who was coming.
 The cat Dirgha-karna, too, seeing the jackal, began to
 be alarmed, and so cried to himself,—Oh! I shall cer-
 tainly be killed,

For, we ought to be apprehensive of unforeseen danger,
 but when it falls in our way, we should do that, which
 we think, is proper.

For now that I am in his sight, it will not be in my
 power to escape! However, let what will be the conse-
 quence, I will approach him. So having thus resolved,
 he went up to the jackal, and said,—Master, I salute
 thee! Who art thou; demanded the jackal. Said he, I
 am a cat. Ah! wicked animal, cried the jackal, get thee
 at a distance, for, if thou dost not, I will put thee to
 death. Hear me for a moment, replied puss, and then
 determine whether I merit, either to be punished, or
 to be killed.

What, is any one, simply by birth, to be punished
 or applauded; when his deeds have been scrutinized,
 he may, indeed, be either praise-worthy or punishable.

does not for wealth is not then need words with him a / then
 করে না যদি বা ধন না থাকে তবে পুয় বাক্যেতেও অতিথি
 must be answered, he for a seat & a room & water & food =
 অবশ্য পূজ্য হন যেহেতুক আসন ও স্থান ও জল ও পুয় বা
 would these all a righteous man's house in such maintained is / not
 কা এ সকল সাধু লোকেরদের ঘরেতে কখন অপূর্ণ হয় না।

The jackal after this, desired the cat to give some account of himself, and he complied in the following words:—I am, said he, in the constant habit of performing ablutions on the side of this river; I never eat flesh, and I lead that mode of life which is called Brahmacharya. So, as thou art distinguished amongst those of thy own species, noted for skill in religious matters, as a repository of confidence; and as the birds here are always speaking before me in praise of thy good qualities, I am come to hear from thy mouth, who art so old in wisdom, and the duties of religion. Thou, master, art acquainted with the customs of life; but these young birds, who are in ignorance, would fain drive me, who am a stranger, away. The duties of a housekeeper are thus enjoined:

Hospitality is commanded to be exercised, even towards an enemy, when he cometh to thine house. The tree doth not withdraw its shade, even from the wood-cutter

And if there be no bread, the stranger should be entertained with kind words, and whatever can be spared, as in these lines:

Some straw, a room, water, and in the fourth place, gentle words: these things are never to be refused in good men's houses.

অপরঞ্চ । নিৰ্গুণেষ্বপি সত্ত্বেষু দযাৰ্জুৰ্ধন্তি সাধবঃ । ন
 হি সংহরতে জ্যোত্স্নাং চন্দ্রস্বাণ্ডালবেশ্মনি ॥ অন্যচ্চ ॥
 গুরুরগ্নির্দ্বিজাतीনাং বর্ষাণাং ব্রাহ্মণোগুরুঃ । পতিরেকোগুরুঃ
 স্ত্রীণাং সৰ্ব্বত্রাভ্যাগতোগুরুঃ ॥ অন্যচ্চ । অতিথির্যস্য
 ভগ্নাশোগৃহাৎ প্রতিনিবৰ্ত্ততে । স তস্মৈ দুष्কৃতং দত্ত্বা পুণ্য
 মাदाय গচ্ছতি ॥ অন্যচ্চ । উত্তমস্ত্যাপি বর্ণস্য নীচো
 পি গৃহমাगतঃ । পূজনীয়োযথা যোগ্যং সৰ্বদেবমযো
 ঽতিথিঃ ॥ গৃহোঽবদত্ত মার্জারোহি মাংসরুচিঃ পশু
 শাবকাশ্বাশ্চ নিবসন্তি তেনাহং एवं ব্রবীমি । তত্ শ্রুত্বা
 মার্জারোভূমি স্পৃষ্ট্বা কৰ্ণে । স্পৃশতি কৃষ্ণে কৃষ্ণে ব্রূতে চ
 ময়া ধর্মশাস্ত্র শ্রুত্বা বীতরাগেণ ইদং দুष्করং ব্রতং চান্দ্রা
 যণমধ্যবসিতং । যতঃ । পরস্পরং বিবদমানানামপি ধর্ম
 শাস্ত্রাণাং অহিংসাপরমোধর্ম ইত্যত্রৈকমতং । *❀*

আর সল্লোকেরা নিগুণপুণিতেও দয়া করেন এই নিমিত্তে
 চন্দ্র চণ্ডালগৃহে পতিতজ্যোৎস্নাকে অপহরণ করেন না। অপর
 ব্রাহ্মণকৃত্রিয় বৈশ্যের অগ্নি গুরু ব্রাহ্মণ কৃত্রিয় বৈশ্য শূদ্রের
 ব্রাহ্মণ গুরু স্ত্রীলোকেদিগের পতিই গুরু সকলবর্ণেতে
 অতিথি গুরু । এবং অতিথিনিরাশ হইয়া যাহার গৃহ হইতে
 কিরিয়া যায় সে আপন পাপ তাহাকে দিয়া তাহার পুণ্য
 লইয়া যায় আর অধম বর্ণও যদি উত্তম বর্ণের ঘরে আইসে
 তবে সে যথোপযুক্ত পূজাহয় কেননা অতিথি সর্বদেবস্বরূপ

শকুনি বলিল বিড়াল নাংসকটি এখানে পক্ষির হান।
সকল আছে সেই নিমিত্তে আমি এই পুকার বলি। বিড়াল
তাহা শুনিয়া ভূমিস্পর্শ করিয়া দুই কর্ণস্পর্শ করিতেছে এবং
কৃষ্ণ কৃষ্ণ কহিতেছে আর কহিল আমি ধর্মশাস্ত্র শুনিয়া
বৈরাগ্যেতে দুষ্কর চান্দ্রায়ণ ব্রত অরাস্তকরিয়াছি যেহেতুক
অহিংসা উত্তম ধর্ম ইহাতে পরস্পর বিবদমান সকল ধর্ম
শাস্ত্রের সম্মতি আছে।

And in another verse it is said:

Good men extend their pity, even unto the most despicable animals. The moon doth not withhold the light, even from the cottage of a Chandala.

Again:

Fire is the superior of the Brāhmāns, the Brāhmān is the superior of the tribes, and the husband is the only superior of women; but the stranger is the superior of all.

The stranger, who turneth away from a house with disappointed hopes, leaveth there his own offences, and departeth, taking with him all the good actions of the owner.

To all this the jackal replied, cats have a taste for animal food, and above, is the residence of the young birds. It is on this account I speak to thee. The cat having touched her two ears, and then the ground, exclaimed,—I who have read books upon the duties of religion, and am freed from inordinate desires, have forsaken such an evil practice; and, indeed, even amongst those who dispute with one another about the authority of the Sāstrās, there are many by whom this sentence, *Not to kill is a supreme duty*, is altogether approved; as in this verse:

যতঃ । সৰ্ব্বে হিংসানিষ্টজাযে নরাঃ সৰ্ব্বে সহাস্ত্র য়ে ।
 সৰ্ব্বে স্যাস্থয়ভূতাশ্চ তে নরাঃ স্বৰ্গনাং মিনঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ এ
 ক এবমুহুহুর্মোনিধনে প্যনুযাতি যঃ । শরীরেণ সমং নাশং
 সৰ্ব্বে মন্যন্তু গচ্ছতি ॥ কিচ্ছ । যোঽন্নস্য যদা মাংস
 মুম্বয়োঃ পশ্যতান্তরং । একস্য লুণিকা প্রীতিরন্যঃ প্রাণৈ
 বিমুচ্যতে ॥ অপি চ ॥ মর্ন্তব্যমিতি যদুঃখং পুরুষস্যোপ
 জায়তে । শক্যতে নানুমানেন পরোঽপি পরিবৰ্ণিতুং ॥ শৃণু
 পুনঃ । স্বচ্ছন্দবনজাতিেন শাকেনাপি প্রপূর্য্যতে । অস্য
 দগ্ধোদরস্যার্থ্যং কঃ কুর্য্যাত্ পাতকং মহত্ ॥ এবে বিশ্বাস্য
 স মার্জ্জারঃ তরু কোটরে স্থিতঃ ততোদিনেষু গচ্ছত্স
 পলিশাবকানাক্রম্য কোটরমাহীন্য প্রত্যহং খাদতি যেষা
 মপত্যানি খাদিতানি তৈঃ শোকার্ত্তৈঃ ॥ ❀❀❀❀

যেহেতুক যে মনুষ্যেরা সকল হিংসাহিতে নিবৃত্ত হয়
 আর যে লোকেরা সকল সহ্য আর যে অনেকের আশ্রয়
 হয় সে মানুষ্যেরা স্বর্গগামী হয় । এবং ধর্ম্মই এক নিত্ব যে ন
 রিলেও সন্তোষীয় আর সকল শরীরের সহিত নাশকে পায়।
 অপর যে যাহার মাংস খায় এই দুইর অন্তর দেখে একের ক্ষণ
 নাড় তৃপ্তি হয় অন্য পাণে নষ্ট হয় । এবং মর্ন্তিতে হইল এই
 যে দঃখ লোকের হয় সে দঃখ পর অনুমানদ্বারা কহিতে
 পারে না । পুনর্বার শুন স্বচ্ছন্দে বনেতে জন্মে যে শাক তাহা

তে ও উদর পূরণ হয় তবে এই পোড়া পেটের নিমিত্তে কে
 মহাপাপ করে। সে মাজার এই পুকার বিশ্বাস জন্মাইয়া
 ঝুঙ্ককোটরে থাকিল। অনন্তর কিছু দিন গেলে পরে পক্ষির
 ছানারিদিগেকে ধরিয়া আপন কোটর মধ্যে আনিয়া পুতাহ
 খায়। যে পক্ষিরদের সন্তানের দিগকে খাইল।

Those who have forsaken the killing of all; those who are helpmates to all; those who are a sanctuary to all; those men are in the way to heaven.

Again:

There is one friend, even religion, who attendeth even in death; whilst all things else go to decay with the body. Behold the difference between the one, who eateth flesh, and he to whom it belonged! The first hath a momentary enjoyment, whilst the latter is deprived of existence!

So it is said,

A fellow-creature should be spared, even by this analogy: the pain which a man suffereth when he is at the point of death.

Hear this also:

Who would commit so great a crime against a poor animal, who is fed only by the herbs which grow wild in the woods, and whose belly is burnt up with hunger,

The cat by these means having satisfied him, he remained in the hollow of the tree with the jackal, and passed the time in amusing conversation; and the jackal told the young birds that they had no occasion to go out of the way.—After this, when many days had passed, it was discovered that the cat had, by degrees, drawn the little birds down into the hollow of the tree, and there devoured them; but when he found enquiry was about to be made by those, whose, young ones had been eaten,

বিলপদ্বিরিতস্ততোজিজ্ঞাসা সমারম্ভা তত্পরিজ্ঞায
মার্জ্জারঃ কোটরান্নিসৃত্য বহিঃ পলায়িতঃ পশ্চাৎ পশ্চি
মিরিতস্ততোনিরূপয়দ্বিস্তত্র তরুণোঢ়রে শাবকাস্থ্যোনি
প্রাপ্তানি । অনন্তরং তে জঘুঃ অনেনৈব জরদ্বয়েনাশ্মাক
শাবকাঃ স্বাদিতাদতি সর্বৈঃ পশ্চিমির্নিশ্চ্যত্য গৃধ্রোব্যা
ষাদিতঃ । অতোহং ব্রবীমি অজ্ঞাতকুলশীলস্যেত্যাदि ।
দ্রত্যা কল্যে স জম্বুকঃ স কোপমাছ মৃগস্য প্রথমদর্শনদিনে
भवानप्यज्ञাতकुलशीलएव तत् कथं भवता सह एतस्य
स्नेहानुवृत्तिरुत्तरोत्तरं वर्द्धते । यत्र विद्वज्जनो नास्ति
श्चाध्यस्तत्राल्पधीरपि निरस्तपादपे देशे एरण्डोपि द्रुमा
यते ॥ अन्यच्च । अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसां ।
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकं ॥

তাহারা শোকার্ত হইয়া রোদন করিতে ইতস্ততো জি
জ্ঞাসা করিতে লাগিল। বিভীল তাহা জানিয়া কোটরহইতে
নিগত হইয়া বাহিরে গলাইল। তাহার পর ইতস্তত অনুেষণ
করত গন্ধি সকল গন্ধিশাবকের অস্থি পাইল। অনন্তর
তাহারা কহিল এই জরদ্বয় আমারদিগের সম্ভানদিগকে
থাইয়াছে ইহা নিশ্চয় করিয়া সকল গন্ধিরা শকুনিকে নষ্ট
করিল অতএব আমি বলি অজ্ঞাতকুলশীলেরে বাস দেও
য়া উচিত নয় । সেই শৃগাল ইহা শুনিয়া ক্রোধেতে কহিল

হুগের পুথমদর্শনদিনে আপনিও অজ্ঞাতকুলশীল ছিলেন
 তবে কি পুকারে আপনকার সহিত ইহার উত্তর পুতির
 আধিক্য হইতেছে। আর শুন যেখানে পাণ্ডিত্যলোক নাই সে
 স্থানে অল্পবুদ্ধিলোকও পুশংসিত হয় যে দেশে বৃক্ষ নাই সে
 দেশে ভেরেণ্ডাও বৃক্ষ হয়। অপর ইনি আশ্রয় ইনি পর এই
 কথা কদা স্তব্ধকরণলোকেরদের হয় সচ্চরিত্রলোকেরদিগের
 পৃথিবীর সকল ব্যক্তিই আশ্রয়।

he slipped out of the hole, and made his escape. In the
 mean time, the bones of the young ones having been dis-
 covered in the hollow of the tree by the birds, who had
 been searching here and there, they concluded that their
 little ones had been devoured by the jackal, and so being
 joined by other birds, they put him to death. Where-
 fore I say,—*To one whose family and profession are
 unknown, &c.*

The jackal, having heard all this, replied in anger, —
 Hear me, thou fool! The first time thou wast seen by the
 deer, thy family and profession were unknown. How is it
 then that your mutual kindness and attention grow high-
 er and higher;

As in a waste the arunda tree is held dear by the
 people, so a smatterer in learning is respected amongst
 the illiterate.

*Is this one of us, or is he a stranger? Such is the enu-
 meration of the ungenerous; but to those, by whom libe-
 rality is practised, the whole world is but as one family.*

যথাযং মৃগোমম বন্ধুস্তথা भवानपि । मृगोऽब्रवीत् किं
 मननोत्तरेण सर्वैरेकत्र विश्रम्भालापैः सुखिभिः स्थीयतां ।
 यतः । न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः ।
 व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा ॥ काकेनोक्तमेव
 मस्तु अथ प्रातः सर्वे यथाभिमतदेशং गতাः एकदा निभृतं
 शৃगালো ब्रूते सखे अस्मिन् वনैकदेशे शস্যपूर्णচেতमस्मि
 तदहं त्वां नीत्वा दर्शयामि तथा क্রতে सति मृगः प्रत्यहं তত্ৰ
 গত্বা শস্যং লাভতি অথ চেতপতিনা চেত্ৰং দৃষ্ট্বা পাশোঘো
 জিতঃ অনন্তরং পুনরাগতো মৃগঃ পাশৈর্বৃদ্ধোঃচিন্তয়ত্ কো
 মা মিতঃ কালপাশাদিব ব্যাধিপাশাত্তাতুং সমর্থঃ মিত্রা
 দন্যঃ । অনন্তরং জম্বুকস্ত্রাণত্যা উপস্থিতোঃচিন্তয়ত্
 ফলিতা তাবদস্মাকং কপটপ্রবন্ধেন মনোরথসিদ্ধিঃ ॥

যেমন এই মৃগ আমার সখা তেমনি আপনিও আমার সখা ॥
 হরিণ বলিল এ উত্তরে কি পুয়োজন একত্র সকলে পুণয়ালী
 পেতে সুখে থাক যেহেতুক স্বভাবতঃ কেহকাহারও মিত্র নয়
 কেহো কাহারও শত্রু নয় কিন্তু ব্যবহারেতে মিত্র ও শত্রু হয়
 গারে কাক কহিল এই হউক অনন্তর পুভাতে সকলে আপন
 অভিলষিত দেশে গেল। এক দিবস নিজনে জম্বুক বলিতেছে
 হে মিত্র মৃগ এই বনের একপাশে শস্যপূর্ণ ক্ষেত্র আছে
 আমি তোমাকে লইয়া তাহা দেখাই ইহা কহিয়া তাহা করিলে
 পরে হরিণ পুতিদিন সেখানে যাইয়া শস্য খায়। অনন্তর ক্ষেত্র

देखिया केंद्रपति जाल योजित करिन तारार पर
 पुनर्बार भृग आसिया पाशेते बद्ध हईया चिन्ता करिन के
 आनाके यमपाशेते न्याय এই ব্যাধের পাশেইতে মিত্রবাতি
 রেকে পরিভ্রাণ করিতে শক্ত হয় । তৎপর জম্বুক সেখানে
 উপস্থিত হইয়া ভাবনা করিল এত দিনে আমার কাপট্যেতে
 মনোভিলাষ সিদ্ধ হইল ।

Wherefore, I say, be thou my acquaintance in the same manner the deer is. What is the use of all these replies; observed the deer. Let us dwell together, and spend our time happily in agreeable conversation.

There is no one the friend of another; there is no one the enemy of another: friends, as well as enemies, are created through our transactions.

So, at length, the crow said;—Let it be so.

Early in the morning they used to go abroad to those parts they liked best. One day the jackal said to the deer, in great secrecy,—In a particular part of this wood, my friend, there is a field full of corn, to which I will conduct thee, and which being performed accordingly, the deer used to go there every day to feed upon the corn; but, in time, this being discovered by the master of the field, he laid snares for him. After this, the deer coming there again, and being confined in the snares, thus reasoned to himself: who but a friend can deliver me from these snares of the huntsman, so like the snares of death. In the mean time, the jackal, having arrived at the spot, stopt short, and began to consider what he should do. So far, said he, my scheme has succeeded, and by means of these deceitful snares, my wishes will be accomplished in great abundance; for when he is cut

এতস্যোক্তব্যমানস্য মাংসাসৃগ্মিমাণি অস্যোনি
 ময়াবশ্যং প্রাপ্তব্যানি তানি বাহুল্যেন ভোজনানি ভবি
 ষ্যন্তি। মৃগস্তং দৃষ্টোচ্ছাসিতোব্রূতে সখ্যে ক্ষিণ্মি তাবন্মম
 বন্ধ্যনং সত্বরং ত্রায়স্ব মাং। যতঃ। আপস্তু মিত্রং জানীয়াত্
 যুদ্ধে শূরমৃগে শুচি। মার্থ্যাং স্ত্রীণ্যেবু বিত্তেষু ব্যসনেষু চ বাম্ভ
 বান্ ॥ অপরঞ্চ। উত্সবে ব্যসনে চৈব দুৰ্ভিক্ষে রাষ্ট্রবিপ্লবে।
 রাজদ্বারে শ্মশানে চ যস্তিষ্ঠতি স বাম্ভবঃ ॥ জম্বুকঃ
 পাশং বিলোক্য মুক্তরচিন্তয়ত্ দৃঢ়স্তাবদধং বন্ধ্যঃ ব্রূতে চ
 সখ্যে স্নায়ুনির্মিতপাশাস্তদ্য মদারকবারে কথমেতান্
 দন্তৈঃ স্পৃশামি মিত্র যদি চিত্তে নান্যথা মন্যসে তদা
 প্রভাতে যত্নবয়াবক্লব্যং তত্ কৰ্ত্তব্যমিতি। অনন্তরং সকাকঃ
 প্রদোষকালে মৃগমনাগতমবলোক্য ইতস্ততোঃস্নিগ্ধ্যন্।

যখন এইমূগের মাংস ছেদন করিবে তখন রক্তেতে লিপ্ত
 অস্তি আমি অবশ্য পাইব তাহাতে বিলক্ষণরূপে ভোজন
 হইবে। হরিণ তাহাকে দেখিয়া আহাদিত হইয়া বলি
 তেছে সখে শূগল আমার বন্ধন ছেদন কর শীঘ্র আমার
 রক্ষা কর যেহেতুক মিত্রকে বিপত্তিতে আর শরকে যুদ্ধেতে
 আর শুচিকে স্বার্থেতে আর নির্ধন হইলে ভাষাকেও বাসনে
 তে বান্ধবকে জানিবেক এবং উৎসবেতেও বাসনেতেও দুর্ভি
 ক্ষেতেও দেশোপদ্রবেতেও রাজদ্বারেতেও শ্মশানেতে যে

सहाय्य थाके সেই बाँझवांशुगाल পাশ देखিয়া बारबार चिन्ता
 करিল এইबন্ধन दृष्ट इईराहे आर कहितेहे हे मित्र एपाश
 छन्न रचित এইहेतुक आजि रविवारे कि पुकारे ईहा दন্তे
 मर्ष करिब सथा यदि अस्तुःकरणे অন্যपुकार ना मान তবে
 तুমि याहा कहिवा ताहा पुढाते आमार कहुवा । अनन्तर से
 काक सञ्जा काले मृगके आसिते ना देखिया इतस्तुत
 अन्वेषण करत ।

up, I shall get his bones all covered with flesh and blood.
 The deer was exceedingly glad to see him, and called
 out to him,—Friend jackal, pray gnaw my bonds asun-
 der, and speedily deliver me !

A friend may be known in adversity, a hero in battle,
 an honest man in a lone, a wife when riches are spent,
 and a relation in trouble.

He, who shares our dangers as well as our pleasures,
 who does not forsake us at the time of dearth or revo-
 lution, who accompanies us to the cemetery as well as to
 a court, is properly to be called a friend.

The jackal eyed the deer in his confinement again
 and again, and considered whether the knots were se-
 cure. These snares, my friend, observed he, are made
 of leather thongs, and it being Sunday, how can I touch
 them with my teeth; but, if it will suit thee, my friend,
 early in the morning I will do whatever may be thy wish.
 So having made this proposal, he went on one side, and
 laying himself down, remained silent.

In the mean time the crow, Söoböoddhěč, finding the
 deer did not come home, had gone about in search of
 him. At length he found him in this condition;

তথা বিধং দৃষ্টোবাচ সখে কিমেতৎ । সৃণেণোক্তং অবধী
 রিতসুহৃদ্বাক্যস্য ফলমেতৎ ॥ তথা চোক্তং । সুহৃদাং হিত
 কামানাং যঃ শৃণোতি ন ভাষিতং । বিপত্ সন্নিহিতা তস্য
 স নরঃ শত্রুনন্দনঃ ॥ কাকোব্রূতে স বশ্বকঃ ক্রাস্তো সৃণেণো
 ক্তং মন্মাংসার্থী তিষ্ঠত্যত্রৈব । কাকোব্রূতে উক্তমেব ময়া
 পূৰ্ব্বং । অপরাধোন মে ঽক্কোতি নৈতদ্বিশ্বাসকারণং । বিদ্যতে
 হি নৃশংসেभ্যোময়ং গুণবতামপি ॥ দীপনির্বাণগম্বশ্চ সুহৃ
 দ্বাক্ষমস্বম্বতীং । ন জিঘ্রন্তি ন শৃণ্বন্তি ন পশ্যন্তি
 গতাযুধঃ ॥ পरोক্ষে কার্য্যহন্তারং প্রত্যক্ষে প্রিয়বাদিন
 বর্জ্যং যেন্নাট্ট্যং মিত্রং বিষকুম্ভপয়োমুখং ॥ ততঃ কাকোদী
 র্ঘনিশ্বস্য অরে বশ্বক কিং ত্বয়া পাপকর্ম্মণা কৃতং ।

সেই পুকার দেখিয়া কহিল, তথা কি এ গুণ কহিল হে
 মিত্র মিত্রবাক্যের অবজ্ঞার ফল এই পণ্ডিতের। তাহা কহি
 য়াছেন হিতাভিলাষি মিত্র লোকেরদের কথা যে না শুনে
 তাহার বিপৎ অতিনিকট আর সে লোক শত্রুর আনন্দ
 জনক । কাক বলিতেছে, সে বশ্বক কোথায় আছে হরিণ
 কহিল সে আমার মাংস ভোজনের নিমিত্তে এই স্থানেই
 আছে কাক কহিতেছে আনি পূর্বেই কহিয়াছি আমার
 অপরাধ নাই এ বিশ্বাসের কারণ নয় যেহেতুক খল হইতে
 গুণবানের ও ভয় আছে আর শুন গতাযু লোকেরা পুদীপ
 নির্বাণের গন্ধ পায় না ও সুহৃৎ লোকের বাক্যও শুনে না

এবং অকল্পিত নামে নকলকে দেখিতে পায় না । আর
 অসাক্ষাতে কায়াহস্তা ও সাক্ষাতে পুয়বাদী এমন নিত্ৰকে
 তাগ করিবেক যেমন মুখেতে কিঞ্চিৎ দুগ্ধ বিষপরিত কন্তু
 পারে কাক দীর্ঘ নিঃশ্বাস ফেলিয়া কহিল ওরে বঞ্চক শৃগাল
 তুই পাপী কি করিয়াছিস ।

upon which he exclaimed,— what, my friend, is this the promise!— Is this the fruit of the word of a friend!

He who doth not hearken to the voice of a friend and well-wisher in adversity, is the delight of his enemies.

But where is that jackal, added the crow. Alas! said the deer, he is here anxiously waiting for my flesh! My friend, observed the crow, I foretold this from the beginning.

I am not to blame he was not a subject for confidence. From the cruel, even the virtuous have cause for apprehension.

He, whose life is nearly at an end, cannot perceive the swell of the burning wick, nor listen to the advice of his friends, nor can he see the star Arundhati.

A man should forsake such a friend as speaketh kindly to his face, and behind his back defeateth his designs: he is like a pot of poison with a surface of milk.

Saying this, he heaved a deep sigh, and cried, O deceitful wretch! what hath been brought to pass by thee, thou agent of wickedness!

যতঃ ॥ সংলাপিতানাং মধুরৈর্বচোভিমিথ্যোপচারৈশ্চ
 বশীকৃতানাং । আশাবতাং শ্রদ্ধতাঞ্চ লোকে কিমর্থিনাং
 বজ্জয়িতব্যমস্মি ॥ অন্যচ্চ ॥ উপকারিণি বিশ্বম্বে শুদ্ধ
 মতৌ যঃ সমাচরতি পাপং । তং জনমসত্যসম্ভং ভগবতি
 বসুধে কথং বহসি ॥ দুর্জনেন সমং সখ্যং প্রীতিঞ্চাপি ন
 কারয়েৎ । উষ্মোদহতি চাক্ষারঃ শীতঃ কৃষ্ণাযতে করং ॥
 অথ বা স্থিতিরিখং দুর্জনানাং ॥ প্রাক্ পাদয়োঃ পততি
 খাদতি পৃষ্ঠমাংসং কল্ণে কলং কিমপি রৌতি শনৈর্ধিধিষং ।
 হিঙ্গ্রং নিরূপ্য সহসা প্রবিশত্যশঙ্কঃ সর্বং খলস্য চরিতং
 মসকঃ কৰোতি ॥ দুর্জনঃ প্রিয়বাদী চ নৈতদ্বিস্মার
 কারণং । মধু তিষ্ঠতি জিহ্বায়ে হৃদি হালাহলং বিন্দং ॥

যেহেতুক নিষ্ঠে বাক্যেতে আলাপিত যে লোক আর
 মিথ্যোপচারেতে বশীকৃত যে লোক আর আশাযুক্ত ও
 শ্রদ্ধাযুক্ত যে যাচক ইহারদিগের যে বঞ্চনা করা সে কি ।
 অপর উপকারী ও বিশ্বস্ত ও নিম্নলান্তকরণ যে লোক
 তাহাতে যেব্যক্তি অধম্মাচরণ করে হে ভগবতি পৃথিবী
 মিথ্যা অভিসন্ধি সে লোকে কি পকারে ধারণ করিতেছ ।
 আর দুষ্টলোকের সহিত মিত্রতা করিবে না পীতি ও করিবে
 না কেননা তপ্ত অঙ্গারকে স্পর্শ করিলে হস্তদাহ করে আর
 শীতল অঙ্গার হাত কাল করো কিম্বা দুজনেরদের এই স্বভাব

আগে পায়তে পড়ে পশ্চাৎ পুষ্টেরমাংসখায় অল্পে কণেতে
 আশ্রয় মধুর শব্দ করে পশ্চাৎ হিঁদু নিকৃপণ করিয়া নিঃশঙ্ক
 হইয়া অকস্মাৎ পুবেশ করে নশা এইপুকারে সকলখন্দের
 চরিত্র ব্যক্ত করে। এবং দজ্জন অথচ পুয়বাদী এমন লোক
 পুত্যয়ের স্থান নহে যে নিমিত্তে তাহারদের জিহ্বাগে নখ ও
 হৃদয়ে বিষ আছে।

How hard is disappointment in this world, to such as have been deluded by fair words, to those, who by pretended services have been seduced into the power of their enemies, to the hopeful, to those who have faith, and to expectants!

O goddess Vāsōddhā! How supportest thou that treacherous man, who exerciseth his wickedness upon his innocent and confidential companion!

A man should not form any acquaintance, nor enter into any amusements, with one of an evil character: a piece of charcoal, if it be hot, burneth; and if cold, it blackeneth the hand.

Is not this, continued the crow, the character of bad men?

Before one's face, he falleth one's feet, behind, he biteth the flesh of one's back. In one's ear, doth he not softly hum his tune with wondrous art! And when he findeth a hole, fearless, he boldly entereth. Thus doth the gnat perform the actions of a deceitful man!

He, who is at the same time malevolent and eloquent, cannot be relied on, because his lips are as sweet as honey, and his heart as destructive as poison.

অথ প্রभाতে क्षेत्रपतिर्लगुडहस्तस्तत्प्रदेशं गच्छ
 काकेनावलोकितः । तमालोक्य काकेनोक्तं सखे मृ
 गमात्मानं मृतवत्संदर्श्य वातेनोदरं पूरयित्वा पादां
 स्तब्धीकृत्य तिष्ठ अहं तव चक्षुषी चक्षुषामि यदाहं शब्द
 करोमि तदा त्वमुत्थाय सत्वरं पलायिष्यसि मृगस्तथैव
 काकवचनेन स्थितः । ततः क्षेत्रपतिना हर्षात्फुल्ललोच
 नेन तथाविधमृग্যালोकितः आः स्वयं मृतोसि इत्युक्त्वा
 मृगं बन्धनान्मोचयित्वा पाशान् गृहीतुं सत्वेरोবভূব
 ততঃ কাকশব্দং শ্রুত্বা মৃগঃ সত্বরমুত্থায় পলায়িতঃ
 নমুদ্রিষ্য তেন ক্ষেত্রপতিনা দ্বিগ্ধেন লগুডেন শৃগালোদতঃ॥
 तथाचोक्तं । त्रिभिर्वर्षै स्त्रिभिर्मासैस्त्रिभिः पक्षैस्त्रिभि
 र्दिनैः । अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते ॥ *❀*

অনন্তর প্রাতঃকালে ক্ষেত্রপতি লাঠি হাতে করিয়া
 সেই স্থানে গমন করিতেছে ইহা বায়ন দেখিল ক্ষেত্র
 পালকে দেখিয়া কাক কহিল হেমিত্র মৃগ তুমি নিঃশ্বাস বদ্ধ
 করিয়া পেট ফলাইয়া পানকল স্থির করিয়া আপনাকে মৃত
 শরীরের ন্যায় দেখাইয়া থাক আমি তোমার চক্ষু ঠোটেতে
 করিয়া ঠোকরাই যখন আমি শব্দ করিব তখন তুমি উঠিয়া
 শীঘ্র পলাইয়া কাকের কথাতে মৃগ সেই পুকার থাকিল ।
 তাহার পর আহ্লাদেতে পক্ষিত নয়ন হইয়া সে ক্ষেত্রপতি
 সেই পুকার মৃগকে দেখিয়া আঃ আপনি মরিয়াছ ইহা

कहिया बक्कन छाड़ाईया जाल जड़ करिवार निनिष्ठे सहर
 हूँल अनसुर नृग काकेर शब्द सुनिया शीघ्र उठिया पलाईल
 पारे क्लेशपति मगेर उद्देशे क्लेषन करिल ये लखुड
 ताहाते शुगल नष्ट हूँल । पण्डितेरा ताहाई कहियाहेन
 अतास्त उहकट ये पाप उ पग्या तद्दारा ईह लोकेतेई
 तिन दिनेते किश्या तिन पक्षेते किश्या तिन मासेते ।
 किश्या तिनवसरेते कलभोग हय ।

About this time the owner of the field was seen coming, with a staff in his hand, and his eyes red with anger. So the crow, having considered what was to be done, said,—Friend deer, feign thyself dead, and stay quiet till I make a noise, and then get up and run away as fast as thou canst. The deer was now perceived by the master of the field, whose eyes sparkled with joy, but upon his approaching nearer, and thinking him dead, he exclaimed,—Ha! thou art dead of thyself from confinement, art thou; and having said so, he began to employ himself in collecting and bundling up his snares; and upon his moving to a little distance, the deer hearing the voice of the crow, started up in great disorder, and ran away. The master of the field, upon seeing this, flung his staff at him, which, by chance, struck the jackal, and so he was killed, and not the deer. It is said, that

A man reapeth the fruit of any extraordinary good or bad action in the space of three years, three months, three fortnights, or three days.

অতোঃহং ব্রবীমি ভক্তভক্তকথোঃ প্রোতিরিত্বাদি । কাক
 পুনরাহ। ভক্তিতেনাপি ভবতা নাহারোমম পুষ্কলঃ । ত্বয়
 জীবতি জীবামি চিত্রগ্রীবদ্রবানঘঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ তিরস্বা
 মপি বিশ্বাসোদৃষ্টঃ পুণ্যৈককর্মণাং । সতাং হি সাধুশীল
 ত্বাত্তচিত্রগ্রীবযোরিব ॥ কিञ্চ ॥ সাধোঃ প্রকোপিত
 স্যাপি মনোনাযাতি বিকিয়াং । ন হি তাপয়িতুং শক্যং
 সাগরাম্ভসৃণোল্কযা ॥ হিরণ্যকোব্রুতে চপলস্বং চপ
 লেন সহ স্নেহঃ সর্ব্বথা ন কৰ্ত্তব্যঃ ॥ তথাচোক্তং ॥
 মার্জারোমহিষোমেঘঃ কাকঃ কাপুরুষস্তথা । বিশ্বাসাত্
 প্রভবন্ত্যেতে বিশ্বাসস্তত্র নো হিতঃ ॥ কিञ্চান্যত্ শত্রুপক্ষো
 ভবানস্মাকাং ॥ উক্তম্ভৈতত্ ॥ শত্রুণা ন হি সন্দধ্যাত্ মুশ্চি
 ষ্টেনাপি সন্ধিনা । সুতন্ত্রমপি পাণীয়ং শময়ত্যেব পাবকং ॥

অতএব আমি বলি থাদ্য আর খাদকের যে পুণ্য নে আপ
 দেব কারণলঘুপতন নাগে কাক পুনর্বার কহিল তোমাকে
 আমি ভক্তন করিলে আমার তৃপ্তজনক আহার হইবে
 না। চিত্রগ্রীবেরন্যায় নিষ্পাপ তুমি বাঁচিলেই আমি বাঁচি।
 এও উত্তম লোকেরদিগের সাধু স্বভাবহেতুক পুণ্যাত্মা
 তির্য্যগোনিরদের ও বিশ্বাস দেখা গিয়াছে যেমন তোমার
 ও চিত্রগ্রীবের। আর সাধুলোক ব্রহ্ম হইলেও তাহার মন
 বিকারকে পায় না যেমন ঘাসের অগ্নিতে সমুদ্রের জল তপ্ত
 করিতে পারে না। হিরণ্যক বলিতেছে তুমি চপল চপলের
 সহিত পুণ্য কোনপুকারে কভব্য নয় পণ্ডিতের। ইহা কহি

^{am spoken at cat & buffalo & a ram & a crow & a man & a cow} ^{to compare} ^{x this}
 যাছেন নাজার ও মহিষ ও মেঘ ও কাক ও কাপুরুষ ইহার।
^{not only on your choice - welcome in all these conditions}
 বিশ্বাসেতে পুত্ত হয় এইহেতুক এ সকলেতে বিশ্বাস ভাল
^{is - more what will you} ^{in our} ^{enemies party - the}
 হৈ আর কি কহিব তুনি আমারদিগের শত্রুর পক্ষ। পণ্ডি
^{to the house land} ^{with alliance will not make - for} ^{very much heated} ^{which}
 তরা ইহা কহিয়াছেন সন্ধিহেতুক স্বয়ং আনিজিত দষ্ট বিপ
^{Not even fear} ^{under extinguished}
 ক্ষর সহিতসন্ধি করিবে না যেহেতুক অতিবড় উষ্ম যে জন
 সেও আগুন নির্বাণ করে।

Wherefore I repeat, *Harmony between the food and the feeder &c.*

To all this the crow replied,

In eating thee, I should not enjoy a plenteous meal.
But, like Chitrā-griva, I live but in thy life.

Even amongst brutes, confidence is perceived in those, in whose every action there is innocence: the innate disposition of the good doth not vary from the principles of integrity.

The mind of a good man doth not alter, even when he is in distress. the waters of the ocean are not to be heated by a touch of straw.

But friend crow, observed the mouse Hirānyākā, thou art an unsteady and inconstant animal, and one's affections should, on no account, be placed on such a character, as is declared in these lines:

A cat, a buffalo, a ram, a crow and a man of weak judgment, are excluded from confidence. it is not expedient to put any trust in them.

Besides, thou art on the side of our enemies, and on this head they say,

A man should not enter into alliance with his enemy, even with the tightest bonds of union. water made ever so hot, will still quench fire.

দুর্জনঃ পরিহর্ষব্যোবিদ্যচালকৃতোপি সন্ । মণিন
 ভূষিতঃ সর্পঃ কিমসৌ ন ভয়ঙ্করঃ ॥ যদশক্যং ন তচ্ছব
 যচ্ছক্যং শক্যমেব তত্ । নোদকে শকটং য়াতি ন চ নৈ
 র্গচ্ছতি স্থলে ॥ অপরঞ্চ ॥ মহতাপ্যর্থসারেণ যে
 বিশ্বসিতি শত্রুष । মার্য্যাসু চ বিরক্তাসু তদন্তং তস
 জীবনং ॥ লঘুপতনকোব্রূতে শ্রুতং ময়া সর্বং তথাপি মম
 চৈতাবান্ সঙ্কল্পঃ ত্বয়া সহ সৌহৃদ্যমবশ্যং করণীয়
 মिति নো চেদনাহারেণাত্মানং ব্যাপাদয়িষ্যামি ॥ তথা
 হি ॥ সৃষ্টবৎ সুখভেদোদুঃসন্ধানশ্চ দুর্জনো ভবতি ।
 সুজনস্তু কনকঘটবৎ দুর্ভেদশ্চাসু সম্ভেদঃ ॥ কিঞ্চ ॥
 দ্রবত্বাৎ সর্বলৌহানাং নিমিত্তান্মৃগপক্ষিণাং । ময়া
 স্তোভাচ্চ মূর্খাণাং সঙ্কতং দর্শনাৎ সতাং ॥ *❖*❖*

আর দৃষ্ট লোক বিদ্যাতে ভষিত হইলেও তাহাকে ভাগ
 করিবেক । কেননা মণিতে ভষিত যে সর্প সে কি ভয়দায়ক
 হয় না। এব° যাহা করিবার উপযুক্ত নহে তাহা করা যায় না
 আর যাহা করিবার যোগ্য তাহা অবশ্য করা যায় অতএব
 জলে শকট কখন ও যায় না এব° স্থলে নৌকা যায় না। অপর
 বড় উত্তম ধনহেতুক শত্রুতে এব° বিরক্ত স্ত্রীতে যে লোক
 বিশ্বাস করে তাহার জীবন সেইপযান্ত। লঘুপতন বলিতেছে
 আমি সকল শুনিয়াছি তথাপি আমার এই পতিজ্ঞা তোমার
 সহিত সখ্য অবশ্য কর্তব্য যদি মিত্রতা না কর তবে অন্য

পরেতে আপনাকে নষ্ট করিব । আর শুন মৃগের তল্য
 শ্লোক সুখেতে ভাঁগা যায় দুঃখেতে মিলান যায় না
 বণ ঘটের ন্যায় সৃজন দুঃখেতে ভাঁগা যায় সুখেতে
 মিলান যায় । আর সকল তৈজস পাত্রের দূবস্থ হেতুক এবং
 মৃগ ও পক্ষিরদের কোন কারণ হেতুক এবং নখের ভয় ও
 লোভ হেতুক এবং উত্তম লোকের দর্শন হেতুক মিলন হয় ।

Although one of an evil character speak kindly, that is no motive for his being trusted: the serpent is ornamented with a gem, but is he not to be dreaded?

And again;

That is not possible, which is impossible. That which is possible, is ever possible: a cart moveth not upon the waters, nor a boat upon dry ground.

He, who from his great affluence confides in an enemy; or in a wife, who does not love him, is at the brink of ruin.

I have heard every book upon these subjects, said the crow Lāghū-pātānakā, nevertheless my mind is impressed with this idea, that I must absolutely form a friendly acquaintance with thee; but if I should fail, after our separation I shall destroy myself. It is said, that those of an evil character are like an earthen pot,—easy to be broken, but hard to be re-united, and that those of a good character resemble a vessel of gold, which, though difficult to be broken, may easily be joined again. It is said,

Metals unite from fluxility; birds and beasts from motives of convenience; fools from fear and stupidity; and just men at sight.

পাতনকের এই সকল কথা শুনিয়া হিরণ্যক বাহিরে নির্গত
 হইয়া বলিল আমি তোমার অন্তর্যাক্ষে আত্মদিত
 হিনান। পণ্ডিতেরা ইহা কহিয়াছেন পুণ্যবান লোকেরদের
 মাক্ষণমস্ত্রের তুল্য সংযুক্তিতে আদিত পুণ্যকরক যে
 সজ্জনের বচন সে অন্তঃকরণে যেমন সুখদায়ক হয় তেমন
 স্বাম্মাত্মকে অতিশীতল জল করণকল্পান ও মুক্তামালা ও
 পুতোক অন্ন চন্দনলিগুহইলেও সুখ দেয় না।

The virtuous heart is cool like the cocoanut; the mean like plums, are soft without, but hard within.

Although friendship between good men be interrupted, still their principles remain unaltered: the stalk of the lotus may be broken, and the fibres remain connected. The qualities of a friend should be sincerity, liberality, bravery, constancy in joy and sorrow, rectitude, attachment, veracity.

Whom, then, but thyself shall I find endued with all these. Upon hearing this, Hērānyākā flipped out of his hole, and said,—Well, by the immortal water of thy words, I have even ventured out; for it is said,

Nor bathing with cool water, nor a necklace of pearls, nor anointing with sanders, yieldeth such comfort to the body oppressed with heart, as the language of a good man, cheerfully uttered, doth to the mind. To be surrounded with a good connexion is, amongst men of fair character, equal to the charm of attraction.

অন্যত্র ॥ রহস্যমেদোযাচ্চানৈদুর্য্যং চলচ্চিত্ততা ।
 জ্ঞানিঃসত্যতা দ্যুতমেতন্নিবস্য দূষণং ॥ অনেন বচন
 ক্রমেণ তদেকদূষণমপি ত্বয়ি ন লভ্যতে ॥ যতঃ ॥ পটুত্ব
 সত্যবাদিত্বং কথায়োগেন বুধ্যতে । অস্তম্যত্বমঘাপল্য
 প্রত্যলোকাবগম্যতে ॥ অপরঞ্চ ॥ অন্যথৈবহি সৌহার্দং দ্রব
 স্বচ্ছান্তরাত্মনঃ । প্রবর্ত্ততেঃন্যথা বাণী শ্রাব্যোপহৃতচে
 তসঃ ॥ মনস্যন্যদ্বচস্যন্যত্ কাৰ্য্যমন্যদুরাত্মনাং ।
 মনস্য কং বচস্যে কং কর্ম্মণ্যেকং মহাত্মনাম্ ॥ তদ্ববতু
 ভবতোভিमतমেব ইত্যুক্তা হিরণ্যকোমৈশ্যং বিধায় ভোজন
 বিশেষবৈবীচ্যসং সন্তোষ্য বিবরং প্রবিষ্টঃ বায়সোঽপি
 স্বস্থানং গতঃ ততঃপ্রভৃতি তয়োরন্যোন্যাচারপ্রদানেন
 কুশলপ্রশ্নের্বিশ্রম্মালাপৈশ্চ কালোঽতিবর্ত্ততে । *❀*

এব* নিজনেতে অভেদকপে ব্যবহার করা আর পুথনা আর
 নিষ্ঠুরতা আর মনের চাঞ্চল্য আর জ্ঞোধ আর মিথ্যাবাক্য
 আর দ্যুত-ভীড়া এই সকল মিত্রের দোষ এই বচনের অনুশা
 রেতে এক ও দষণ তোমাতে দেখি না। যেহেতুক কথার দ্বারা
 পটুতা ও সত্যবাদিত্ব জানা যায় আর চাঞ্চল্য অচাঞ্চল্য
 পুতকি বুঝা যায়। অপর কোনল অথচ নিম্নল চিত্তযাহার
 দিগের তাহারদের মিত্রতা এক পুকার হয় আর খলতাতে
 দুষ্ট-চিত্ত যাহারদের তাহারদের কথা অন্য পুকার হয় দুরাত্মা
 রদিগের মনে এক পুকার বাক্যেতে আর পুকার কর্ম্ম অন্য

पुकारमहाश्वरिद्वयः अङ्गकुरङ्गे वाह्यं वाक्येन तां
 क्रियाते एतावति । तौ नारः अभिमतं ईडकं हिरण्यक ईड
 कश्चिन्निद्रतां करिष्यन्तां । तदा समीपेन निद्रां
 लब्ध्वा करिष्यन्तां । पुनश्च ईडकं वाक्येन तां
 सेवैव विधिः एतद्वयं परस्परं आहारदानेनैव नन्दनं पुनश्च
 आनापेते कालं यापयन्ति ते ।

And in another place:

Betraying a secret, insolicitude, severity, insensibility, anger, want of veracity, gaming: all these are faults in a friend.

But of all these faults in due order, not one is to be found in thee. It is said,


Eloquence, and veracity of speech, are to be discovered by conversation; the being inimical with inconstancy or unsteadiness, may be perceived at sight.

The friendship of those, who are of a pure and gentle disposition, acteth one way; and that of those, whose hearts are affected with hollowness and deceit, another.

The wicked man says one thing, and does the very reverse; but a good man is the same in his actions and professions.

So Hirānyaka having promised his friendship, and entertained the crow with such provisions as he had, retired into his hole; and the crow also retired to his usual place of abode.

From that time, there existed a mutual friendship between them. Day after day passed away in making presents to one another of provisions, and the like; in reciprocal enquiries after each other's health, and in amusing conversation.

একদা লঘুপতনকো হিরণ্যকমাছ সখ্যে কষ্টতরলভ্যা
 হারমিদং স্থানং পরিত্যজ্য স্থানান্তরং গন্তুমিচ্ছামি।
 হিরণ্যকোব্রুতে মিত্র কা গন্তব্যং। তথাচোক্তং ॥ চক্ৰত্যে
 কোন পাदेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान्। मा समीक्ष्य परं स्थानं
 पूर्वमायतनं त्यजेत्॥ वायসোব্রুতে अस्ति सुनिरूपितस्थानं।
 हिरण्यको ऽवदत् किन्तत्। वायसोब्रुते अस्ति दण्ड
 कारण्ये कर्पूरगौराभिधानं सरस्तत्र चिरकालोपाज्जितः
 प्रियसुहृन्मे मन्थराभिधानः कच्छपोधार्मिकः प्रति
 वसति ॥ यतः ॥ परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकारं नृणां
 धर्मं स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मनः ॥ सद्य भोजन
 विशेषैर्मांसं वर्द्धयिष्यति हিরण्यकोऽप्याह तत्किमत्र
 वस्थाय मया कर्त्तव्यं ॥ **

"one day" "P. II" "to say" "the place in question"
 এক দিবস লঘুপতনক হিরণ্যককে কহিল এ স্থানে আহার
 লাভ বড় দুঃখের ইয় অতএব এ স্থান পরিত্যাগ করিয়া স্থান
 স্তরযাইতে ইচ্ছা করি হিরণ্যক বলিতেছে মিত্র কোথায় যাইব
 পাণ্ডিতের। এই পুকার কহিয়াছেন বুদ্ধিমান লোক এক পা
 য়েতে যাইবে এক পায়েতে থাকিবে অপর স্থান না দেখিয়া
 পরস্থান ত্যাগ করিবে না। কাক কহিতেছে বিলক্ষণ নির্ণীত
 স্থান আছে। হিরণ্যক বলিল সে কি কাক কহিল। দণ্ড
 কারণ্যেতে কপূরগৌর নামে এক সরোবর আছে তাহাতে
 আমার অনেক কালের পুয় মিত্র ধার্মিক মন্থরানামা কচ্ছপ

বাসকরে যেহেতুক পরের উপদেশে সকল লোকের পাণ্ডিত্য
 হয় কিন্তু ধৰ্ম্মেতে অনুষ্ঠান কোন মহাত্মার হয় অতএব সে
 উত্তম ভোজন দ্বারা আমাকে সম্বন্ধনা করিবেক । হিরণ্যক
 ও কহিল তবে আমি এখানে থাকিয়া কি করিব ।

One day the crow said to the mouse, friend Hiranyaka, provisions are very difficult to be procured in this place, wherefore I am about to abandon it, to repair to some other. Then, whither shall we go, demanded Hiranyaka. They say,

A wise man moveth with one foot, and standeth fast with the other. A man should not quit one place, until he hath fixed upon another.

Said the crow, there is a place well thought of. Where is it? replied the mouse, and the crow replied,—In Dandakaranya there is a river celebrated by the name Kar-puragow, where there resides my friend, by many years accumulated kindness, a tortoise of innate virtue, whose name is Manthara. It is said,

In giving advice to another, the experience of every one may be beneficial, but in religion, the proper example of some one of a very exalted mind.

He will treat us, added the crow, with a variety of choice fish. Hiranyaka then said, if I stay here, what shall I do; It is said,

যতঃ ॥ যস্মিন্দেখে ন সন্মানং ন বৃত্তির্ন চ বান্ধবঃ
 ন চ বিদ্যাগমঃ কস্মিন্ তং দেশং পরিবর্জयेत् ।
 ॥ অপরঞ্চ ॥ লোকযাত্রা ভয়ং লজ্জা দাঙ্গিণ্যং ত্যজ
 শীলতা পশু যত্র ন বিদ্যন্তে ন কুর্যাৎ তত্র সংস্থিতিং ॥
 ॥ অন্যঞ্চ ॥ তত্র মিত্র ন বস্তুখ্যং যত্র নাस्ति চতুষ্টয়ং ।
 ঋৎসাদাতা চ বৈদ্যস্ব শ্রোত্রিয়ঃ সজলা নদী ॥ ততোমা
 মপি তত্র নথ অথ বায়স্কত্র তেন মিत्रেণ সহ বিচিত্রা
 স্লাপৈঃ সুখেণ তস্য সরসঃ সমীপং যযৌ ততোমন্যরোদূরা
 দবলোক্য লঘুপতনকস্য যথোচিতমাতিথ্যং বিধায়
 মূষিকস্থাতিথিসত্কারং চকার ॥ যতঃ ॥ বালোবা যদি
 বা বৃদ্ধোযুবা বা গৃহমাগতঃ । তস্য পূজা বিধাতয়া
 সর্ব্বভাম্যাগতোগুরুঃ ॥ *~*~*~*~*~*~*

যেহেতুক যে দেশে সন্মান নাই ও বৃত্তি নাই ও বান্ধব নাই
 ও বিদ্যা নাই সে দেশ পরিত্যাগ করিবেক এবং লোকের গম
 নাগমন ও ভয় ও লজ্জা ও নিপুণতা ও দানশীলতা এই পাঁচ
 যে দেশে নাই সে দেশে বাস করিবে না । অপর হে সখা সে
 স্থানে বাস করা নহে যেখানে ঋৎসাদাতা আর চিকিৎসক আর
 বান্ধব আর সজল নদী এই চারি নাই অতএব আনাকেও সে
 স্থানে লহ । অনন্তর কাক সেই নিতের সহিত নানাপ্রকার

॥ नाप करित २ सुখে ते সেই সরোবরের निकटे গেলা পরে
 ॥ दूर दूर होते देखि गला लघुपतन केर उचित आतिथ्य करि गला
 ॥ बिकेर आतिथ्य करि गला ॥ ये हेतक बालक किंवा बृद्ध किंवा
 ॥ न। यदि घरे आईसे तबे ताहार सम्मान करिबेक ।

A man should abandon that country, wherein there is neither respect, nor employment, nor connexions, nor the advancement of science.

Again:

A man should not inhabit that country, through which persons do not travel, where there is no fear, nor shame, nor intelligent and liberal men.

A man should not reside in a place, where the following four things are not to be found, a creditor, Brahmans learned in the Vedas, a river full of water, and a physician.

So conduct me there also, added the mouse. The crow accordingly sat off with his friend, and as they amused the time, by conversing upon a variety of pleasing subjects, they arrived with ease upon the banks of the river. They were perceived at a considerable distance by the tortoise Manthara. He rose to receive them, and having first performed the duties of hospitality to Laghu-patanaka, he next extended them to Hira-nyaka; according to these lines:

Whether a child, or an old man, or a youth, he come to thy house, he is to be treated with respect; for of all men, thy guest is the superior.

L

অপরञ্চ ॥ গুরুরभिर्द্বিজাतीनां वर्णानां ब्राह्मणो
 गुरुः। पतिरेकोगुरुः स्त्रीणां सर्वत्राभ्यागतोगुरुः॥परञ्च॥
 उत्तमस्यापि वर्णस्य नोक्षোपि गृहमागतः । पूजनीयो
 यथायोग्यं सर्वदेवमयोऽतिथिः ॥ वायसोऽवदत् सखे
 मन्यर सविशेषपूजामस्मै विधेहि यतोऽयं पुण्यकर्मणां
 धुरीणः कारुण्यरत्नाकरो हिरण्यकनामा मूषिकराजः
 एतस्य गुणस्तुतिं जिह्वासहस्रद्वयेनापि यदि सर्पराजः
 कदाचित् कथितुं समर्थः स्यादित्युक्त्वा चित्रग्रीवोपा
 ख्यानं वर्णितवान् । मन्यरः सादরं হিরণ্যকং সंपূজ্যাছ
 ভদ্রান্তে আত্মনোনির্জর্জনবনাগমনকারণমাত্মাত্মমর্হসি।
 হিরণ্যকোঃবদত্ কথয়ামি শ্রুয়তাং ॥ *❖❖❖*

কেননা দ্বিজাতির অধি গুরু সকলবর্ণের ব্রাহ্মণ গুরু
 স্ত্রীলোকেরদিগের ভর্তাই গুরু সবত্র অতিথি গুরু। আর
 উত্তম জাতির গৃহে যদি অধম জাতি আইসে তবে
 তাহারও সম্মান করিবেক যেহেতুক অতিথি সবদেবতা
 স্বরূপ। বায়স কহিল হে নিত্ব মন্থর ইহার পূজা বিশেষরূপে
 করহ যেহেতুক ইনি পুণ্যবানেরদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ ও দয়ার
 সমুদ্র হিরণ্যক নাম। মূষিকরাজ ইহার গুণের সব সপেরদি
 গের রাজা অনন্ত দুইহাজার জিহ্বাতেও যদি কদাচিত্ কহিত

পারেন ইহা কহিয়া চিত্রগুবের বৃত্তান্ত কহিলেন । মন্তুর
আদরে হিরণ্যকে সম্মান করিয়া কহিলেন, তোমার মন্তুর
আর আপনকার নিজের বনে আসিবার কারণ কহিতে
যোগ্য হও । হিরণ্যক বলিল শুন কারণ আছে বলিতেছি ।

Fire is the superior of the Brāhmans, the Brāhman is the superior of the tribes, and the husband is the only superior of women; but the stranger is the superior of all.

Whether he, who is come to thy house be of the highest, or even of the lowest rank in society, he is worthy to be treated with due respect, for of all men thy guest is the superior.

Friend, said the crow to the tortoise, pray pay attention to this stranger; for he is the very axis of those who are famed for virtuous deeds. His name is Hiranyaka, the prince of mice, to celebrate whose great qualities, the chief of serpents may, sometimes, have occasion to employ a second thousand tongues. Having said this, he related the story of the pigeon Chitra-griva. The tortoise Manthara, having made respectful enquiries after his health, said to the mouse,—Be pleased to inform me of thy motives for quitting thy own uninhabited wilds; and Hiranyaka replied, I will recount them.

অস্মি চম্পকাভিধানায়াং মগধ্যাং পরিব্রাজকা
 বসন্তি তত্র চূড়াकर्णे নাম পরিব্রাট্ প্রতিবসন্তি সচ
 ভোজनावशिष्टभिक्षान्नसहितं भिक्षापात्रं नागदन्तके
 वस्थाप्य स्वपिति अहश्च तदन्नमुत्प्लुत्य प्रत्यहं भक्षयामि
 अनन्तरं तस्य प्रियसुहृद्वোणाकर्णेनामा परिव्राजकः
 समायात तेन सह कथाप्रसङ्गावस्थितो मम त्रासार्थं
 जर्जरवंशखण्डेन भूमिमताडयत् वीणाकर्णं उवाच सुखे
 किमिति मम कथाविरक्तोऽव्यासक्तो भवान् । চূড়াकर्
 ণেন উক্তং মিত্র নাহং বিরক্তঃ কিন্তু পশ্যায়ং মূষিকো মমা
 পকারো সদা পাত্রস্থং ভিক্ষান্নমুত্প্লুত্ব ভক্ষয়তি বীণা
 কৰ্ণেনাংগদন্তকং বিলাক্যাহ কথং মূষিকঃ স্বল্পবলো
 য়েতা বহুদূরমুত্থততি তদত্র কেনাপি কারণেন ভবিতব্যং ।

চম্পকানানে নগরোতে সম্মাসিতা বাস করে সেইখানে
 চূড়াकर्ण নামে এক সম্মাসী থাকে সে ভোজनावशिष्ट
 ভিক্ষান্নের সহিত ভিক্ষাপাত্র নাগদন্তকেতে অর্থাৎ হস্তি
 দন্তনির্মিত ডাঁড়াতে রাখিয়া শয়ন করে আমি লাকি
 রা সেই অন্ন পতিদিন খাই পরে তাহার গিয় মিত্র বীণা
 কর্ণ নামা সম্মাসী এক দিবস আইল তাহার সহিত কথা
 পুনর্বে উপবিষ্ট হইয়া আমার জ্ঞানের নিমিত্তে জর্জর
 বংশখণ্ডদ্বারা ভূমি তাড়ন করিতেছিল তখন বীণাকর্ণ কহি
 ল যে মিত্র কি আমার কথাতে বিরক্ত কেননা তুমি অন্য

নামা হইতেহ চড়াকর্ণ কহিল সখা আমি বিরক্ত নই কিন্তু
 দেখ এই উদ্ভুর আমার অপকারী না কিয়া সবদা পাত্রস্থিত
 ভিক্ষায় খায় বীণাকর্ণ নাগদন্তক দেখিয়া কহিল কিপুকারে
 অনু বলবান্ মুষিক এত দূরে লা কিয়া উঠে অতএব ইহাতে
 কোনহ কারণ থাকিবে । পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন ।

FABLE V.

Be it known, said he, that there is a city called Cham-
 pakavati, where many mendicants are wont to resort.
 Amongst the rest there was one, whose name was Chu-
 rākarna. This mendicant having placed the dish, con-
 taining what was left of the alms he collected, upon a fork-
 ed stick fixed in the wall, used to go to sleep, whilst I
 every day, contrived to jump from a distance, and devour
 the hoard. At length, one day his friend, another men-
 dicant, whose name was Vinākarna, came in, and whilst
 he was engaged with him, talking over various sub-
 jects, Churākarna, in order to frighten me away, struck
 the ground with a piece of a bamboo. This being observ-
 ed by Vinākarna, he said,—What, at present, thou
 art inattentive to my story, and employed about some-
 thing else. To this Churākarna replied, I am not inatten-
 tive to thy story. Behold what it is! this mouse is my
 plunderer. He is for ever devouring the meat I get by
 beging, out of that dish. Upon this, Vinākarna having
 examined the forked stick in the wall, said,—What, is
 it this little weak-looking mouse, who contrives to jump
 so very far; there must be some reason to account for
 this; as in the subject of these lines:

তথাচোক্তং অকস্মাত্‌যুবতী বৃদ্ধ' কেশেঘ্বাঙ্কয্য চুম্বতি ।
 পতিং নির্দয়মালিঙ্গ্য হেতুত্বং ভবিষ্যতি ॥ চূড়াकर्णः পৃচ্ছ
 তি কথমেতৎ । বীণাকर्णः কথয়তি অস্তি গৌড়োযে কৌশা
 ম্বীণামনগরী তस्याং চন্দনদাসনামা বণিক্‌ মহাধনো
 নিবসতি তেন পশ্চিমে বয়সি বর্ত্তमानेन কামাধিष्ठित
 চেতসা ধনদর্পাস্ত্রোলাবতী নাম্নী বণিকপুত্রী পরিণীতা
 সা চ মকরকেতোর্বিজয়বৈজয়ন্তীব যৌবনবতী বমূব
 স্‌চ বৃদ্ধপতিস্তस्याঃ সন্তোষায় নাभवत् ॥ যতঃ ॥ শশি
 নীব হিমার্ত্তানানাং ঘর্ম্মার্ত্তানানাং রবারিব । মনোন রমতে
 স্ত্রীণাং জরাজীর্ণেন্দ্রিয়ে পতৌ ॥ *❀*❀*❀*❀*

যুবতী স্ত্রী বৃদ্ধ পতিকে অকস্মাৎ নিতর আনির্জন করিয়া
 চূলে ধরিয়া চূষন করিল ইহাতে কারণ থাকিবে । চূড়াकर्ण
 জিজ্ঞাসা করিতেছে এ কি পুকার । বীণাকর্ণ কহিতেছে ।
 গৌড়দেশে কৌশাম্বী নামে এক নগরী আছে তাহাতে
 চন্দনদাস নামে বড় ধনী এক বণিক বাস করে সেই বণিক
 বৃদ্ধাবস্থাতে ধনমগ্নতা হেতুক কামপাড়িত হইয়া লীলাবতী
 নামে বণিকপুত্রীকে বিবাহ করিল সে লীলাবতী কম্পপের
 জয়পতাকার ন্যায় যৌবনবিশিষ্টা হইল সে বৃদ্ধ স্বামী
 তাহার সন্তোষের নিমিত্তে হইল না যেহেতুক হিমার্ত্তলোকে =

^{man says he} ^{is the mind} ^{convinced of such} ^{he} ^{hear}
 रदिगेर चन्दुकिरणेते যেমন মন তুষ্ট হয় না এবং ঘম্মাও
^{repulse on} ^{don't} ^{say on} ^{as mind} ^{pleased} ^{it} ^{not}
 নোকে রদিগের সখা কিরণেতে যেমন মন তুষ্ট হয় না
^{old husband} ^{an} ^{as man} ^{wife} ^{mind} ^{subject} ^{is not}
 তেমনি বৃদ্ধ পতিতে যুবতী স্ত্রীরদের মন সন্তুষ্ট হয় না ।

Without an apparent cause, a young woman by force draweth an old man to her, and kisseth him. When a husband is embraced without affection, there must be some reason for it.

Chuiākarna having demanded what this meant, Vinakarna related the following story:

FABLE VI.

IN the country which is called Gowr, there is a city, by name Kowsamvi, where dwelt Chandana-dama, a merchant of immense wealth. When in the last stage of life, his understanding being blinded by desire, by the glare of his riches he obtained for his wife Lilavati, the daughter of another merchant. She was youthful, and, as it were, the victorious banner of Makaraketu, the god of love, so her aged partner was ill calculated to be agreeable to her; for,

As the hearts of those who are pinched with cold, delight not in the rays of the moon; nor of those who are oppressed with heat, in the beams of the sun; so the heart of a woman delighteth not in a husband stricken in years.

। অন্যত্র ॥ পলিতেষ্বপি দৃষ্টেণ পুংসঃ কামামকামিতা ।
 মৈষজ্যমিব সন্যন্তে যদন্যমনসঃ স্ত্রিয়ঃ ॥ সচ বৃদ্ধষতি
 স্তস্যামতীবানুরাগবান্ ॥ যতঃ ॥ ধনাশা জীবিতাশা
 চ গুৰ্বী প্রাণমৃতাং সদা । বৃদ্ধস্য তরুণী ভার্য্যা প্রাণেभ্যো
 পি গরীয়সী ॥ অপি চ ॥ নোপভোক্তুং ন চ ত্যক্তুং শক্নোতি
 বিষয়ান্ জরা । অস্থি নির্দেয়নশ্চৈব জিহ্বা লেডি কেবলং ॥
 অথ সা লোলাবতী যৌবনদর্পাদতিক্রান্তকুলমর্য্যা দা
 কেনাপি বণিকপুত্রেণ সহানুরাগবতৌ বভূব ॥ যতঃ ॥ স্বা
 তং পিতৃমন্দিরে নিবসতির্য্যাত্নোৎসবে সঙ্কতিঃ গোষ্ঠীপুরুষ
 সন্নিধাবন্যমোবাসোবিদেশে তথা । সংসর্গঃ সহ পুংস্বলী
 মিরসত্রহৃত্তেৰ্নিজায়াঃ স্ত্রিঃ পত্যুর্বার্দ্ধকমীর্ষিতং প্রসবন
 নাশস্য হেতুঃ স্ত্রিয়াঃ ॥ *~*~*~*~*~*~*

আর পুরুষের মাংসাদি ললিত দেখিলে কাগের বিষয়
 কি যেহেতুক অনামনা স্ত্রী সে পুরুষকে ঔষধের তুল্য
 জানে । সেই বৃদ্ধ স্বামী তাহাতে অত্যন্ত অনুরাগী হইল
 যেহেতুক পুণিরদের ধনাশা এবং জীবিতাশা সর্বদা সঙ্গী
 পেকিয়া বড় হয় বৃদ্ধের যুবতী ভার্য্যা পুণিহইতে ও বড় হয়
 অপর বৃদ্ধ লোক বিষয়োপভোগ করিতে পারে না ও তাগ
 করিতে ও পারে না যেমন দস্তুরহিত কুকুর জিহ্বাতে করিয়া
 অস্থি কেবল আবাদন করে । অনন্তর সেই লোলাবতী
 যৌবন-মদেতে কুলাচার অতিক্রমণ করিয়া কোন বণিক

পত্রের সহিত অনুরাগিনী হইল । যেহেতুক কতৃৎ এবং
 পিতৃগৃহে বাস এবং যাত্রোৎসবে গমন এবং অনেক পুরুষের
 সন্নিধিতে বাস এবং বিদেশে বাস এবং ভুট্টা জীর সহিত
 বাস এবং আপন বৃত্তির বারবার ক্ষতি এবং পতির বান্ধক্য
 আর পতির দ্বিষা আর পতির পুবাস এই সকল জীলোকের
 নাশের কারণ ।

Again:

What name shall we give to the passions of men, when their hairs are turned grey; since woman, with their heart fixed on others, regard them as a nauseous drug.

But her old husband was exceedingly fond of her; according to these sayings:

The lust of wealth, and the hope of life, are ever of importance to man; but a youthful wife to an old man is dearer than life itself.

Again:

An old man, like a toothless dog, that still licks bone with his tongue, can neither enjoy his property, nor can he abandon it.

Nevertheless, Lilāvati, through the intoxication of youth, broke through the bounds of the honour of her family, and attached herself to a certain merchant's son.

Too much liberty whilst resident in her father's house, attending festive processions, appearing in company, in the presence of men contrary to propriety, the same in by-ways, and associating with women of bad character, are the immediate destruction of innate morals. Sporting with their husband's infirmities, too, is to women the cause of ruin.

মূষিকো বিবরমালোক্য বল্লোপবিষ্টস্নেহে ইহ কেনাপি
 কারণেণ ভবিতব্যং চক্ষুঃ বিচিন্ত্য পরিব্রাজকেনোক্তং কারণ
 স্তাত্ বাহুল্যাহনমেব ভবিষ্যতিতি ॥ যতঃ ॥ ধনবান্ বসন্ত
 যান্ লোকে সৰ্ব্বঃ সৰ্ব্বং সৰ্ব্বদা ॥ প্রভুত্বং ধনমূল্যং হি রাজা
 মপ্যুপজায়তে ॥ ততঃ স্থানিচমাদায় তেন বিবরং স্থানিত্বা
 চিরসঞ্চিতং মম ধনং গৃহীতং ততঃ প্রমুখিত্ব নিজশক্তিহীনঃ
 সত্বোৎসাহরহিতঃ স্বাহারমপ্যুত্পাদয়িতুমক্ষমঃ সত্রাসং
 মন্দং মন্দমুপসর্পন্ চূড়াকর্ণেनावলোকিতঃ ॥ ততস্নেনোক্তং ॥
 ধনেণ বল্লোপালোক্যো ধনাদ্ভবতি পণ্ডিতঃ ॥ পশ্যেৎ মূষিকং
 পাপং স্বজাতিসমতাং গতং ॥ কিঞ্চ ॥ অর্থেন তু বিহীনস্য
 পুরুষস্ত্যাল্পমেধসঃ ॥ ক্রিয়াঃ সৰ্ব্বাঃ বিনশ্যন্তি যীশ্মে কুস
 রিতো যথা ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*

মূষিক গর্ভ দেখিয়া বনেতে উপবিষ্টে হইয়াছে, অতএব
 ইহাতে কোনই কারণ থাকিবেক । কিঞ্চিৎ কাল চিন্তা
 করিয়া পরিব্রাজক কহিল ইহাতে কারণ পুত্র ধন
 হইবে । যেহেতুক লোকেতে সমস্ত সম্ভদা সকল ধনবান
 লোকেই বলবান কেননা রাজারদের ও পুত্রের ধন নষ্ট
 হয় তাহার পর সে সম্রাটী খসিয়া লইয়া বিবর খুঁড়িয়া
 আহার চিরকালের সঞ্চিত ধন লইল সেই অবধি আগুন
 শক্তিতে হীন ও উৎসাহরহিত হইয়া কাতরে মন্দ
 গমন করত আগুন আহার অর্জন করিতে অক্ষম হইলেন

In "F.N." same after but he ^{and} ~~obtains~~ ^{possesses} ~~wealth~~ ^{wealth} in 1000
 ইহা চড়াকর্ণ দেখিল অনন্তর সে कहिल লোক ধনেতে বল
^{wealth by learning is - this wicked mouse see}
 বান হয় ধনহাতে পণ্ডিত হয় এই পাণ্ডিত্য মৰিককে দেখে
^{new own species which has received - it by wealth differs}
 এখন আপন জাতিতুল্যতাকে পাইল। আর ধনেতে রহিত
^{little knowledge, name, like works destroyed are as in summer}
 অনুবন্ধি পুরুষের সমস্ত ক্রিয়া নষ্ট হয় যেমন গ্রীষ্ম কালে
^{low mean stream are under influence of sun destroyed are -}
 কুৎসিত নদী সকল জনরহিত হইয়া নষ্ট হয়।

And hence there must be some hidden cause for the extraordinary strength of this mouse. He considered for a moment, and at length determined that the reason must be in a hoard of wealth: for

In this world the wealthy are, every one, every where, and at all times, powerful. Riches are the foundation of preferment, and an introduction to the prince.

Having said this, a spade was brought, and my hole being dug open by that mendicant, the hoard which I had been accumulating for many years, was carried away. After this, day by day, my strength decreased, and having little power to exert myself, I was unable to procure even sufficient to support life; and in this condition as I was fearfully and feebly sculking about, I was observed by Churākārnā, upon which he repeated the following lines:

With wealth all are powerful; from wealth a man is esteemed learned. Behold this wicked mouse! see, how he is reduced to the natural level of his species!

Deprived of riches, all the actions of man of little judgment disappear, like trifling streams in the summer's heat.

॥ অপরঞ্চ ॥ যস্যার্থাস্তস্য মিত্রাণি যস্যার্থাস্তস্য
 বান্ধবাঃ । যস্যার্থাঃ স পুমান্লোকে যস্যার্থাঃ স হি
 ষাণ্ডিতঃ ॥ অন্যच्च ॥ অপুত্রস্য গৃহং শূন্যং সন্নিব্রতহিতস্য
 চ । মূৰ্খস্য চ দিশঃ শূন্যাঃ সৰ্ব্বশূন্যা দরিদ্রতা ॥
 অন্যच्च ॥ তানীন্দ্রিয়ান্যবিকলানি তদেব নাম সা
 বুদ্ধিরপ্রতিহতা বচনং তদেব । অর্থোঘাণা বিরহিতঃ পুরু
 ষঃ স এব অন্যঃ ক্লেণেণ ভবতীতি বিচित्रমেতৎ ॥ এতৎ
 সৰ্ব্বমাকৰ্ণ্য ময়াঃস্বলোচিতং সমাভাবস্থানমযুক্তং
 দ্রদানীং যচ্চান্যস্মৈ এতৎ বৃत्তান্তকথনং তদপ্যনুচিতং ॥
 যতঃ ॥ অর্থনাশং মনস্তাপং গৃহে দুষ্করিতানি চ । বন্ধন
 চাপমানञ্চ মতিনান্ন প্রকাশयेत् ॥ *❀❀❀❀

again who has wealth - to him all persons (only) friends who wealth
 অপার যাহার ধন আছে তাহার সকল লোক মিত্র যাহার ধন
 has to him all persons (only or relation) who wealth has in the world
 আছে তাহার সকল লোক বান্ধব যাহার ধন আছে লোকে
 that friend is - he who has in other in a friend - again the
 তে সেই পুরুষ যাহার ধন আছে সেই পণ্ডিত । আর পুত্রহি
 & poor man's household of house empty & only - and wife
 তের এবং উত্তম মিত্রব্রহিতের ঘর শূন্য ও মথের সকল দিক
 empty, poverty in empty - complete of man's i.e. was even not
 শূন্য দারিদ্র্য সর্ব শূন্য । অপার যে ইন্দ্রিয় অন্যথা করা যায় না
 these organs are, the same contrary is not that is a name - who know
 সেই ইন্দ্রিয় যে নাম অন্যথা করা যায় না সেই নাম যে বুদ্ধির
 by time is man that is money makes words mistaken & does
 প্রতিঘাত করা যায় না সেই বুদ্ধি যে বাক্যের প্রতিঘাত করা
 is at that money - what person wealth's interpretation with def
 যায় না সেই বাক্য যে লোক ধনের মন্তভাবে রহিত
 really man - to all time by doing another was no
 সেই পুরুষ আর সকল সময়েতে করিয়া অন্যপুকার হয়

এ কি আশ্চর্য্য। এই সকল শুনিয়া আমি আলোচনা করি
 লাম আমার এখানে অবস্থান উচিত নয় সম্প্রতি অন্য ব্যক্তি
 কে যে এই বস্তান্ত কহা সে ও অনুপযুক্ত যেহেতুক ধননাশ
 ও মনস্তাপ ও গৃহের মন্দচরিত্র ও পরকতৃক বঞ্চনা ও অপ
 মান এই সকল বুদ্ধিমান লোক পুকাশ করিবে না।

And again:

He who hath riches hath friends, he who hath riches
 hath relations; he who hath riches is a man of conse-
 quence in the world, he who hath riches is esteemed a
 learned man

The house of the childless is empty, and so is the heart
 of him, who hath no wife The mind of a fool is empty;
 and every thing is empty, where there is poverty.

They say also,

Those faculties are not injured This is a mere saying.
 That judgment is unimpaired. That also is but an ex-
 pression, for the moment a man is deprived of the com-
 fort of riches, he is quite another. Is not this curious?

Having heard all this, I looked about me, and resolved
 that it would not, by any means, be proper for me to
 stay there Neither by the bye is it proper that I should
 communicate my affairs to others, for,

A wise man should not make known the loss of fortune,
 any misdepractices in his house, his being cheated, nor
 his having been disgraced.

তথা চোক্তং ॥ আয়র্ষিত্তং গৃহচ্ছিদ্ৰং মন্থনৈথুন
 মেষজং । তপোদানাপমানম্ নব গোপ্যানি যত্নতঃ ॥ তথা
 চোক্তং । অত্যন্তবিমুখে দৈবে ব্যর্থং যত্নে চ পৌরুষে । মন
 স্থিনোদরিদ্রস্য বনাদন্যত্মকুতঃ সুখং ॥ অন্যচ্চ ॥
 মনস্বী ম্রিয়তে কামং কার্পণ্যং ন তু গচ্ছতি । অপিনি
 ধ্বাণমায়াতি নানলোয়াতি শীততাং ॥ কিচ্ছ ॥ কুসুম
 স্রাবকস্যেব হ্রদে বৃন্তী তু মনস্থিনঃ । সর্বেষাং মূর্ধ্নি বা
 তিষ্ঠেদ্বিশীর্ষ্যেদথ বা বনে ॥ যচ্চাত্রৈব যাজ্জয়া জীবনং
 তদতীতং গর্হিতং ॥ যতঃ ॥ বরং বিমবহীনেন প্রাণৈ সন্ত
 পিতোনলঃ । নোপচারপরিশ্রষ্টঃ ক্লপলঃ প্রার্থ্যতে জনঃ ॥

তাহা পণ্ডিতেরা বলিয়াছেন পরমায় অর্থ ধন আর গৃহ
 ছিদ্র আর মন্ত্রণা আর নৈথুন আর ঔষধ আর তপস্যা আর
 দান আর অপমান এই নয় যত্নেতে গোপন করিবেক। পণ্ডিত
 কতক তাহা উক্ত হইয়াছে দৈব অত্যন্ত বিমথ হইলে আর
 পুরুষনাথ্য ক্রিয়া ব্যর্থ হইলে দরিদ্রের বন ব্যতিরেক কোথা
 সখ অর্থাৎ অরণ্য মধ্যে বাস করা উপযুক্ত। অপর মনস্থি
 লোক মরে তথাপি কৃপণতাকে পায় না যেনন অগ্নি নিরাগ
 তাকে পায় তথাপি শিথিলতাকে পায় না। ১৫এবং মনস্থি
 লোকের পুস্তবকের ন্যায় দুই বৃত্তি সকলের নাথাত্তে

থাকে অথবা বনেতে বিশীর্ণ হয় । এই স্থানেতেই যে যা
 দ্বাতে পুণ ধারণ সে অত্যন্ত নিম্নিত যেহেতুক ধনহীন
 লোকের অগ্নিতে পুণ সমর্পণ করা ও ভাল উপচারহীন
 কৃপণ লোকের প্রার্থনা ভাল নয় ।

We should be careful not to divulge these nine things, age, wealth, domestic affairs, passion, medicine, devotion, gift, and injury.

They say, likewise;

When the frowns of fortune are excessive, and human endeavours are exerted in vain, where, but in the wilderness, can comfort be found for a poor man of sensibility.


A man of nice feelings willingly encountereth death, rather than submit to poverty. a fire meeteth extinction, before it will yield to be cold.

Again:

The fate of a man of feeling is, like that of a tuft of flowers, two-fold he may either mount upon the head of all, or go to decay in the wilderness.

To live despised is reprobated exceedingly. Hence,

It is better that the (funeral) fire should be blown up by the breath of life of a man deprived of riches, than that he should be solicited by the poor, when destitute of the means of relief.

অন্যত্র ॥ দারিদ্র্যাদ্বিয়মেতি ক্রীপরিগতঃ সত্বাৎ
 পরিভ্রম্যতে নিঃসত্বঃ পরিভূয়তে পরিभवান্নিर्वদমাपयते।
 निर्विघ्नः शुचमेति श्लोकनिहतो বুদ্ধ্যা পরিত্যজ্যতে নিर्वুद्धিঃ
 क्षয়মেत्यহোনিধনতা সৰ্ব্বাপদামাস্পদং ॥ কিञ্চ ॥ বরং
 মৌনং কাৰ্য্যং ন চ বচনমুক্তং যদনৃতং বরং লৌক্যং পুংসাং ন চ
 পরকলত্রাভিগমনং। বরং প্রাণত্যাগেন চ পিশুনবাগেধ্ব
 মিরুচিঃ বরং মিত্তাশিত্বং ন চ পরধনাস্থা দনমুখং ॥ বরং
 শূন্যা শালা ন চ তুলু পরোদুষ্টবৃষভঃ বরং বেষ্মা পত্নী ন
 পুনরবিনীতা কুলবধূঃ। বরং বাসোরণ্যে ন পুনরবिवেকা
 ধিপ পুরে বরং প্রাণত্যাগেন পুনরধমানামুপগমঃ ॥ অপি চ ॥
 সেবেব মানমখিলং জ্যোত্সেব তমোজরেব লাবন্যং। হরি
 হরকথেবদুরিতং গুণৈঃ শ্রুতমপ্যর্ধিতা হরতি ॥ *  *

এবং দরিদ্রতা হৈতক লজ্জা পায় পাণ্ডুলজ্জা লোক বনহইতে
 ভুঞ্জে হয় বলরহিত লোক পরাভত হয় পরাভবহইতে অজ্ঞান
 হয় অজ্ঞান জন শোক পায় পাণ্ডুলোক লোক বন্ধিহইতে ভুঞ্জে
 হয় বন্ধিভুঞ্জে লোক নষ্ট হয় অতএব দেখ কি আশ্চর্য্য দারিদ্র্য
 সকল বিপত্তির আশ্রয়। অপর বরং মৌনবৃত্ত করিবেক
 মিথ্যা বাক্য কহিবে না পুরুষের নপুংসকতা ও ভাল পরস্ত্রী
 গমন ভাল নহে পাণ ত্যাগ ও ভাল খলবাক্যে আসক্তি
 ভাল নহে তিক্ষা করিয়া ভোজন ও ভাল পরধনের আশা

দনসুখ ভাল নহে গৃহ শূন্য ও ভাল শ্রেষ্ঠ দুষ্ট বৃষভ ভাল
 নহে বেশ্যা পত্নী ও ভাল বিনয়রহিতা স্ত্রী ভাল নহে বনেতে
 ও বাস ভাল অন্যায়ি রাজার নগরে বাস ভাল নহে পুণ
 ত্যাগও ভাল অধর্মের সমীপে গমন ভাল নহে । আর
 যেমন সেবা সমস্ত মান হরণ করে আর যেমন জ্যোৎস্না
 অন্ধকার করে যেমন বৃদ্ধাবস্থা শরীরের কাস্তি নষ্ট করে
 আর যেমন বিষের ও শিবের কথা পাগ হয়ে এনি পুণ্যনা
 গুণসমূহকে হরণ করে ।

Again:

From poverty a man cometh to shame, and being over-
 whelmed with disgrace, he is totally deprived of power.
 Without power he is oppressed, and from oppression
 cometh grief. Loaded with grief, he becometh melanco-
 ly; and unpaired by melancholy, he is forsaken by rea-
 son, and with the loss of reason, he goeth to destruction.
 Alas! the want of riches is the foundation of every mis-
 fortune.

Again:

It is better to guard silence, than that the words, which
 are uttered should be untrue. It is better to be nothing,
 than to seduce the wife of another. It is better to aban-
 don life, than to delight in cruel conversation. It is better
 to live by begging one's bread, than to gratify the mouth
 at the expence of others.

Want maketh even servitude honourable; light, total
 darkness; beauty, deformity, and even the words of
 Hari, and Hara with a hundred good qualities, crimes.

ইতি বিমৃশ্য তৎ কিমহং পরপিণ্ডেনাত্মানং পোষয়ামি
 কষ্টং ভোতদপি দ্বিতীয়ং মৃত্যুদ্বারং ॥ যতঃ ॥ পল্লবগ্ৰাহি
 পাণ্ডিত্যং ক্রৈয়কীতস্ব মৈথুনং । ভোজনস্ব পরাধীনং তিস্রঃ
 পুংসাং বিভম্বনাঃ ॥ অন্যস্ব ॥ রোগী চিরপ্রবাসী পরান্ন
 ভোজী পরবাসশায়ী চ যজ্জীবতি তন্মরণং যন্মরণং
 সোऽস্য विश্রামঃ ॥ ইত্যালোচ্যাপি লোভাত্ পুনরপ্যর্থং
 গ্রহীতুং গ্রহমকরবং ॥ তথা চোক্তং ॥ লোভেন বুদ্ধি
 স্কলতি লোভোজনয়তে তৃষাং । তৃষার্চোদুঃখমাপ্নোতি
 পরবেহ চ মানবঃ ॥ ততোऽহং মন্দং মন্দমুপসর্প স্তেন
 বীণাকর্ণেন জর্জরবংশলুণ্ঠেন তান্ডিতস্বাচিন্তয়ত্ লুণ্ঠো
 হ্যসন্তুষ্ঠোনিযতমাভ্রদ্রোহী ভবতি । তথা চ । ❀

ইহা চিন্তা করিয়া আনি আপনাকে কি পরপিণ্ডে পোষণ
 করিব ও হে সে ও কষ্ট দ্বিতীয় যমদ্বার যেহেতুক পল্লব
 গ্ৰাহি পাণ্ডিত্য এবং বেতন দিয়া স্ত্রীসংসর্গ এবং পরাধীন
 ভোজন এই তিন লোকের বিভ্রম । অপর রোগযুক্ত
 ব্যক্তি ও চিরকাল প্রবাসী ও পরান্ন ভোক্তা ও পরগৃহে
 শয়নকর্তা ইহারাঙ্গের যে বাচন সেই মরণ যে মরণ সেই
 ইহারাঙ্গের বিরাম ইহা বিবেচনা করিয়া ও লোভ পুথুক্ত পুন
 র্বার ও ধন সংগ্রহ করিবার নিমিত্তে জ্ঞান করিলাম । পণ্ডি

তের। তাহা কহিয়াছেন লোভেতে বুদ্ধি চঞ্চল হয় লোভ
 তৃষ্ণাকে জন্মায় তৃষ্ণাপীড়িত মনুষ্য ইহলোকে ও পরলোকে
 দুঃখ পায়। অনন্তর মন্দঃ গমন করত আমি সেই বীণাকণ
 কতক জজ্বরবংশ খণ্ডদ্বারা তাড়িত হইয়া ভাবনা করি
 লাম লোভী ও অপরিবৃত্ত লোক অবশ্য আত্মঘাতী হয়

What then, shall I nourish myself with another's cake;
 This would be to open a second door to death. For,

When a man is in indigence, picking herbs is his phi-
 losophy, the enjoyment of his wife his only commerce,
 and vassalage his food.

Again

Death is life to him who is subject to sickness, who
 hath been long an exile, who liveth upon another's bread,
 or sleepeth under another's roof; for death easeth him
 of all his pain.

Having considered all this, I have again, through covet-
 ousness, made up my mind to accept of some of thy
 provisions. But it is said,

With covetousness reason departeth: covetousness
 engendereth avarice; and the man who is tormented
 with avarice experienceth pain, both here and hereafter.

Hence, after I had been struck with the broken piece
 of bamboo by Vinākarna, I began to consider, that the
 covetous were unhappy, and assuredly their own enemy.
 It is said,

সৰ্ব্বাঃ সম্যক্তয়স্কস্য সন্তুষ্টং यस্য মানসং । উপান
 দ্রুতপাদস্য ন তু চৰ্ম্মাবৃত্তেব ভূঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ সন্তোষামৃত
 তৃপ্তানাং যত্‌সুখং শান্তচেতসাং । কুতস্তদ্বনলুভ্যানামিত
 স্তেষ্টস্য ধাবতাং ॥ কিञ्च ॥ তেনাধীতং শ্রুতন্তেন তেন সৰ্ব্বমশ্রু
 তিতং । যেনাশাঃ পৃষ্টতঃ কৃত্বানৈরাশ্যমবলম্বিতং ॥ অপি
 চ ॥ অসেবিতেশ্বরদ্বারমদৃষ্টবিরহব্যয়ং । অনুক্তজীব
 বচনং ধন্যং কস্মাপি জীবনং ॥ যতঃ ॥ ন যোজনশতং দূরং
 বাধ্যমানস্য তৃষ্ণায়া । সন্তুষ্টস্য করপ্রাপ্তেৰ্যর্থং भवति
 नादरः ॥ तदत्रावस्थोचितं कार्यपरिच्छेदः श्रेयान् ॥
 उक्तञ्च ॥ क्रोधर्म्माभूतदया किं सौख्यं नित्यमरोगिता
 जगति । जन्तोः कः खेदः सद्भावः किं पाण्डित्यं परिच्छेदं

তাহা কহিয়াছেন যাহার মন পরিতুষ্ট তাহার সকল সম্পত্তি
 যেমন জুতাতে আবৃত পা। যাহার তাহার সমস্তই চক্ষুতে আ
 বৃত কিন্তু পৃথিবী চক্ষুতে আবৃত নহে । অপর পরিতোষ
 রূপ অন্তে তপ্ত অথচ শান্তান্তঃকরণ লোকেরদের যে সুখ সে
 সুখ ইত্যন্তো ধাবন করে যে ধনলোভিরা তাহারদের কোথা
 অর্থাৎ সে সুখ তাহারদের হয় না। আর সে অধ্যয়ন করিয়াছে
 শ্রবণ করিয়াছে সে সকল করিয়াছে যে লোক আশাকে প
 ক্ষাৎ করিয়া নৈরাশ্য অবলম্বন করে । এবং সে লোকের জী
 বন ধন্য যৎকর্তৃক ধনিদ্বার সেবিত না হয় ও বিরহদঃখ দৃষ্ট
 না হয় ও নপুংসক বাক্য কথিত না হয় যেহেতু ধনতৃষ্ণাতে
 লোকের শতযোজন ও দূর নয় সমুদ্রের হস্তস্থিত ধনেতে ও

आदर नाई সেইহেতুক এখানে আপন দশার উপযুক্ত কর্ম
করাই মঙ্গল। পাণ্ডিতেরা ইহা কহিয়াছেন সমসারে পুণিস্ত
ধর্ম কি এই পুণ্ডিতে উত্তর পুণি সকলে দয়া মুখ কি এই
পুণ্ডিতে উত্তর নবদা অরোগিতা মুখ কি এই পুণ্ডি উত্তর
সদাৰ পাণ্ডিত্য কি এই পুণ্ডি উত্তর সদসদ্বিবেচনা।

He, whose mind is at ease, is possessed of all riches. Is it not the same to one, whose foot is inclosed in a shoe, as if the whole surface of the earth were covered with leather?

Again.

Where have they, who are running here and there in search of riches, such happiness as those placid spirits enjoy, who are gratified at the immortal fountain of happiness?

All hath been read, all hath been heard, and all hath been followed by him, who having put hope behind him, dependeth not upon expectation.

Fortunate is the life of that man, by whom the door of the noble hath not been attended, by whom the pain of separation hath not been experienced, and by whom the voice of an eunuch hath not been heard.

Again:

To one, O Nārādā, borne away by the thirst of gain, a hundred Yōjanā appears not far, even after he hath the treasure in his hand.

It is good, then, to be entirely separated far from the usual occasions of life.

What is religion? compassion for all things which have life. What is happiness? to animals in this world, health. What is kindness? a principle in the good. What is philosophy? an entire separation from the world.

॥ তথা চ ॥ পরিচ্ছেদেহি পাণ্ডিত্যং যদাপন্বা বিপ
 ন্নয়ঃ । অপরিচ্ছেদকট্ট্রুণাং বিপদঃ স্যুঃ পদে পদে ॥ তথা
 হি । ত্যজেদং কুলস্যার্থে গ্রামস্যার্থে কুলং ত্যজেত্ । গ্রামং
 জনপদস্যার্থে স্বাভ্যর্থ্যে পৃথিবীং ত্যজেত্ ॥ অপরঞ্চ ॥ পা
 নীয়ং বা নিরায়াসং স্বাদন্নং বা ভয়োত্তরং । বিচার্য্য খলু
 পশ্যামি তত্ সুখং যত্র নির্বৃতিঃ ॥ ইত্যালোচ্যাহং নিঃস
 নবনগাগতঃ । যতঃ ॥ বরং বনং ব্যাঘ্রগজেন্দ্রেপিতং দুমাল
 যঃ পক্ষপল্লাম্ভভোজনং । তৃণানি শ্লথ্যা পরিধানবল্কলং
 ন বন্যনখ্যে ধনহীনজীবনং ॥ ততোঃ পক্ষ্যসমুৎপন্নবল্লোদয়া
 দনেন মিষেণাহং স্নেহানুচ্চ্যা অনুগ্রহীতঃ অধুনা পুণ্য
 বল্লোদয়াত্ ভবদাশ্রয়ঃ সর্গং নয়া প্রাপ্তঃ ॥

বিত্তেরা তাহা কহিয়াছেন বিন্দুদ্রবীতে ও যে সদসদ্বি
 বেচনা সেই পাণ্ডিত্য সদসদ্বিবেচনা রহিতের পক্ষে বিপত্তি।
 আর কামের নিমিত্তে এক জনকে ত্যাগ করিবেক গানের নি
 মিত্তে কলকে ত্যাগ করিবেক দেশের নিমিত্তে গ্রাম ত্যাগ করি
 বেক আপনার নিমিত্তে পৃথিবী ত্যাগ করিবেক অপর অন্য
 গ্রামপাণ্ড জনই বা ভয়ের পর স্বাদু অন্নই বা নিশ্চয় বিচার
 করিয়া দেখিতেছি সেই সুখ যাহাতে নিবাহি । এই পরামর্শ
 করিয়া আমি নিজের বনে আইলাম যেহেতুক বাঘ ও বহু
 হস্তিমেবিত অরণ্য ও ভাল বৃক্ষ আশ্রয় ভাল পক্ষ কল ও জন

আহার ও ভাল তৃণশায়া ও ভাল বৃক্ষের বাকল পরিধান ও
ভাল বান্ধব লোকের মধ্যে ধনরহিতের জীবন ভাল নহে।
তদনন্তর ও আমার পণ্যবলহেতুক এই মিত্রকত্ব গীতিতে
অমি অনগীত হইয়াছি ইদানী পণ্যবলের প্রকাশহেতুক
তোমার আশ্রয় আনার স্বগই প্লাপ্ত হইল।

The learned have said, that he is esteemed wise, who finds out resources in times of danger: and he, who is devoid of this qualification, meets danger at every step.

It is said,

A man may forsake one person to save a family, he may desert a whole family for the sake of a village, and sacrifice a village for the safety of the community, but for himself, he may abandon the whole world.

It is either water without labour, or sweet bread attended by fear and danger. I have examined this; and I plainly see, that is happiness, wherein there is ease.

So, having considered all this, I am come to an uninhabited wilderness, for,

It is better to dwell in a forest haunted by tigers and lions, the trees our habitation; flowers, fruits and water for food; the grass for a bed, and the bark of the trees for garments, than to live amongst relations, after the loss of wealth.

Wherefore, as long as the stock of virtue acquired by birth shall last, I will, with this true friend, be attached to thee by kind services, and by this single virtuous act, I may obtain that place in heaven, which is consecrated to friendship. They say,

যতঃ ॥ সংসারবিষবৃক্ষস্য ই অত্র রসবত্ফলে ।
 কাব্যামৃতরসাঙ্গাদঃ সঙ্গমঃ সুজনৈঃ সহ ॥ মন্থরত
 বাচ । অর্থাঃ পাদরজোপমাগিরিনদোবেগোপমং যৌবনং
 আয়ুষ্যং জলবিন্দুলোলচপলং ফেণোপমং জীবিতং । ধর্ম্য
 যোন করোতি গিন্দিতমতিঃ স্বর্গার্গলোদ্ধাটনং পশ্চাত্তা
 পযুতোজরাপরিগতঃ শোকান্নিনা দহ্যতে ॥ যুগ্মাভিরতিস
 শ্চয়ঃ কৃতসুস্যাযং দোষঃ । শৃণু । উপাভিজিতানাং বিত্তানাং
 ত্যাগএব হিরন্ময়ং । তডাগোদরসংস্থানাং পরোবাছদ্বা
 ম্বসাং ॥ অন্যচ্চ ॥ যদধোদধঃ চিত্তো বিত্তং নিচলানমিত
 ম্যচঃ তদধোনিলয়ং গন্তুং চক্রে পশ্চ্যানময়তঃ ॥ অন্যচ্চ ॥
 নিজসৌখ্যং নিরুন্ধানোয়োধনাজ্জনমিচ্ছতি পরার্থভার
 বাছোব লেশস্যৈব হি ভাজনং ॥ *❀*❀*❀*❀

যেহেতুক সংসার রূপ বিষবৃক্ষের রসাল ফল দুটি কাব্য
 রূপ অমৃতরসের আঙ্গাদন এক আর সুজনের সহিত মিলন
 এক । মন্থর কহিল ধন পায়ের ধুলার ন্যায় আর যৌবন পর্ষ
 তনদীর বেগের ন্যায় আর জল বিন্দু যেমন চঞ্চল এমনি অ
 স্থির পরিমায়ু আর জীবন কেণার ন্যায় ইহা জানিয়া যে মন
 বুদ্ধি স্বর্গের অর্গলের উদ্ধাটক যে ধর্ম্য তাহা না করে সেলোক
 পশ্চাৎ বন্ধাবস্থাপাশ হইলে তাপিত হইয়া শোকরূপ অগ্নি
 তে দহ হইয়াতনি অত্যন্ত সঞ্চয় করিয়াছিল তাহার এই দোষ
 শুন জনাশয় মধ্যস্থিত জনের বহনেতেই যেনন জল অধিক

হয় এমনি অর্জিত ধনের দানেতেই ধনের রক্ষা হয়। অপর
কৃপণ লোক নৃত্তিকাতে যে নীচেই ধন পৌঁতে সে আগেতেই
নীচস্থানে যাইবার নিমিত্তে পথ করে অপর আত্মীয় সুখ
নিরোধ করত যে লোক ধনাজন ইচ্ছা করে সে পরের
নিমিত্তে তার বাহকের ন্যায় কেবল দুঃখের ভাজন হয়।

Of the poisonous tree, the world, two species of delicious fruit are produced, poetry, whose taste is like the immortal juice, and the society of good men.

Riches are as the dust of the feet, youth like the rapidity of a river flowing down a hill, manhood like a drop of water, transient and unsteady, and human life like froth. He who doth not perform the duties of religion, with a steady mind, to open the bars of heaven's gate, will, hereafter, when smitten with sorrow, and bent down with old age, burn with the fire of contrition.

To all this the tortoise Mānthārā replied, Sir, your fault was this: you laid up too large a stock. It is said,

Giving away is the instrument for accumulated treasures: it is like a bucket for the distribution of the waters deposited in the bowels of a well.

He, who in opposition to his own happiness, delighteth in the accumulation of riches, carrieth burthens for others, and is the vehicle of trouble.

॥ অপরঞ্চ ॥ দানোপভোগহীনেন ধনেন ধনিনোযদি ।
 ভবামঃ কিমু তেনৈব ধনেন ধনিনোবচং ॥ অন্যঞ্চ ॥ অস-
 ম্মোগেন সামান্যং কৃপণস্য ধনং পরৈঃ । অস্ব্যেদমিতি সম্ব-
 দ্ব্যাহানো দুঃখেন গম্যতে ॥ তথাচোক্তং ॥ দানং প্রিয়বা-
 ক্ সহিতং জ্ঞানমগৰ্ভং ত্তমান্বিতং শৌর্য্যং । বিত্তং ত্যাগনিযুক্তং
 দুৰ্লভমেতচ্চতুষ্টয়ং লোকে ॥ উক্তঞ্চ ॥ কৰ্ত্তব্যঃ সজ্জযোনিত্যং
 কৰ্ত্তব্যোনাতিসজ্জযঃ পশ্য সজ্জযশীলোমৌ ধনুশা জম্বুকো
 হতঃ ॥ তাবাহতুঃ কথমেতৎ । মন্যরঃ কথয়তি অস্তি
 কল্যাণকটকে বাস্তব্যে ধৈর্যবোনাঙ্গা ব্যাঘঃ সচৈকদা
 মৃগান্বিশ্যমাণো বিম্ব্যাটধীং গম্বান্ ততঃশেন প্যাপা-
 দিতং নৃগমায়ায় গচ্ছতা ঘোরাক্রতিঃ শূকরোদৃষ্টঃ তেন
 ব্যাধেন মৃগং ভূমৌ নিধায় শূকরঃ শরেষাহতঃ ॥

এক দান ও উপভোগ রহিত ধনেতে যদি লোক ধনবান হয়
 তবে সেই ধনেতে আগারী ও ধনবান হই। অপর উপভোগ
 রহিত হইতুক কৃপণের ধন পর ধনের তুল্য ইহার এ ধন এই
 সম্বন্ধমাত্র আর ধন নষ্ট হইলে দুঃখতে আগনি ও নষ্ট হয়।
 পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন প্রিয় বাক্য সহিত দান ও অহঙ্কার
 রহিত জ্ঞান ও ক্রমায়ুক্ত শরতা ও দান নিযুক্ত ধন সংসারে
 এই চারি দুর্লভ। বিজ্ঞেরা কহিয়াছেন সর্বদা সঞ্চয় করিবেক
 কিন্তু অত্যন্ত সঞ্চয় করিবেক না দেখ অতিসঞ্চয়ী শরগাল
 ধনুতে নষ্ট হইল। সেই কাক ও মূষিক বলিল এ কি পুকার!

নহর কহিতেছে। কল্যাণকটক নামে গুণে ভৈরব নামে
ব্যাধ থাকে সে এক দিবস মৃগ অশ্বেষণ করত বিস্মাটবী
গেল। অনন্তর এক মৃগকে নষ্ট করিয়া নইয়া যাইতেছিল
ইতোমধ্যে এক ভয়ানকশরীরবরাহকে দেখিল পরে সেই
ব্যাধ হরিণকে ভণিতে রাখিয়া শরেতে ঐ শকরকে নারিল।

Another

If we are rich with the riches, of which we neither give
nor enjoy, we are rich with the riches, which are buried
in the caverns of the earth.

Without enjoyment, the wealth of the miser is the
same to him, as if it were another's. But when it is said
of a man, *he hath so much*, it is with difficulty he can
be induced to part with it.

Giving with kind words, knowledge without pride,
heroism accompanied by clemency, and wealth with li-
berality, are four excellences hard to be found.

It is said,

*A hoard should always be made, but not too great a
hoard. A jackal, through the fault of hoarding too
much, was killed by a Bow.*

How was this, demanded Hirānyaka; and Manthara
related the following story.

FABLE VII.

A certain huntsman, by name Bhairava, an inhabitant
of Kalyāna-kataka, being fond of flesh, once upon a
time went to hunt in the forests of the Vindhya moun-
tains, and having killed a deer, as he was carrying him
away, he chanced to see a wild boar of a formidable
appearance. So laying the deer upon the ground, he
wounded the boar with an arrow;

শূকরেণাপি ঘনঘোরগর্জনং কৃत्वा ব্যাধস্য মুক্ধদেশে হতঃ
 ব্যাধশ্চিক্নদ্ভ্রমদ্রব ভূমৌ নিপপাত ॥ যতঃ ॥ জলমগ্নিবিপং
 শস্ত্রং চুদ্ব্যধীপতনং গিরেঃ নিমিত্তং কিঞ্চিদাসায দেহী প্রা
 ণান্ বিমুञ্চতি ॥ অথ তयोঃ পাদাঙ্গালনেন সর্পেণি স্মৃতঃ
 অথানন্তরং দীর্ঘরবো নামা জম্বুকঃ পরিধমন্নাহারার্থী
 তান্মৃগান্মৃগব্যাধসর্পশূকরান্ অপস্যত্ অচিন্ত্য চ ব্রহ্ম
 অয় মহভ্ৰো উয় মে সমুপস্থিতং ॥ অথবা ॥ অচিন্তিতানি
 দুঃখানি যথৈবায়ান্তি দেহিনাং । সুস্থান্যপি তথা মন্যে
 দৈবমত্রাতিরিচ্যতে ॥ তদ্বদতু এষাং মাংসৈর্ভাসত্রয়ং মে
 সুখেণ গমিষ্যতি ॥ উক্তাশ্চ । মাংসমেকং নরো যাতি দ্বৌ মাংসৌ
 সৃগশূকরৌ । অহিরেকং দিনং যাতি অয় মচ্ছ্যো ধনুর্গুণঃ ।

শূকর ও তর্জন গর্জন করিয়া ব্যাধের অঙ্কোয়ে মারিল ব্যাধ
 ছিন্নবৃক্কের ন্যায় ভূমিতে পাড়িয়া মরিল। যেহেতুক জন কিসা
 অগ্নি কিসা বিষ কিসা শস্ত্র কিসা ক্ষুধা কিসা রোগ কিসা
 পর্ষতহইতে পতন ইত্যাদি যৎকিঞ্চিৎ নিমিত্ত পাইয়া জীব
 পাণত্যাগ করে। অনন্তর বরাহ ও ব্যাধের পা আছড়ানেতে
 এক সর্পও মরিল। তাহার পর দীঘরব নামে শূগল আই
 রের নিমিত্তে ভ্রমণ করত মৃত সেই মগ ও ব্যাধ ও সর্প ও
 বরাহকে দেখিল এবং চিন্তা করিল কি আশ্চর্য্য আজি বড়
 খাদ্যদ্রব্য আগার উপস্থিত হইল কিসা পাণিরদের দুঃখ
 চিন্তিত না হইলে ও যেমন আইসে তেমনি সুখ ও মানি

ইহাতে দৈবই অতিরিক্ত হন তাহা হউক সম্প্রতি ইহারদেহ
 নাশেতে আনার তিন মাস সুখেতে যাইবে আর ও কহিল
 মনষ্য এক মাস যাইবে নৃগ ও শকর দুই মাস যাইবে সর্প
 এক দিন যাইবে অদ্য ধনুর ছিলাভক্ষণ করিব।

but, upon his approaching him, the horrid animal set up a roar dreadful as the thunder of the clouds, and wounding him in the groin, he fell like a tree cut off by the axe.

For,

The body having encountered some efficient cause, water, fire, poison, the sword, hunger, sickness, or a fall from an eminence, is forsaken by the vital spirits.

By the violent agitation of their feet, a serpent was also killed.

In the mean time, a jackal, by name Dirgha-rava, prowling about in search of prey, discovered the deer, the huntsman, the serpent and the boar, and having observed them said to himself,—Here is a fine feast prepared for me.

As, to corporeal beings, unthought-of troubles arrive; so, in like manner, do blessings make their appearance. In this, I think providence hath extended them farther than usual.

Be it so, as long as with their flesh I shall have food to eat. The man will last me for a whole month, and the deer and the boar for two more; then the serpent will serve me a day; and let me taste the bow-string too.

ততঃ প্রথমবুভুক্ষায়ামিদং নিঃস্বাদু কোদণ্ডলগ্নং স্নায়ুব
 ম্ভনং স্নাদামীত্যুক্তা তথা ক্তে সতি দ্বিগ্নে স্নায়ুবম্ভনে
 উত্পত্তিতেন ধনুষা হৃদি নির্ভিন্নঃ সদীর্ঘরবাঃ পঞ্চত্বমা
 গতঃ। অতোহং ব্রবীমি কৰ্ত্তব্যঃ সঙ্কথোনিত্যমিত্যাदि।
 তথা চ। যদ্বদাতি যদশ্নাতি তদেব ধনিনো ধনং। অন্যে
 মৃতস্য ক্রাডন্তি দারৈরপি ধনৈরপি ॥ কিञ्च ॥ যদ্বদাতি
 বিশিষ্টেভ্যো যচ্চাশ্নাতি দিনে দিনে। তন্নে বিত্তমহং মন্যে
 সেত্বং কস্মাপি রক্তসি ॥ যা তু কিমিদানীমতিক্রান্তো পব
 র্জনে ॥ যতঃ ॥ নাপ্রাপ্যমভিবাঙ্কন্তি নষ্টং নৈচ্ছন্তি শো
 চিতাং আপতস্বপি ন মুচ্যন্তি নরাঃ পণ্ডিতবুদ্ধতঃ ॥ তত্ সখে
 সৰ্ব্বদা ত্বয়া সোক্তাহেন ভবিতব্যং ॥ যতঃ ॥ শাস্ত্রাণ্যধী
 ত্যাপি ভবন্তি মূৰ্খা যস্তু ক্রিয়াবান্ পুরুষঃ সবিদ্বান্।
 সুচিন্তিতম্বৈষধমাতুরাণাং ন নামমাत्रेण কৰোত্যরোগাং।

অনন্তর পুথন ক্ষুধাতে এই আশ্বাদনরহিত ধনুস্থিত চন্মের
 ছিল। এই ইহা করিয়া তাহা করিল। পরে স্নায়ুর বন্ধন ছিড়ি
 লে ধনু হৃদয়ে লাগিয়া। সে দীর্ঘরব পঞ্চত্ব পাইল। অতএব
 আমি বলি সঞ্চয় অবশ্য করিবেক কিন্তু, অতিশয় সঞ্চয়
 করিবেক না। তাহা কহিয়াছেন মৃত ব্যক্তির স্রোতেও ধনে
 তে অন্য লোকেরা ক্রীড়া করে অতএব যাহা দেও ও যাহা
 খাও সেই ধনবানের ধন অপর বিশিষ্ট পাত্রকে যাহা দেও
 আর প্রতিদিন যাহা ভোজন কর সেই তোমার ধন আমি

এই মানি নতুবা কাহার ও ভোগ্য ধন রক্ষা কর যাহা হউক
 সম্পত্তি যাহা হইয়াছে তাহার বগনে কি পুয়োজন যেহেতুক
 জ্ঞানি লোকেরা অপাণ্ড বস্তুকে অভিলাষ করিবেন। নষ্ট বস্তু
 কে শোক করিতে ইচ্ছা করিবে না। বিপত্তিতে ও নষ্ট হইবে
 না সেইহেতুক হে মিত্র তুমি নিরন্তর উৎসাহী হইবা যেহেতুক
 শাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়া ও মুখ হয় যেপুরুষ ক্রিয়া করে সেই
 পণ্ডিত যেমন সুচিন্তিত ঔষধনামমাত্রেরে রোগ দূর করে না ।

But, in the first place, let me try that which is the 'least savoury'. Suppose, then, I eat this catgut line which is fastened to the bow: saying so, he drew near to eat it; but the instant he had bit the gut in two, his belly was ripped open by the spring of the bow; and he was reduced to the state of the five elements.

Besides. What a rich man gives, and what he consumes, that is his real wealth, when he dies, other covetous men will sport with his riches, and with his women.





That I esteem wealth, which is given to the worthy, and what is, day by day, enjoyed; the rest is a reserve for one knoweth not whom.

Then, at present, what is the purport of this excessive use of the force of words to exemplify?

Men of philosophic minds do not long for what is not attainable, and are not willing to lament what is lost: neither are they wont to be embarrassed in times of calamity.

Follow this practice my friend and be content.

Those who have even studied good books, may still be fools. That man is learned, who reduceth his learning to practice. That medicine is well imagined, which doth, more than nominally, restore the health of the afflicted.

অন্যত্র ॥ ন স্বল্পমপ্যধ্যবসায়ভীরাঃ কৰোতি বিজ্ঞান
 বিধির্গুণং চি। অন্মস্য কিং হস্ততলস্থিতোপি প্রকাশয়ত্য
 র্মমিহ প্রদীপঃ ॥ তদত্র সখে দশাবিশেষে শান্তিঃ কর
 শীয়া এতদপ্যতিকষ্টং ত্বয়া ন মন্থব্যং ॥ যতঃ ॥ রাজা
 কুলবধূর্বিপ্ৰামদ্বিংশ পয়োধরাঃ স্থানম্ৰষ্টান শোভন্তে
 দন্তাঃ কেশানরানল্লাঃ ॥ ইতি বিজ্ঞায সতিমান্
 স্বস্থানং ন পরিত্যজেত্ । কাপুরুষবচনমেতৎ ॥ যতঃ ॥
 স্থানমুন্মজ্য গচ্ছন্তি সিংহাঃ সত্পুরুষাগজাঃ । তত্রৈব
 নিধনং যান্তি কাকাঃ কাপুরুষামৃগাঃ ॥ তথা চোক্তং ॥
 কোধীরস্য মনস্বিনঃ স্ববিষয়ঃ কোবা বিদেশস্তথা যং
 দেশং অযতে তমেব কুরুতে বাজপ্রতাপার্জিতং । যদ্বানস
 ল্লাঙ্গুলপ্রহরণঃ সিংহোবনং গাহতে তস্মিন্বেব হতদ্বিপেন্দ্র
 রুধিরৈস্তুষ্টাং হিনত্যাঙ্গনঃ ॥ *****

আর উৎসাহ রহিতের শান্তজ্ঞান অত্যন্ত ও গুণ করে না
 অন্ধের হস্তোপরি স্থিত ও পুদীপ কি ঘটপটাদি পুকাশ
 করে । সেই হেতুক এখানে হে নিত্র অবস্থা বিশেষে শান্তি
 কল্পব্য তুমি ইহা ও অত্যন্ত কষ্ট করিয়া জানি ও না যেহেতুক
 রাজা ও কুলদ্বী ও বাকগ ও মন্ত্রী ও মেঘ ও দন্ত ও চুল ও
 মনুষ্য ও নথ এ সকল স্থানচ্যুত হইলে শোভা পায় না ইহা
 জানিয়া বুদ্ধিমান লোক স্বস্থান পরিত্যাগ করিবেন। এ কাপু
 কয়ের বাক্য যেহেতুক সিংহ ও মৃগপুরুষ ও হস্তী ইহারা স্থান

ত্যাগ করিয়া যায় তাহাতেই কাক ও কাপুরুষ ও মৃগ ইহারা
 মরে । পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন বীরের ও পণ্ডিতের কি
 স্বদেশ কিবা বিদেশ যেদেশ আশ্রয় করে সেই দেশকেই
 বাহুবলেতে জয় করে দত্ত ও নখ ও লালন এই সকল অস্ত্র
 যে সিংহের সে যে বনে যায় তাহাতেই নষ্ট হস্তীশ্রেণীর রক্ত
 করণক আপনার পিপাসা নিবৃত্তি করে ।

The precepts of philosophy effect not the least benefit to one confirmed in fear. To a blind man, of what use is a lamp, although it be burning in his hand?

After all, added the tortoise, it is best to be satisfied in this region of good and evil destiny.

I cannot agree to that, replied Hiranyaka.

Since it is written:


A prince, a woman of high rank, a priest, a counsellor, a cloud, teeth, men, hair, and nails, never prosper by leaving their native places.

Conscious of this, the wise never quit their native country. This however, is the speech of a weak man, replied Manthara.

Since others write:

Lions, elephants, and brave men, leave their country and prosper; while ravens, cowards, and deer remain in theirs, and perish.

To a hero of a sound mind, what is his own, and what a foreign country; wherever he halteth, that place is acquired by the splendour of his arms. He quencheth his thirst with the blood of the royal elephant, even in the forest, which the lion teareth up with his teeth, and his claws the weapons of his feet.

অপরञ्চ ॥ নিপানমিব মण्डूकाः सरःपूर्णमिवाण्डजाः
 सोद्योगं नरमायान्ति विवशाः सर्वसम्पदः ॥ अन्यच्च ।
 सुखमापतितं सेवे दुःखमापतितं तथा । चक्रवत् परिवर्त-
 न्ते दुःखानि च सुखानि च ॥ अन्यच्च ॥ उत्साहसम्पन्न-
 दीर्घমूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तं । शूरं कृतज्ञं दृढ-
 सौहৃদञ्च লক্ষীঃ স্বয়ং যাতি নিবাসহেতোঃ । বিশেষতश्च ।
 विनाप्यथैर्धीरः स्पृशति वज्रमानोन्नतिपदं समायुक्तो-
 प्यर्थैः परिभवपदं याति कृपणः । स्वभावादुद्भूतां गुण-
 सुदयोवापि विषयां द्युतिं सैर्हীं किं श्वा धृतकनकमा-
 लोपि लभते ॥ किञ्च ॥ धनवानिति हि मशोमे किं
 गतविभवोविषादमुपयामि । करनिहितकन्दुकसमा-
 पातोत्पातामनुष्णाणां ॥ *

অপর যেমন বেঁগ সকল কুণ্ডিতে যায় আর যেমন মণ্ডুকা-
 দি জলপূর্ণ জলাশয়ে যায় এমনি সকল সম্পত্তি অবশ্য হই-
 য়া উদ্যোগি মনুষ্যকে পায় আর আগত সুখকে সেবা করি-
 বেক এবং আগত দুঃখকেও সেবা করিবেক যেহেতু দুঃখ
 ও সুখ চক্রের ন্যায় ভ্রমণ করে । অপর উদ্যোগবিশিষ্ট ও
 অটিক্রিয় ও কক্ষজাত ও ব্যসনেতে অসক্ত ও বীর ও কৃতজ্ঞ
 ও অনেকের মিত্র এতাদৃশ পুরুষকে লক্ষী আপনি বাস করি-
 বার কারণ পানাবিশেষে শূর পুরুষ ধনব্যতিরেকে ও অনেক
 সম্মানেতে উৎপাদপায় কৃপণ লোক ধনবান হইয়া ও পরা-

ভব পায় ইহাতে দৃষ্টান্ত স্বভাবেতে জাত অথচ গুণসমূহেতে
 পাপ্ত যে সিংহসম্বন্ধিকান্তি ইহা, কি কুকুর স্বর্ণমালা ধারণ
 করিয়া ও পায়। এবং ধনবত্তা পুষ্কু যে অক্ষর সে কি গত
 বিভব হইয়া ও বিষাদকে পায় অর্থাৎ বিষন্ন হইবে না কেন
 না মনুষ্যেরদিগের পড়া ও উঠা হস্ত স্থিত ভেটার ন্যায়।

Again:

As frogs to the pool, as birds to a lake full of water;
 so doth every species of wealth necessarily flow to the
 hands of him who exerteth himself.

They say,

When pleasure is arrived, it is worthy of attention;
 when trouble presenteth itself, the same pains and plea-
 sures have then revolutions like a wheel!

Again:

Lakshmi herself attendeth a man in search of a resi-
 dence, who is endued with resolution, of noble princi-
 ples, acquainted with the rules of action, untainted with
 lawless pleasure, brave, a judge of merit, and of steady
 friendship.

Again:

A wise man, even destitute of riches, enjoyeth eleva-
 ted, and very honourable stations, whilst the wretch,
 endowed with wealth, acquieth the post of disgrace.

How can a dog, by running away with a necklace of
 gold, obtain the noble spirit of a lion, whose nature leads
 to the acquisition of eminent virtues?

Hear this, my friend, added the tortoise.

What, though thou wert rich and of high esteem, dost
 thou yield to sorrow, because of thy loss of fortune? The
 risings and sinkings of human affairs are like those of
 a ball, which is thrown by the hand.

অপরঞ্চ ॥ অম্রকায়া খলপ্রীতির্নবসখ্যানি যো
 পিতঃ । কিঞ্চিত্ কালোপভোগ্যানি যৌবনানি ধনানি
 চ ॥ অন্যঞ্চ ॥ ইত্যর্থং নাতিচেष्टেত সা হি ধাত্ৰৈব
 নির্মিতা । গৰ্ভাদুৎপত্তিতে জন্মৌ মাতুঃ প্রসুততঃ স্তনৌ ॥
 অপিচ ॥ সৰ্বৈ যেন শুক্লোক্তাহংসাঃ শুকাশ্চ হরিতো
 ক্তাঃ । ময়ূরাশ্চত্রিতা যেন স তে হ্যন্ত বিধাষ্যতি ॥
 ॥ অপরঞ্চ ॥ সতাং রহস্যং শ্রুণু মিত্র । জনযত্নজর্জনে দুঃখং
 তাপয়ন্তি বিপত্তিষু । মোহয়ন্তি চ সম্যক্তৌ কথমর্থ্যঃ
 সুখাবহাঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ ধর্মার্থং यस্য বিত্তেহা বরং তস্য
 নিরীহতা । প্রচাালনাহি পঙ্কস্য দূরাদস্পর্শনং বরং ॥
 যতঃ । যথা ছ্যামিষমাকাশেপল্লিभिः শ্বাপদৈর্ভুবি ।
 भक्ष्यते सलिले नक्रैस्तथा सर्वत्र वित्तवान् ॥ *❀*

এব° নেঘন্হায়া ও খলের পৌন ও নতন শস্য ও স্ত্রী ও
 যৌবন ও ধন এ সকল কিঞ্চিৎ কাল উপভোগের বিষয় ।
 অপর ধনের নিমিত্তে অত্যন্ত চেষ্টা করিবে না যেহেতুক
 বিধাতাই তাহা সৃষ্টি করিয়াছেন কেননা গভহইতে জীব
 জন্মিলেই মাতার দুই স্তনের দুগ্ধ করে এব° হে মিত্র যিনি
 হংসকে শুক্ল করিয়াছেন আর শুকপক্ষিকে হরিত্বর্ণ করি
 য়াছেন আর ময়ূরকে যিনি চিত্রিত করিয়াছেন তিনি তো
 মার বস্ত্রি বিধান করিবেন । আর হে মিত্র উত্তম লোকের
 দেব রহস্য শুন অথোপার্জনে দঃখ জন্মায় আর নষ্টেতে
 তাপ জন্মায় আর সম্পত্তিতে মোহ জন্মায় তবে অর্থ

কি প্রকারে সুখদায়ক হয় অপর ধন্যমানুষের নিমিত্তে
 যাহার ধনচেষ্টা তাহার নিশ্চেষ্টতা ভাল যেহেতুক কদমের
 পুষ্পালনহইতে দূরে থাকিয়া স্পর্শনা করা ভাল। যেহেতুক
 যেন পক্ষিরা আকাশে আনিষভোজন করে আর ব্যাঘ্রেরা
 পৃথিবীতে আর কুস্তীরেরা জলেতে ভোজন করে তেমনি
 এই সকল লোক ধনবান।

Observe,

The shadow of a cloud, the friendship of wicked men, new corn, women, youth, and riches, are to be enjoyed but for a short time.

Again:

Man should not be over-anxious for a subsistence, for it is provided by the creator. The infant no sooner dropeth from the womb, than the breasts of the mother begin to stream.

My friend:

He, by whom the geese were formed white, parrots are stained green, and peacocks painted of various hues,—even he will provide for their support.

Attend also, my friend, to these secrets of the wise men.

How are riches the means of happiness; in acquiring they create trouble, in their loss they occasion sorrow, and they are the cause of endless divisions amongst kindred!

It were a blessing, for the sake of virtue, if he, who hath a lust of gain, were deprived of desire Where there is a splashing of dirt, it is good not to meddle, and to keep far away

As meat is devoured by the birds in the air, by the beasts in the field, and by the fishes in the waters; so, in every situation, there is plenty.

অন্যত্র ॥ রাজতঃ সলিলাদগ্নেষ্ণারতঃ কুজনাদপি ।
 অমমর্ষবতাং নিত্যং মৃত্যোঃ প্রাণভূতানিব ॥ তথা হি ।
 জন্মানি লেখবদ্ধলে কিন্তু দুঃখমতঃ পরং দৃচ্ছা সম্যদ্য
 তোনাশ্চি যত্রচ্ছান নিবর্ততে । অন্যত্র ॥ ভ্রাতঃ শৃণু ।
 ধনং তাবদসুলভং লব্ধং কৃচ্ছ্রেণ রচ্ছতি । লব্ধনাশো
 যথা মৃত্যুস্তস্মাদেতন্ন চিন্তয়েৎ ॥ তৃষ্ণাং চেহ পারিত্য
 জ্ঞা কোদরিদ্রঃ কর্দ্বশ্বরঃ । তস্যাশ্বেত্ প্রসরোদত্তোদাস্যশ্চ
 শিরসি স্থিতং ॥ অপরশ্চ ॥ যদ্যদেবহি বাঙ্ক্রেত ততোবা
 জ্ঞা প্রবর্ততে । প্রাপ্তএবার্থতঃ সোর্থস্ততো বাজ্ঞা নিবর্ত
 তে ॥ কিং বজ্জনা মম পক্ষপাতেন ময়ৈব সহ্যত্র কালো
 নীযতাং ॥ যতঃ ॥ আমরণান্তাঃ প্রণয়াঃ কোপাস্তত্
 ক্ষণমঙ্গুরাঃ । পরিত্যাগাশ্চ নিঃসঙ্গাভবন্তি হি মহাত্মনাং ।

অপর রাজাইহতে এব° জনইহতে এব° অগ্নিইহতে এব°
 চৌরইহতে এব° খলইহতে ও ধনিরদের সর্বদা ভয় যেমন
 যনইহতে পুণিরদের সর্বদা ভয় এব° দুঃখসমূহ সংসারে
 ইহার পর দুঃখ কি যাহাতে ইচ্ছানুরূপ সম্পত্তি হয় না আর
 যাহাতে ইচ্ছা ও নিবৃত্তি হয় না হে ভ্রাতঃ আর শুন ধন অতি
 দুর্লভ ধন পাইলে কষ্টেতে রক্ষা হয় আর পাণ্ডধনের নাশ
 মৃত্যুতলা সে হেতুক ধন চিন্তা করিবেনা ধন বিষয়ে তৃষ্ণা
 পরিত্যাগ করিলে কে দরিদ্র কে ধনী যদি তৃষ্ণার স্থান দেয়
 তবে দাস্য মাথার উপর থাকে । অপর বিষয়কে যত বাঞ্ছা

करे ततई पुबुत हय विषय प्राप्त हईलेई ताहा हईते
बाह्या निबुति आर आमार अनेक पक्षपाते कि पुयोजन
आमारि सहित एथाने काल बापन कर येहेतुका उद्धम
लोकेर दिगेर पीति मरण पर्याप्त थाके आर क्रोध
अत्यन्त काले नष्ट हय आर परित्याग सङ्ग्रहित हय ।

The rich man hath cause of fear, from the magistrate, from water, from fire, from the robber, not less from his own people, even as from death the living.

In this life of many troubles, what pain is greater than this;—Desire without ability, when that desire turneth not away!

Man should consider this: that riches are not easily acquired, when acquired, they are with difficulty preserved; and that the loss of what hath been acquired, is like death.

Be not therefore anxious for wealth.

Were the thirst of gain entirely forsaken, who would be poor, who would be rich? If way were given to it, slavery would stand upon the head.

Whatever a man should long for, from that his inclination turneth away. He, whose inclination turneth away from an object, may be said to have obtained it.

But why so much upon this subject, let us beguile the time together in amusing conversation.

Men who are acquainted with their own nature, pass their days, until the period of death, in gladness, free from anger, in the enjoyment of the present moment, unmindful of the world, and free from apprehension.

ইতি শ্রুত্বা লঘুপতনকোব্রুতে ধন্যোসি মন্থর সর্বথা
 শ্লাঘ্যগুণোসি ॥ যতঃ ॥ সন্তেষব সতাং নিত্যমাপদুহর
 লঘুমাঃ। গজানাং পঙ্কময়ানাং গজাএব ধুরম্বরাঃ ॥ শ্লাঘ্যঃ
 সএকোভূবি মানবানাং সউত্তমঃ সতপুরুষঃ সধন্যঃ।
 যস্যার্থিনোবা শরণাগতাবা নাশাবিভঙ্গাবিসুখাঃ
 প্রযান্তি ॥ অথ তদেবন্তে স্বেচ্ছাহারবিহারং কুর্বাণাঃ
 সন্তুষ্টাঃ সুখং নিবসন্তি অথ চিত্রাঙ্গনামা মৃগঃ কৈনাপি
 ত্রাসিতস্তত্রাগত্য মিলিতস্ততপশ্চাদায়ান্তং মৃগসব
 লোক্য ভয়ং সঁচিন্ত্য মন্থরোজলং প্রবিষ্টোমূষিকশ্চ বিবরং
 গতঃ কাकोপি উড়ীয বৃদ্ধমারুঢ়স্ততোলঘুপতনকেণ
 সুদূরং নিরুপ্য ভয়হেতুর্ন কোপ্যাযাতিত্যালোচিতং পশ্চা
 ত্তদ্বচনাদাগত্য পুনঃ সর্ব মিলিত্বা তত্রৈবোপবিষ্টাঃ।

ইহা শুনিয়া লঘু পতনক কহিতেছে মন্থর তুমি ধন্য তুমি
 পুশংসিতগুণবিশিষ্ট যেহেতুক উত্তম লোকেরদের উত্তম
 লোকই বিপত্তারযোগ্য ইহাতে দৃষ্টান্ত পঙ্কপাতিত হস্তির
 হস্তাই উদ্ধারকর্তা। পৃথিবীতে মনুষ্যেরদের মধ্যে কেবল
 সেই পুতিষ্ঠিত সেই মহৎ সেই সৎপুরুষ সে ধন্য যাহার
 নিকটে যাচকেরা এবং শরণাপন্ন লোকেরা নিরাশ হইয়া
 বিমুখ হইয়া না যায়। অনন্তর তাহার। এই পুকারে আ
 পনং ইচ্ছাতে আহার বিহার করত সন্তুষ্ট হইয়া সুখেতে
 বাস করে পরে এক দিবস চিত্রাঙ্গনানী মৃগ কোন ব্যক্তি

কর্তৃক ভীত হইয়া সেখানে আসিয়া মিলিল পরে আগত
 মৃগকে দেখিয়া ভয় সম্ভাবনা করিয়া মম্বর জলে পুৰিষ্ট
 হইল আর উন্মুর গভ্রমধ্যে গেল আর কাক ও উড়িয়া বৃক্ষে
 আরোহণ করিল তাহার পর লঘুপতনক অতিদূর পর্যন্ত
 দেখিয়া ভয়ের কারণ কিছুই আইসে না ইহা আলোচনা
 করিল পশ্চাৎ কাকের বাক্যোতে সকলে পুনর্বার আসিয়া
 সেই স্থানে মিলিয়া বসিল।

O! thou art a worthy person, Manthara, observed the crow,—a place of confidence, and a being for protection!

The good are always ready to be the upholders of the good in their misfortunes Elephants even are wont to bear the burthens of elephants, who have sunk in the mire.

Again:

He is one in this world worthy to be praised of mankind, he is a great and a good man, from whom the needy, or those, who come for protection, go not away with disappointed hopes, and discontented countenances.

In this manner did they pass their time; and, contented with their particular food, they dwelt happily together.

After a while, one day a certain deer, by name Chitrangä, who had been alarmed by some one, came there with his heart panting with fear, and was joined by the rest; but as they expected that he was pursued by something, which had been the cause of his apprehensions, Manthara went into the water, the mouse into a hole, and the crow flew to the top of a tree. Lăghū-patanaka looked on all sides; and being satisfied respecting their fears, they all joined company again.

মন্যরেণোক্তং ভদ্রং মৃগ স্বাগতং স্বেচ্ছয়া উদকাচাধারণো
 নুভূয়তাং অত্রাবস্থানেন বনমিদং সনাথীক্রিয়তাং
 চিচাক্লোব্রুতে লুপ্তকত্রাসিতোহং ভবতাং শরণমাगतঃ
 ভবদ্বিঃ সহ সখ্যমিচ্ছামি । হিরণ্যকোঽবদত্ মিত্রং
 তাবদস্মাভিঃ সহ ভবতা যত্নেন মিলিতং ॥ যতঃ ॥ অৌ
 রসং কৃতসম্বন্ধং তথা বংশকমাগতং । রক্তিতং ব্যসনেভ্যশ্চ
 মিত্রং জ্ঞেয়ং চতুर्वিধং ॥ তদত্র ভবতা স্বমৃদহনির্ধিশেষ
 স্যোয়তাং । তচ্ছুত্বা মৃগঃ সানন্দোভূত্বা স্বেচ্ছাধারণং
 কৃত্বা পানীয়ং পীত্বা জলাসন্নতরুচ্ছায়াচামুপবিষ্টঃ
 অথ মন্যরেণোক্তং সখে মৃগ এতস্মিন্নির্জনে বনে কোন ত্বং
 ত্রাসিতঃ কদাচিত্ কিং ব্যাধাঃ সঞ্চারন্তি । মৃগেণোক্তং

মহর কহিল হে মৃগ সুখেতে আইনে ইহা জিজ্ঞাসিয়া
 কহিল আপন ইচ্ছাতে জল তৃণাদি আহার করহ এ স্থানে
 অবস্থান করিয়া এই বনকে সন্মানিক করহ চিত্তাক্র বনি
 তেছে আমি ব্যাধকর্তৃক ত্রাসিত হইয়াছি আপনকারদের
 শরণাগত হইলাম আপনকারদিগের সহিত সখা ইচ্ছা করি
 তেছি । হিরণ্যক বলিল হে মিত্র তুমি আগারদিগের সহিত
 অনেক কষ্টেতে মিনিয়াছ যেহেতুক মিত্র চারি পুকার হয়
 তাহা কহিয়াছেন ঔরস অর্থাৎ পুত্রাদি আর কৃতসম্বন্ধ
 অর্থাৎ যাহার সহিত মিত্রতা করা যায় পক্ষবানকৃগে
 মিত্র আর বামনহইতে রক্ষিত এইহেতুক আপনি এখানে

আপন গহের ন্যায় থাকুন তাহা শুনিয়া হরিণ আহাদিত
হইয়া আপন ইচ্ছাতে আহার করিয়া জল পান করিয়া
জল সন্নিধিতে বৃক্ষছায়াতে বসিল অনন্তর মস্থর কহিল
হে মিত্র নৃগ এই নিজন বনে কাহাকর্তৃক তুমি ভীত হইয়াছ
এ বনে কখন কি ব্যাধ আইসে নৃগ কহিল।

Health! friend deer, said the tortoise, thou art welcome
Mayst thou find provisions to thy heart's desire in this
situation! may this forest never be rendered the property
of a master!

To this the deer Chitrāṅgā replied,— I was alarmed
by a hunstman, and I am come to you for protection.
And I wish also to cultivate a friendship with you. Sir,
said the mouse,—Your friendship with us is accomplish-
ed without much trouble.

For,

Friends are said to be of four distinctions: one's own
offspring, a connexion, one descended from the same
genealogical series, and one whom we may have preserv-
ed from misfortunes.

So let us dwell together, added the mouse, without dis-
tinction. The deer, upon hearing this was rendered hap-
py. He ate of what was his usual food, and having drank
some water, he laid himself down in the shade of a tree
which grew in the stream. Friend deer, said the tortoise
Māntharā, by whom wert thou alarmed? What, are there
huntsmen coming to this desolate forest? There is some
very important news, said the deer, which I will com-
municate

অস্মি কলিঙ্গবিধয়ে স্বমাদ্ভদো নামা নরপতিদিগ্বিজয়
 ব্যাপারক্রমেণাগত্য চন্দ্রভাগানদীতীরে সমাবাসিত
 কটকোবর্ত্ততে প্রাতঃ তেনাভাগত্য কর্পূরসরঃ সমীপে
 ভবিতব্যমিতি ব্যাধানাং মুখাৎ কিম্বদন্তা শ্রুয়তে তদ
 ভাপি প্রাতঃবস্থানং ভয়হেতুকমিত্যালোচ্য যথাবসর
 কার্যমারম্ভতাং তচ্ছুত্বা কূর্মঃ সমমমাহ জলাশয়া
 ন্তরং গচ্ছামি । কা কষ্টগাবপি উক্তবন্তাবেবমস্তু । ততো
 । হরণ্যকোবিহস্যাহ জলাশয়ান্তরে প্রাপ্তে মন্থরস্র কু
 শলং স্থলে গচ্ছতঃ কঃ প্রতীকারঃ ॥ যতঃ ॥ অস্মাংসি
 জলজন্তুনাং দুর্গাং দুর্গনিবাসিনাং । স্বভূমিঃ শ্বাপদাদীনাং
 রাজ্ঞাং মন্ত্রী পরং বলং ॥ রথৈ লঘুপতনকানেনোপদে
 শেন তথা ভবিতব্যং । স্বয়ং বীক্ষ্য যথাবধ্বাঃ পীড়িতং
 কুচকুদ্রলং । বলিকপ্তব্রোভবেদঃসী ত্বং তথৈব ভবিস্যসি ॥

কলিঙ্গদেশে কলিঙ্গাদ নামে ভগীল আছেন তিনি দিগ্বিজয়
 করিতে আসিয়া চন্দ্রভাগা নদীর তীরে কটক সংগ্রহ করিয়া
 বাস করিতেছেন প্রাতঃ কালে তিনি আসিয়া কর্পূর সরো
 বর নিকটে থাকিবেন ইহা বাধের নথিতে জনশ্রুতি
 শুনিতেছি সেই হেতুক এখানেতে ও ভয়ের কারণ ইহা
 বিবেচনা করিয়া যাঁহা কহিয়া হয় তাঁহা কর । ইহা শুনিয়া
 কল্লপ ভীত হইয়া কহিল অন্য পুরুষগণে বাই কাক
 এক ইরিগ কহিল এই হউক পরে হিরণ্যক হোমিয়া বলিল

অন্য হৃদে গেলে মন্থরের মন্থন কিন্তু স্থলে যাইবার কি
 উপায় যেহেতুক জনজন্তুর জন বড় বল, দুর্গবাসির দুর্গ
 বড় বল ব্যাঘ্রাদির স্বস্থান বড় বল রাজার মন্ত্রী বড় বল
 সখা লঘপতনক এই পরামর্শেতে সেই পুকার হইবে যেমন
 বণিকপুত্র রাজপুত্র কতক আপন জীর কুচকোরক নদিত
 আপনি দেখিয়া দুঃখী হইল তেমনি তুমি হইবা।

In the country, which is called Kalinga, there is a prince, whose name is Rukmāṅga. He is just returned from his conquests of the countries about him, and has taken up his residence upon the banks of the river Chandra-bhāgā. To-morrow early, he has resolved to come to the lake Karpūra. This I overheard from the mouth of one sportsman. Having investigated this affair, so much to be dreaded, let the necessary means be pursued for our safety. The tortoise, upon hearing these words, fearfully exclaimed,—I will flee to the water for protection! The crow and the deer said,—Be it so. The mouse, Hiranyaka, laughed, and said: When Manthara shall be in the water, it will be good for him. It appeareth to me improper that he should be found crawling upon dry ground. They say,

The strength of aquatic animals is the waters; of those who dwell in towns, a castle; of lions, their own station, of princes, a minster.

But friend Laghū-patanaka, I hope by this advice, he will not suffer the regret experienced by a certain merchant's son, in beholding his wife caressed by a young prince.

তেজস্বীঃ ক্রমমেতৎ । হিরণ্যকঃ কথয়তি অস্মি
 কাণ্ডকুলবিষয়ে বীরসেনো নাম রাজা তত্র বীরপুর্নাম
 নগরে নিবসতি তেন তুরঙ্গবলো নাম রাজপুত্রো ভোগযতিঃ
 ক্রান্তঃ সচ মহাধনস্তরুণঃ একদা স্বনগরং ভ্রাম্যন্নতি
 প্রৌঢ়ৌবনাং স্ৰাবন্যকর্তা নাম বলিকপুত্রবধূমালো কথ্য
 আস ততঃ স্বহৃদ্যং গতা স্মরা কুলমতিস্বস্থাঃ ক্রান্তে চ
 দূতী প্রেযিতবান্ ॥ যতঃ ॥ সন্মার্গস্তাৎ দস্তে প্রভবতি
 পুহ স্তান্দে দেহেন্দ্রিয়াণাং লজ্জা তাবদ্বিধতে বিনয়মপি
 সমালম্বন্তে তাৎ দদ্য । ধূচাপাশ্চ মুক্তাঃ শ্রবণপথগতা
 নীলপচ্ছাণ্যে তাৎ স্ত্রীলাবতীনাং ন হৃদি পরিহৃতা
 দৃষ্টবাণাঃ পতন্তি ।

তাহার। বলিল এ কি পুকার । হিরণ্যকঃ কহিতেছে ।
 কাণ্ডকুল দেশে বীরপুর্ন নাম নগরে বীরসেন নাম এক
 রাজা থাকেন তিনি তুরঙ্গবল নামে রাজপুত্রকে সর্বাধিকার
 করিলেন সে রাজপুত্র মহাধনী ও যব । এক দিবস
 আপন নগর ভ্রমণ করত অত্যন্ত যবতী লাবণ্যবতী নামে
 বলিকপুত্রবধূকে দেখিলেন । অনন্তর আগুন অটলি
 কাতে গিয়া কামাকুলচিত্ত হইয়া তাহার নির্নিজন্তে দূতী
 পাঠাইলেন যেহেতুক তাবৎপর্যন্ত সংপথ থাকে আর
 তাবৎপর্যন্ত পুরুষ ইন্দিয়েরদের পভ হন আর তাবৎ
 পর্যন্ত লজ্জা থাকে আর তাবৎপর্যন্ত বিনয় আলম্বন

করে যাবৎ পর্যন্ত সন্দরী নারীদিগের দৃষ্টিকণ অব্যর্থবাণ
 a man's mind not fails - other arrows sometimes fallible are this
 পক্ষের হৃদয়ে না পড়ে অন্য বাণকদাচৎ ব্যর্থও হয় এবাণ
 ear failing is not - & other arrows a bamboo bow by drawing
 কখন ব্যর্থ হয় না আর অন্য বাণ বংশনির্মিত ধনতে আকষ্ট
 being - Horned and - the arrow-javelin-like bow by drawing & being thrown on
 হইয়া ক্রিষ্ট হয় এ শরাজ্জকণ ধনতে আকষ্ট হইয়া ক্রিষ্ট হয়
 and other arrows are as false as any discharged are & other arrows
 আর অন্য শর কণপ্যন্ত গিয়া মুক্ত হয় আর অন্য শরের
 various coloured feathers and - the hawk eyes leaves blue colour feathers
 নানাবর্ণ পাখা থাকে এ শরের চক্ষুর পাতাই নীলবর্ণ পাখা ।


How was this? said they; — and Hiranyaka recounted as follows:

FABLE VIII.

In the country of Kānya-kūbja there was a rājā, whose name was Virra-sēna, by whom his royal son, by name Turanga-vela, had been appointed yuva-rāja over the city of Vira-pura. He was young, and possessed of great riches. Once upon a time, as he was walking about his own city, he saw a certain merchant's wife, who was in the very prime of youth, and was exquisitely beautiful. The young rājā being returned to his palace, with a heart quite occupied with love, sent a female messenger to her.

For,

A person will pursue the right way, will be master of his passions, will evince modesty, and will be possessed of affability, so long as his heart is not pierced by the irresistible arrows of a beautiful woman's eyes. Other shafts sometimes fail in their aim, but that is not the case with the above-mentioned; the former are drawn by, and shot from, a bow made of bamboo, the latter are drawn by, and darted from, the bow formed by the eye-draws; those are decorated with feathers of various hues, and these are likewise adorned with the feathers of the blue eye-lids.

সাপি লাঘণ্যবতী তদবলোকনচক্ষুণাত্ প্রভৃতি তদেকা
 হৃদয়াভবত্ ॥ অথ দূতীবচনং শ্রুত্বা লাঘণ্যবত্যাচ
 অহং পতিব্রতা কথমেতস্মিন্নধর্মে পতিলঙ্ঘনে প্রবর্তে ॥
 যতঃ ॥ সা ভার্য্যা যা মৃছে দত্তা সা ভার্য্যা যা প্রজা
 বতী । সা ভার্য্যা যা পতিপ্রাণা সা ভার্য্যা যা পতি
 ব্রতা ॥ ন সা ভার্য্যেতি বক্তব্য্য যস্যামর্ত্তা ন তুষ্যতি ।
 তুষ্টে মর্ত্তরি নারীণাং সন্তুষ্ঠাঃ সৰ্ব্বদেবতাঃ ॥ মর্ত্তা
 যস্যাগুণান্ ব্রূতে শীলধর্ম্ম সমন্বিতান্ । অগ্নিসান্নি
 কমর্য্যাদোমর্ত্তা হি শরণং স্ত্রিয়াঃ ॥ ততো যদ্যদাদি
 শতি মে প্রাণেশ্বরস্তদেবাহমবিচারিতং কেরামি । *

এব° সে লাঘণ্যবতী ও তাহার দর্শন করণ অবধি তদৈকচিত্তা
 হইল। অনন্তর লাঘণ্যবতী দূতীর বাক্য শুনিয়া কহিল আমি
 পতিব্রতা কিপুকারে এই ভক্তার ভাগ্যরূপ পাগ কন্মে পূব্ভা
 হইব। যেহেতুক যে স্ত্রী গৃহ ব্যাপারে নিপুণা সেই পত্নী যে
 স্ত্রী পুত্রবতী সেই পত্নী যে স্ত্রী পতির পিয়া সেই পত্নী যে স্ত্রী
 সাধী সেই পত্নী যাহাকে স্বামী তুষ্ট না হয় তাহাকে
 ভায়াই বলি না স্বামী যাহাকে তুষ্ট হয় তাহার সকল দেব

^{pleased with - (husband) as a wife's nature & nature} ^{process}
 তাই সন্তুষ্ট ভর্তা যে জীর স্বভাব ও ধর্মের পূর্ণাঙ্গ করে
^{the good} ^{for} ^{fire} ^{near} ^{recently} ^{expect} ^{to} ^{high}
 সেই উত্তম। যেহেতুক অগ্নি নিকটে পূর্ণাঙ্গ্যাদ ভর্তাই
^{the woman's refuge - therefore} ^{my} ^{"life and soul"} ^{what command} ^{into}
 জীরক্ষক এইহেতুক আমার পূর্ণাঙ্গ্যাদ যাহা ২ আজ্ঞা করেন
^{that} ^{the} ^{desires} ^{and} ^{long} ^{and} ^{the} ^{the}
 তাহাই আমি বিবেচনা না করিয়া করি ।

She also, whose name was Lāvanyavati, having observed him, gladly became of one mind with him.

Lāvanyavati having attended, to her words, made this reply — I am faithful to my husband, how can I then commit such a crime? For,

She is a wife, who is clever in the house, she is a wife, who is fruitful in children; she is a wife, who is the soul of her husband; she is a wife, who is faithful to her husband.

She is not worthy to be called a wife, in whom the husband delighteth not. All the gods are pleased with her, in whom the husband is happy.

That wife is best, who is praised by his husband for her good temper, and piety; for, the husband is the asylum of women; and of his honour the fire beareth testimony.

And according to this doctrine, I make it a rule to do whatever the lord of my life directs, without examination.

দূত্ববাচ সত্যতমমেতৎ । লাবণ্যবত্ববাচ ধ্রুবং সত্য
মেতৎ । ততোদূতিকথা গত্বা তত্তৎ সৰ্ব্বং তুরঙ্গবলস্যাগে
নিবেদিতং । তচ্ছুত্বা তুরঙ্গবলোব্রবীৎ স্বামিনানোয
সমর্পয়িতব্যেতি কথমেতৎ শক্যং ॥ কুট্টিন্যাহ উপায়ঃ
ক্রিয়তাং ॥ তথা চোক্তাং ॥ উপায়েন হি যৎ শক্যং ন তৎ
শক্যং পরাক্রমৈঃ । শৃগালেণ হতোহস্তী গচ্ছতা পঙ্কবৰ্জনা ॥
রাজপুত্রঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ । সা কথয়তি অস্মি ব্রহ্মা
রণ্যে কপূরতিলকো নাম হস্তী তমবলোক্য সৰ্ব্বশৃগালা
স্থিন্তয়ন্তি স্ম যদযং কেনাপ্যুপায়েন স্মিয়তে তদাস্মাক
মেতদেহেন মা সচতুষ্টয়স্য ভোজনং ভবিষ্যতি তত্র একেণ
বৃহশৃগালেণ প্রতিজ্ঞাতং ময়া বুদ্ধিপ্রভাবাদস্য মরণং
সাধয়িতব্য অনন্তরং সবলকঃ কপূরতিলকসমীপং গত্বা
সাষ্টাঙ্গপাতং প্রণম্য উবাচ দেব দৃষ্টিপ্রসাদং কুরু ।

দূতী কহিল এ কথা অতিসত্য লাবণ্যবতী কহিল এ বাকা
নিশ্চয় সত্য । অনন্তর দূতী যাইয়া সেই সকল তুরঙ্গবলে
সম্মুখে নিবেদন করিল তাহা শুনিয়া তুরঙ্গবল বলিল ভত্তা
আনিয়া জনপণ করিবে ইহা কি কাপে ইহবে । অউনীকহিল
উপায় ককণতাহা বিজেরা কহিয়াছেন যেহেতুক উপায়েতে
যাহা করিতে শক্ত হয় তাহা বলেতে করিতে সমর্থ হয় না ।
কেননা কদম পথে গমন করত শৃগাল কতক হস্তী নষ্ট
হইল । রাজপুত্র জিজ্ঞাসিল এ কিপুকারা অউনীকহিতেছেন

বৃক্ষারণ্যেতে কপূরতিলক নামে এক হাতী থাকে তাহাকে
 দেখিয়া সকল শূগালেরা চিন্তা করিল যদি একোন উপা-
 য়েতে মরে তবে ইহার শরীরে আনারদের চারি মাসের
 ভোজন হয় তাহাতে এক বৃদ্ধ জম্বুক পুতিজ্ঞা করিল যে
 আমি বৃদ্ধ পুতাবেতে ইহার মরণ সাধিব। পরে সে
 বৃদ্ধক কপূরতিলকের নিকটে গিয়া অষ্টাদশ পুণাম করিয়া-
 কহিল হে মহারাজ দৃষ্টি পুনাদ করুন।

To this the messenger replied,—It is right; and Lāva-nyavati observed, that it was even so.

The messenger having heard the whole of what Lāva-nyavati had to say, reported it to Tuṅgavala, who observed, that he would invite her with that dear husband of hers, and, in his presence, pay her great attention and respect To this the messenger replied,—This is impracticable Let art be used, for it is said,

That which cannot be effected by force may be achieved by cunning. An elephant was killed by a jackal, by going over a swampy place.

How was this? demanded the rāja's son. And the messenger related the following story.

TABLE IX.

In the forest Brahmāṇya, there was an elephant, whose name was Karpūratilaka, who having been observed by the jackals, they all determined, that if he could by any stratagem be killed, he would be four months provisions for them all. One of them, who was exceedingly viciously inclined, and by nature treacherous, declared, that he would engage, by the strength of his own judgment, to effect his death. Some time after, this deceitful wretch went up to the elephant, and having saluted him by bending his whole body, said, godlike Sir! condescend to grant me an audience.

হস্তী ব্রূতে কল্ব' কুতঃ সমায়াতঃ। সোঽবদৎ জম্বুকোহঁ
 সর্বৈর্বনবাসিभिঃ পশুभिর্নিলিত্বা ভবত্সকাশং প্রস্থাপিতঃ
 যদ্বিনা রাজ্ঞা অবস্থাতু' ন যুক্ত' তদ্রাটবীরাভ্যেঽভি
 বেক্তু' ভবান্ সর্ব'স্বামিগুণোপেতোনিরূপিতঃ ॥ যতঃ ॥
 যঃ কুলাভিজনাচারৈরতিশুদ্ধঃ প্রতাপবান্। ধার্মিকো
 নীতিকুশলঃ সস্বামী যুজ্যতে মুবি ॥ অপরঞ্চ পশ্য ॥
 রাজান প্রথমং বিন্দেত্ততোভার্য্য। ততোধনং। রাজন্যসতি
 লোকেঽস্মিন্ কতোভার্য্য। কতোধনং ॥ অন্যচ্চ ॥ পর্য্যন্য
 ইব ভূতানাংমাধারঃ পৃথিবীপতিঃ। বিকলেপি হি পর্য্যন্যে
 জীযত ন তু ভূপতৌ ॥

হস্তী বলিতেছে কে তনি কোথা হইতে আইলা সে কহিল
 আমি শগাল সমস্ত বনবাসী পশুরা মিলিয়া আপনার নিকট
 পাঠাইয়াছেন যে রাজাব্যতিরেকে বাস করা অনুপযুক্ত এই
 হেতুক বনরাজ্যেতে অভিষেক করিবার নিমিত্তে সকল রাজ
 লক্ষণেতে যুক্ত আপনাকে নিকূপণ করিয়াছে। যেহেতুক
 কলাচারাदिতে অতি পবিত্র এবং বলবান এবং ধর্ম্মিষ্ঠ এবং
 জ্ঞানী সে ব্যক্তি পৃথিবীতে রাজার উপযুক্ত আর দেখ পুথম
 রাজাকে আশ্রয় করিবেক পশ্চাৎ ভাষ্যাকে লভিবেক অন

স্বপ্ন ধনাজন করিবেক কেননা এই পৃথিবীতে রাজা না থাকিলে কোথা ভয়া কোথা ধন। অপর যেমন বৃষ্টিদ্বারা সকল পানির জীবনোপায় এমনি রাজা সকল জীবের আশ্রয় যেমন না থাকিলে ও জীব সকল বাচে রাজা না থাকিলে বাচে না।

Who art thou? demanded the elephant, and whence comest thou? My name, replied he, is Kshudrā-buddhi, a jackal, sent into thy presence by all the inhabitants of the forest, assembled for that purpose, to represent, that as it is not expedient to reside in so large a forest as this, without a chief, your highness, endued with all the cardinal virtues, hath been selected to be anointed rājā of the woods.

It is said,

He who, by walking for ever in the ways of those who are preferred, is exceedingly pure, of a noble mind, virtuous and just, and experienced in the rules of policy, is worthy to be chosen master of the earth.

Observe again:

Let a man first choose his king, next his wife, and then acquire riches; for without a king, of what use are wives and riches in this world!

Besides:

The lord of the land, like the clouds, is the reservoir of the people; for when the clouds fail, do they not find succour in their king?

নিম্নতবিষয়বস্তী প্রায়শোদয়যোগাজ্জগতি পরবসেহ্মিন
দুর্লভঃ সাধুবৃত্তঃ । ক্রমমপি বিকল বা ব্যাধিত বাধন
বা পতিমপি কুলনারী দৃষ্টভীত্যাভ্যুপৈতি ॥ * * *

তদ্বা সন্মধেলা ন বিচলতি তথা কৃতা সত্বরমা
গত্যতাং দেবেন । ইত্যুক্তা উত্থাচ চলিতঃ । ততোঽসৌ রাজ্য
লোভাক্ষণঃ কর্পূরতিলকঃ শৃগালবর্তননা ধাবন্মহাপঙ্কে
নিমগ্নঃ ততস্তেন হস্তিনা উক্তং সখে শৃগাল কিং অধুনা
বিধেয়ং পঙ্কে নিপতিতোঽহং স্মিমে পরাষ্ট্র্য পশ্য । শৃগালে
বিহস্যোক্তাং দেব মম পুচ্ছকাবলম্বনং কৃতা উত্তিষ্ঠ यस्य
মদ্বিধস্য বচসি ত্বয়া প্রত্যয়ঃ কৃতঃ তদনুভূয়তামশ
রণং দুঃখমিতি ॥ তথাচোক্তা ॥ যদি সত্বজ্ঞানিরতো ভবিষ্যসি
ভবিষ্যসি । তথা সজ্জনগোষ্ঠীষু পতিষ্যসি পতিষ্যসি ॥

অপর রাজদণ্ডেতেই লোক পায় আপন উপযুক্ত কর্ম
করে কেননা এই পরাধীন জগারে সচরাচর লোক দুর্লভ ।
তত্বাদি কুশ হন কিম্বা অজহীন ও হন কিম্বা কপ ও হন
কিম্বা নিধন ও হন তথাপি হুও ভয়েতে কলজী তাহাতে
উপগত হন এই হেতুক যে পুকারে লগ্নসময় না যায় সে
পকার করিয়া মহারাজ শীঘ্র আসুন ইহা কহিয়া উঠিয়া
চলিল । তৎপর রাজ্যলোভে লক্ষ হইয়া এই কপূর
তিলক নামে গজ শৃগালের পাথে ধাইতে বৃহৎপঙ্কে পতিত
হইল অনন্তর হস্তী কহিল হে বন্ধু শৃগাল এখন কি কর্তব্য

आमि पाके पड़िया मरि किरिया देख शृगाल हास्य करिया
 कहिल हे महाराज आमार लाङ्गल आलस्यन करिया उठ
 येहेतुक आमार तुल्या लोकेर कथाते विश्वास करियाह
 सेहेतुक अरु कित दुःख अनुभव कर । पण्डितकतक
 ताहा उक्त हईयाहे यदि साधु लोकेर देर नहेते आसक्त
 हईबा२ तबे सज्जन समूहे पड़िबा२ ।

But,

In this world, which is subject to the power of one above, a man of good principles is hard to be found: for the most part, he performs his duty from the fear of the rod. Thus a woman of good repute, is obliged from the dread of the rod, to take him for a husband, who is weak, or unfortunate; sick, or poor.

Then, that we may not lose the lucky moment, continued the jackal, be pleased to follow quickly. Saying this, he cocked his tail, and went away. The elephant, whose reason was perverted by the lust of power, took the same road as the jackal, and followed him so exactly, that, at length, he stuck fast in a great mire. O my friend! cried the elephant, what is to be done in this disaster? I am sinking in a deep mire! The jackal laughed, and said,—Please your divine highness, take hold of my tail with your trunk, and get out! This is the fruit, added he, of your confidence in my deceitful speech.

They say,

As often as thou shalt be deprived of the society of the good, so often shalt thou fall into the company of knaves.

মতোমহাপদে নিমগ্নো হস্তী শৃঙ্গাসৌর্ভাষিতঃ । অতোহঁ ব্রবী
 ম্নি উপাধিন হি যচ্ছবানিত্যাদি মতঃ কুটিল্যুপদেশেন
 তং চানুদত্তনামানং বণিকপুত্রং সু রাজপুত্রঃ সেবকং চকার
 মতোসৌ তেন সর্ঘবিশ্বাসকার্য্যে নিয়োজিতঃ একদা
 তেন রাজপুত্রেণ স্তানোপস্থিতেন কনকরত্নালঙ্কারধারিণা
 শ্রোক্তং অদ্যারম্ভ-মাসমেকং নৌরোব্রতং কৰ্ত্তব্যং তদত্র
 প্রতিরাজমেকাং কুলীনাং যুবতীমানীষ সমর্পয় সা মধ্য
 যথোচিতেন বিধিনা পূজয়িতব্য্যা মতঃ স চানুদত্তঃ
 তথাবিধাং নবযুবতীমানীষ সমর্পয়তি পশ্চাত্ প্রচ্ছন্নঃ
 সন্ কিময়ং কৰোতীতি নিরুপয়তি সচ তুরঙ্গবল্লভাং
 যুবতীমস্পৃশন্রেব দূরাঙ্কস্নানলঙ্কারগন্ধচন্দনৈঃ সंपূজ্য
 রত্নকং দত্তা প্রস্থাপয়তি ॥

অনন্তর মহাপদে পতিতহস্তীকে জম্বুকেরা তক্ষণ করিয়া এই
 নিমিত্তে আমি বনি উপায়েতে যে করা যায় তাহা পরাক্রমে
 করা যায় না । তাহার পর কুটিলার উপদেশেতে সে রাজপুত্র
 চানুদত্ত নামী বণিকপুত্রকে ভৃত্য করিল অনন্তর রাজপুত্র
 তাহাকে সকল বিশ্বাস কায়েতে নিযুক্ত করিলেন । এক
 দিবস সেই রাজপুত্র স্বর্ণ ও রত্নেতে নিম্নিত অভরণ ধারণ
 করিয়া গান করিতে উপস্থিত হইয়া কহিলেন আজি অবধি
 এক মানপয়াস্ত আমি গৌরীবত্ন করিব সেইহেতু পুত্র
 রাজিতে এক কুলীনা যুবতী জীকে আনিয়া দেও সে জী

অথ বণিকপুত্রেণ তত্ ইষ্টোপজাতবিশ্বাসেন লোভা
 দৃষ্টমনসা স্ববধূং সৌভাবতীং সমানীয সমর্পিতা
 সচ তুরঙ্গবলস্তাং হৃদয়প্রিয়াং সৌভবতীং বিজ্ঞায়
 স্বসম্মমসুত্যায নির্ভরমালিঙ্গ্য নিমোলিতাচ্চ পথ্যঙ্কে
 তয়া সহ বিললাস তদালোক্য বণিকপুত্রস্ত্রিলিখিত
 ইবেতি কল্চব্রতামূঢ়ঃ পরং বিপাদমুপগতঃ অতোহং ব্রবীমি
 স্বয়ং বীচেত্যাদি । তথা ত্বয়াপি ভবিতব্যমিতি তদ্বি
 তববচনমবধীয়মহতা ভয়েন বিমুগ্ধদ্রব তজ্জলাশ্রয়
 মুত্তৃজ্য মন্থরস্থলিতঃ তেপি হিরণ্যকাদয়ঃ স্নেহাদনিষ্ট
 শঙ্ক্যমানা মন্থরমনুগচ্ছন্তি । ততঃ স্থলে গচ্ছন্
 কেনাপি ব্যাধেন কাননং পথ্যটতা মন্থরঃ প্রাপ্তঃ

অনন্তর বণিকপুত্র তাহা দেখিয়া বিশ্বাস করিয়া ধনলোভেতে
 আকৃষ্টচিত্ত হইয়া আপন স্ত্রী সৌভাবতীকে আনিয়া সমর্পণ
 করিল । সেই তুরঙ্গবল অন্তঃকরণের প্রিয়া সেই সৌভাব
 তীকে জানিয়া শীঘ্র উঠিয়া নিভর আনিঙ্গন করিয়া পুরু
 ষলোচন হইয়া তাহার সহিত পালঙ্কেতে বিলাস করিল
 তাহা দেখিয়া কণ্ডাবাক্যবোলে অবিবেচক বণিকপুত্র চিত্র
 লিখিত গুণলিকার গায় স্থির হইয়া অতিবড় বিষন্ন হইল
 অতএব আমি বলি বণিকপুত্র আপন বধুর কুচ রাজপুত্র
 কতক মদিত দেখিয়া দুঃখা হইল তেমনি তুমি হইবা ।

মহুর সে হিতবাক্য অবজ্ঞা করিয়া বড় ভয়েতে মুখ হইয়া
 সে জলাশয় ত্যাগ করিয়া চলিল সে হিরণ্যক ও লঘুপ
 তনক ও চিত্রাঙ্গ সুহৃদযুক্ত অমঙ্গল আশঙ্কা করিয়া মন্থ
 রের পশ্চাৎ গেল তাহার পর স্থলে যাইতেছিল যে মহুর
 সে অরণ্যেতে ভ্রমণ করত কোন ব্যাধতাহাকে পাইল

Chārudatta observed all this:—So that, through the confidence created by this stratagem, his mind being biassed by the lust of gain, he fetched his own wife, and presented her to the young rājā, who upon beholding Lāvanyavāli, the darling of his heart, got up from his seat, and, quite forgetful who was present, began to embrace her, and at length, with his eyes half closed with extreme happiness, he led her to a sofa richly ornamented with strings of precious gems; whilst Chārudatta, the miserable husband, stood gazing at her, motionless as a statue. And thus was a fool, by his own contrivance, plunged into the greatest distress. Now, I fear lest a similar fate should befall thee, concluded the mouse.

Manthara having attended to what had been said by the mouse, in great fear cried out,—My friends, I must go for security into the water. Saying this, he marched away, and Hiranyaka and the rest followed him; but they had not gone far, before Manthara was seized by a certain sportsman, who chanced to be hunting about in that forest,

প্রাপ্য তং মৃহীত্বা উত্থাপ্য ধনুশ্চ বদ্ধা ধমন্ ক্লেষাত্
 স্তুতিপাসাকুলঃ স্বমৃহাভিমুখং চলিতঃ অথ মৃগবায
 সমূষিকাঃ পরং বিষাদং গচ্ছন্তস্তমনুজগমু ততঃ হিরণ্যকো
 বিলপতি । একস্য দুঃখস্য ন যাবদন্তং গচ্ছাম্যহং
 পরমিবার্ণবস্য । তাবদ্বিতীযং সমুপস্থিতং মে ক্বিদ্রেষ্বনর্থ্য
 বজ্রলীভবন্তি ॥ স্বাভাবিকং তু যন্মিত্রং ভাগ্যেনৈবাভিজা
 যতে । তদক্ৰিমসৌহার্দমাপত্যপি ন মুচ্যতি ॥ ন মাতরি
 ন দারেণ ন সৌদর্য্যেন চাত্মনি । বিশ্বাসস্তাদৃশঃ পুংসাং
 যাবন্মিত্রে স্বभावजे ॥ ইতি মুক্তবিশিষ্টস্য অহো দুর্দৈব
 ॥ যতঃ ॥ স্বকর্ম্মসন্তাপবিচেষ্টিতানি কালান্তরা
 বর্ত্তিগুণাশুভানি । ইহৈব দৃষ্টানি ময়েব তানি জন্মা
 ন্তরাণীব দশান্তরাণি ॥ অথ বা ইত্যমেবৈতৎ ॥

তাহাকে পাইয়া ধরিয়া উঠাইয়া ধনুতে বান্ধিয়া ভ্রমণ
 করত শুমগুযুক্ত ক্ষুধা ও পিপাসাতে ব্যাকুল হইয়া আপন
 গৃহের আভিমুখে চলিল । অনন্তর মৃগ ও কাক ও উন্মুক্ত
 বড় বিষন্ন হইয়া পশ্চাৎ গেল । তৎপরে হিরণ্যক বিলাপ
 করিতে লাগিল সমুদ্রের পারে যাওয়া যেমন অসম্ভব
 এগনি এক দুঃখের শেষ না পাইতে, আমার দ্বিতীয় দুঃখ
 উপস্থিত হয় কেননা হিঁদু উপস্থিত হইলে অমঙ্গল অনেক
 হয় স্বাভাবিক যে মিত্র সে ভাগ্যেতেই মিলে যোহেতুক

নে অকৃত্রিম মিত্রতা বিপৎকালেতে ও যায় না স্বাভাবিক
মিত্রিতে লোকের যত পুতায় হয় তত পুতায় না তাতে
হয় না এবং জ্ঞাতে হয় না এবং সহোদরে হয় না এবং
আপনাতে ও হয় না । ইহা বারম্বার চিন্তা করিয়া কহিল
বশপুয়ুক্ত অবস্থান্তর ইহলোকেতেই নংকতৃক দৃষ্ট হইল

and who, finding himself hungry and fatigued, immediately fastened his game to the end of his bow, and turned his face towards home. The deer, the crow, and the mouse, were exceedingly sorry for this event, and Hiranyaka expressed his lamentations in these lines:

Before I have attained the end of one trouble, boundless as the great ocean, still a second is ready to succeed! How many misfortunes come upon me for my faults!

A friend, who is so by nature, is the gift of providence. Such unfeigned friendship is not extinguished, even in misfortunes.

Men have not that confidence in their mothers, in their wives, in those of the same womb, nor in their own offsprings, as in one who is a friend in principle.

In this manner having lamented the fate of the tortoise, the mouse continued, crying out,—Oh! how hard is my fate!

By me have been experienced, even here, as the fruits of the state of existence, in some certain birth, the good and evil shut up in time, which are the seekings of the offsprings of our own words.

কাযঃ সন্নিহিতোপাখ্যঃ সম্যদঃ পদমাপদাং । সমা
 গমাঃ সাপগমাঃ সৰ্ব্বমুত্পাদি ভঙ্কুরং ॥ পুনর্দ্বিসৃষ্টাছ ।
 ধোকারাতিভয়ত্রাণং প্রীতিবিশ্রমভাজনং । কেন রত্নমিদং
 সৃষ্টং মিত্রমিত্যত্ৰদ্বয়ং ॥ কিञ্চ ॥ মিত্রং প্রীতিরসাযনং
 নয়নযোরানন্দনং চेतসঃ পাশং যত্ সুখদুঃখयोঃ সহ
 ভবেন্মিত্রেণ তদুল্লভং । যে চান্যে সুহৃদঃ সসৃষ্টসময়ে
 দ্রব্যামিলাষাকলাস্ते সৰ্বত্র মিলন্তি তত্বনিকষয়াবা
 তু তेषাং বিপত্ ॥ ইতি বজ্র বিলপ্য হিরণ্যকাম্বিজাঙ্ক
 ক্ষুপতনকাবাহ যাবদয়ং ব্যাধাবনাঙ্গ নিঃসরতি
 তাবন্মল্যরং মোচয়িতুং যত্নঃ ক্রিয়তাং ॥ তাবুচতুঃ সত্বরং
 কার্য্যমুচ্যনাং । হিরণ্যকোব্রুতে চিত্রাজ্ঞোজলসমীপং গত্বা
 মৃতনিব আত্মানং দর্শয়তু ॥ *❖*❖*❖*❖

শরীর আসক্ত মৃত্যু অর্থাৎ শরীর গ্রহণ করিলে অবশ্য
 মৃত্যু হয় আর সম্পত্তিই বিপত্তির স্থান অর্থাৎ সম্পদ
 হইলে অবশ্য বিপত্তি হয় আর ধনাতির সমাগমই অপ
 গম্ব অর্থাৎ ধনসঞ্চিত হইলেই অবশ্য নষ্ট হয় এই পকার
 যাবৎ জন্মাবস্থ সকল নশ্বর । পুনর্বার বিবেচনা করিয়া
 বিনল শোক ও শত্রুভয় হইতে রক্ষাকর্তা এবং পীতির
 বিশ্বাসপাত্র রত্নরূপ মিত্র এই অক্ষর দুটি কে সৃষ্টি
 করিয়াছে । অপর যে মিত্র চক্ষুদ্বয়ের পীতিকপীরসের
 স্থান ও চিত্তের আনন্দজনক ও সুখ দুঃখের পাত্র সে মিত্র

scarce - gain, who wealth-desiring friends they prosperously turn in luxury, to
 দলভ অন্য যে ধনাকাঙ্ক্ষি মিত্র সে সম্প্রাপ্তিকালে সহজেই
 shuntable they misbehave to know for calamity
 মিলে তাহারদিগের যথার্থ বঝিবার নিমিত্তে বিপাত্তি
 trial show like - in this way many calamities
 কষ্টপাথরস্বরূপ । এণুকারে অনেক রোদন করিয়া
 "Moude" der "am" "sein" as long as the
 হিরণ্যক চিত্রাঙ্গ ও লঘপতনকে বলিল যাবৎপাশ্চাত্ত এই
 hinder forth from you not much so long the hinder to liberty
 ব্যাধ বনহইতে নিগত না হয় সে পায়ন্ত মন্তুরকে ছাড়াইতে
 hinderer - they then - said quickly around you
 যত্ন কর তাহারা দুই জন বলিল শীঘ্র পরামর্শ কর । হির
 me said "Far makes me going himself
 গ্যক বলিতেছে চিত্রাঙ্গ জন সন্নিধিতে গিয়া আপনাকে
 in to body like appear
 মৃতশরীরের ন্যায় দেখাউন ।

The body is compounded with disorders, the state of opulence with calamities, advantages with disadvantages! Thus every thing is produced with a companion who shall destroy it.

Having again pondered for a while, he exclaimed,

By whom was constructed that jewel of a word, the monosyllable FRIEND, that dispeller of fear the harbinger of grief, and the confidential repository of our joys?

But,

A friend, who is a pleasing collyrium to the eyes, the delight of the heart, and a vessel in which may be deposited both joy and sorrow; is hard to be found.

All other friends, tainted with the lust of gain, are every where to be found in times of prosperity; but adversity is their touchstone.

Hiranyaka having in this manner greatly lamented the fate of his friend, said to the deer Chitrānga and the crow Laghupatanaka,—Let our efforts be exerted for the deliverance of Manthara, before the hunter departs from the forest. Let us, said they, be instructed in what we should do. Let Chitrānga go near the water, said Hiranyaka, and feign himself senseless and dead. and

কাকস্য তস্যোপরি স্থিত্বা চক্ষুঃ কিমপি বিলিखतু মূন
 মনেন লুম্বকেন তত্র কচ্ছপং পরিত্যজ্য সৃগমাংসার্থিনা
 সত্বরং গন্তব্যং ততোহং মন্থরস্য বম্বনং কেষ্যামি সমাहितে
 লুম্বকে ভবদ্বয়াং পলায়িতব্যং চিত্রাঙ্কলঘপতনকাভ্যাং
 শীঘ্রং গত্বা তথানুষ্ঠিতে সতি স ব্যাধঃ আন্তঃ পানীয়ং
 ষোত্বা তরোরধস্তাদুপবিষ্টঃ তথাবিধং সৃগমপশ্যন্ত ততঃ
 কৰ্ত্তরিকামাदाয প্রহৃষ্টমনাসৃগান্তিকং চলিতঃ তত্রা
 ন্তরে হিরণ্যকেনাগত্য মন্থরস্য বম্বনং ছিন্নং স কূর্মঃ
 সত্বরং জলাশয়ং প্রবিশেষ সসৃগআসন্নং তং ব্যাধং বিলোক্য
 উত্থায় পলায়িতঃ প্রত্যাৱৃত্য লুম্বকো ধাবন্তরতল
 মায়াতি তাবৎ কূর্ম মপশ্যন্নচিন্তয়ত্ । * * *

কাক তাহার উপরে থাকিয়া ঠোটে করিয়া আঁচড়াউক
 তবে নিশ্চয় এই ব্যাধ সে স্থানে কচ্ছপকে রাখিয়া মগ
 নাগের নিমিত্তে বরাতে যাইবে তাহার পর আনি মস্তুরের
 বন্ধন ছেদন করিব ব্যাধ নিকটে আইলে তোমরা দুজনে
 পলাইবা । অনন্তর চিত্রাঙ্ক ও লঘপতনক বরাতে গিয়া
 সেইরূপ করিলে পর সেই লুক্কশাস্ত হইয়া জলপান
 করিয়া বন্ধের গলে বসিয়া সেইরূপ মগকে দেখিল ।
 অনন্তর কাক তাহা নইয়া প্রকল্লচিত্ত হইয়া মগের নিকটে

^{went into the mouth of the snake coming to the house near}
 চলিল ইতোমধ্যে হিরণ্যক আসিয়া মস্তুরের বন্ধন ছেদন
^{the tortoise quickly poison went into the deer}
 করিল সে কল্প শীঘ্র জলাশয়ে পুবেশকরিল এ হরিণ
^{the hunter now coming, seeing him run away}
 সেই ব্যাধকে নিকটে আসিতে দেখিয়া উঠিয়া পালাইল।
^{The hunter returned when the bird bottom & came & then he took}
 লুন্ধক ফিরিয়া যখন গাছের তলাতে আইল তখন কুম্ভকে
^{it seems a fright}
 না দেখিয়া ভবনা করিল।

let the crow appear as if he were pecking at him; when the hunter, spying a deer, and longing to taste of his flesh, will be overjoyed, and so laying the tortoise upon the ground, will run to secure him. In the mean time I will gnaw asunder the cords by which Manthara is confined. The deer and the crow did as they were instructed immediately. The hunter being thirsty, laid the tortoise upon the ground, and having drank some water, sat down in the shade of a tree, when he discovered the deer in the situation above described. He concluded, that he had been killed by some sportsman, and pleased with his good fortune, went towards him with a knife in his hand. In the mean time Hiranyaka contrived to loosen the cords by which Manthara was held; who finding himself at liberty made haste into the water; whilst the deer seeing the hunstman approaching, started up and ran away. The hunstman then turned back, and repairing to the foot of the tree, and not finding the tortoise there, he began to reflect in this manner.

উচিতমেবৈতন্মমাসমোচ্চ্যকারিণঃ ॥ যতঃ ॥ যোধ্রুবাণি
পরিত্যজ্য অধ্রুবাণি নিষেবতে । ধ্রুবাণি তস্য নশ্যন্তি
অধ্রুবং নষ্টমেব হি ॥ ততোসৌ স্বকৰ্ম্মবশান্নিবাশকটকং
প্রবিষ্টঃ ॥ কৰ্ণব্যানি চ মিত্রাণি দুৰ্গমানি বনানি
চ পশ্য কৰ্ম্মপতির্ঘড়োমূষিকেণ বিমোচিতঃ ॥ মন্থরা
দযঃ সৰ্বে ত্যক্তাপদঃ স্বস্থানং গত্বা যথাসুখমাশ্রিতাঃ ।
অথ রাজপুত্রৈঃ সানন্দচেতোभिঃ সৰ্ব্বং তত্ অতঃ সৰ্ব্বং তে
সুখিনঃ সম্যক্তাস্তস্মাত্ সিদ্ধং নঃ সমোদিতং ॥ বিঘ্নাশ্রম্ভো
বাচ এতাবতা ভবতামভিলষিতং সম্যগ্ অপরমপী
দমস্তু । *❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*

ভদ্রা ভদ্রা বিবেচনা না করিয়া কৰ্ম্ম করি যে আমি সে আমার
এ উপযুক্তই বটে যেহেতুক যে লোক নিশ্চিত বিষয়কে
পারিত্যাগ করিয়া অনিশ্চিত বিষয়কে চেষ্টা করে তাহার
নিশ্চিত বিষয় নষ্ট হয় অনিশ্চিত বিষয়ত নষ্ট হইয়াছে
অনন্তর এ ব্যাধ বাসস্থানে গেল ॥ অতঃ পরে দুর্গম বনকে
ও মিত্র করিবেক দেখে ব্যাধকতক বদ্ধ কৰ্ম্ম শ্রেষ্ঠ মুষিক
কতক মোচিত হইল । নষ্টরপুভতি সকলে বিপদভোগ
হইয়া আপন স্থানে যাইয়া সখেতে থাকিল ।

পরে রাজকুমারেরা আত্মাদ চিত্তেতে সে সমস্ত গুনিলেন
তাহারা সকলে সুখা হইলেন সেইহেতুক আনারদের
অভিলষিত সম্পন্ন হইল । বিষ্ণুশর্মা বলিলেন এই পুস
ক্ষেতে তোমারদের বাঞ্ছিত সিদ্ধি হইল অন্য ও এই হউক ।

I have been served right, said he, for not having been more circumspect.

He who forsaketh a certainty, and attendeth to an uncertainty, loseth both the certainty and the uncertainty, together.

So having said this, he returned home disappointed by his own folly. Make friends, therefore, both strong and weak, as you see how the tortoise was released from the bondage of the hunter by a rat. The tortoise with the rest remained together in mutual happiness.

The rājā's sons, then said,—We have all been greatly entertained; and now is completed what we first wished for. May every other of your Highnesses inclinations, replied Vishnu-Sarma, be accomplished like this!

মিত্রং প্রাপ্নুত সজ্জনাজনপদৈর্লক্ষ্মীঃ সমালম্বতাং ॥
 भूपालाः परिपालयन्तु वसुधां शश्वत् स्वधर्मे स्थिताः ॥
 आस्तां मानसतुष्टये सुकृतिनां नीतिर्नवोढेव वः । कस्या
 खं कुरुतां जनस्य भगवांश्चन्द्रार्द्धचूडामणिः ॥ इति
 हितोपदेशे मित्रलाभोनाम प्रथमকথাसंग्रहः समाप्तः॥

হে সখ্য লাকেরা তোমরা মিত্রকে পাও আর জনসকলের।
 সম্পত্তিকে পাউক আর রাজাসকল অনবরত স্বকীয় ধর্মে
 থাকিয়া পৃথিবীকে পুতিপালন করুন আর নবোদ্ভাবিত নায়িকা
 যেনন পুরুষের মনের সন্তোষের নিমিত্তে হয় এমনি নীতি
 বিদ্যা। সৎপুরুষের চিত্তের পরিতোষের নিমিত্তে হউক ।
 আর ভগবান শিব লোকসকলের মঙ্গল করুন ।
 ইতি মিত্রলাভ কথা সমাপ্ত ।

May you, ye good! find friends in this world! May
 Lakshmi be for ever to be found! May princes, resting
 upon their particular duty, govern and protect the earth!

May the conduct of those who act well afford pleasure
 to the mind! By words alone no one is great. May he, on
 whose diadem is a crescent, cause prosperity to the
 people of the earth!

THE END OF THE MITRALA BHA.

॥ अथ सुहृद्भेदः ॥

अथ राजपुत्राञ्जलुः आर्यं मित्रलाभः श्रुत्वावदत्ता
भिरिदानीं सुहृद्भेदं श्रोतुमिच्छामः। विष्णुसर्मोवाच॥
सुहृद्भेदं तावत् शृणुत यस्यायमाद्यः श्लोकः ॥ वर्द्धमानो
महास्त्रेहोष्ट्रेन्द्ववृषयोर्वने। पिशुनेनापि लुब्धेन जम्बुकेन
विनाशितः ॥ * * * * *

अनन्तरं राजनमनेन बलिनेन हे शूरो आनरा निब्रूतात्
गुनिलान् सम्पुति सुहृद्भेदं गुनिते इच्छा करितेहि विष्णु
शम्भो बलिनेन तोनरा सुहृद्भेदं गुन याहार पुथम श्लोकैर
अर्थ एह अरण्येते लोती अथच खल शृगाल कत क सिंह
उ बलीबर्जेर बर्जनशाल अतिशय पुन नष्ट इहिन।

CH A P. II.

THE SEPARATION OF A FAVOURITE.

HAVING, Sir, said the young princes, heard *The Acquisition of a Friend*, we are now anxious to be informed of what respects *The Separation of a Favourite*.

Attend then, answered Vishnu-Sarmā, and you shall hear concerning the separation of a favourite; of which these lines are an introduction:

In a certain forest there subsisted a great and increasing friendship between a lion and a bull, which is destroyed by a cruel and very envious jackal.

রাজপুত্ররূপে কথমেতৎ বিষ্ণুশৰ্ম্মা কথয়তি অস্মি
 দক্ষিণাপথে সুবর্ণবতী নাম নগরী তত্র বর্দ্ধমানো নাম
 ধনিক নিবসতি। তস্য প্রচুরেऽপি বित্তে অপরান্ বভূনতি
 সমৃদ্ধান্ সমোচ্চ্য পুনরর্থবৃদ্ধিঃ করণীয়েতি মতির্বভূব
 ॥ যতঃ ॥ অধোধঃ পশ্যতঃ কস্য মহিমা নোপচীযতো উপর্যু
 পরি পশ্যন্তঃ সৰ্ব্বং এব দরিদ্রতি ॥ অপরঞ্চ ॥ ব্রহ্মহা
 মরঃ পুজ্যো যস্যাস্তি বিপুলং ধনং । শশিনস্তু ত্যবংশোপি
 নির্দ্বন্দ্বনঃ পরিভূয়তে ॥ অন্যঞ্চ ॥ অয্যবসায়িনমলসং দৈব
 পরং সাহস্যচ পরিহীনং । প্রমদেব বৃদ্ধপতিং নেচ্ছত্যুপগ
 হোতুং লক্ষ্মীঃ ॥ কিঞ্চ ॥ আলস্যং স্ত্রীসেবা সরোগিতা জন্ম
 ভুমিবাৎসল্যং । সন্তোষোতিমীরূত্বং ষড়্ভয়াঘাতাসহত্বস্য

রাজকুমারের। কহিলেন এক পুত্রের বিষ্ণুশৰ্ম্মা বলিতে
 ছেন। দক্ষিণপথে সুবর্ণবতী নামে এক নগরী আছে তাহাতে
 বন্ধমান নামে এক বণিক বাস করে তাহার অনেক বিভব
 থাকিতে ও অন্য বান্ধবদিগে প্রিয়্যবান দেখিয়া পুন
 র্বার ধন বাড়ান কতব্য এই বুদ্ধি হইল যেহেতুক আপন
 অপেক্ষা ক্ষুদ্র লোককে দেখত কাহার মহত্ব না বাড়ে আর
 আপন অপেক্ষা বড় লোককে দেখত সকল লোকেই দরিদ্র
 হয় । অপর যাহার অনেক ধন থাকে সে লোক বন্ধু
 হইলে ও গুজনীয় হয় চন্দের তুল্য বংশ হইলে ও দরিদ্র
 লোক অপমানিত হয় । অপর যুবতী স্ত্রী যেমন বন্ধ

পতিকে গৃহণ করিতে বাঞ্ছা করে না এমনি অব্যবসায়ী
 ও অলস ও দৈবপর ও সাহসরহিত পুরুষকে সম্পত্তি
 সংগ্ৰহ করিতে অভিলাষ করে না । আর আলস্য ও দ্রী
 সেবা ও কল্পতা ও জন্মস্থানের মুহ ও পরিতোষ ও অতি
 শয় ভয় এই ছয় নব্বৈর পুতিবদ্ধক হয় ।

How was this? demanded the rājā's sons; and Viṣṇu-Sarmā relates the following story:

FABLE I.

On the southern road is a city, by name Ratnavati, where used to dwell a merchant's son, who was called Varddhamāna, though possessed of abundant wealth, seeing others his relations very rich, his resolution was, that his own greatness should still be increased. They say; Greatness doth not approach him, who is for ever looking down; and all those, who are looking high, are growing poor.

Again:

Even a man who hath murdered a Brāhman is respectable, if he hath abundant wealth. He may be of a race like that of the moon, still, if he be without riches, he will be despised.

Lakshmi, like a young woman an old husband, doth not like to take unto her one without energy, the idle, him who trusteth in fate alone, or the man who is become destitute by his own extravagance.

Idleness, the worship of women, the being afflicted with disorder, a foolish partiality for one's own native place, discontentedness, and timidity, are six obstructions to greatness.

॥ যতঃ ॥ সম্যদা সুস্থিতং মন্যো ভবতি স্বল্পখ্যায়ি
 যঃ । কৃতকৃত্যো বিধির্মন্যে ন বর্হয়তি তস্য তাং
 ॥ অপরস্ব ॥ নিরুত্সাহং নিরানন্দং নির্ধীর্থ্যমরিনন্দনং ।
 মাঙ্গল্য সীমন্তিনো কাচিত্ জনয়েৎ পুত্রমীদৃশং ॥
 তথা চোক্তং ॥ অলব্ধম্ভৈব লিপ্তে লব্ধং রক্তে দবত্বয়াৎ ।
 রক্তিতং বর্হয়েৎ সম্যক্ বৃহৎ তার্থৈষ নিঃস্রিপেৎ ॥ যতঃ ॥
 অলব্ধমিচ্ছতো ঽর্থযোগাদর্থস্য প্রাপ্তিরেব । লব্ধস্য
 প্যরক্তিতস্য নিধেরপি স্বয়ং বিনাশঃ ॥ অপি চ ॥ অবর্হ
 মানস্বার্থঃ কালে স্বল্পখ্যযোগ্যজ্ঞানবৎ স্তয়মেতি ॥
 অনুপমজ্যমানস্ব নিঃপ্রয়োজনএব সঃ ॥ তথা চোক্তং ॥

যেহেতুক যেমনুষ্য অতুল সম্পত্তিতে আপনাকে স্বচ্ছন্দ
 করিয়া মানে ইহাতে আমি এই বুঝি যে বিধাতা আপনাকে
 কৃতকৃত্য জানিয়া তাহার সম্পত্তি আর বাড়ান না । অপর
 উৎসাহরহিত ও আনন্দরহিত ও পরাক্রমরহিত ও শত্রু
 পক্ষের আত্মদজনক এতাদৃশ পুত্রকে কোনহ নারী না জন্মা
 উক । বিজ্ঞ কতৃক তাহা কথিত আছে অপূর্ণ যে ধন তাহা
 পাইবার চেষ্টা করিবেক পূর্ণ যে ধন তাহা চোরাদিহইতে
 রক্ষা করিবেক রক্ষিত যে ধন তাহাকে নানা পুকারে বাড়াই
 বেব বর্হিত যে ধন তাহা সৎকর্মেতে ব্যয় করিবেক ।
 ধনসংবন্ধে অপূর্ণধন পাইবার নিমিত্তে চেষ্টা করে যে

^{person has not the attainment of - obtained measures and further not}
 লোক তাহার ধনের পূর্ণতা হয় লক্ষ নিধির ও রক্ষা না
^{draws little of its destruction is made not as}
 করিলে আপনি তাহার নাশ হয় । আর মনী যেমন
^{little expenditure he gains in time as destroyed what wealth}
 অতাল্প ব্যয় হইলে কালেতে ক্ষয় পায় এই রূপ অবদিত
^{in little little expenditure being not in time as destroyed what wealth}
 অর্থ অতাল্প ব্যয় হইলে ও কালেতে নাশ পায় । যে অর্থ
^{expended is not that useful - that spoken is}
 ভুজ্যমান না হয় সে নিস্পয়োজনই তাহা কথিত আছে ।

He, who thinks himself well provided for by small possessions, will not, in my opinion, have them increased by the creator of the world.

May women be unable to bring forth a son, who shall not exert himself, who is discontented, weak, and giving pleasure to his foes.

It is also said,

A man should try to obtain what he hath not, having obtained it he should keep it with care, what hath been preserved he should increase, and being increased he he should give it away at places of holy visitation.

• From the endeavours of one who longeth for what he hath not got, resulteth the acquisition. Property which hath been acquired, not being taken care of, wasteth of itself.

Riches which are not recruited, like a collyrium, by ever so small an expenditure, are in time reduced to nothing; if they are not appropriated, they are useless.

ধনেন কিং যোন দদাতি নাস্তুতে বস্তুনে কিং যস্য রিপুহ
 বাধতে। শ্রুতেন কিং যোন চ ধর্মমাশ্বরেত্ ক্রিমাভ্যনা
 যোন জিতেন্দ্রিয়োভবেত্ ॥ যতঃ ॥ জলবিन्दুনিপাতেন
 ক্রমশঃ পূর্য্যতে ঘটঃ। স হেতুঃ সর্ধবিদ্যানাং ধর্মস্য চ
 ধনস্য চ ॥ দানোপভোগরহিতাদিবসায়স্য যান্তি वै।
 সকর্মকারমস্ত্রেব শ্বসন্তপি ন জীবতি ॥ ইতি সচ্ছিন্য
 মন্দকসঞ্জীবকনামানৌ দৃষমৌ ধুরি নিযুজ্য। শকট
 নানাবিধদ্রব্যপূর্ণং কৃৎবা বাণিজ্যেন গতঃ কাশ্মীরং প্রতি
 ॥ অন্যচ্চ ॥ অজ্ঞানস্য স্ত্যং দৃষ্ট্বা বলমীকস্য চ সচ্ছয়ং।
 অবস্থ্যং দিবসং কুর্য্যাৎ দানাধ্যয়নকর্মসু ॥ যতঃ ॥
 কোতিভারঃ সমর্থানাং কিং দূরং ব্যবসায়িনাং। কোবিদেশঃ
 সবিদ্যানাং কঃ পরঃ প্রিয়বাদিনাং ॥ *❀*❀*❀

যে না দেয় ও না থায় তাহার ধনে কি পুয়োজন যে বৈরিকে
 দমন না করে তাহার পরাজয়ে কি পুয়োজন যে পুণ্যানুষ্ঠান
 না করে তাহার অধ্যয়নে কি পুয়োজন যে জিতেন্দ্রিয় না হয়
 তাহার শরীরে কি পুয়োজন। যেহেতুক জলবিন্দুপতনেতে
 যেমন ক্রমেতে ঘট পরিপূর্ণ হয় এই কণ সকল বিদ্যা ও ধর্ম
 ধনের ক্রমেতে বৃদ্ধি হয়। দান ও ভোগ ব্যতিরেক যাহার
 দিবস সকল যায় সে কানারের জাঁতার ন্যায় স্থান থাকিতে
 ও জীবিত নয়। এই চিন্তা করিয়া নন্দক সঞ্জীবক নাম দুই
 বলীবর্দকে শকটে যোজনা করিয়া নানা পুকার দ্বারা

শকট পরিপূর্ণ করিয়া বাণিজ্য করিতে কাশ্মীরদেশে গেল।
 অপর কালিরনাশ এবং উইনন্দনের বন্ধি দেখিয়া দান এবং
 পাঠ এবং বাণিজ্যাদি কয়েতে দিন নিরর্থক করিবে না
 যেহেতুক বলবানের ভার কি ব্যবসায়ির দূর কি গুণবানের
 বিদেশিক পুয়ভাষির পর কি।

What hath he to do with wealth, who neither giveth nor enjoyeth? What hath he to do with strength, who doth not exert it against the foe? What hath he to do with the holy law, who doth not practice virtue? What hath he to do with a soul, who doth not keep his passions in subjection?

By the fall of drops of water, by degrees, a pot is filled. Let this be an example for the acquisition of all knowledge, virtue, and riches.

He, whose days are passed away without giving or enjoying, puffing like the bellows of a blacksmith, liveth but by breathing.

These were the cogitations of the merchant; who, accordingly took two bulls, the one called Sang-jivaka, the other Nandanaka, and having yoked them to a cart loaded with sundry precious articles, departed for Kāsmīra, Again:

Having beheld the decrease of a collyrium, and the collected heap of the white ant, a man should spend his days, which are not to be retarded, in acts of charity, and the study of virtue.

What is too great a load for those who have strength? What is distance to the indefatigable? What is a foreign country to those who are skilled in science? Who is a stranger to those, who have the habit of speaking kindly?

অথ গচ্ছতস্তস্য সুদুর্গনান্নি মহারণ্যে সঞ্জীবকোভগ্ন
 জানুর্নিপতিতস্তমালোক্য বর্দ্ধমানোঽচিন্তয়ত ॥ কৰোতু
 নামনীতিজ্ঞো ব্যবসায়মিতস্ততঃ । ফলং পুনস্তদেবাস্য
 যদ্বিধেৰ্মনসি স্থিতং ॥ কিন্তু ॥ বিস্ময়ঃ সর্বথা হেয়ঃ প্রত्यूহঃ
 সর্বকর্মণাং । তস্মাদ্বিস্ময়মুক্ত্য সাধ্যে সিদ্ধির্বিধী
 যতাং ॥ ইতি সঙ্ঘিন্য সঞ্জীবক তত্র পরিত্যজ্য বর্দ্ধমানঃ
 পুনঃ স্বয়ম্ভর্মপুং নাম নগরং গত্বা মহাকাশমন্যদ্বষম
 মেকং সমানোয ধুরি নিযোজ্য চলিতস্ততঃ সঞ্জীবকোপি
 কথং কথমপি খুরত্বে ভরং দ্রত্বোত্যিতঃ ॥ যতঃ ॥ নিমগ্নস্য
 পয়োরাশৌ পর্বতাৎ পতিতস্য চ তত্কেণাপি দৃষ্টস্য
 আয়ুর্মর্ম্মাণি রচ্চতি ॥ নাকালে ঘিয়তে জন্তুর্বিহঃ
 শরশতৈরপি কুশাগ্রেনৈব সংসৃষ্টঃ প্রাপ্তকালো ন জীবতি ।

অনন্তর সুদুর্গনানে মহারণ্যে গমন করত তাহার সঞ্জীবক
 ভগ্নপদ ইহিয়া পড়িল তাহাকে দেখিয়া বর্দ্ধমান চিন্তা করিল
 নীতিজ্ঞ লোক ইতস্ততো ব্যবসায় করক কিন্তু ইহার ফল
 পুনঃ তাহাই হয় যাহা বিধাতার মনে থাকে কিন্তু সকল
 কর্মের বিষ যে বিস্ময় ইহা সর্ব পুকারে ত্যাজ্য সেইহেতুক
 বিস্ময়কে পরিত্যাগ করিয়া সাধ্য কর্মেতে নিকি বিধান করা
 ইহা ভাবনা করিয়া সঞ্জীবককে সেই স্থানে পরিত্যাগ করিয়া
 বর্দ্ধমান পুনর্বার আপনি ধর্ম পুন্নামনগরে গিয়া বৃহৎ শরীর
 এক অন্য বলীবর্দ্ধকে আনিয়া ভার যোজন করিয়া চলিল ।

অনন্তর সঞ্জীবক ও কোন পুকারে তিন খরেতে ভর
 করিয়া উঠিল যেহেতুক অগাধজলেতে নদী ও পদতহইতে
 পতিত ও তরুণককতক দষ্ট ইহারদের নদীকে পরমায়
 রক্ষা করে । শত শত শত বিদ্ধ হইলে ও পানী অকালে
 নরেনা কুশাগেতে স্পষ্ট হইয়া কালপাপ্ত হইলে বাচে না ।

As they were going over the forest, called Sudurga, Sang-jivaka fell down and brake his knee; seeing which, Varddha-māna meditated in this manner:

One acquainted with men and manners may exercise his endeavours here and there; but, after all, the fruit will be whatever is in the will of providence.

But,

Hesitation should be abandoned as the opponent of every action, whence, having forsaken hesitation, let success attend the performance.

Having thus determined, Varddhamāna quitting Sang-jivaka went to the city, called Dharma-pura, and brought from thence another bull of great bulk. He yoked him to the cart, and having packed up his goods, pursued his journey. The poor bull Sang-jivaka, by resting his whole weight upon three feet, contrived to get up; for,

The destined age of every one defendeth the vitals of one plunged into the water, fallen from a precipice, or bitten by a serpent.

Although a person is pierced by hundreds of arrows, yet his vital spirits do not forsake him at an unseasonable time, but when his destined period comes, he dies even by the touch of a straw.

অরক্ষিতং তিষ্ঠতি দৈবরক্ষিতং সুরক্ষিতং দৈবহতং বিনশ্যতি ।
 জীবত্যনাথোপি বনে বিসর্জিতঃ কৃতপ্রযতোপি গৃহে ন
 জীবতি ॥ ততোদিনেষু গচ্ছতু সঞ্জীবকঃ স্বেচ্ছাহার
 বিহারং কৃत्वा অরণ্যং ভ্রাম্যন্ হৃষ্টপুষ্টাক্লোবলবান্ননাৎ
 তস্মিন্ বনে পিঙ্গলনামা সিংহঃ স্বমুজোপার্জিতরাজ্য
 সুখমনুभवन्নিবসতি ॥ তথা চোক্তা ॥ নাভিবেকোন সংস্কারঃ
 সিংহস্য ক্রিয়তে মৃগৈঃ । বিক্রমার্জিতরাজ্যস্য স্বয়মেব
 মৃগে-দ্ভনা ॥ সচৈকদা পিপাসাকুলিতঃ পানীয়ং পাতু
 যমুনাং কচ্ছমগচ্ছত্ তেন চতত্র সিংহেনানুভূতমকাল
 ঘনগর্জিতমিব সঞ্জীবকনর্দিতমশ্রাবি তচ্ছুত্বা পানীয়
 মপাত্বা সচকিতঃ পরিবৃত্য স্বস্থানমাगत্য কিমিদমি
 ত্যালোচয়ন্তুষ্ণীং স্থিতঃ ॥ *◐*◐*◐*◐*

অন্তরঙ্গ কতক অরক্ষিত ব্যক্তি ও দৈবরক্ষিত হইলে থাকে
 অন্তরঙ্গ কতক সুন্দররূপে রক্ষিতব্যক্তি ও দৈবহত হইলে
 নষ্ট হয় কাননেতে তাক্ত অনাথব্যক্তি ও বাঁচে গৃহেতে
 যত্ন করিলে ও বাঁচে না । অনন্তর কএক দিন গৌলে
 পরে সঞ্জীবক আপন ইচ্ছাতে আহার বিহার করিয়া
 অরণ্যে ভ্রমণ করত হৃষ্টপুষ্ট হইয়া শব্দ করিল । সেই
 বনেতে পিঙ্গল নামে এক সিংহ আপন বাহুবলোপার্জিত
 রাজ্য সুখানুভব করত বাস করে । সে কথা পশ্চিমের
 কহিয়াছেন যে মৃগেরা সিংহের অভিষেক করে না সংস্কার

ও করে না কিন্তু আপনি পরাক্রমাজিত রাজ্যের নৃগেন্দ্র
 পায়। সেই সিংহ এক দিবস তৃষাণ্ড হইয়া জলপান করি
 বার নিমিত্তে যমুনায় তীরে গেল সেই সিংহ এ স্থানে অকাল
 নেয়গজনের ন্যায় সঞ্জীবকের শব্দ শুনিল তাহা শুনিয়া
 জলপান না করিয়া সভয় হইয়া ফিরিয়া আপন স্থানে
 আসিয়া এ কি ইহা আলোচনা করত চুপ করিয়া থাকিল।

He who is neglected by his friends liveth, if protected by fate; and he who is gaurded by his friends dieth, if forsaken by fate. Thus the helpless person who is exposed in a forest liveth, while he who is protected at home dieth.

In a few days, by feeding well upon what was most agreeable to him, he grew plump and full of spirits, and as he wandered about through the tracks of the forest, he made a great bellowing. In this same forest, there resided Pingalaka, a lion, in the full enjoyment of the pleasures of a dominion acquired by the strength of his own arm; for it is said,

There is no ceremony of anointing, or inauguration, performed by the other animals upon the lion To be head of the beasts is the natural right of him, who subdueth the kingdom by his prowess.

One day, the lion being thirsty, went to the river Yamunā to drink of its waters; when, hearing the bellowing of Sang-jivaka, a kind of noise he had never heard before, and which to him appeared as dreadful as the unseasonable roaring of a could, he turned away without drinking, and went back to his abode trembling with fear; where he stood silently meditating, what it could be.

সব তথাবিধঃ করটকদমনকাভ্যামস্য মন্দি
 পুত্রাভ্যাং শৃগালাভ্যাং দৃষ্টঃ তং তথা বিধং দৃষ্ট্বা দম
 নকঃ করটকমাহ সখৈ করটক কিমিত্যর্থং উদ
 কার্থী স্বামী পানীয়মপীত্বা সচক্ৰিতোমন্দং মন্দম
 বতিষ্ঠতে । করটকোব্রূতে মিত্র দমনকাস্মন্যতে নাস্য
 সেবৈব ন ক্রিয়তে যদি তথা भवति तर्हि किमनेन
 স্বামিচেষ্টানিরূপণেনাঙ্গাংকং যতস্থানেন রাজা বিনাঃপ
 রাধেন চিরদিবসমবধীরিতাভ্যামাবাভ্যাং মহদঃখম
 নুমুতং ॥ অপরञ्च पश्य ॥ सेवया धनमिच्छद्भिः सेवकैः
 पश्य यत् कृतं । स्वातन्त्र्यं यच्छरीरस्य मूढैस्तदपि हारितं
 ॥ अपरञ्च ॥ शीतवातातपक्लेशान् सहन्ते यान् परा
 श्रिताः । तदंशेनापि मेधावी तपस्तप्ता सुखी भवेत्

ইহার মন্দিপুত্র করটক দমনক দুই শৃগাল মিত্রকে সেই
 পুকার দেখিল । তাহাকে সেই পুকার দেখিয়া দমনক করট
 ককে বলিল হে মিত্র করটক এই জলপানার্থী রাজা কেন
 জল পান না করিয়া ভীত হইয়া আস্তে অবস্থান করিতে
 ছেন । করটক বলিতেছে সখে দমনক আমার মতে ইহার
 সেবাই করা যায় না যদি তাহা হয় তবে এ স্বামীর চেষ্টা নিক
 পাণে আমারদের কি পুয়োজন যেহেতুক এই রাজাকতক
 অপরাধ ব্যতিরেকে আমরা অবজ্ঞাত আর বহুদিন বড়দেখ
 পাইয়াছি । আর ও দেখ ভূত্যেরা সেবার দ্বারা ধনেচ্ছা করত




যাহা করে তাহা দেখ শরীরের যে স্বাভাব্য তাহা ও মূর্থ
কতক হারিত হয় অপর পরাশ্রিত লোক শীত ও বাতাস
ও ব্রোদেতে যে ক্লেশ সহ্য করে বুদ্ধিমান লোক তাহার
একাংশেতে ও তপস্যা করিয়া সুখী হয়।

In this situation the rājā having been discovered by two jackals, sons of his minister, Karataka and Damana-
ka, the latter said to the former,—How is this, my friend,
that the lion, although thirsty, has not drank his usual
draught, and stays at home so dull and dejected? Friend
Damanaka, replied Karataka, in my opinion we ought
not to serve this same rājā any longer, and that being the
case, for what purpose should we investigate his moti-
ons, when we have served him so many years and ex-
perienced nothing but trouble?

See what is done by serving by those slaves who are
covetous of wealth! And see also what liberty the body
is deprived of by those fools!

Again:

Those who are the dependents of another suffer cold,
and wind, and heat, and fatigue! A wise man with a
portion of it could do penance and be happy.

॥ অন্যঞ্চ ॥ এতাবজ্জন্মসাফল্যং যদনাথনবৃত্তিতা ।
 য পরাধীনতাং যাতাশ্চে বৈ জীবন্তি কে সৃতাঃ ॥ অপরঞ্চ ॥
 এহি গচ্ছ পতোন্তিষ্ট বদ মৌনং সমাচর । এবমাশাশ্রয়
 যস্তৈঃ ক্রীডন্তি ধনিমোর্থিभिঃ ॥ কিঞ্চ ॥ অবুধৈরর্থলাভায়
 পণ্যস্বামীভিরিব স্বয়ং । আত্মা সংস্কৃত্য সংস্কৃত্য পরোপকর
 ণীকৃতঃ ॥ কিঞ্চ ॥ যা প্রকৃত্যেব চপলা নিপতত্যশুচাবপি ।
 স্বামিনোবজ্জ মন্যন্তে দৃষ্টিন্তামপি সেবকাঃ ॥ অপরঞ্চ ॥
 মৌনান্মূৰ্খঃ প্রবচনপটুর্বাতুলোজল্যকোবা । ছান্ধ্যা
 মৌর্যাদি ন সহতে প্রায়শোনাভিজাতঃ । ধৃষ্টঃ পার্শ্ব
 বসতি নিয়তং দূরতশ্চাপ্রগল্ভঃ সেবাধর্মঃ পরমগহনো
 যোগিনামপ্যগম্যঃ ॥ বিশেষতশ্চ ॥ ****

অপর পরের অনধীন যে জীবিকা এই জন্মের সাফল্য যাহারা
 পরাধীনতাকে পাইয়াছে তাহারা যদি বাঁচে তবে কে নরি
 য়াছে । এব° আইস যাও পড় উঠ মৌনাবলম্বন কর এই
 পুকার আশারূপ গৃহেতে গুপ্ত যাচকেরদের সহিত ধনবা
 নেরা ক্রীড়া করে । আর বেশ্যা যেমন ধন পাইবার নিমিত্তে
 বেশ বিন্যাস করিয়া আপন শরীরকে পরের উপকার করে
 এমনি মট লোক ধনলাভের নিমিত্তে বেশ করিয়া আপন
 শরীরকে পরের উপকারক করে আর অপবিত্রেতে ও
 পাড়ে স্বভাবত চঞ্চল যে স্বামির দৃষ্টি সে দৃষ্টিকে ও ভতোরা
 বড় করিয়া নানে । অপর সেবা ধর্ম অত্যন্ত দুষ্কর

योगিরদের ও অবোধ্য কেননা যদি মৌনেতে থাকে তবে
তাহাকে মূর্থ বলে যদি বাকপটু হয় তবে তাহাকে পাগল
বলে কিম্বা বহুভাষী বলে যদি ক্রমা থাকে তবে তাহাকে
ভীষ বলে যদি কিছু সহ্য না করে তবে তাহাকে পায়
অনভিজাত বলে যদি সমীপে বৈসে তবে তাহাকে অসভ্য
বলে যদি দূরেতে থাকে তবে তাহাকে মূদু বলে বিশেষ

So far life is worth having: to possess a livelihood without constraint, for if those who dwell under the authority of others live, pray who are the dead?

Come, go, fall, rise, speak, be silent! In this manner do the rich sport with those needy men, who are held by the gripe of dependence!

Fools for the sake of gain, as harlots do, dress themselves, and dress themselves, to become the implements of others!

Farther:

Servants, that their master may not be in a passion, strictly obey his very look, which, by its nature, is variable.

If he is silent, he is stupid; if rich in words, a madman, or an empty prattler; by patiently submitting, he is a coward, and if he will not suffer patiently, for the most part, he is an artful fellow. Seen on one side, he is an errant rascal, and if standing at a distance, he is not to be found. The duties of servitude are extremely profound, and impracticable, even to Yōgis.

Here is another very particular picture of a servant:

প্রাণমধ্যম্নতিহেতোর্জীবিতহেতোর্বিসৃজ্যতি প্রাণান্ । দুঃখী
 যতি সুখহেতোঃ কোমুদঃ সেবকাদন্যঃ ॥ দমনকো ব্রূতে মিচ্
 স্বেষা মনসাপি নৈতৎ কৰ্ত্তব্যং ॥ যতঃ ॥ কথং নাম ন
 সেব্যন্তে যত্নতঃ পরমেশ্বরাঃ অচিরেণৈব য়ে তুষ্টাঃ পূরয়ন্তি
 মনোরথান্ ॥ অন্যচ্চ পশ্য ॥ কুতঃ সেবা বিহীনানাং চাম
 রোদ্ভূতসম্পদঃ । উদ্বলধবলকুচবাজিবারণবাহিনী ॥
 করটকো ব্রূতে তথাপি কিমনেনাঙ্গা কং ব্যাপারেণ ॥ যতঃ ॥
 অব্যাপারেণ ব্যাপারঃ সর্বথা পরিহরণীয়ঃ । পশ্য ॥ অব্য
 পারেণ ব্যাপারং যো নরঃ কৰ্ত্তু মিচ্ছতি ॥ স ভূমৌ নিহতঃ শে
 তে কীলোত্যাটীব বানরঃ ॥ দমনকঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ ॥
 কাটকঃ কথয়তি অস্মি মগধদেশে ধর্ম্মারণ্যসন্নিহিত
 বসুধায়াং সুভদ্রতনাস্নানকাযস্থেন বিহারঃ কৰ্ত্তু মারব্যঃ

বড় হইবার নিমিত্তে নত হয় জীবনের নিমিত্তে পান পরি
 ত্যাগ করে সুখের নিমিত্তে দুঃখী হয় অতএব চাকরহইতে
 অন্য নুর্থ আর কে । দমনক বলিতেছে হেঁ মিত্র কোন
 পুকারে মনেতে ও ইহা কল্পব্য নয় যেহেতুক যাহারা তট
 হইলে অল্প কালেতেই মনস্কামনা পূর্ণ করে এমন যে ধনি
 লোক তাহার কেন যত্নেতে সেবা নয় । আরও দেখ
 সেবারহিতের চামরেতে উদ্ধত সম্পদ কোথা আর উদগু
 ও শ্বেতকুত্র ও গজও সেনা কোথা । করটক বলিতেছে
 তথাপি আমারদের এ ব্যাপারে কি পুয়োজন যে নিমিত্তে

অব্যাপারেতে ব্যাপার করণকারে তাজ্য দেখে যে লোক
অব্যাপারেতে ব্যাপার করিতে বাঞ্ছাকরে সে কালোৎপাটি
বানরের ন্যায় নষ্ট হইয়া ভূমিতে শয়ন করে । দমনক
জিজ্ঞাসিতেছে এ কি পুকার করটক কহিতেছে । নগধ
দেশে ধর্ম্মারণের নিকটে পৃথিবীতে শুভদত্ত নামে
কায়স্থ কেলিগ্হ করিবার নিমিত্তে আরম্ভ করিয়াছিল

He humbleth himself to be exalted; for a living he ex-
pendeth his vitals; he suffereth pain to acquire ease.
Who is then so great a fool, as he who serveth?

What thou proposest, my friend, said Damanaka, is
by no means to be put in practice.

How! are not the mighty lords to be diligently served by
thee, who, without delay, gladly fulfil the desires of the
heart?

When do those without employ enjoy those elevated
stations distinguished by the Chāmara, the white umbrel-
la spread upon a lofty pole, the horse, the elephant, and
the splendid litter.

Notwithstanding all this, observed Karataka, what
have we to do with this affair? One should always avoid
meddling with other folks' business. See what is said
upon this occasion:

*The man, who will have to do in matters with which he
hath no business, may be repulsed and sleep upon the
ground, like the ape, who drew out the wedge.*

How, was that? demanded Damanaka; and he related
the following story:

FABLE II.

IN the country which is called Magadha, Subha-datta,
a man of the Kāyastha tribe, had begun to build a thea-
tre for an entertainment.

তত্র করপত্রদ্যর্থমানৈকস্তমস্য কিঞ্চিদূরপ্কাটিতস্য
 কাষ্টলুপ্কাটদ্বয়মধ্যে কীলকং নিধায় সূত্রধারেণ ধৃতং তত্র
 বলবান্ বানরযুথঃ কীডনে কোবানরঃ কালপ্রে রিতদ্রব তং
 কীলকং হস্তাভ্যাং ধৃত্বোপবিষ্টঃ তত্র তস্য মুচ্ছদ্বয়ং লম্ব
 মানং কাষ্টলুপ্কাটদ্বয়াভ্যন্তরে প্রবিষ্টং অনন্তরং সচ সহজচ
 পলতয়া মহতা প্রয়ত্নেন তং কীলকং আকৃষ্টবান্ আকৃষ্টে
 চ কীলকে চূর্ণিতাষ্টদ্বয়ঃ পশ্চত্ব গতঃ অন্তোহং ব্রবামি
 অত্যাপারেষু ব্যাপারমিত্যাदि । দমনকোব্রূতে তথাপি
 স্বামিচেষ্টানিরূপশং সেবকেনাবশ্যং করণীয়ং । করটকো
 ব্রূতে সর্বসিদ্ধিধিকারে যএব নিযুক্তঃ প্রধানমন্ত্রী সকরোতু
 যতঃ। অনুজীবিনা পরাধিকারচর্চা শর্ঘ্বা ন কৰ্ত্তব্যং ।

তাহাতে করাত দ্বারা বিদ্যমান এক সুস্তের কিয়ৎপরিমাণ
 দুই খণ্ড হইয়াছিল এই খণ্ডদ্বয়ের মধ্যে সূত্রধার এক কীলক
 নিধান করিয়া রাখিয়াছিল তাহাতে বানরের পালকীড়া
 করিতেছিল এক বানর কাল পৌরিতের নাম সেই কীল
 ককে দুই হাতে ধরিয়া বসিল সেই কাষ্টদ্বয়ের মধ্যে
 তাহার দুই অঙ্কোষ লইয়া পাড়িয়াছিল । অনন্তর
 সে সভাবত চাপলাহতক বড় পর্যায়ে এই কীলক
 টানিল কীলক আকৃষ্ট করিলে পরে দুই অঙ্কোষ বিদগ
 হইয়া পঞ্চ পাঁচল এই জন্যে আমি বলি যে লোক

अन्यापारेते, व्यापार करिते, इच्छा करे इत्यादि।
 दमनक बलितेहे तथालि कामिर छेष्टा निरूपण सेव
 कर अवश्या कडवा करटक बलितेहे समस्त कायोते
 नियुक्त ये प्रधान मन्त्री সেই ककक सेहेतुक भुत्तोरुदेर
 पराधिकार छ। कौन प्रकारे कडवा नहे।

One of the carpenters having with his saw cut some way through a piece of timber, put a wedge into the slit. In that place a troop of apes came playing tricks; and one of them as if directed by the wand of time, took hold of that wedge with his two hands, and sitting down, his lower parts hung within the slit. At length, from the natural giddiness of his species, with great difficulty he drew out the wedge, so that the boards closing, what was between them was entirely destroyed and he deprived of his life. Wherefore, I say,

The man who will &c.

For all this, said Damanaka, the concerns of the master should certainly be looked into, even by the servant. The prime minister, observed Karataka, being employed in the superintendence of all affairs, let him do it. An inferior should, on no occasion, interfere with the department of another; for,

পশ্য। পরাধিকারচর্চা যঃ কুর্য্যাত্ স্বামিহিতৈচ্ছয়া।
 স বিষাদতি ভীৎকারোদ্ধর্দমস্তাভিতোযথা ॥ দমনকঃ
 পৃচ্ছতি কথমেতৎ করটকোব্রূত অস্মি বারাণস্যাং কর্পূর
 পটকো নাম রজকঃ স চাভিনববয়স্কথ্যাবধ্বা সহ
 চিরং নিধুবনং কৃत्वा নির্ভরমালিঙ্গ্য প্রসুপ্তঃ তদনন্তরং
 তদ্রূহদ্রব্যোণি হৃৎ চৌরঃ প্রবিষ্টঃ তস্য প্রাক্গমে গর্দ
 ভোবদ্বস্তিষ্ঠতি কুকুরস্তোপবিষ্টোঽস্মি অথ গর্দভঃ শ্বান
 মাহ সখি ভবতস্তাবদ্যং ব্যাপারস্তত্ কিমিতি ত্বমুচ্যৈঃ
 শব্দং কৃत्वा স্বামিনং ন জাগরথসি। কুকুরোব্রূত ভদ্রং
 মম নিয়োগস্য চর্চা ত্বয়া ন কৰ্ত্তব্য ত্বমেব কিং ন
 জানাসি যথা তস্যাহর্নিশং গৃহরক্ষাং কৰোমি যতোঽয়ং
 চিরান্নিবৃত্তো মমোপযোগং ন জানাতি। *❖❖❖❖

দেখ যে জন পুভূতিতেচ্ছাতে পরাধিকার চর্চ। করে সে
 বিষয় ইন্দ্ৰিয়মেন চৌকরেতে গর্ভত তাড়িত হইয়াছিল। দমন
 নকপূর্ণ করিতেছে ইহা কি পুকার করটক কহিতেছে।
 কাশাতে কর্পূরপটক নামে এক রজক থাকে সেনব
 যুবতী বধুর সহিত রতি করিয়া নির্ভর আলিঙ্গন করিয়া
 নিদ্রিত হইয়াছে তৎপরে তাহার ঘরের দুবা সকল চুরি
 করিবার নিমিত্তে চৌর পবেশ করিয়াছে। তাহার উঠা
 নেতে এক গাধা বাঁধা থাকে এক কুকুর ও বসিয়া থাকে।
 অনন্তর গাধা কুকুরকে বলিল * হে মিত্র তোমার এই

ব্যাপার তব্ব কেন তুমি উচ্চৈঃস্বরেতে পুতকে না জাগা ও
কুকুর কহিতেছে তান আমার কন্ঠের চক্ষ। তোমার কণ্ঠবা
নয় তুমি ইহা কি জান না যেকপেতে দিবা রাত্রি আমি
তাহার গৃহ রক্ষা করি যেহেতুক চিরকাল নিবৃত্ত এ ব্যক্তি
আমার উপ যোগিতা জানে না।

*He who shall meddle with the department of another,
out of zeal for the welfare of his master, may repent;
like the ass who was punished for braying.*

Damanaka enquired how that happened; and Kara-
taka recounted the following story:

FABLE III.

At Bārānāsi there lived a washerman, whose name was Karpura-pataka. Once upon a time, having spent the evening until it was very late in the agreeable company of his young wife he went to bed fatigued, and slept soundly. In the mean time, a thief got in with an intention to rob the house. In the court, there were an ass and a dog. The ass said to the dog, upon hearing the thief,— This is thy business; then why dost thou not get up, and by barking contrive to rouse thy master? What hast thou to do with my department? replied the dog. Thou knowest full well, how I watch and guard this house all day and night, and yet this master of ours doth not consider my merit;

তেনাধুনাপি মনোহারদানে মন্দাদরঃ যতোবিদ্যা বিধুর
 দর্শনং স্বামিনুপজীবিশু মন্দাদরাভবন্তি ॥ গর্ভভোব্রুতে
 শ্রুণু রেবর্ষর । আচতে কার্য্যকালৈ যঃ সক্তি মৃত্যুঃ সক্তি
 সুহৃৎ । অকার্য্যকার্য্যকর্ত্তাঘস্বনাদিদোষ্যসৌ সুহৃৎ ॥
 কুকুরোব্রুতোমৃত্যান্ সমাপয়েৎসু কার্য্যকালৈ সক্তি প্রমুঃ ॥
 যতঃ ॥ আশ্রিতানাং মৃত্যুস্বামিসেবায়াং ধর্ম্মসেবনে ।
 পুনর্য্যোত্যাদনে চৈব ন সন্তি প্রতিহস্তকাঃ ॥ ততোগর্ভভঃ
 সলোপমাহ অরেদুষ্টমতে পাপোয়াংস্বং যদ্বিপতৌ স্বামি
 কার্য্যউপেক্ষাং কেরোষি ভবতু তাবত্ যথা স্বামী আগরি
 য়তি তন্ময়া কর্ত্তব্যং ॥ যতঃ ॥ পৃষ্টতঃ সেবয়েদর্কং জঠ
 রেণ জ্ঞতাশনং । স্বামিনং সর্ব্বভাবেন পরলোকমনাযয়া ॥
 ইত্যুক্তা অতীবচীল্কারশব্দং কৃতবান্ ॥ *❀*❀

সেইহেতুক এখন আমার আহীর দানেতে অনাদির ইইয়াছে
 যেহেতুক বৈকুণ্ঠ্য দর্শনব্যতিরেকে ভূতোতে স্বামির মন্দাদর
 হয় গর্ভভ বলিতেছে শুনরে ববর কাষাকালে যাচঞা করে
 সে কি দাস আর সে মিত্রইবা কি আঙ্কাপাণ্ড না হইনে ও যে
 জন অন্য কতব্য ব্যাপার ও করে সেই মিত্রকুকুর কহিতেছে
 কাষাকালে যে লোক ভূতেরদিগকে সন্তুষ্ট করে সে
 কি পুত্রে যেহেতুক আশ্রিতেরদিগের পোষণেতে এব° স্বামি
 সেবাতে এব° গণ্যানুষ্ঠানেতে এব° সন্তান জন্মানেতে পুতি
 নিধি নাই । অনন্তর গাথা ক্রোধ করিয়া কহিল অরে

crashy one they dinner and - for an calumny - others work neglect -
 दूध जि तू पाणिष्ठ येहेतुक बिपत्ति ते पुत्रकार्यो उपेक्षा
do not - but - who - the master - overtake - that - now
 करिनि हउक ये पुकारे दामी जागेन ताहा आमार
debt - on the back - the - don't - worshippers should be -
 कतबा । येहेतुक पाहेते सयाके सेवा करिवेक उह
velly are - the fair - should be worshipped - at all times - the master -
 रेते अग्निके सेवा करिवेक सवपुकारे पुत्रके सेवा
should be - direct - without - the other words - should be worshipped -
 करिवेक मायाराहितेते परलोकके सेवा करिवेक
when saying name such bringing some made
 इहा बलिवा अतिवड्छांकार शक करिन ।

and I am even stinted in my allowance of provision. Now masters in general, without spying some fault in their servants, are not wont to shorten their allowance. Hear me, barbarian! exclaimed the ass.

Is he a servant, is he a friend, who hesitateth at the time of action? Should the business be ruined, could it be occasioned by a servant, or by a friend!

The dog replied,—Hear me for a moment.

Is he a master who, at a proper season, doth not consider his servants? Are not they who keep servants on all occasions to cherish them?

Do they not also say,

Dependants should have no interrupters in their meals, in their amusements, in the execution of their religious ceremonies, nor in doing good for the sake of virtue.

The ass in a rage exclaimed,—Villain! thou neglectest thy masters' business. Be it so, but it is my duty to do something that shall wake him; for,

The sun should be worshipped on the back, the god of fire on the belly, a master in every way, and the world above without deceit.

Having repeated these lines, he began to make a great noise by braying;

ততঃ সরজকসেনা চীৎকারেণ প্রবুদোনিদ্রাভঙ্গকোপাদিত্যায়
 গর্ভমংলগুডেন তাড়য়ামাস তেনাসৌ পঞ্চত্বমগমত অতোহং
 ব্রহ্মীমি পরাধিকারচর্চা মিত্যাदि पश्य पशूनामन्वेषणे मे
 वासन्नियोगः स्तनियोगचर्चा क्रियतां विमृष्य कित्त्वद्य
 तथा चर्चया न प्रयोजनं ततश्चावयोर्भक्षितशेषाहारः
 प्रचुरोस्ति दमनकः सरोषमाह कथमाहारार्थी भवान्
 केवलं राजानं सेवते एतद्युक्तमुक्तं त्वया ॥ यतः ॥
 सुहृदामुपकारकारणात् द्विषतामप्यपकारकारणात् ।
 नृपसंश्रयदृश्यते बुधैर्ज्জটরং কোন বিমর্শিত্তি কেবলং ॥ জীবিত
 यस্য জীবন্তি বিপ্রামিত্রাণি বাম্ভবাঃ । সফলং জীবিতং
 তস্য আত্মার্থে কোন জীবতি ॥ অপি চ ॥ যস্মিন্ জীবতি
 জীবন্তি বহবঃ সতু জীবতু । কাकोपि किं न कुरुते
 चञ्चा सोदरपूरणं ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

পরে সে রজক সেই চীৎকার শব্দে জাগু হইয়া নিদ্রা ভঞ্জন
 ত্রোদেতে উঠিয়া লগুগুডা গাধাকে নারিন তাহাতে এই
 গন্ধত পঞ্চত্ব পাইল। এই জন্যে আমি বলি পরাধিকারচর্চা
 কর্তব্য নহে ইত্যাদি । দেখ পশুরদের অন্য বিষয় অন্বেষণ
 করাই অসম্মিযোগ সম্প্রতি অনিয়োগের চক্ষু কর কিন্তু
 আজি সে চক্ষুতে ও পুয়োজন নাই কেননা আমারদের দুই
 জনের ভুক্তাবশিষ্ট আহার যথেষ্ট আছে। দমনক কোপ করিয়া
 কহিল তুমি কি কেবল আহারের নিমিত্তেই রাজাকে

সেবা কর ইহা তুমি অনুপযুক্ত কহিল। যেহেতুক বন্ধু
লোকেরদিগের উপকারের নিমিত্তে আর শত্রুর অপকারের
নিমিত্তে রাজার আশ্রয় পণ্ডিতেরা অভিলষ করেন কেবল
আপন পেট কে না ভরে যাহার বাঁচাতে বাঞ্ছন ও বাঞ্ছন
বাঁচে তাহারই জীবন সার্থক আপনার নিমিত্তে কে না বাঁচে
অপর যে বাঁচিলে অনেক বাঁচে সেই বাঁচুক নতুবা কাক
ও কি চণ্ডিতে করিয়া আপন উদর পূরণ করেন।

So that the washerman was alarmed, but, although exceedingly drowsy, he got up and gave the ass a good beating with a large stick. I repeat, therefore, *He who shall meddle &c.*

Observe: our employment is searching for game; then let us attend to our proper business. But now I have considered, I think there is not any occasion for our doing that to-day; for there is plenty of provisions for us, and some to spare Damanaka, displeased at this observation, exclaimed,—What! Dost thou serve his highness the rājā, merely for the sake of food? This is very unwise; as is declared in these lines:

By the wise the patronage of princes is sought to gain the assistance of friends, as well as aid against the treachery of enemies; for, who doth not simply fill his belly?

They say,

Worthy is the life of him, in whose living the Brāhmans and the relations live, for, who doth not live for himself?

Let him live, in whose living many live. Doth not even the booby fill his belly with his bill?

॥ পশ্য ॥ পঞ্চভিৰ্য্যতি দাসত্বং পূরুণৈঃ কোপি মানবঃ ।
 কপি লচৈঃ কতো কোপি লচৈরপি ন লভ্যতে ॥ অন্যচ্চ ॥
 'মনুষ্যজাতৌ তুল্যাচাং মৃত্যুত্বমুতিগেহিতং । প্রথমোযোন
 তত্রাপি স কিং জীবন্তু গণ্যতে ॥ তথা চোক্তং ॥ বাজিবারণ
 লৌহানাং কাষ্টপাষণবাসসাং নারীপুরুষতোযানামন্ত
 রং মহদন্তরং ॥ তথা হি স্বল্পমপ্যতিরিচ্যতে স্বল্পস্নাত্যুব
 শ্রাবশেষমলিনং নির্মাংসমথ্যস্থিকং ॥ শ্চা লব্ধ্বা পরিতোষ
 মেতি ন ভবেত্তল্য চুধঃ শান্তয়ে । সিংহো জম্বুকমঙ্কমাগত
 মপি ত্যক্তা নিহন্তি দ্বিপং সর্ধঃ কচ্ছগতোপি বাঙ্কতি জনঃ
 সত্যানুরূপং ফলং ॥ অপরঞ্চ ॥ সেব্যসেবকযোরন্তরং পশ্য ।

দেখ কোন মনুষ্য পাঁচ কাহ্নেতে দাসত্ব পায় উপযুক্ত কেহ
 লক্ষকাষাপেতে দাসত্ব পায় কোনলোক লক্ষকাহ
 নেতে ও পাওয়া জায় না অপর সমান যে, মনুষ্য জাতি
 তাহাতে দাসত্ব বড় নিন্দিত তাহাতে ও যে পুথান নয় সে
 কি জীবিতের মধ্যে গণ্যায় । পণ্ডিত কতৃক তাহা কথিত
 আছে ঘোড়া ও হস্তী ও লোহের এব° কাষ্ট ও পুস্তর
 ও বস্ত্রের এব° স্ত্রী ও পুরুষ ও জনের যে অন্তর সে অনেক
 অন্তর । আর অতন্ন ও অতিরিক্ত হয় অতন্ন নাড়ী বসা
 ও বেদ অবশিষ্ট মলিন মাংসরহিত অস্থি ও পাইয়া
 কুকুর সন্তোষ পায় তাহার ক্ষুধা নিবৃত্তির নিমিত্তে হয়

ना सिंह क्रोড়েते पांशु शृगालके ও ত্যাগ করিয়া হস্তিকে
নষ্ট করে সমস্ত পূর্ণা কষ্ট পাইনে ও আপন উপযুক্ত
কল বাঞ্ছা করে । অপর সেবা ও সেবকের অন্তর দেখ

With five panas of shells any man may procure attendance, and any man, by a stronger reason, with a hundred thousand! But a servant, who acts well, is not acquired by ten myriads.

Mankind being by birth upon an equality, the state of servitude is reproachful. He who is not the first of his species, is counted among those who are dependants.

It is said also,

The difference which is between horses, elephants, and iron, wood, stone, and cloth, women, men, and water, is a very great difference.

A trifling thing is sometimes reckoned as a very great one.

For,

A dog having found a bone with a few sinews sticking about it, dirty, loathsome, and without a bit of meat upon it, is rendered exceedingly happy, although it be not sufficient to satisfy his hunger.

Whilst,

The lion permitteth the jackal to come near and escape, and killeth the elephant. Every man, although reduced to distress, longeth for fruit suitable to his strength.

Observe the difference in the behaviour of him who serveth, and of him who is served:

স্নানচালনমথস্বরূপাবপাতমূনো নিপত্য বদনোদর
 দর্শনম্ভ। শ্বা পিণ্ডদস্য কুরুতে গজপুঙ্গবস্তু ধীরং বিলোক
 যতি চাটুশনৈশ্চ ভুক্তো ॥ কিঞ্চ ॥ যজ্ঞোবতি চাণমপি
 প্রথিতং মনুষ্যৈঃ বিজ্ঞানবিক্রমযশোভিভজ্যমানং।
 তন্মাম জীবিতমিহ প্রবদন্তি তজ্জাঃ কা কোপি জীবতি
 চিরায় বলিঞ্চ ভুক্তো ॥ অপরম্ভ ॥ যোনা তনানা ন চ গুহর্ন
 চ মৃত্যুর্ধর্গে দোনে দয়াং ন কুরুতে ন চ বন্থুর্ধর্গে ॥ কিন্তস্য
 জীবিতফলেণ মনুষ্যলোকে কা কোপি জীবতি চিরম্ভ
 বলিঞ্চ ভুক্তো ॥ অপরমপি ॥ অহিতহিতবিচারশূন্যবুদ্ধেঃ
 শ্রুতিসমর্থৈর্বজ্জমিস্তিরস্কৃতস্য । উদরভরণমাত্রকোব
 লেচ্ছোঃ পুরুষপশোঃ পশোশ্চ কো বিশেষঃ ॥ * * * * *

কুকুর গাঙ্গ পরিমিত অন্নদাতার নিকটে লাঙ্গুল লাড়ে
 আর পদতলে পাড়ে আর ভগিতে পাড়িয়া মুখ ও উদরের
 দর্শন করায় উত্তম হস্তী বন্দ্য অবলোকন করে অল্পে
 ভোজন করে। অপর মনুষ্যকতৃক খ্যাত হইয়া বিজ্ঞান ও
 পরাক্রম ও কীৰ্ত্তিতে অভজ্যমান হইয়া এক ক্ষণ ও যে বাচন
 পাণ্ডিত্যে তাহাকেই জীবিত কহিয়াছেন কাক ও চিরকাল
 বাচে বলি ও ভোজন করে। অপর যে আপনার উপ
 দেশক নয় আর দাসবর্গে দয়া না করে আর দরিদ্র লোকে
 দয়া না করে আর নিম্নবর্গে দয়া না করে মনুষ্যালোকে

তাহার জীবনে কি কল কাক ও অনেক কাল বাঁচে
 বসি ও ভোজন করে। অপর ও বেদোক্ত আচারেতে
 রহিত ও অনেক লোককতৃক তিরস্কৃত ও উদরভরণ
 মাত্রাভিলাষি ও ভদ্রাভদ্রবিবেচনারহিতাস্ত্রঃকরণ যে পুরুষ
 পশু তাহার আর অন্যপশুর ভেদ কি।

Shaking the tail, falling down at the feet, and, prostrated upon the ground, looking up at his face and stomach: all this the dog performeth to his master who feedeth him. But the noble elephant looketh boldly, and eateth not, unless he liketh, with an hundred kind entreaties.




But,

That life, although it endure but for a moment, which is celebrated by mankind, as being attended by knowledge, valour, and renown, is, by those who know it, alone distinguished by the name of life. A crow liveth a long time, and a raven eateth.

In this world, of what use is his life, who is not an instructor to himself, who doth pity his servants, the poor, and his friends?

For,

How is that brute-like man distinguished from a beast, whose understanding is void of the power to discriminate between good and evil, who is destitute of the many benefits of the sacred records, and whose only inclination is the filling of his belly?

করটকোব্রূতে আবাং তাবদপ্রধানৌ তদাপ্যাবযোঃ কিম
 মযা বিচারণযা । দমকোব্রূতে কিযতা কালেনামাত্যাঃ
 প্রধানতামপ্রধানতাম্বালভন্তে ॥ যতঃ ॥ ন কস্য চিত্
 কস্বিদিহ স্বভাবাঙ্গবল্যুদারোভিমতঃ স্খলোবা । লোকে
 গুরুত্বং বিপরোততাম্বা স্বচেষ্টিতান্যেব নরং নযন্তি ॥ কিঞ্চ ॥
 আরোপ্যতে শিল্পা শৈলে যত্নেন মহতা যথা । নিপাত্যতে
 স্ত্রুণেনাধস্তথাআ গুণদোষযোঃ ॥ যাত্যধো ধোব্রজত্যুচ্চৈর্নরঃ
 স্ত্রৈরেব কর্ম্মভিঃ । কূপস্য লুণ্টিতা যদ্বত্ প্রাকারস্যেব
 কারকঃ ॥ তদ্বদ্রং স্বয়নাযন্তোহ্য়াত্মা সর্বস্য । করটকো
 ব্রূতে অথ ভবান্ কিং ব্রবীতি স আহ অযন্তাবত্ স্বামী
 পিঙ্গলকঃ কুতোপি কারণাত্ সচকিতঃ পরিত্য্যোপবিষ্টঃ ।
 করটকোব্রূতে কিং তত্বং জানাসি । ****

করটকবলিতেছে আমরা দুইজন অপুধান তবে আমারদের
 বিচারে কি পুয়োজন । দমনক বলিতেছে নস্ত্রিরা কত
 কালে পুাধানা কিম্বা অপুাধানা পায় বেহেতুক স্বভাবেতেই
 কেহ কাহার ও অভিমত হয় না । খল জ্ঞান ও হয় না স্বদীয়
 চোষ্টতই মনুষ্যকে মহত্ত্ব কিম্বা ক্ষুদ্রত্ব পাওয়ায় আর যেমন
 পর্বতেতে অত্যন্ত পুরাসে পুস্তর উঠায় অতান্ন কালেতেই
 নীচেতেই ফেলে সেইরূপ গুণ ও দোষেতে আত্মা । কূপের
 খণনকর্তা যেকপ নীচেতেই যায় এবং পুাচীরকর্তা যাদৃশ

উচ্চেত যার এই রূপ মনুষ্য আপন কর্মদ্বারাই নীচেত
 যায় এবং উচ্চেত যার সে ভাল সকলের আত্মা আপন
 পুয়াসে আয়ত্ত । করটক বলিতেছে ইহার পর তুমি কি
 বল সে কহিল এই রাজা পিঙ্গলক কি কারণেতে সভয়
 হইয়া ফিরিয়া বসিয়াছেন । করটক কহিতেছে তুমি কি
 যথার্থ জান

But what have we, interrupted Karataka, to do with these reflections; we, who are of little power, and not the principals? In a very short interval of time a minister may enjoy the principal station, or the reverse, replied Damauaka, for, they say,

No one is, by nature, noble, respected of any one, nor a wretch. His own actions conduct him either to wretchedness, or to the reverse.

Again:

As by repeated efforts, a stone is mounted upon the summit of a hill, and instantly thrown down, so may we ourselves, by our virtues and our vices, be elevated and cast down.

As the digger of a well descends down, and the builder of a wall rises up, so is a man degraded or elevated by his actions.

But after all, observed Karataka, what is it thou art speaking of? The curious story, replied Damanaka, of his highness Pingalaka's returning without drinking, and staying at home. What! demanded Karataka, art thou acquainted with it?

দমনকোব্রূতে কিমত্রাবিদিতমস্মি ॥ উক্তম্ ॥ উদীরিতো
 ঽর্থঃ পশুনাপি মৃচ্ছ্যতে হযাশ্ব মাগাশ্ব বহন্তি দেশিতাঃ ।
 অনুক্তমপ্যুহতি পণ্ডিতোজনঃ পরেজিতজ্ঞানফলাহি
 বুদ্বয়ঃ ॥ আকারৈরিজিতৈর্গত্যা চেष्टয়া ভাষণেন চ ।
 নেত্রবক্তৃবিকারেণ লচ্ছ্যতেঽন্তর্গতং মনঃ ॥ অত্র ভয়প্রস্রাবে
 প্রজ্ঞাবলেনাহমেদং স্বামিনমাভীষ্যং করিষ্যামি ॥ যতঃ ॥
 প্রস্রাবসদৃশং বাক্যং সজ্ঞাবসদৃশং প্রিয়ং । আত্মশক্তিসমং
 কোপং যোচ্যনাতি স পণ্ডিতঃ । করটকোব্রূতে সখে ত্বং
 সেবানভিজ্ঞঃ ॥ পশ্য ॥ অনাহুতোবিষেদ্যস্তু অশৃষ্টোবজ্র
 ভাষতে আত্মানং মন্যতে প্রীতং ভূপালস্য স দুর্মতিঃ । দম
 নকোব্রূতে ভদ্র কথমহং সেবানভিজ্ঞঃ ॥ পশ্য ॥ *❀*

দমনক বলিতেছে ইহাতে অজ্ঞাত কি আছে বিজ্ঞেরা
 কহিয়াছেন কথিত বিষয় পশুতে ও বোঝে আদেশিত
 হইলে অশ্বেরা ও হস্তিরা বহন করে পণ্ডিতলোক অক
 থিত হইলে ও বিতর্ক করে যেহেতুক বুদ্ধিপরের ইজি
 তজ্ঞা হয় । আকারদ্বারা ও ইজিতদ্বারা ও গমনদ্বারা ও
 চেষ্টাদ্বারা ও কথনদ্বারা ও চক্ষু আরমুখের বিকারদ্বারা
 মন অন্তঃকরণস্থ বিষয় জানে । এই ভয় পুনর্জন্মে বুদ্ধি
 পুভাবেতে আমি এই রাজাকে আশ্রয় করিব যেহেতুক
 পুস্তাবের তুল্য বাক্য ও সস্তাবের তুল্য পুণ্য ও আপন
 শক্তি তুল্য ক্রোধ যে জানে সেই পণ্ডিত । করটক বলি

তেছে হে বন্ধো তুমি সেবানভিজ্ঞ দেখে যে আহত না হইলে
নিকটে যায় ও জিজ্ঞাসিত না হইলে অনেক কহে ও
আপনাকে রাজার পুত্র করিয়া জানে সে লোক নির্বোধ।
দমনক বলিতেছে হে মিত্র কেন আমি সেবানভিজ্ঞ দেখ।

Is there any thing, said Damanaka, unknown to a wise man? It is said,

A declared meaning is comprehended even by brutes: horses and elephants understand when they are told; but a wise man findeth out even what is not declared. The advantage to be derived from our senses is to conceive what is only signified by another.

By the appearance of a person, his gait, and address; by the end of his conversation, the change of his countenance, and the motion of his eyes, the mind can discover the inmost counsels of his heart.

Then, I will now, through the opportunity given by his fears, turn the fault to my own advantage, with the superiority of wisdom; for,

He is a wise man who knoweth, that his words should be suited to the occasion, his love to the worthiness of the object, and his anger according to his strength.

Friend, said Karataka, thou art unacquainted with the ways of service.

He who entereth uncalled for, unquestioned speaketh much, and regardeth himself with satisfaction, to his prince appeareth one of a weak judgment.

How am I therein ignorant of the ways of service? demanded Damanaka, for,

কিমপ্যসি স্বभावेन सुन्दरं वाप्यसुन्दरं । यदेव रोक्षते
 यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरं ॥ यतः ॥ यस्य यस्य हि योभाव
 स्तेन तेन हि तं नरं । अनुप्रविश्य मेधावी क्षিপमात्मवशं
 नयेत् ॥ अन्यच्च ॥ कोवेत्यहमिति ब्रूयात् सम्यगादेशयेति च
 । आज्ञामवितथां कुर्यात् यथाशक्ति महीपते ॥ अपराञ्च ॥
 अल्पे ऋधृतिमान् প্রাজ্ঞাচ্ছায়েবানুগতঃ সদা । আদিষ্টান
 বিকল্যেত স রাজবসতৌ বসেৎ ॥ করটকো ব্রূতে কদাচি
 ত্ত্বানবসরপ্রবেশাদবমন্যতে স্বাসী । সচাঃ অস্ত্বেব
 তথাপ্যনুজীপিনা স্বামিসান্নিধ্যমবশ্যং করণীয়ং ॥
 যতঃ ॥ দোষভীতেরনারম্ভস্বত্ কাপুরুষলক্ষণং । কৈরজীর্ণ
 ভয়াৎ আতর্ভাজনং পরিহীযতে ॥ * * * * *

স্বভাবেতে সন্মর কিস্ব কংনিত কি আছে যাহাতে যাহার
 কচি সেই তাহার সন্মর হয় । যেহেতুক যাহার যের
 ভাব সেই ভাবেতে সেই মনুষ্যকে পুবেশ করিয়া বজ্রমান
 লোক স্ববশ করিবে । অপর এখানে কে ইহা জিজ্ঞাসিলে
 আমি তুমি ইহা কহিবেক এবং আজ্ঞা কবন ইহা
 কহিবেক আর শক্ত্যানুসারে রাজার আদেশলঙ্ঘন করিবে
 না । এবং অল্লাকাঙা ও ধৈর্যাবান বিজ্ঞ লোক ছায়া
 ন্যায় সর্বদা অনুগত থাকিবেক আজ্ঞা পাণ্ডু হইলে আজ্ঞা
 লঙ্ঘন করিবে না সে লোক রাজস্থানে বাস করে । কর
 টক বলিতেছে অসময়েতে পুবেশের কারণেতে পাছে রাজা

তোমাকে অপমান করেন সে কহিল তাহঁকে তথাপি
 স্বামির সাক্ষাৎ ভক্তের অবশ্য কণ্ডব্য যেহেতুক দোষের
 ভয়েতে যে কন্মের আরম্ভ না করা সে কাপুরুষের লক্ষণ হে
 তাই অজ্ঞান ভয়েতে কে নিকটস্থ ভোজন পরিত্যাগ করে।

Is there any thing of its own nature beautiful or not beautiful? The beauty of a thing is even that by which it shineth. One of a sound judgment, having pursued a man with those very qualities of which he is possessed, may presently lead him into his power.

Again:

Upon hearing, *Who is here?* he should answer, *I!*—*please to command*. And he should execute the orders of his sovereign to the best of his abilities.

Farther:

He who is steady in trifling matters, wise, like a shadow constantly in attendance, and who being ordered may not hesitate, is a proper person to dwell in the court of a prince.

Sometimes, observed Karataka, thy master is displeased with thee for thy unseasonable intrusions. It is true, replied Damanaka, nevertheless, attendants must, unavoidably, make their appearance. They say,

The non-commencement of any thing, from the fear of offence, is the mark of a weak man. Who, brother, leaveth off eating entirely, from the dread of indigestion?

পশ্য ॥ আসন্নমেবনৃপতির্ভজতে মনুষ্যং বিদ্যাবিহীনমকু
 স্ত্রীনমসঙ্কতং বা। প্রাচেষু ভূমিপত্যঃ প্রমদাস্ততাশ্চ যঃ
 পার্শ্বতোবসতি তং পরিবেষ্টয়ন্তি ॥ করটকোব্রূতে অথ তত্র
 গত্বা কিং বক্ষ্যতি ভবান্ । স আহ অণু কিমনুরকো
 বিরক্তো বা ময়ি স্বামীতি জ্ঞাস্যামি ॥ করটকোব্রূতে কিং
 তজ্জ্ঞানলক্ষণং দমনকোব্রূতে অণু । দূরাদবেক্ষণং হাসঃ
 সম্প্রশ্নে সাদরোমৃগং ॥ পরোক্ষেপি গুণস্বাধা স্মরণং প্রিয়ব
 ক্তুপু। তদেব । অসেবকো চানুরক্তির্দানং সপ্রিয়ভাষণং অনুর
 ক্তেপু চিহ্নানি দোষেপি গুণসংগ্রহঃ ॥ অন্যত্র ॥ কালব্যাপন
 মাশানাং বর্দ্ধনং ফললব্ধিজনং বিরক্তেশ্বরচিহ্নানি জানৌ
 যান্মতিমান্নরঃ । এতজ্জ্ঞাত্বা যথা চাযং মমায়ত্তো
 ভবিষ্যতি তথা করিষ্যামি ॥ *❖*❖*❖*❖*

দেখ নিশ্চয় ও অকুনীন ও অনিষ্টই বা নিকটেই মনুষ্যকে
 রাজা অনুগ্রহ করেন কননা পুায় রাজারা ও স্ত্রী
 লোকেরা ও লতা সকল নিকটে যে বাস করে তাহাকে
 বেষ্টন করে । করটক বলিতেছে অনন্তর সেখানে
 গিয়া তুমি কি বলিবা সে কহিল শুন আনাতে পুতু অনু
 রক্ত কিবা বিরক্ত ইহা জানিব করটক বলিতেছে সে
 জ্ঞানের চিহ্ন কি দমনক কহিতেছে শুন দরইহিতে দেখা
 ইহিলে হাস্য আর পুষ্পেতে অতিশয় আদর আর অসাক্ষাৎ
 কারে ও গুণের প্রশংসা আর উত্তম দুবা দেখিলে মনে

করা ও সেবা যে না করে তাহাতে ও আনুরক্তি আর
 পুষ্যবাক্যের সহিত দান আর দোষেতে ও গুণগুহণ অনু
 রক্তেতে এই সকল চিহ্ন অগর পুত্যানার কাল বাপন
 করা আর ফলরহিত বাড়ান বন্ধনান লোক এই সকল
 বিরক্ত রাজার চিহ্ন জানিবেক ইহা জানিয়া যে পুকারে
 ইনি আমার বশীভূত হন তাহা করিব।

Observe:

The sovereign favours the man who is near him, although destitute of learning, of no family, or without acquaintance. Princes often, like women and vines, twine about him who sitteth by his side.

Well, said Karataka, if thou go there, what wilt thou say to his highness? Attend, replied Damanaka: first of all, I will find out whether he is attached to me, or not attached. What signs, demanded Karataka, are there of such a discovery? I will tell thee, said Damanaka; the signs of attachment are,

Joy at discovering at a distance, great attention and respect in enquiries, commending qualifications in absence, and remembering in those things which are favourites.

Such knowledge of attachment, even in a servant, is an addition to one's happiness. The marks of attachment, even to a fault, are an accumulation of virtues.

A wise man may also discover these signs in those servants, who are not attached: squandering of time in idleness, increasing of hopes, and destroying the fruit.

When I have made this discovery, I will declare what my purpose shall be.

যতঃ ॥ অপায়সন্দর্শনজাং বিপত্তিमुपायसन्दर्शनजाश्च
 সিद्धि। মেধাবিনোদনীতিবিধিপ্রযুক্তাং পুরঃ স্ফুরন্তীমিব
 দর্শयन्ति ॥ করটকৌব্রূতে তথাप्यप्राप्ते प्रस्तावे न वक्तु
 मर्हसि ॥ যতঃ ॥ অপ্রাপ্তকালবচনং বৃহস্পতিরপি ব্রুবন্
 প্রামুখ্যাদুদ্বাবজ্ঞানমপমানञ्च शाश्वतं । दमनकोब्रूते
 मित्र मा मैषीर्नाहमप्राप्तावसरं वचनं वदिष्यामि ॥ যতঃ ॥
 आपद्युन्मार्गगमने कार्यकालात्ययेषु च । अपृष्टेनापि
 वक्तव्यं भृत्येन हितमिच्छता ॥ यदि च प्राप्तावसरेणापि
 मया मन्त्रेण वक्तव्यस्तदामन्त्रित्वमेव समानुपपन्ना ॥ যতঃ ॥
 कल्पयति येन वृत्तिं येन च लोके प्रशस्यते सद्भिः ।
 सगुणस्तेन च गुणिना संरक्षः संवर्द्धनीयश्च ॥ *❀**

যেহেতুক অপায় দর্শনেতে জন্মে যে বিপত্তি এবং উপায় দর্শ-
 নেতে জন্মে যে সম্পত্তি তাহাকে মেধাবিনোদকের নীতি
 শাস্ত্রদ্বারা অগেতে পুকাশনানের ন্যায় দেখে । করটক বলি-
 তেছে তথাপি পুসঙ্গ উপস্থিত না হইলে কহিতে যোগ্য হইবে
 না যেহেতুক বহুস্পতি ও অপাসঙ্গিক বাক্য কহত নিবন্ধি
 তা এবং বহুকালব্যাপক অপমান পান দমনক বলিতেছে
 হে সখে ভয় করিও না আমি অপাসঙ্গিক বচন বলিব না
 যেহেতুক বিপৎকালেতে এবং পথত্যাগ করিয়া যাও-
 নের কালেতে এবং কার্যকালের অতিক্রম হইলে জিজ্ঞা

সিত না হইলে ও হিতৈষি দানেরা জিজ্ঞাসা করিবেক
 আমি অবসর কাল পাইয়া ও যদি মন্ত্রণা না বলি তবে
 আমার মন্ত্রিহই ব্যাহত হয় যেহেতুক যে গুণেতে জীবিকা
 হয় আর যে গুণেতে পৃথিবীতে পণ্ডিতেরা প্রশংসা করে গুণ
 লোক সে গুণ রক্ষা অবশ্য করিবেক* এবং বাড়াইবেক

The wise exhibit, as clearly as if it were displayed before our eyes, the doctrine belonging to the science ethics. That danger arises from pointing out evil, and success from pointing out a remedy.

Karatika then said,—Notwithstanding this, it doth not behove thee to speak, until thou hast found a proper opportunity. For,

Even Vrihaspati, should he utter words unseasonably, would incur contempt for his understanding, and eternal disgrace

Do not be alarmed, my friend, cried Damanaka, I shall not speak unseasonably; for,

In misfortune, in error, and when the time appointed for certain affairs is about to elapse, a servant, who hath his master's welfare at heart, ought to speak unasked.

Indeed, if I were not to give my counsel whenever I find an occasion, my office of counsellor would be useless.

The qualification by which a man earneth his bread, and for which he is celebrated in the world, should be nourished and improved.

তদ্বদ্রামুজানীহি মাং গচ্ছামি । করটকোব্রূতে শুভমহু
 শিবাশ্তে পন্থ্যানঃ যথামিলিপিতমনুষ্টোযতানিতি ॥ ততো
 দমনকো বিস্মিতঃ পিঙ্গলকসমীপং গতঃ অথ দূরাদেব
 সাদরং রাজা প্রবেশিতঃ সাষ্টাঙ্গপ্রাণিপাতং প্রাণিপত্যোপবিষ্টঃ
 রাজাহ চিরাদৃষ্টোসি । দমনকোব্রূতে যদ্যপি ময়া সেবকেন
 শ্রীমদেবপাদানাং ন কিञ্চিত্ প্রযোজনমস্মি তথাপি প্রাপ্ত
 কালমনুজোবিদ্যা সান্নিধ্যমবশ্য কৰ্ত্তব্যমিত্যাগতোস্মি ॥
 কিञ্চ ॥ দন্তস্য নির্ঘর্ষণকেন রাজন্ কর্ণস্য কণ্ডুচ্যনকেন
 বাপি । ত্বণেন কার্য্যং भवतीশ্চরাণাং কিমঙ্কবা কপাণি
 মতা নরেণ ॥ যদ্যপি চিরেণাবধীরিতস্য দেবপাদৈর্মে
 বুদ্ধিনাশঃ শঙ্ক্যতে তদপি ন শঙ্কনীযং ॥ *❀*❀*❀*

এই নিমিত্তে হে ভদ্র আমাকে অনুমতি কর যাত্রা করি ।
 করটক বলিতেছে মঙ্গল হউক পাথে তোমার মঙ্গল
 হউক যাহা বাঞ্ছিত তাহা কর । তদনন্তর সে বিস্ময়া
 পন্নের ন্যায় পিঙ্গলকের সমীপে গেল পরে দূরহইতেই
 আদরেতে রাজাকর্তক প্রবেশিত হইয়া অষ্টাঙ্গ পূজান
 করিয়া বসিল । রাজা কহিলেন অনেক কালের পর দেখা
 হইল দমনক বলিতেছে যদ্যপি আমাহেনভতোতে শ্রীযত
 মহারাজের পায়ের কিছ পুয়োজন নাই তথাপি সেবকেরা
 সময়বিশেষে অবশ্য সাক্ষাৎ করিবেক এ জনো আমি
 আইলাম । অপর হে মহারাজ দন্তের ঘষণকারক আর

কণ্ঠের কণ্ঠ যনকারক ঘাসেতে ও রাজারদিগের কার্য হয়
 তবে অল্পবাক্যহস্তবিশিষ্ট মনুষ্যেতে যে কার্য হয় তাহা কি
 বলিব যদ্যপি বহুকাল দেবপাদকত্ব ক অবজ্ঞাত আনার
 বদ্ধ নাশের শিক্ষা হয় সে শিক্ষা ও কদ্ব্য নয়।

Then, peace be with thee! for know that I am going, concluded Damanaka. And may success attend thy design! replied Karataka.

Damanaka, accordingly, repaired into the presence of Pīṅgalaka, with hesitation, as it were; and when the rājā, from a distance, ordered him, with kindness, to enter the cave, he made a respectful bow, by prostrating his whole body, and sat down. The king said,—It is long since I have seen you, Sir! Damanaka replied,—I have not the least occasion to attend your divine feet; nevertheless, a servant should indispensably attend the presence at proper times; and thence it is that I am now here. There is a use for the most trifling implements; as is mentioned in this line:

Sovereigns, O prince, have occasion even for straws to rub the teeth, or pick the ears; but how much more for an able speaker, and a dexterous obviator of difficulties?

Perhaps my noble master suspects, that being oppressed with years, my understanding is lost; but that is not the case.

॥ যতঃ ॥ কদর্থিতস্তাপি চ ধৈর্য্যবৃৎসেবুদ্বের্ধিনাশোন হি
 শঙ্কনীয়ঃ । অধঃ কৃতস্তাপি তনুনপাতোনাধঃ শিলা
 য়াতি কদাচিদেবা ॥ দেব তত্ সর্বথা বিশেষজ্ঞেন স্বামিনা
 ধ্বিতব্যং ॥ যতঃ ॥ মণিলুণ্ঠতি পাদেষু কাচঃ শিরসি
 ধার্য্যতে । যথৈবাস্তে তথৈবাস্তাং কাচঃ কাচোমণির্মণিঃ
 ॥ অন্যচ্চ ॥ নির্বিশেষোঘদা রাজা সমং সর্বেষু বর্ত্ততে ।
 মদোদয়মঃ সমর্থানামসাহঃ পরিহীযতে ॥ কিঞ্চ ॥ ত্রিবিধাঃ
 পুরুষারাজন্ উত্তমাধমমধ্যমাঃ । নিযোজয়েত্তথৈবৈতাংস্তি
 বিধেয়ৈব কর্ম্মষু ॥ যতঃ ॥ স্থানং নিযোজ্যন্তে ভৃত্যা
 স্চাভরণানিচান হি চূড়ামণিঃ পাদে নুপূর শিরসা ক্রতাং

যেহেতুক অবজ্ঞাত হইলে ও ধৈর্য্যবৃত্তিভোগের বুদ্ধিনাশ
 শঙ্কা নহে কেননা অধি অধঃকৃত হইলে ও তাহার শিখা
 কখন অধতে যায় না । হে মহারাজ এইহেতুক সর্বপকারে
 রাজা বিশেষ জ্ঞাত হইবেন যেহেতুক প্রায়েতে মণি লুণ্ঠিত
 হয় মস্তকেতে কাচ ধৃত হয় যে যে পুকার আছে সে সেই
 পুকারেই থাককাবে মণি সে মণি যে কাচ সে কাচ অপর যথ
 ন বিশেষ জ্ঞানরহিত হইয়া সকল প্রাণিতে সমানরূপ বর্ত্তেন
 তখন সমর্থশত্রুপক্ষের যুদ্ধাদিতে উদ্যোগ হয় আর উৎসাহ
 নষ্ট হয় । আর হে মহারাজ উত্তম মধ্যম অধম তিন
 পুকার পুরুষ হয় তিন পুকার কর্ম্মেতে এই তিন পুকার

পুরুষকে নিয়োগ করিবেক যেহেতুক ভূতা আর অলঙ্কার
 উপযুক্ত স্থানেতেই নিয়োগ করিবেক, কেননা পায়েতে
 চূড়ামণি পরে না নুপুর মস্তকে পরে না ।

For,

It should not be suspected of a man, whose life hath been spent in noble deeds, that his reason is lost, when he is only involved in trouble. A fire may be overturned, but its flame will never descend.

Therefore, O Lord, a prince ought always to be particularly acquainted with every thing.

Since:

Although a gem be tied at the feet, and a piece of glass be worn upon the head, yet still, glass is glass, and gems are gems.

Again:

When the master passeth over all alike, without distinction, then the endeavours of those who are capable of exertion are entirely lost.

There are, O rājā, three degrees amongst mankind: the highest, the lowest, and the middling; and accordingly, they should be engaged in three degrees of employment.

Servants and houses should be suited to the situation. A gem should not be placed at the feet. The same is to be understood of an able man.

॥ অপি চ ॥ কনকমুষণসংগ্রহণোচিতো যদি মণি
 স্তপুণি প্রাণধীযতে । ন স বিরৌতি ন চাপি শোভতে
 ভবতি যোজয়িতুর্বচনীযতা ॥ অন্যচ্চ ॥ মুকুটে
 রোপিতঃ কাচশ্চরণাভরণে মণিঃ । ন হি দোষো
 য়ে রস্তু কিন্তু সাধোরবিজ্ঞতা ॥ পশ্য ॥ বুद्धিমাননুর
 ক্তো যময়ং শূর ইতো ভয়ং । ইতি মৃত্যুবিচারজ্ঞো মৃত্যৌ রাপূর্যতে
 নৃপঃ ॥ তথা হি । অশ্বঃ শস্ত্রং শাস্ত্রং বীণা বাণী নরশ্চ
 নারী চ । পুরুষবিশেষং প্রাপ্য ভবন্তি যোগ্যা অযোগ্যাশ্চ
 ॥ অন্যচ্চ ॥ কিম্ম ক্তো না সমর্থেন কিং শক্তো না পকারিণা ।
 ভক্তাং শক্তশ্চ মাং রাজদ্বাবজ্ঞাতুং ত্বমর্হসি ॥ *❀*

অপর স্বর্গালঙ্কারে খচিত করিবার উপযুক্ত নগি যদি সীসকে
 খচিত করে তবে সে নগি রোমন করে না শোভাই পায় না
 কিন্তু যোজনকর্তারই নিম্নতা হয় । আর মুকুটেতে স্থাপিত
 কাচ আর পাদাভরণে স্থাপিত নগি ইহাতে নগির দোষ
 নাই কিন্তু সাধুব্যক্তির অবিদ্যাতা । দেখ এই ব্যক্তি
 বুদ্ধিমান অথচ অনুরক্ত এই ব্যক্তি শূর ইহাহইতে ভয়
 এই কপে ভূত্যের ভদ্রাভদ্র বিবেচনাকর্তা রাজা ভূত্যেতে
 পরিপূর্ণ হয় । তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন অশ্ব আর শস্ত্র
 আর শাস্ত্র আর বীণা আর বাণী আর পুরুষ আর স্ত্রী
 ইহারা মনুষ্য বিশেষকে পাইয়া যোগ্য এবং অযোগ্য হয়

অপার অশক্ত অনুরক্ত ভূতোতে কি পুয়োজন অপকারক
সমর্থ দাসেতেই বা কি পুয়োজন । হে মহারাজ ভক্ত
অথচ সমর্থ আমাকে অবজ্ঞা করিতে তুমি যোগ্য হও না

Thus:

If a gem which is worthy to be studded in an ornament of gold, be placed at the feet, it doth not complain, nor doth it appear with splendour: he who placed it there is to be spoken to.

If a piece of glass be set in a crown, and a gem in an ornament for the feet; then no fault is found out of the gem, but the person who wears it, betrays a want of common sense.

Observe:

This is man of judgment, and attached; and this a giddy fellow, and undisciplined. The chief, who knoweth how to judge of servants in this manner, is well served.

They say,

A horse, a weapon, a book, a *vinā* (lute,) a speech, and a man or woman, are, or are not, to be employed, when their merits have been examined.

Again:

What is to be done with a faithful servant who is spiritless, or a courageous one, who is an opponent? Me, who am both dear to thee, and able to serve thee, O king! thou shouldest not despise.

॥ যতঃ ॥ অবজ্ঞানাৎ প্রাজ্ঞো ভবতি মতিছীনঃ পরিজনঃ
 ততস্তত্ প্রামাণ্যাত্ ভবতি ন সমীপে বৃধজনঃ। বৃধস্যক্তে
 রাজ্যে নহি ভবতি নীতির্গুণবতী বিপদায়াং নীতৌ
 সকলমবলং সৌদতি জগৎ ॥ অপরহঃ ॥ জনং জনপদানিত্য
 মর্ষয়ন্তি নৃপাচ্ছিতং। নৃপেণাবমতো যন্তু সসর্বৈ রধমন্যতে
 ॥ কিञ্চ ॥ বালাদপি গ্রহীতব্যং যুক্তমুক্তং মনীষিभिঃ।
 রবেরবিষয়ে কিং ন প্রদীপস্য প্রকাশনং ॥ পিঙ্গলকোঃ
 বদত্ ভদ্র দমনক কিমেতৎ ত্বমস্মদীয়প্রধানামাত্য
 পুত্রদ্বয়ন্ত কালং যাবৎ কুতোপি ত্বলবাধ্যাদ্রাগতোঃ সিস
 ইদানীং যথাভিমতং ব্রূহি। দমনকো ব্রূতে দেব পৃচ্ছামি
 কিञ্চিদুচ্যতাং উদকার্থী স্বামী পানীয়মপীত্বা কিমি
 তি বিস্মিতঃ বতিষ্ঠতি ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*

যেহেতুক বিজ্ঞ পরিবার লোক অবজ্ঞাতে নিব্বন্ধি হয়
 অনন্তর সেই দৃষ্টিতে নিকটে পণ্ডিত লোক থাকে না পণ্ডি
 তকর্তৃক রাজ্য। তান্ত হইলে নীতি গুণবতী হয় না নীতি
 নষ্ট হইলে সমস্ত জগৎ বিষন্ন হয়। এবং রাজানুগৃহীত
 লোককে দেশস্থ সর্বজনেতেই উপাসনা করে আর রাজা
 কর্তৃক অবজ্ঞাত যে জন সে সকললোককর্তৃক অবমানিত
 হয়। আর বলক হইতে ও ন্যায়াবাক্য পণ্ডিতেরা গৃহণ
 করিবেক কেননা যে স্থানে সূর্য্যের পুকাশ নাই সে স্থানে কি
 পুরীপের পুকাশ হয় না। পিঙ্গলক বলিল তদু দমনক এ

^{let them and chief "counselors" so long}
 কি তুমি আমার প্রধান মন্ত্রির পুত্র, এতকালপর্যন্ত
^{any worldly most in cases not seen what said}
 কোন খেলের বাক্যেতে আইস নাই এখন কি পুকার
^{a man that say "said I shed his a question"}
 মানিস তাহা বল। দমনক বলিতেছে হে মহারাজ পুত্র করি
^{a little say choose just king make not drink}
 কিঞ্চিৎ বনন জলাথী মহারাজ জল পান না করিয়া
^{why felicit with Surpura's saying}
 কেন বিদ্রোহপত্রের ন্যায় রহিয়াছেন।

When a kingdom is forsaken by its wise men, the administration ceaseth to be efficacious; and for want of good regulation, the whole nation sinketh, without power to resist.

Again:

Mankind are for ever wont to respect him, who is respected by the prince; for he who is in disgrace with the sovereign, is disrespected by all.

What wise men have declared proper, may be received even from a child. When the sun is invisible, how useful is the appearance of the lamp?

It is good, replied Pingalaka; but what of all this. Damanaka? Thou hast been for a long time our head Mantri-putra; whither, then, hast thou been wandering in pursuit of vulgar saying? Now, speak as thy mind prompts thee.

Damanaka then said,—May it please your divinity, I am about to propose a question: what was the reason your highness, when oppressed with thirst, refused to drink, and now remains at home in a state of amazement?

পিঙ্গলোঽবদৎ ভদ্রমুক্তং ত্বয়া কিন্তু যতদ্রহস্যং বক্তু
 কাচি দ্বিষ্মাশ্চভূমিনাঙ্কিত্তি তথাপি নিভৃতং কৃৎবা কথয়ামি
 শৃণু সंप্রতি মনসোদমপূর্বসৎবাধিষ্টিতং অতো ঽস্মাকং
 ত্যাজ্যং অনেন হেতুনা বিক্ষিতোঽস্মি তথা চ শ্রুতোমথাপি
 মহানপূর্বশব্দঃ শব্দানুরূপেণাস্য প্রাণিনোমহতা বস্লেন
 ভবিতব্যং । দমনকোব্রূতে দেব অস্মি তাবদযং মহান্
 ভয়হেতুঃ স শব্দোঽস্মাভিরপ্যাকর্ণিতঃ কিন্তু স কিং মম্বী
 যঃ প্রথমং ভূমিত্যাগং পশ্চাত্ যুজ্ঞং চোপদিযতি ॥ অপরঞ্চ ॥
 অস্মিন্ কার্য্যশব্দেহে মৃত্যুনাশমুপযোগেষু জ্ঞাতব্যঃ
 ॥ যতঃ ॥ বন্যুস্তীমৃত্যুবর্গস্য বুধেঃ সত্বস্য চাত্মনঃ । আপ
 ন্নিকপপাযাণে নরোজানাতি সারতাং ॥ সিংহোব্রূতে ভদ্র
 মহতো শঙ্কা মাং বাধতে । *❖*❖*❖*❖*❖*

“ ^{to say} ^{in the} ^{How} ^{much} ^I ^{ask} ^{spoken} ^{but} ^{this} ^{to} ^{say}
 পিঙ্গলক কহিল তুমি বিলক্ষণ কহিয়াছ কিন্তু এ রহস্য বলি
^{to say} ^{in the} ^{How} ^{much} ^I ^{ask} ^{spoken} ^{but} ^{this} ^{to} ^{say}
 বার নিমিত্তে কোন পুতায় স্থান নাই তথাপি নিজ্জন করিয়া
^{to say} ^{in the} ^{How} ^{much} ^I ^{ask} ^{spoken} ^{but} ^{this} ^{to} ^{say}
 কহি শুন ইদানী এই বন অপর পুণিতে অধিষ্ঠিত হইয়াছে
^{to say} ^{in the} ^{How} ^{much} ^I ^{ask} ^{spoken} ^{but} ^{this} ^{to} ^{say}
 অতএব আনন্দিগের ত্যাজ্য এই নিমিত্তে বিস্ময়াগম হই
^{to say} ^{in the} ^{How} ^{much} ^I ^{ask} ^{spoken} ^{but} ^{this} ^{to} ^{say}
 য়াছি এবং আমি ও বড় আশ্চর্য্য শব্দ শুনিয়াছি শব্দানুসারে
^{to say} ^{in the} ^{How} ^{much} ^I ^{ask} ^{spoken} ^{but} ^{this} ^{to} ^{say}
 তে এ পুণির বড়বল হইবে দমনক বলিতেছে হে মহারাজ
^{to say} ^{in the} ^{How} ^{much} ^I ^{ask} ^{spoken} ^{but} ^{this} ^{to} ^{say}
 এ বড় ভয়ের কারণ বটে শে শব্দ আমরা ও শুনিয়াছি
^{to say} ^{in the} ^{How} ^{much} ^I ^{ask} ^{spoken} ^{but} ^{this} ^{to} ^{say}
 কিন্তু সে কি মম্বী যে আগতেই স্থান ত্যাগ করায় পশ্চাৎ
^{to say} ^{in the} ^{How} ^{much} ^I ^{ask} ^{spoken} ^{but} ^{this} ^{to} ^{say}
 বাক উপদেশ করে আর এই ক্রিয়ার সাক্ষ্যেতে দাঁসরদের

উপযোগিতা জানিবেক যেহেতুক নিত্র ও স্ত্রী ও দাসবর্গের
 আর বজ্রির আর বলের আর শরীরের সারস্ব বিপত্তিকপ
 কষ্টপাথরেতে লোক জানে । সিংহ বলিতেছে হে তদু
 আমার বড় শঙ্কা হইতেছে ।

It is well spoken, answered Pingalaka. How pleasant it is to repose a secret in a place of confidence! I am about to tell thee Attend! Know that this forest is infested by some beast, before unknown to us; wherefore it behoveth us to abandon it. Hast thou not heard a strange loud noise? To judge by his voice, the strength of this monster must be excessive!

Please your divinity, replied Damanaka, there is indeed great cause for apprehension. We too have heard the voice; but he is unworthy to be a minister, who, in the first instance, adviseth either to quit the field, or to fight. Besides, your highness has now an opportunity to experience the use of your servants; for,

By the touchstone of misfortune a man discovereth the quality of wife, relation, and servant; and of his own strength and judgment.

It is good, replied the lion; but I am prevented by my great apprehensions.

দমনকঃ পুনরাহ স্বাগতং অন্যথা রাজ্যমুখং পরিত্যজ্য
 স্থানান্তরং গন্তুং মাং সম্ভাষসে প্রকাশব্রূতে দেব যাযদহং
 জীবামি তাবদ্বয়ং ন কৰ্ত্তব্যং কিন্তু করটকাদযোঃ প্যা
 শ্বাস্যন্তাং যস্মাদাপতপ্রতীকারকালে দুৰ্লভঃ পুরুষসম
 বাযঃ ততসৌ দমনককরটকৌ রাজ্ঞা সৰ্বস্বেনাপি পূজিতৌ
 ভয়প্রতীকারং প্রতিজ্ঞায় চলিতৌ করটকৌ গচ্ছন্ দমন
 কমাহ সখ্যে কিং শক্যপ্রতীকারো ভয়হেতুঃ শক্যপ্রতীকারো
 বেতি ন জ্ঞাত্বা ভযোপশমনং প্রতিজ্ঞায় কথময়ং মহাপ্রসা
 দোঃ হোতঃ যতো ন পকুর্দ্বাণেন কস্যাপি উপায়নং গৃহীতৌ
 যাত্ বিশেষো রাজ্ঞঃ ॥ পশ্য ॥ यस्य প্রসাदे পদ্মাস্তে বিজ
 যস্ব পরঃ ক্রমে । মৃত্যুশ্চ বসতি ক্রোধে সৰ্ব্বতেজোময়োহিসঃ ॥

দমনক পুনর্বার কহিল সুখে আগিয়াছ এই কণ না হইলে
 রাজ্য সুখ পরিত্যাগ করিয়া স্থানান্তরে যাইবার নিমিত্তে
 আমাকে সম্ভাষ করিতেছ দমনক স্পষ্ট করিয়া বলিতেছে
 হে মহারাজ যাবৎ পর্যন্ত আমি বাঁচিয়া আছি তাবৎ
 পর্যন্ত ভয় করিয়া নয় কিন্তু করটক পুত্রটিকে ও আশ্বাস
 করুন যেহেতুক বিপদের পুত্রীকারের সময় অনেক পুরুষ
 পাওয়া দুঃখ । অনন্তর সেই দমনক করটক রাজকর্তক
 সম্বন্ধ দ্বারা সম্মানিত হইয়া ভয়ের পুত্রীকার করিতে পুত্রীকা
 কবিতা চলিল করটকগণন করত দমনককে কহিল হে মিত্র

ভয়ের কারণ কি পুতীকারের বোণ্য কিম্বা পুতীকারের অযো-
 গ্য ইহা না জানিয়া ভয়ের শাস্তি করিতে পুতিজ্ঞা করিয়া কি
 পুকারে এ মহাপুসাদ গহণ করিল। যেহেতক উপকার না
 করিয়া কাহার ও উপটোকন লইবে না বিশেষে রাজার দেখ
 বাহারপুসন্নতাতে ধনবৃদ্ধি হয় এব° পরাক্রমেতেজয় হয় এব°
 ক্রোধেতে মৃত্যু হয় অতএব সর্ব তেজঃপুঞ্জ তাহাকেই জান ।

Damanaka having considered what he should do, at length said,—What! dost thou speak to us about a total abdication of the enjoyment of thy dominions? I tell your highness plainly, that as long as I live, I shall not be afraid; but it is necessary that the minds of Karataka and the rest should be pacified also; for in time of necessity, it is difficult to assemble people together.

After that Karataka and Damanaka together, having received their sovereign's gracious commission, promised to defeat the threatened danger, and departed accordingly.

As they were going, Karataka said to Damanaka,—Is the cause of apprehension possible to be defeated, or not possible? Till this had been determined, why did we, in promising to apply a remedy, accept of this great appointment? For it is said, that no one, unless he hath the power to perform, should accept of any one's commission, and, in particular, that of a king.

Observe,

He is all-glorious, on whose pleasure fortune waiteth, in whose valour victory, and in whose anger death

তথা হি । বালোপি নাবমন্ত্যোমনুষ্যইতি ভূমিপঃ ।
 মহতী দেবতাহোষা নররূপেণ তিষ্ঠতি ॥ দমনকোবিহ
 স্যাৎমিত্র নুণীমাস্যতাং জ্ঞাতং ময়া ভয়কারং বলীবর্দ
 নর্দিতং তত্ দৃষমাশ্বাস্থ্যাকমপি ভক্ত্যাঃ কিং পুনঃ সিংহস্য
 করটকোব্রূত যদেবং তদা কিং পুনঃ স্বামিত্রাসঃ তত্রৈব
 কিমিতি নাপনীতঃ । দমনকোব্রূত যদি স্বামিত্রাস
 স্তত্রৈব মুচ্যতে তদা কথময়ং মহাপ্রসাদলাভঃ স্যাৎ ॥
 অপরঞ্চ ॥ নিরপেक्षান কৰ্ত্তব্যোভৃত্যৈঃ স্বামী কদাচন ।
 নিরপেक्षং প্রভুং কৃत्वा ভৃত্যঃ স্যাৎ অধিকৰ্ণবৎ ॥ করটকঃ
 পৃচ্ছতি কথমেতৎ । দমনকঃ কথয়তি অস্তুত্তরাপথে
 অব্যুদগিশ্বরনাম্নি পর্বতে দুর্দান্তো নাম মহাবিক্রমঃ
 সিংহস্তস্য পর্বতকন্দরমধিশয়ানস্য কেসরাগ্ৰং কশ্চিন্মু
 খিকঃ প্রত্যহং ছিনত্তি ॥ *~*~*~*~*~*~*

বালক রাজাকেও এ মনুষ্য ইহা বলিয়া অবজ্ঞা করিবেক না
 যেহেতুক ইনি মহতী দেবতা মনুষ্যরূপে আছেন । দমনক
 হাসিয়া বলিল হে বন্ধু চপ করিয়া থাক আমি ভয়ের কারণ
 জানিয়াছি অর্থাৎ ডিগ্গা গরুর শব্দ সে বলিবদ্ আমাদেব ভয়
 গায় সিংহের কথা কি । করটক বলিতেছে যদিও এমন তবে
 পুত্রের ভয় কি সেই স্থানেতে কেমন ভীতিখণ্ডন করিল না ।
 দমনক বলিতেছে যদি রাজার ভয় সেই স্থানেতেই যায়

তবে কি পুকার এমহাপুসাদ লাভ হয়। এবং ততোরা
 স্বানীকে কখন নিরপেক্ষ করিবেনা পুতুকে নিরপেক্ষ
 করিয়া ভৃত্য দধিকর্ণের ন্যায় হইবে। করটক পুশ্ণকার
 তেছে একি রূপ দমনক কহিতেছে। উত্তরাপথে অবদ
 শিখর নামে পর্বতে মহাপরাক্রমবিশিষ্ট দুদান্ত নামে
 এক সিংহ থাকে পর্বতের গহ্বরেতে নিদ্রিত তাহার জটীর
 অগুভাগ কোন উন্দুর পুতাহ কাটে।

The sovereign, although but a child, is not to be despised, but to be respected as a man; or as a mighty divinity, who presideth in human form.






Damanaka, laughing, said,—Hold thy peace, friend; I am acquainted with the cause of this fear: it is only the bellowing of a bull, our proper food, as well as that of the lion. If this be the case, observed Karataka, why were not his highness fears instantly appeased? If, replied Damanaka, they had been satisfied immediately, how would this great commission have been obtained? They say,

The master should never be rendered free from apprehension by his servants, for a servant having quieted the fears of his master may experience the fate of Dadhukarna.

How was that? demanded Karataka; and Damanaka related the following story.

FABLE IV.

UPON the mountain Arbuda-sikhara, there was a lion, whose name was Mahāvīkrama, the tips of whose mane a mouse was wont to gnaw, as he slept in his den

ততঃ কেসরাণ্যং লুনং দৃষ্ট্বা কুপিতো বিবরান্তর্গতং মূষিক
 মল্লভমানো ঽচিন্তয়ত ॥ চুদ্রশত্রুর্ভবেদ্যস্তু বিক্রমাত্নৈব
 লভ্যতে । তমাচ্ছন্তু পুরস্কার্যঃ সটশস্তস্য সৈনিকঃ ॥
 ইত্যালোচ্য তেন গ্রামং গত্বা বিশ্বাসং কৃত্বাদধিকর্ণ
 নামা বিডালোযত্নেনানীয মাংসাচ্ছারং দত্ত্বা স্বকন্দরে
 স্থাপিতঃ অনন্তরং তদ্বয়ান্মূষিকোপি খিলান্ন নিঃসরতি
 তেনাসৌ সিংহোঽন্ততকেসরঃ সুখং শ্রুতি মূষিকশব্দং
 যদা যদা শৃণোতি তদা মাংসাচ্ছারদানেন তম্বিডালং
 সংবর্জয়তি অথৈকদা স মূষিকঃ শুধাপোড়িতোবহিঃ
 সম্ভ্রবন্ বিডালেণ প্রাপ্তোব্যাপাদিতস্ত অনন্তরং স সিং
 হোনেককালং চাবন্মূষিকং ন পশ্যতি তত্কথরাবমপি
 ন শৃণোতি তদা তস্যানুযোগাদ্বিডালস্যাপ্যাহার
 দানে মন্দাদরোষমূব । ******

তদনন্তর কেশাগৃহিষ্ম দেখিয়া ক্রুদ্ধহইয়া গর্তমধ্যে স্থিত মূ
 ষিককে না পাইয়া ভাবনা করিল যে ক্ষুদ্র শত্রু হয় পরাক্রমে
 তে ধরা না যায় তাহাকে নষ্ট করিবার নিমিত্তে তাহার তলা
 সেনা করিবেক এই আলোচনা করিয়া সেই সিংহ গানে গিয়া
 বিশ্বাস করিয়া দধিকর্ণ নামে বিডালকে যত্নেতে আনিয়া
 মাংস আহার দিয়া আপন কন্দরেতে রাখিল অনন্তর সেই
 ভয়েতে মূষিক ও বিবরহইতে বাহির হয় না সেইহেতুক এ

lion understood he was long slept in hole when the mouse
 सिंहअच्छिन्न जटा हईया सुखेते निद्रा याय यथन२ उन्दरेर
 lion's head then flesh eating by the cat-
 शक्यशुने तथन२ नांस भोजन द्वारा से विडालके सङ्कना
 after the one day the mouse hungry a lion
 करे । ताहारपर एक दिवस सेई मुषिक क्कधातु हईया
 cat looking for food by him accident lion's mouth saw with a cat
 बाहिरै चरत माजारीताहाके पाईया, भक्षण करिनि तदन
 the lion for a cony him the mouse saw with a cat
 सुरसेई सिंहअनेक कालपर्याप्त मुषिकके देखे ना ताहार
 cat and not lion he mouth
 शक्यशुने ना तथन ताहार अनुपयोगिताहेतुक विडा
 cat and not lion he mouth
 लेर ओ आहार दानेते मन्दार हईल ।

The noble beast, having discovered that his hair was bitten, was very much displeased; and as he was unable to catch the offender, who always slipped into its hole, he meditated what was best to be done; and having resolved, said he,

Whoso hath a trifling enemy, who is not to be overcome by dint of valour, should employ against him a force of his own likeness.

With a review of this saying, the lion repaired to the village, and by means of a piece of meat thrown into his hole, with some difficult caught a cat, whose name was Dadbikarna. He carried him home, and the mouse, for some time not venturing out for fear, the lion remained with his hair unmipped. At length, however, the mouse was so oppressed with hunger, that creeping about, he was caught and devoured by the cat. The lion now no longer hearing the noise of the mouse, thought he had no further occasion for the services of the cat, and so began to be sparing of his allowance; and in

ততোসা বাহ্যাবিরহাত্ দুৰ্বলো দধিকর্ণো বসন্তো বভূব
 অতোহং ব্রবীমি নিরপেক্ষো ন কৰ্ত্তব্য ইত্যাদি। ততো দমনক
 করটকৌ সঞ্জীবকসমীপং গতৌ তত্র করটকস্তরুতলে সাটো
 পমুপবিষ্টঃ ॥ দমনকঃ সঞ্জীবকসমীপং গত্বা ব্রবীত্ অরে
 বৃষভ এষোহং রাজা পিঙ্গলকে নারায়ণরক্ষার্থং নিযুক্তঃ
 সেনাপতিঃ করটকঃ সমাজ্ঞাপয়তি সত্বরমাগচ্ছ নচেদ
 স্মাদরण्याদূরমপসর অন্যথা তে বিবৃদ্ধং ফলং ভবিষ্যতি
 ন জানে কুহুঃ স্বামী কিং বিধাষ্যতি তচ্ছুত্বা সঞ্জীবক
 স্মায়াত্। আজ্ঞাভঙ্গে নরেন্দ্রাণাং ব্রাহ্মণানাং মনাদরঃ ॥
 পৃথক্ শয্যা চ নারীণামশস্ত্রবিহিতো বধঃ ॥ ততো দেশ
 ব্যবহারানভিজ্ঞঃ সঞ্জীবকঃ সমভয়মুপসৃত্য সাষ্টাঙ্গপাত
 করটকং প্রণতবান্ । *❖*❖*❖*❖*❖*

পরে অনাহারহেতুক দধিকর্ণ দুর্বল হইয়া অবসন্ন হইল ।
 এই নিমিত্তে আমি বলি পুত্ৰকে নিরপেক্ষ করিয়া ইত্যাদি ।
 তৎপরে দমনক করটক সঞ্জীবকের নিকট গেল সেখানে
 করটক গাছের তলাতে সাটোপ করিয়া বসিল দমনক
 সঞ্জীবকসমীপে যাইয়া বলিল অরে বলদ এই আমি
 রাজা পিঙ্গলক কতৃক বন রক্ষার নিমিত্তে নিযুক্ত করটক
 নামে সেনাপতি আজ্ঞা করিতেছেন শীঘ্র আইস নতুবা
 এই বনহইতে দূরে যা অন্যথা তোমার মন্দ ফল হইবে

ना जानि पुत्र कूणित हईया कि करिबेन ताहा पुनिया
 सञ्जीवक आईल। राजादिगेर आज्ञालइन ओ बाजगेरदिगेर
 अनादर ओ छीलोकैरदेर पृथक् शया एव० अवैध हिंसा
 अर्थां कर्तव्य नय ईह। बिरोचना करिया ताहारपर देशाचा-
 नानिष्ठ सञ्जीवक तीत हईया निकटे गिया करटकके
 साष्टाङ्ग पुणाम करिलेक ।

consequence, poor puss pined away and died for want.
 Wherefore, I say,—*The master should never be ren-
 dered &c.*

After this Damanaka and Karataka advanced towards the bull Sang-jivaka; and Karataka seated himself in state at the foot of a tree, whilst Damanaka addressed the bull in these words:—O bull I am placed here by king Pingalaka to gaurd these forests. The general Karataka commands you to attend him directly, or else retire at adistance from these woods, otherwise the fruits of thy disobedience will be painful.

For,

Disobedience to the commands of a sovereign, disrespect to a Brāhmana, the separate bed of a woman, and strength without knowledge, are all dangerous things.

The poor bull, ignorant of the affairs of the country he was in, fearfully advanced towards Karataka, and made him a profound reverence.

তথাচোক্ত। মতিরেব বলাহরোযসী যদभावे करिणा
 मियं दशा। इति घोषयतवि डीण्डिमः करिणो हस्तिप
 काहतः क्कणन् ॥ अथ सञ्जीवकः साशङ्कमाह सेनापते
 किं मया कर्त्तव्यं तदभिधीयतां। करटकोब्रूते वृषभञ्च
 कानने तिष्ठसि अस्मद्देवपदारविन्दं प्रणम ॥ सञ्जीवको
 ब्रूते तदभयवाचं मे यच्छ गच्छामि करटकोब्रूते अणुरे
 वलोवद्द अलमनया शङ्कया ॥ यतः ॥ प्रतिवाचमदत्त
 केशवः शपमानाय न चेदिभूभुजे। अनुज्जंकुरुते घनध्व
 निं न हि गोमायुरुतानि केसरी ॥ अन्यच्च ॥ हणानि नो
 न्मूलयति प्रभञ्जनोमृदूनि नीचैः प्रणतानि सर्वतः। स
 मुच्छितानेव तरून् प्रवाधते महान्महत्येव करोति वि
 क्रमात्ततस्तौ सञ्जीवकं कियदूरे संस्थाप्य पिङ्गलकसमीपं
 गतौ ततो राज्ञा सादरमालोकितौ प्रणम्योपविष्टौ।

তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন বলহইতে বুঝিই বড় যাহার
 না থাকিতে হস্তির এই অবস্থা। অনন্তর সঞ্জীবক শঙ্ক হইয়া
 কহিল হে সেনাপতে আমার কি কর্তব্য তাহা কহন কর
 টক বলিতেছে হে বৃষভ এই বনেতে থাক আমারদিগের ভপ
 তির চরণকমলকে পূজান কর সঞ্জীবক বলিতেছে অভয়বাক্য
 আমাকে দেও তবে যাই। করটক কহিতেছে শুন রে বৃষভ
 এ শঙ্কা বৃথা যেহেতুক আক্রোশকারি শিশুপালকে ত্রীকৃষ্ণ

পুতুলের পুতুল করেন নাহি কারণ মেঘের ধনিকে সিংহ
 পুতিধ্বনি পুদান করে শৃগালের শব্দকে পুতি শব্দ পুদান
 করেন। আর দেখ। সর্বপুকারে নীচেতে নম্র ও কোমল ঘাস
 কে বায়ু উন্মুলন করে না অতিউচ্চ বৃক্ষ সকলকেই উৎ
 পাটন করে কেননা বড়লোক বড় লোকেতে পরাক্রম
 করে। তদন্তর তাহার। সঞ্জীবকে কিছু দূরে রাখিয়া
 পিঙ্গলকের সন্নিধানে গেল। তাহার পর রাজা তাহার দিগ
 কে সাদরে দেখিলেন তাহার। পুণাম করিয়া বসিল।

It is said,

Wisdom is of more consequence than strength. The want of it is a state of misery. The Dindima proclaimeth this, sounding, *The miserable are defeated.*

Sang-jivaka, with a loud voice, said,—What, O General, am I to do? And Karataka replied,—If it be thy wish to remain in these forests, bow down to the dust of his highness's feet. Give me thy word, that there is no danger, said Sang-jivaka, and upon those terms I am ready to go. These suspicions, observed Karatāka, are unnecessary; for,

Keshaba did not make a reply to the king Chid, who reviled him, for the lion returns the sound of a cloud, but not that of a fox,

Again:

The tempest never rooteth up the grass, which is feeble, humble, and shooteth not up on high; but exerteth its power even to distress the lofty trees; for the great use not not their might, but upon the great

Saying this, leaving Sang-jivaka at a little distance, they repaired unto the presence of the lion, by whom having been received with attention, they made their reverence, and sat down.

রাজাহ ত্বয়া সৃষ্টঃ ॥ দমনকোব্রূতে দেব দৃষ্টঃ কিন্তু যদে
 বেন জ্ঞাতং তত্থা মহানেবাসৌ দেবং দ্রষ্টুমিচ্ছতি কিন্তু
 মহাবলোঽসৌ ততঃ সজ্জীভূয়োপবিষ্য দৃশ্যতাং শব্দ
 মাচা দেব ন ভেতব্যং ॥ তথা চোক্তং ॥ শব্দমাচান্ন ভেত
 ত্বমজ্ঞাত্বা শব্দকারণং । শব্দহেতুং পরিজ্ঞায় কুড়িনী
 গৌরবং গতা ॥ রাজাহ কথমেতৎ । দমনকঃ কথয়তি
 অস্তি শ্রীপর্ষতমধ্যে ব্রহ্মপুরাণ্যং নগরং তচ্ছিত্তরপ্রদেশে
 ঘণ্টাকর্ণো নাম রাঘবঃ প্রতিবসতোতি জনপ্রবাদঃ শ্রুত
 তে একদা ঘণ্টামাদায পলায়মানঃ কশ্বিচৌরোব্যা
 ঘ্রেণ ব্যাধাদতঃ তত্পাণিপতিতা ঘণ্টা বানরৈঃ প্রাপ্তা
 বানরস্তাং ঘণ্টামনুস্রবণং বাদয়তি ততো নগরজনৈঃ স মনু
 ষ্যঃ খাদিতো দৃষ্টঃ প্রতিলক্ষণং ঘণ্টারবস্ত্ব শ্রুয়তে । *

ভূপাল কহিলেন তাহাকে তোমরা দেখিয়াছ দমনক বলিল
 মহারাজ দেখিয়াছি কিন্তু মহারাজ যাহা জানিয়াছেন সেই
 রূপ এ অতিবড় মহারাজকে দেখিতে অভিলাষ করে
 কিন্তু এ অতিশয় বলবান অতএব সমজ্ঞ হইয়া বসিয়া
 দেখুন শকমাত্রেরেই ভয় করিবেন না বিজেরা তাহা
 কহিয়াছেন ভয়ের কারণ না জানিয়া শকমাত্রেরে ভয়
 কওয়া নয় শব্দের নিমিত্ত জানিয়া কুড়িনী গৌরব পাই
 য়াছিল । রাজা জিজ্ঞাসিলেন এ কি প্রকার । দমনক
 কহিতেছে । শ্রীপর্বতের মধ্যে বৃক্ষপূর নামে নগর আছে

তাহার শিখরের এক প্রদেশে ঘণ্টাকর্ণ নামে এক রাজস
বান করে এই ভয়ঙ্কর শুনা যায়। এক দিবস ঘণ্টা নইয়া
পলায়মান কোন চোর ব্যাঘ্রকতক ভক্ষিত হইল তাহার
হাতহাতে পতিত ঘণ্টা বানরেরা পাইল বানর সেই ঘণ্টা
সর্বক্ষণ বাজায় তাহারপর নগরস্থ লোকেরা সেই মনুষ্যকে
ভক্ষিত দেখিল আর সর্বদা ঘণ্টারব শুনে।

Have you seen him? said the king. We have Sir, answered Damanaka, but he is, as our lord imagined, of amazing strength, and is desirous of visiting your highness, wherefore, arm yourself, and let him draw near, But be not alarmed at a mere sound, for, it is said,

It is not proper to be alarmed at a mere sound, when the cause of that sound is unknown. A poor woman obtaineth consequence for discovering the cause of a sound.

The lion asked how that was; and Damanaka recounted the following story.

FABLE V.

BETWEEN the mountains Sri-parvata there is a city called Brahma-pura, the inhabitants of which used to believe, that a certain giant, whom they called Ghantākarna, infested one of the adjacent hills. The fact was thus: a thief, as he was running away with a bell he had stolen, was overcome and devoured by a tiger; and the bell falling from his hand having been picked up by some monkeys, every now and then they used to ring it. The people of the town finding that a man had been killed there, and hearing continually the noise of the bell,

অনন্তরং ঘণ্টাকর্ণঃ কুপিতো মনুষ্যান্ খাদয়তি ঘণ্টাশ্চ
 বাদয়তি ইত্যুক্তা সৰ্ঘে জনানগরাৎ পলায়িতাঃ ততঃ
 করালম্বা নাম কুট্টিম্বা বিমৃশ্য অনবসরোऽয়ং ঘণ্টা
 বাদঃ তত্ কিং মৰ্কটাকাণ্ডাং বাদয়ন্তি ইতি স্বয়ং বিজ্ঞায়
 রাজা বিজ্ঞাপিতঃ দৈব যদি কিঞ্চিদনোপলব্ধঃ ক্রিয়তে
 তদাহমেতং ঘণ্টাকর্ণং সাধয়ামি ততো রাজ্ঞা তস্যৈ ধনং
 দত্তং কুট্টিন্যাচ মণ্ডলং কৃত্বা তত্র গণেশাদিপূজাগৌরবং
 দর্শয়িত্বা স্বয়ং বানরপ্রিয়ফলান্যাদায বনং প্রবিশ্য
 ফলান্যাকীর্ণানি ততো ঘণ্টাং পরিত্যজ্য বানরাঃ ফলাস
 ক্তাবম্ভবুঃ কুট্টিনী চ ঘণ্টাং গৃহীত্বা নগরমাগতা সৰ্ঘ
 জনপূজ্যামবত্ অতোহ ব্রবীমি শব্দমাচান্ন ভেদম্যামি
 ত্যাदि। ততঃ সজ্জীবকচ্যনীয দর্শনং কারিতঃ পশ্চাত্তন্যৈ
 বাশ্ৰিততয়া অন্যান্যং পরমপ্ৰীত্যা চিরং নিবসতি ।


তাহারপর ঘণ্টাকর্ণ কষ্টে ইহঁয়া মনুষ্য সকলকে খায় ঘণ্টাও
 বাজায় ইহা বলিয়া সকল লোক নগরহইতে পলাইল । অন
 স্তর করানো লাগে কুট্টিনী পন্নামর্শ করিয়া অনুজ্ঞা এই ঘণ্টা
 বাদ্য হয় তবে কি বানরেরা ঘণ্টা বাজায় ইহা আপনি
 জানিয়া রাজাকে জানাইল হে মহারাজ যদিও কিছু ধন
 ব্যয় কর তবে আমি এই ঘণ্টাকর্ণকে সাধন করি তাহা
 রপর রাজা তাহাকে ধন দিল কুট্টিনী মণ্ডল আঁকিয়া
 গণেশাদি পূজার বড় বাছিয়া দেখাইয়া আপনি মৰ্কটের

দিয়েই পিয় ফল লইয়া বনে পুবেশ করিয়া কল সকল
ফেলিয়া দিল তৎপরে বানরেরা ঘণ্টা পরিত্যাগ করিয়া
কলাসক্ত হইল কাঁড়না ঘণ্টা লইয়া নগরে আসিয়া সর্ব
জনের মান্য হইল অতএব আমি বলি ভয়ের কারণ না
জানিয়া শকমাত্রেতেই ভয় কর্তব্য নয়। অনন্তর সঞ্জীবককে
আনিয়া দেখা করাইলেক। পশ্চাৎ সেই স্থানেতেই আশ্রিত
হইয়া পরস্পর অত্যন্ত পীতিতে বহু কাল বাস করে।

used to declare, that the giant Ghantā-karna being enraged, was devouring a man, and ringing his bell; so that the city was abandoned by all the principal inhabitants. At length, however, a certain poor woman having considered the subject, discovered that the bell was rung by the monkeys. She accordingly went to the rājā, and said,—If divine Sir, I may expect a very great reward, I will engage to silence this Ghantā-karna. The rājā was exceedingly well pleased, and gave her some money. So having described some circles, and exhibited the worship of Ganēsha and other gods in a conspicuous manner, she provided such fruits as she conceived the monkeys were fond of, and went into the wood; where strewing them about, they presently quitted the bell, and attached themselves to the fruit. The poor woman, in the mean time, took away the bell, and repaired to the city; where she became an object of adoration to its inhabitants. Wherefore, I say,

It is not proper to be afraid of a mere sound &c.

Having concluded his story, Damanaka and Karataka brought Sang-jivaka, and introduced him to the lion; after which the bull resided in that forest in great good fellowship.

অথ কদাচিত্তস্য সিংহস্য স্নাতা স্তম্বকর্ণনামা সিংহঃ
 সমাগতঃ তস্যাতিথ্যং কৃत्वा সমুপবিষ্য পিঙ্গলকস্তদাহা
 রায় পশুং হন্তুং চলিতঃ অত্রান্তরে সঞ্জীবকো বদতি দেব
 অথ হতমৃগাণাং মাংসানি ক্ব রাজাহ দমনককরটকৌ
 জানোতঃ । সঞ্জীবকো ব্রূতে জ্ঞাথতাং কিমস্মি নাস্মি বা
 সিংহো বিমৃশ্যাৎ নাস্ত্যেব তত্ ॥ সঞ্জীবকো ব্রূতে কথমে
 তাবন্মাংসং তাভ্যাং খাদিতং রাজাহ খাদিতং অঘিতং
 অঘধীরিতঞ্চ প্রত্যহমেষ ক্রমঃ । সঞ্জীবকো ব্রূতে কথং
 শ্রীমদেবপাদানামগোচরেণৈব ক্রিয়তে । রাজাহ মদীয়া
 গোচরেণৈব ক্রিয়তে ॥ অথ সঞ্জীবকো ব্রূতে নৈতদুচিতং ॥
 তথা চোক্তং ॥ নাস্তিবেদ্যং প্রকুব্বীত ভর্ত্যুঃ কিञ্চিদপি
 স্বয়ং । কার্য্যমা পত্ৰপতীকারাদন্যত্র জগতীপতে । *

অনন্তর কদাচিৎ সেই সিংহের ভাতা স্তম্বকর্ণনামা সিংহ
 আইল তাহার আতিথ্য করিয়া বসিয়া পিঙ্গলক তাহার
 ভোজনের নিমিত্তে পশু নষ্ট করিতে চলিল ইত্যবসরে সঞ্জী
 বক বলিতেছে হে মহারাজ আজিনষ্ট মৃগের মাংস কোথায়
 ভপতি কহিল দমনক করটক জানে সঞ্জীবক বলিতেছে
 জানুন কি আছে বা নাই সিংহ বিবেচনা করিয়া বলিল তাহা
 নাই সঞ্জীবক বলিতেছে তাহার কি পুকারে এত মাংস থা
 ইল রাজা বলিল খাইয়াছে ব্যয় করিয়াছে অবজ্ঞা ও করি
 য়াছে পুতাহই এই কণ সঞ্জীবক বলিতেছে শ্রীযুত মহা

রাজার চরণের অজ্ঞাতে কি কারণে এমন করে নৃপতি কহি
লেন আমার অগোচরেতেই করে। অনন্তর সঞ্জীবক বলিল
ইহা উপযুক্ত নহে বিজ্ঞের ইহা কহিয়াছেন হে মহারাজ
বিপৎপতীকার ব্যতিরেকে স্বামিকে নিবেদন না করিয়া
আপনি কোন কন্ম করিবে না।

Sometime after, a brother of the lion's whose name was Stabdha-karna, coming to see him, Pingalaka having entertained him, they went forth to hunt for prey. Upon their return, Sang-jivaka asked the lion what was become of the flesh of the deer which had been killed that day; and the rājā told him that Damanaka and Karataka knew. Let it be understood, said Sang-jivaka, whether there is or is not any. There is not, then, replied the lion, laughing. What! said Sang-jivaka, has so much flesh been eaten by those two? Eaten, wasted, and given away, answered the lion; and this is what happens every day. How are such things transacted, demanded the bull, without the knowledge of your highness? Why not? said the lion. Because it is not proper, observed the bull: for it is said,

A servant should never do any thing of himself, without having informed the sovereign his master; except it be what he may do to prevent a misfortune.

॥ অন্যত্র ॥ কমললুপমোমাত্যস্তুত্যাগোবজ্জয়হঃ ।
 নৃপতে কিং লুপো মূর্খোদরিদ্রঃ কিং বরাটকঃ ॥ সচ্ছমাত্যঃ
 সদা শ্রেয়ান্ কাঙ্কিনীং যঃ প্রবর্জयेत् । কোষঃ কোষবতঃ
 প্রাণাঃ প্রাণাঃ প্রাণান্ ভূপতে ॥ কিঞ্চিৎ কৃত্যৈর্ন কুলাচারৈঃ সেব্য
 তামেতি পুরুষঃ । ধনহীনঃ স্বপনত্যাপি ত্যজ্যতে কিং পুনঃ
 পরৈঃ ॥ এতচ্ছরাস্ত্রঃ প্রধানং দূষণং ॥ অতিব্যয়োনবেচ্ছা চ তথা
 জ্ঞানমধর্ম্মতঃ । পোষণং দূরসংস্থানাং কোষব্যসনমুচ্যতে ॥
 যতঃ । ত্ৰিপ্রমায়মনালোচ্য ব্যয়ানশ্চ স্ববাঙ্ক্ষয়া । পরি
 ছীযতএবাসৌ ধনী বৈশ্রবণোপমঃ ॥ স্তব্ধকর্ণোব্রূত শৃণু
 শ্রাতশ্চিরাত্মিতাভেতৌ দমনককরটকৌ সন্ধিবিগ্রহকা
 র্য্যাধিকারিণৌ চ কদাচিদ্র্যাদিকারেণ নিযোক্তব্যৌ

অপর যেমন গাভু মুখেরদ্বারা অনেক জনাদির গৃহগ করে
 নালের দ্বারা অল্পত্যাগ করে এইরূপ মস্ত্রিনোক অনেক
 মুদাদি আদায় করিবেক অল্প ব্যয় করিবেক কেন না হে
 মহারাজ ক্ষণ মাত্র না পড়ায় কি মর্থ হবে ইহা মনে করিয়া
 আলস্য করিলে সে পুরুষ মর্থ হয় আর এক বরাটক সঞ্চয়
 করিলে কি ইহাবে ইহাতে দরিদ্র হয় সেই মস্ত্রী সর্বদা ভাল
 যে পাঁচ গণ্ডা কাড়ি কে বাড়ায় কোষাধিকারির কোষই পূর্ণ
 রাজার পূর্ণ পূর্ণ নহে আর অন্য কুলাচারেতে পুরুষ মান্য
 হয় না কেননা নির্ধন হইলে আপন জীও ত্যাগ করে পর
 কি । রাজার এ বড় দোষ ধনাদির অতিরিক্ত ব্যয় আর না

देखा आर अधर्मेते उपार्जन आर अधिक दान आर दूरस्थ
 लोकेरदिगेर पोषण এই সকল ভাণ্ডারের ব্যসন যেহেতুক
 আর না দেখিয়া আপন ইচ্ছাতে শীঘ্র ব্যয় করিলে কুবেরের
 তুলাধনবান ও দরিদ্র হয়। শুদ্ধ করণ বলিতেছে শুন ভাই এই
 দমনক করটক চির কালের আশ্রিত সন্ধি বিগৃহ, কাযোতে
 ইহারা নিযুক্ত আছে খনাধিকারেতে নিয়োগ কত্তব্য নহে।

main.

The minister should be like a Kamandalu, in which there is deposited a vast collection. Of what use to a sovereign is a poor idle fool, or a mere empty hull?

For,

He is the best minister who enricheth the state but a Kākini. The treasury is the vitals of him who hath a treasury. The animal spirits are not the vitals of princes.

For a man will not arrive at the state of being respected by any other means. When a man is destitute of riches, he is sometimes forsaken, even by his wife, and how much more by others!

What great evils these are also in a state!

Great expenditures, and the want of inspection; so, unlawful accumulation, plundering, and a distant situation, are called the evils of the treasury.

The rich man spendeth like Vaisravana, (Plutus) who squandereth, according to his inclinations, his income immediately, without regard to its amount.

Hear me, brother, said Stabdhakarna, it is my opinion, that these two, Karataka and Damanaka, being employed in the superintendence of the affairs of peace and war, are improper persons to preside at the head of the treasury.

অপরঞ্চ নিয়োগপ্রস্তুতবে যন্ময়া শ্রুতং তৎ কথ্যতে ।
 ব্রাহ্মণঃ স্ত্রিয়োবশ্বমুনাধিকারে প্রশস্যতো ব্রাহ্মণঃ সিদ্ধ
 মর্থং কচ্চেণাপি ন যচ্ছতি ॥ নিযুক্তঃ স্ত্রিয়োবশ্বমুনা
 দর্শয়তে ধ্রুবং । সর্ধং যসতে বশ্বমুনা কস্য জ্ঞাতিভাবতঃ ॥
 অপরাধোপ নিঃশঙ্কো নিয়োগী চিরসেবকঃ । স স্বামিনম
 বজ্রায় ঘরেচ্চ নিরবয়হঃ ॥ উপকর্ত্তাধিকারস্য স্বাপরাধ
 ন মন্যতে । উপকারং ধ্বজীকৃত্য সর্ধমেবাবলুপ্যতি ॥ উপা
 শুকীভিতোঃ সত্যঃ স্বয়ং রাজায়তে যতঃ । অবজ্ঞা ক্রিয়তে
 তেন সदा পরিচর্যাৎ ধ্রুবং ॥ অন্তর্দৃষ্টঃ স্ত্রিয়োবশ্বমুনা
 র্থকারঃ কিল । শকুনিঃ শকটারস্য দৃষ্টান্তাবশ্বমুনা ভূপতে ॥
 সদামাত্যো ন সাধ্যঃ স্যাৎ সৃষ্টঃ সর্ধং এব হি। সিদ্ধানাম
 যমাদেশকৃষ্ণিষ্তিবিচারিণী ॥ ❀❀❀❀

আর নিয়োগের পুনঃক্ষেতে আমি যাহা শুনিয়াছি তাহা কহি।
 ব্রাহ্মণ ক্রিয় বশ্বমুনা ইহার অধিকারেতে পুশস্ত নয় ব্রাহ্মণ
 ন্যায়া ধন কষ্টেতে ও দেয় না ক্রিয় ধনেতে নিযুক্ত হইলে
 অবশ্য অস্ত্র দেখায় বন্ধু জ্ঞাতিভাবেতে সর্ধম্ব আক্রমণ করি
 য়। গুণসকলের বহুকালের দাস নিযুক্ত হইয়া অপরাধে ও শঙ্কা
 রহিত হয় সে পুত্ৰকে অন্যথা করিয়া যথেষ্টাচরণ করে উপ
 কারক ব্যক্তি অধিকারী হইয়া আপন অপরাধ মানেনা উপ
 কারকে ধ্বজাতে করিয়া সমস্তই লুকাই ক্ষুদ্রস্বরেতে পরা
 মর্শ কারক মন্ত্রী আপনি রাজার ন্যায় আচরণ করে সে

লোক সর্বদা পরিচয়েতে নিশ্চয় অবজ্ঞা করে অস্তঃকরণ দুষ্ট
কর্মাবান লোক নিশ্চয় সকল অনর্থকারক হয় যে মহারাজ
ইহাতে দৃষ্টান্ত রাজা দুর্যোধনের মন্ত্রী শকুনি আর শূদ্রক
রাজার মন্ত্রী শকটর । অমাত্য সর্বদা সাধ্য নহে কেননা
সকলই ধনবান হয় যেহেতুক সিদ্ধ লোকেরদিগের এই
আজ্ঞা যে ধন চিন্তের বিকারকে করে ।

I will just repeat what I myself have heard upon the subject of persons to be employed.

A priest, a soldier, and a relation, are not proper to be employed at the head of affairs. The priest, even when the object for which he was engaged hath been completed, refuseth to resign.

If a soldier be employed in an affair, he directly sheweth his sword; and the relation, swalloweth up all the profits.

If an old servant be appointed, he will be fearless, even in the commission of crimes; and, in despite of his master, he may quit his service without reproof.

One who hath been useful, in offending, payeth no attention to his offence. He maketh his services a standard, under which to plunder and destroy.

What minister is inattentive among riches? The man forceth himself to be attached; and from intimacy he is for ever sure to behave with insolence and contempt.

The man who thinketh of nothing but the acquisition of wealth, always devoureth the whole without reserve. The eagle and the vulture may serve a prince as examples of such a minister.

A minister is always incorrigible, when he shall be grown too great. It is a maxim of those who are esteemed perfect, that abundance is the perverter of reason.

প্রাপ্তার্থগ্রহণং দ্রব্যপরিবর্ত্তোঽনুরোধনং । উপেক্ষাবুদ্ধি
 হীনত্বং ভোগোঽমাত্যস্য দূষণং । নিযোগ্যার্থগ্রহোপায়ো
 রাজ্ঞাং নিত্যপরীক্ষণং । প্রতিপত্তিপ্রদানঞ্চ তথা কৰ্ম্ম
 বিপর্য্যয়ঃ ॥ নিপীড়িতাবমন্যুচ্চরন্তঃসারং মহীপতে দুষ্ট
 ব্রহ্মণ্য ইব প্রায়োभवन्ति हि नियोगिनः ॥ মুহূৰ্ণিযোগিনো
 বোধ্যবসুধায়া মহীপতে সত্ত্বত্ কিং পীড়িতস্নানবস্ত্রং
 মুञ্चेत् द्रुतम्पयः ॥ এতৎ সৰ্ব্বং যথাবসরং জ্ঞাত্বা
 व्यवहर्त्तव्य ॥ সিংহোব্রূতে अस्ति तावदेवं किन्तु एतौ सर्व
 था न मम वचनकारिणौ । स्वधर्कणोब्रूते एतत् सर्वं न
 नुचितं सर्वं था ॥ यतः ॥ आज्ञाभङ्गकरा राजा न क्षमेत्
 स्वसुतानपि । विशेषः क्रोऽनुरागस्य राजचित्तगतस्य च ॥

প্ৰাপ্ত ধনের সংগ্ৰহ এবং দুর্ব্বার বিনিময় এবং উপরোধ এবং
 উপেক্ষা এবং নিৰ্ব্বুদ্ধিতা এবং উপভোগ এই সকল মন্ত্ৰির
 দোষনিযুক্ত লোকের স্থানে ধন লইবার উপায় আর রাজপুরু
 ষেরদিগেরপুত্ৰই পরীক্ষা আর পুতিপত্তি করণ আর অধি
 কারেরপরিবর্ত্ত এ সকল দুষ্টবুণ যেমন অতিশয় পীড়িত হই
 লে অন্তরস্থ পুয়াদিকে উদ্ধার করে হে মহারাজ তেমনি অধি
 কারস্থ লোকেরা অতিশয় পীড়িত হইলে অন্তরস্থ বস্তুকে
 বাহির করে । হে মহারাজ নিযুক্ত লোকেরদিগেকে বার
 স্বার বুঝিবেক একবার পীড়ন করিলে কি নানবস্ত্র শাঘু
 জলতাগ করে এই সকল সমস্তানুসারে জানিয়া ব্যবহার
 কর্তব্য । সিংহ বলিতেছে এই পুকার বটে কিন্তু ইহার

দুই জন সর্বথা আমার বচনকারী নয়। শুদ্ধকৰ্ণ বলিতে
ছে এ সকল সর্বপুকারে অনুপযুক্ত যেহেতুক আদেশের
লঙ্ঘনকারক আপন পুত্রেরদিগেকে ক্ষমা করিবেন। অতএব
রাজার মনোগত অনুরাগের আর বিশেষ কি।

Not taking the advantages which are found, concealing the expenditure of things, inattention, want of judgment and the being addicted to pleasures, are all faults in a minister.

The collection of the revenues is the business of the officers, but a constant circumspection, the payment of stipends, and of the return for labour, are the duties of the sovereign.

Until they are pressed, they will not disgorge the royal treasures they have embezzled; for the officers of revenue are like obstinate tumours, that must be pressed before they will properly discharge.

And the compulsive power of the sovereigns of the earth should be exerted repeatedly upon their officers; for will a piece of cloth, by being once squeezed, yield up all the water it may have imbibed?

The whole of this advice, concluded the lion's brother, should be put in practice, as often as there is found occasion.

The rājā then said,—It is even so, that these two are not always ready to obey my commands. And that, replied his brother, is at no time becoming in them: for,

A sovereign should not forgive those who disobey his commands, although they were his sons. Especially if it be to the hurt of the revenue, or relative to any thing he may have fixed his heart upon.

স্বাস্থ্যস্য নশ্যতি যশোবিষমস্য মৈত্রী নষ্টেন্দ্রিয়স্য কুল
 মর্যপরস্য ধর্মঃ । বিদ্যাফলং ব্যসনিনঃ কৃপণস্য সৌখ্যং
 রাজ্যং প্রমত্তসচিবস্য পরাধিপস্য ॥ অপরঞ্চ ॥ তস্মিন্
 ভ্যোনিযুক্তোভ্যঃ শত্রুভ্যোনৃপবল্লভাৎ । নৃপতির্নিজলোভাচ্চ
 প্রজারক্তে পিতৃব হি ॥ স্নাতঃ সর্বথা স্নাত্ব চ ন ক্রিয়তাং
 ব্যবহারোপ্যস্মাভিঃ কৃতং তস্মৈ সজ্জীবকঃ শস্যমভ্যর্থকো
 ঽর্থাদিকারে নিযুজ্যতাং এতদ্বচনানুষ্ঠিতে সতি তদা
 রম্য পিঙ্গলকসজ্জীবকযোঃ সর্ববন্ধুপরিত্যাগেন মহতা
 স্নেহেন কালোঽতিবর্ত্ততে ততোঽনুজীবিনামপ্যাহারদানে
 শ্রৌতিস্বদর্শনাৎ দমনককরটকাবন্যোন্ম চন্তয়তস্তদাহ
 দমনকঃ করটকং মিত্রং কিং কৰ্ত্তব্যং আত্মকতোঽয়ং দোষঃ
 স্বয়ং কৃতোঽপি দোষে পরিদেবনমপ্যনুচিতং ॥ *❀*❀*

স্বক ব্যক্তির যশ নষ্ট হয় অশিষ্টলোকের মিত্রতা নষ্ট হয়
 অজিতে ন্দ্রিয়ের কুল নষ্ট হয় ধনপরব্যক্তির ধর্ম নষ্ট হয়
 ব্যসনি লোকের বিদ্যা নষ্ট হয় কৃপণ জনের সখ নষ্ট
 হয় যে রাজার মন্ত্রী পুষ্ট হয় তাহার রাজ্য নষ্ট হয় ।
 অপর চোরহইতে এব° নিয়োগিপুরুষহইতে এব° বিপক্ষ
 হইতে এব° রাজার পুত্র লোকহইতে আর আপন লোভহই
 তে পুজারদিগকে রাজা পিতার ন্যায় রক্ষা করিবেক । হে
 ভাই সর্বপুকারে আমার বাক্য কর আনরা ও ব্যবহার
 করিয়াছি এই সজ্জীবক শাস্ত্রাভ্যর্থক অর্থাদিকারে ইহাকে

নিয়োগ করা। এই কথাতে তাহা করিলে পরে তদবধি সমস্ত
পরিভ্রাণ করিয়া অতিশয় স্নেহেতে গিহ্লক সঞ্জীবকের
কাল যাইতেছে। অনন্তর দাসেরদের ও আহাৰ দানেতে
শৈথিল্য দর্শনহেতুক দমনক করটক পরস্পর ভাবনা
করিতে২ দমনক করটককে কহিল হে মিত্র কি কর্তব্য
আত্মকৃত এ দোষ আপনি দোষকরিলে খেদ করা অনুচিত।

The indolent person loses his fame, the wicked his friendship, the libertine his caste, the avaricious his religion, the sick his learning, the miser his happiness, and the king whose minister is careless, his kingdom.

The rājā should, like a father, protect his subjects from robbers, from the officers of government, from the common enemy, from the royal favourites, and from his own avarice.

Brother, continued he, let my advice be followed: we have made our meal for to-day. Then let the bull, Sang-jivaka, who eats nothing but grass and corn, be appointed to superintend the provision.

After that, he being appointed accordingly, the lion and the bull passed their time together in great mutual kindness. But the two jackals, upon experiencing a relaxation in serving out the provisions to the officers and dependants, began to consult together what was to be done. It is an evil of our own seeking, said Damana-ka, and it is not proper to lament about a misfortune of one's own making.

তথা চোক্তং স্বর্ণরেখামহং সৃষ্টা বজ্রাভ্যামনন্ত
 দূতিকা । আদিত্যুঃ স্বমণি সাধুঃ স্বদোষাদুখিতা
 ইমে ॥ করটকোব্রূত কথমেতৎ । দমনকঃ কথয়তি ।
 অস্মি কাঞ্চনপুরনাম্নি নগরে বীরবিক্রমো রাজা তস্য
 ধর্ম্মাধিকারিণা কশ্চিন্নাপিতো বধ্যভূমি নীযমানঃ
 কন্দর্পকেতু নাম্না পরিব্রাজকেন সাধুদ্বিতীয়কেন নাযং
 হন্ত্যদ্যুত্থা বস্ত্রাশ্চ লে ধৃতঃ । রাজপুরুষা উচুঃ কিমি
 তি নাযং বধ্যঃ । স আহ শ্রুয়তাং স্বর্ণরেখামহং সৃষ্টে যাদি
 পঠতি তত্রাজঃ কথমেতৎ । পরিব্রাজকঃ কথয়তি অহং
 সিংহলদ্বীপে ভূপতের্জীমূতকেতোঃ পুত্রঃ কন্দর্পকেতু নাম
 একদা কেলিকাননাবস্থিতে ন ময়া পোতবাণি মুখাচ্ছুতং

তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন আমি স্বর্ণরেখাকে স্পর্শ করি
 য়া আর দূতী আপনাকে বাঞ্চিয়া আর সাধু আপন রত্ন
 লইতে ইচ্ছা করিয়া আপনদোষেতে ইহারা দুইটি ত ইহারা ছে
 করটক বলিতেছে এ কি পুংকার । দমনক কহিতেছে ।
 কাঞ্চনপুর নাম নগরে বীরবিক্রম নামে এক রাজা থাকে
 তাহার ধর্ম্মাধিকারি বধ্যভূমিতে কোন নাগিতকে আনত
 এক সাধুর সহিত কন্দর্পকেতু নামে সন্যাসী তাহাকে
 দেখিয়া কহিল এই লোক বধ্য নয় ইহা কহিয়া তাহার

বস্ত্রের আঁচলে ধরিল রাজপুরুষেরা কহিল কেন এ বধ্য
নহে । সম্যাসী কহিতেছে সিংহলদ্বীপেতে জীমূতকেতু
রাজার কন্দর্পকেতু নামা পুত্র আমি এক দিন আমি ক্রীড়া
বাননে থাকিয়া জাহাজি সওদাগরের মুখেতে শুনিলাম ।

It is said,




1, for having touched Suarna-rekha; the barber's wife, for having bound herself; the merchant, for having attempted to steal a jewel: All these suffered for their own faults.

How was this? demanded Karataka; and Damanaka related the following stories:

FABLE VI.

IN the city which is called Kānchana-pura, there was a rājā, whose name was Vira-vikrama. Once upon a time, as his chief officer of justice was conducting a certain barber to the place of execution, one devout man, named Kandarpa-ketu, accompanied by a merchant, taking him by the skirt of his garment, cried out,—This man is not guilty ! How so ! said the king's officers; not guilty, sayest thou? Hear me ! said he, and he immediately began to repeat these lines:—*Having touched Suarna-rekha, &c.* What does this mean, demanded the officers; and the devotee recounted the following adventure:

The king of Singhala-dwipa, whose name is Jimuta-ketu, hath a son called Kandarpa-ketu, and I am he. One day a boat-man, who attended in the pleasure gardens, told me,

ଧଦନ୍ତଃ ସମୁଦ୍ରମଧ୍ୟେ ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଶ୍ୟାମାଂସିର୍ଭୂତକଲ୍ପତରୁତଲେ
 ରତ୍ନାବଲୋକିରଣକର୍ତ୍ତୃପର୍ଯ୍ୟନ୍ତେ ସ୍ଥିତା ସର୍ବାଲଙ୍କାରଭୂଷିତା
 ଲକ୍ଷ୍ମୀରିବ ବୀଣାଂ ବାଦୟନ୍ତୀ କନ୍ୟା କାଞ୍ଚିଦୃଶ୍ୟତେ ଇତି
 ତତୋଽହଂ ପୋତବଞ୍ଚିଜମାଦାୟ ପୋତମାରୁହ୍ୟ ତତ୍ରଗତଃ ।
 ଅନନ୍ତରଂ ତତ୍ର ଗତ୍ବା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତେଽର୍ହମସ୍ମା ତଥୈବ ସା ଅବଲୋକିତା
 ତତଃ ସା ସଖୀସମେତା ସମୁଦ୍ରମଧ୍ୟେ ମନ୍ଥା ଦୃଶ୍ୟାଭବତ୍ ତତଲ୍ଲ
 ଛାବଣ୍ୟଗୁଣାଠ୍ଠେନ ମୟାପି ତତ୍ପଞ୍ଚାତ୍ ଖମ୍ବଃ ପ୍ରଦନ୍ତଃ
 ତଦନନ୍ତରଂ କନକପତ୍ତନଂ ପ୍ରାପ୍ୟ ସୁବର୍ଣ୍ଣପ୍ରାସାଦେ ତଥୈବ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତେ
 ସ୍ଥିତା ବିଦ୍ୟାଧରୀଭିରୁପାସ୍ୟମାନା ମୟାଲୋକିତା ତସ୍ୟାଽ
 ପ୍ୟହଂ ଦୂରାଦେବ ଦୃଷ୍ଟ୍ବା ସଖୀଂ ପ୍ରସ୍ଥାପ୍ୟ ସାଦରଂ ସମ୍ଭାଷିତଃ
 ତତ୍ସାକ୍ଷ୍ୟା ଚ ମୟା ପୃଷ୍ଠସ୍ୟା ସମାଧ୍ୟାତଂ । **

ଯେ ଏହି ଜନ୍ମ ମୁଖ୍ୟେ ଚତୁର୍ଦ୍ଦଶୀତିଥିରେ ଆବିର୍ଭୂତ କଲ୍ପ ବୃକ୍ଷର ତ
 ଲେତେ ରତ୍ନ ମୁହେର କିରଣଦ୍ୱାରା ଗନୋହର ପାନକ୍ଷେତେ ଉପବିଷ୍ଟ ।
 ଶ୍ରୀରାଜରାଜେ ଭୂଷିତା ଲକ୍ଷ୍ମୀର ନାୟ ମୁଖରୀ ବୀଣା ବାଜାଉଁ ଥିଲେ
 ଏକମ କୋନ କନ୍ୟା ଦେଖି ଯାଏ । ଅନନ୍ତର ଆଗି ଏ ମଠାଗର
 କେ ଲଈଲା ଜାହାଜେତେ ଆରୋହଣ କରିଲା ସେଥାନେ ଗେଲାନ ।
 ତାହାର ପର ସେଥାନେ ଗିରା ପର୍ଯ୍ୟାକ୍ଷେତେ ଅର୍ଦ୍ଧ ଗନ୍ଧା ସେହି ମୁକାର
 ତାହାକେ ଅବଲୋକନ କରିଲାନ ତତ୍ପରେ ସେ ଲକ୍ଷ୍ମୀର ମହିତ
 ମାଗରଗନ୍ଧେ ଗନ୍ଧା ଅଦୃଶ୍ୟା ହଇଲ । ତାହାର ପର ତାହାର ମୋ
 ନନ୍ଦ୍ୟା ଶୁଣେତେ ଆକୃଷ୍ଟ ହଇଲା ଆଗି ଓ ତାହାର ମନ୍ତ୍ରାଂ ଶ୍ରୀମ

দিলাম তদনন্তর এক সুবর্ণপুত্রী পাইয়া সুবর্ণ পুসাদে সেই
 রূপ খটাতে স্থিতা বিদ্যাধরীকত্বক সেবামান। তাহাকে
 আমি দেখিলাম সেও আমাকে দুরূহিতে দেখিয়া সখাকে
 পাঠাইয়া আদরেতে সম্ভাষ করিল তাহার সখাকে আমি
 দেখিয়া জিজ্ঞাসিলে সে কহিল।

that on the fourteenth day of the moon, there was to be seen in the sea, which was near, under what had the appearance of the Kalpa-taru, or tree of thought, seated upon a silver sofa, ornamented with a fringe of precious gems, a certain nymph playing upon a Vina, as it were the goddess Lakshmi. At the proper time I sent for the boat-man, and getting into the boat, set sail for the appointed place; and there I beheld a damsel, with only one half of her body appearing above the surface of the water. In short, attracted by the beautifulness of her appearance, I leaped behind her; and was immediately transported to her golden place; where I found her waiting in an apartment of gold, seated upon a bed of the same materials, attended by Vidya-dharies. I no sooner saw her, than, spying me at a distance, she sent a damsel, who addressed me with respect. On my enquiry, the damsel said.

এষা কন্দর্পকোলিনাসৌ বিদ্যাধরচক্রবর্তিনঃ পুত্রী রত্ন
মঞ্জরী নাম প্রতিজ্ঞাপিতা বিদ্যতে যঃ কনকপত্তনং স্বচ
লুধাগত্য পশ্যতি সএব পিতুরগোচরোপি সাম্পরিণেধ্য
তীতি মনসঃ সঙ্কল্যঃ তদেনাং গন্যর্ধবিবাহেন পরিণয়তু
भवान् अथ तत्र वृत्ते गन्यर्धविवाहे तथा सह रममाण
स्तत्रাহं तिष्ठामि ततएकदा रहसि तयोक्तं स्वामिन् स्वे
च्छ्यासर्धमिदमुपभोक्तव्यं एषা चित्रगता स्वर्णरेखा नाम
विद्याधरीन कदाचित् स्पृष्टव्या पश्चादुपजातकौतुकेन
मया स्वर्णरेखा सहस्रेण स्पृष्ट्वा तथा चित्रगतयाप्यहं
चरणपद्मेन ताडित आगत्य स्वराष्ट्रे पतितः अथ दुःखा
ताहं परिब्रজितः पृथिवीं परिभ्राम्यन् इमां नगरीमनु
प्राप्तः अथ चातिक्रान्ते दिवसे गोपमृहे सुप्तः सन्नपश्यं

কন্দর্পকোলি নামে বিদ্যাধর চক্রবর্তির রত্নমঞ্জরী নামে
কন্যা ইনি ইহার নিয়ম আছে যে ব্যক্তিআসিয়া আপন
চক্ষুতে এই কনক পত্তন দেখিবেক সেই পিতার অগোচরে
তে ও আমাকে বিবাহ করিবেক এই মনের পুতিজ্ঞা
এইহেতুক ইহাকে গান্ধর্ব বিবাহেতে আপনি স্বীকার
করুন । অনন্তর গান্ধর্ব বিবাহ হইলে পরে তাহার
সহিত ক্রীড়া করত সেই স্থানে আমি থাকি । তাহার
পরে এক দিবস নির্জনেতে সে কহিল হে নাথ আপনি
ইচ্ছাতে এই সমস্ত উপভোগ কর কিন্তু চিত্রিত এই স্বর্ণরেখা

नामे विद्याधरीके कदाच स्पर्श करिषा ना । पश्चात् आम्नि
 कौतुकाविष्ट हईया स्वर्णरेखाके आपन हस्तेते स्पर्श करि
 या चित्रिता সেই स्वर्णरेखा आमाके पादपङ्कजद्वारा ता
 डित करिल ताहाते आसिया आपन देशेते पाड़िनाम
 अनन्तर व्याथित हईया सम्यासी हईया पृथिवीते भ्रमण करत
 এই नगरी के पाड़िनाम । पारे गत दिवसे गोपगृहेते
 शयन करिया देखिनाम ।

That is nymph Ratna-manjari, the daughter of Kan-
 darpakeli, the king of the Vidyā-dhara. She has resolved
 to give her hand, even without the knowledge of her
 father, to the person, who will come and behold this
 golden city with his own eyes; therefore consent to be
 united by the Gandharva mode of marriage. After this,
 I was married to her according to the ceremony of
 the Gandharvas (by exchanging necklaces) and con-
 tinued a long time delighted with her. One day, as
 we were in private together, she said,—Husband, thou
 mayst enjoy every thing which is here according to thy
 wish, except it be the beautiful Swarna-rekhā, a certain
 Vidyā-dhārī, who is not to be touched of any one.
 Sometime after this, at an entertainment, being in a
 merry mood, I was tempted to touch the orbs of her bo-
 som, and for my presumption she spurned me with the
 sole of her foot; after which I found myself in this coun-
 try; and at length travelling about in great distress, I
 chanced to discover this city, and having wandered
 about all day, I went to sleep at the house of a certain
 cow-keeper.

প্রদোষসময়ে সুহৃদাং পালনং কৃत्वा স্বনেহমাগতো গোপঃ
 স্ববধূং দূত্যা সহ কিমপি নম্রয়ন্তীমপধ্যত্ ততস্তাং
 গোপীং তাডযিত্বা স্তম্ভে বদ্ধা সুম্নঃ ততোঽর্জুনাচে এতস্য
 নাপিতস্য বধূর্দূতী পুনস্তাং গোপীমুপেতা বদত্ তব বিরহা
 মলদগ্ধোঽসৌ স্মরশরজর্জরিতোমমূর্ষুরিব বর্চতে ।
 তথা চোক্তং ॥ রজনীচয়নায়েন লুপ্তিতে তিমিরে নিশি
 যুনাং মনাंसি বিব্যাধ দৃষ্টা দৃষ্টা মনোভবঃ ॥ তস্য
 তাদৃশীমবস্থামবলোক্য পরিলিষ্টমনাস্ত্বামনুবর্চিতু
 মাগতা তদহমচাত্মানং বদ্ধা তিষ্ঠামি ত্বং তত্র গত্বা তং
 সন্তোষ্য সত্বরমাগনিষ্যসি তথানুষ্ঠিতে সতি সগোপঃ
 প্রবুদ্ধোঽবদত্ ইদानीং ত্বাং পাপিষ্ঠাং জারান্তিকং নযামি
 ততোযদাসৌ ন কিञ্চিদপি ব্রূতে । *❀*❀*❀*

জন্মাকাশে আশ্রয় অন্তরঙ্গের পালন করিয়া গোপ
 আপন গৃহে আসিয়া আপন ভার্যাকে দূতীর সহিত
 কোন পরামর্শ করিতে দেখিল তাহার পর সেই
 গোপাকে তাড়মা করিয়া স্তম্ভেতে বন্ধন করিয়া শয়ন
 করিল অনন্তর অর্জুনাভ্যেতে এই নাগিতের স্ত্রী দূতী সেই
 গোপির নিকট যাইয়া কহিল তোমার বিরহরূপঅনলে
 দগ্ধ এই ব্যক্তি কন্দর্পবাণেতে জর্জরিত মূমূর্ষুত্বা আছে ।
 গণ্ডিতে তাহা কহিয়াছেন রাজিতে চন্দ্রকর্তৃক অন্ধকার
 বিনাশিত হইলে কন্দর্প দেখিয়া যুবরদিগের মনকে বেধ

করে তাহার সেইরূপ অবস্থা দেখিয়া দুঃখিতান্তঃকরণ হইয়া তোমার অনুবর্তিতে আসিয়াছি সেইহেতুক আমি এখানে আপনাকে বান্ধিয়া থাকি তুমি সেখানে যাইয়া তাহাকে পরি তোষ করিয়া ত্বরাতে আসিবা সেই পুকার করিলে পরে সে গোপ জাগিয়া বলিল ওরে পাপাত্মা সম্প্রতি তোরে উপ পতির নিকটে লই । অনন্তর যখন এ কিছুই না বলিল ।

This man, too, perceiving the season for the commission of crimes was approaching, prudently quitted the conversation of his friends, and came home, where he found his wife consulting with a procuress. So, having given her a good beating, he made her fast to a post, and went to sleep. About midnight, the same procuress, who was the barber's wife, returning, said to the cow-keeper's wife,—Such an one, burning with the fire of separation, is ready to die for thee.

For, it is said,

As in the night darkness is kept at a distance, by the lord of shades, (the moon,) thus love by seeing and being seen, delights the heart of the young.

Having seen him in that condition, my heart was touched with pity, and I am therefore come to thee. Go, then, to speak to him, and return quickly; and in the mean time, I will bind myself to the post, and stay till thou shalt come back. Things having been thus managed, it so fell out, that the cow-keeper waked. Why dost not now go to see thy gallant, my dear? said he; to which no answer being made,


তদা ক্রুদ্ধো গোপঃ দর্পোন্মত্তমবচসি প্রত্যুত্তরমপি ন দদাসি
 ইত্যুক্তা কোপেন তেন কল্হিত্বামাশ্রিত্যাসিকা ছিন্না
 তথা কৃত্বা পুনঃ সুশ্লোগোনিদ্রাসুপগতঃ অথাগত্য গোপী
 দূতীমপৃচ্ছত্ কাবান্ধা । দূতীকৃতং পশ্য মাং মুখমেব বান্ধা
 কথয়তি অনন্তরং সা গোপী তথা কৃত্বা আত্মানং বদ্ধা স্থি
 তা ইয়ম্ব দূতী তাং ছিন্ননাসিকাং গৃহীত্বা স্বগৃহং প্রবি
 শ্য স্থিতা ততঃ প্রাতরেবানেন নাপিতেন স্ববধুং তুরমাণ্ডে
 আধিতা সতী তুরমেকং প্রাদাত্ ততোঃ সমগ্রমাণ্ডে প্রাপ্তে
 সমুপজাতকোপোয়ং নাপিতঃ তত্ তুরং দূরাং দেব গৃহে চিত্ত
 বান্ধা অথ কৃত্যর্চনং বা ইয়ং বিনাপরাধন মে নাসিকা
 অনেন ছিন্না ইত্যুক্তা ধর্মোপকারিসমীপমেনমানীতবতী
 সা চ গোপী তেন গোপেন পুনঃ পৃষ্ঠোবাচ ।

তখন সে গোপ ক্রুদ্ধ হইয়া অহঙ্কারেতে আনার বাক্যেতে
 উত্তর ও দিল না ইহা করিয়া রোষেতে ছুরি লইয়া ইহার
 নাসিকা কাটিল তাহা করিয়া পুনর্বার শুইয়া নিদ্রা গেল ।
 অনন্তর গোপী আসিয়া দূতীকে জিজ্ঞাসা করিল বৃত্তান্ত
 কি দূতী কহিল আমাকে দেখ মুখই বৃত্তান্ত কহিতেছে ।
 ইহার পর সেই গোপা ঐ রূপ করিয়া আপনাকে বান্ধিয়া
 থাকিল ঐ দূতী সেই ছিন্ন নাসিকা লইয়া আপন গৃহে
 প্রবেশ করিয়া থাকিল । তাহারপর পুণ্ডিত সময়েতে ঐ

নাপিত আপন ভাষার নিকটে ক্ষুরভাণ্ড চাহিলে পরে এক
থানি ক্ষুর দিলেক । তদনন্তর সমস্ত ভাণ্ড না পাইয়া জাভ
ক্রোধ হইয়া ঐ নাপিত সেইক্ষুর দূরহইতে য়গ্নেতে ফেলিয়া
দিল । অনন্তর দূতী আর্ভধনি করিয়া এ ব্যক্তি অপরাধ
ব্যাতিরেকে আমার নাসিকা ছেদন করিল ইহা বলিয়া
ধর্মাধিকারির নিকটে ইহাকে আনিলেক । ঐ গোপী
সেই গোপকর্তৃক পৃষ্ট হইয়া কহিলেক ।

he containedd saying,—Pray who has taught thee to
be so proud, that thou wilt not deign to give me an an-
swer. And saying this, he got up in a great rage, cut
off her nose, and lay himself down to sleep again. After
a while, the cow-keeper's wife returning, asked the pro-
cureess what news. What news! said she; look in my
face, and see what news! The cow-keeper's wife now
takes her place, and binds herself to the post as before;
and the barber's took up her nose and repaired to her
own house. Early in the morning, when the barber or-
dered his wife to bring him the razor case, she said,—
here is a razor, putting one into his hand; but as it did
not chance to please him, he threw it in a passion upon
the ground; upon which his wife seized the occasion to
cry out,—Oh! without the least provocation, he hath cut
off my nose! And away she went to the officer of justice.

In the mean time, the cow-keeper's wife, being ques-
tioned by her husband, exclaimed,—

অরে গাণ কোমাং মহাসতীং নিরূপয়িতুং সমর্থঃ মম ব্যব-
 হারমকলমসমষ্টৌ লোকপালাএব জানন্তি ॥ যতঃ ॥
 আদিত্যচন্দ্রাবনিলোঃনলশ্চ যৌৰ্ভূমিরাপো হৃদয়ংমমশ্চ।
 অহশ্চ রাত্রিশ্চ উভে চ সন্ধ্যং ধৰ্ম্মশ্চ জানাতি নরস্য
 বৃত্তং ॥ যদ্যহং পরমসতী স্যাং ত্বাং বিহাযান্যং ন জানে পুরু-
 ষান্তরং স্বপ্নেঽপি নহি ভজে তেন ধর্মেণ ছিন্নাপি মম
 নাসিকা অচ্ছিন্নাস্তু ময়া ত্বং মম কৰ্ত্তুং শক্যতে কিন্তু
 স্বামী ত্বং লোকমযাদুপেক্ষতে পশ্য মন্মথং ততো যাবদসৌ
 গোপোদীপং প্রজ্বাল্য তন্মুখমবলোকতে তাব দুগ্ধসং মুখ-
 মবলোক্য তচ্চরণ্যোঃ পতितঃ ধন্যোহং যস্মৈদৃশী ভার্য্যা
 পরমসাধ্বীতি যোযমাস্তে সাধুরেতদ্বৃত্তান্তমপি কথয়া-
 মি অথং স্বয়ং হ্যন্বিগতোদ্বাদশবর্ষে মলয়োপকণ্ঠাदिमां
 नगरीमनुप्राप्तः । **

অরে গোপ আনি মহাসতী আনাকে কে নিরূপন করিতে
 পারে আনার নিশ্চাপ ব্যবহার অষ্ট দিকপালেরা জানেন
 যেহেতুক সূর্য্য চন্দ্র বায়ু অগ্নি স্বর্গ পৃথিবী জল অন্তঃকরণ যম
 দিবা রাত্রি দুই সন্ধ্যা ধর্ম্ম ইহার। মনুষ্যের চরিত্র জানেন
 যদি আনি পরম সতী হই তোমাকে ত্যাগ করিয়া অন্যকে
 না জানি অন্য পুরুষকে স্বপ্নেতেও না ভজি তবে সেই পুণ্যে
 তে আমার এছিন্ন নাসা অচ্ছিন্ন হউক আনি তোমাকে

ভক্ষ করিতে পারি কিন্তু তুমি ভর্তা লোক ভয়েতে উপেক্ষা
করি দেখ আমার মুখ তাহারপর যখন গোপ পুদীপ জ্বালি
য়া তাহার মুখ দেখে, তখন তুঙ্গনাসিক বিশিষ্ট মুখ দেখিয়া
তাহার পায়েতে পড়িল আমি ধন্য যাহার গৃহিণী এতাদৃশী
পরম সতী । এই যে সন্ন্যাসী আছেন ইহার বৃত্তান্ত ও বলি
ইনি নিজ গৃহহইতে বাহির হইয়া দ্বাদশ বৎসরেতে মলয়
সমীপ হইতে এইপূরি পাইয়াছেন ।

Who guilty wretch, thinkest thou, is able to disfigure
one so very chaste as I? The eight guardians of the uni-
verse are acquainted with all my actions! Is it not said,

The sun and moon, fire and air, heaven, earth, and
water, the heart, and conscience; day and night, with
morning and evening; justice and all, are witnesses
of a man's actions'

Then, let this be the trial of my innocence:

Ye mighty angels who guard the universe! if I am a
chaste and virtuous wife, let this my countenance remain
no longer without a nose!

I can reduce you to ashes, but as you are my husband,
I pardon you. Now, said she, look at my face! Accord-
ingly, her husband, having brought a light, examined
her face; and when he beheld that it was free from any
appearance of having been wounded, he fell down at her
feet, and, with a joyful heart exclaimed.—He who
possesses such a wife is chief among men!

Now attend to the history of the merchant. He left his
own house, and after an absence of twelve years, he re-
turned to this city, from the neighbourhood of the Malaya
mountains,

অত্র বেষ্মাঘটে সুম্নস্তাস্বাঃ কুটিল্যামহদারিস্থা
 পিতকাষ্টনঠিতবেতাশস্য মূর্ছনি রত্নমেবামুত্ফাষ্টমাস্তে
 তত্র লুণ্ঠেনাগেন সাধুনা রাবাবুণ্যায় রত্নং মৃদ্বীতুং
 যত্নঃ কৃতঃ তদাতেন বেতালেন সূত্রসম্ভারিতবাজ্জম্বাং
 পীড়িতঃ সম্ভার্ত্তনাদময়ং চকার পশ্চাদুত্থায় কুটিল্যো
 ক্তং পুত্র মলয়োপকণ্ঠাदागते।सि तत् सर्वरत्नानि प्रय
 ञ्छासौ नो चेदनेन न त्यक्तव्ये।सि इत्यमेवायं चेटकः
 ततोऽनेन सर्वरत्नानि समर्पितानि यथायमपहृतसर्व
 स्त्रोस्मासु समागत्य मिलितः एतत् सर्वं श्रुत्वा राज
 पुरुषैर्न्याये धर्माधिकारी प्रवर्त्तितः अनन्तरं तेन सा
 दूतोगोपी च ग्रामाद्बहिर्निःसारिता नापितश्च मৃद्वীकृतः।
 अतोऽहंब्रवीमि स्वर्णरेखामहं स्पृष्ट्वेत्यादि। *—

এ স্থানে বেশ্যা গৃহে শয়ন করিয়াছিলেন সেই স্ত্রীটিনীর গৃহ
 ঘাট্রেতে কাঠ নির্মিত এক বেতান ছিল তাহার নিকটে
 এক উত্তন রত্নথাকে তাহাতে এই লোভি সাধু ব্রাহ্মিতে উঠি
 য়া নগিলইবার নিমিত্তে যত্ন করিলেন তখন সেই বেতান
 কর্তৃক-সূত্রসম্ভারিত হস্তদ্বয়ের দ্বারা ধৃত হইয়া ঐ ব্যক্তি
 আত্মস্বর করিল । অনন্তর স্ত্রীটিনী উঠিয়া কহিল পুত্র মল
 যের নিকটেহইতে তুমি আসিয়াছ সে সকল রত্ন ইহাকে
 দেও নতুবা এতোমাকে ছাড়িবে না এ চেষ্টক এই পুকার।

তাম্রভূজ ইনি সমস্ত রত্ন সমর্পণ করিলেন এ পুকারে ইনি
হতসর্বস্ব হইয়া আসিয়া আমারদিগের সহিত মিলিলেন ।
এই সকল শুনিয়া রাজপুত্রেরা ন্যায়েতে ধর্ম্মাধিকারিকে
পুত্র করাইলেক । অনন্তর তিনি সেই দূতীকে আর গোপী
কে গুমহইতে বাহির করিয়া দিলেন নাগিত আপন গৃহে
গেল । অতএব আমি বলি স্বর্ণ রেখাকে আমি স্পর্শ করিয়া
ইত্যাদি ।

and went to sleep at a house of ill fame. The mistress of the house kept on the gateway a wooden image of a certain spirit, on whose head she had placed a valuable gem. The merchant, instigated by avarice, got up in the middle of the night; but just as he had put his hand to the jewel, he was caught between the arms of the image, which were hung by wires, and squeezed very closely, so that he cried out with pain. The mistress of the house got up immediately. Ho, ho! master merchant! Thou art come from Malaya! Then deliver all thy jewels, or else thou wilt not be released from thy present confinement. In short, he was helpless, and so sent for all his treasures, and made an offering of them for his enlargement; since which, having been thus plundered of all his wealth, he has joined our party of pilgrims.

All this being heard, the king's (inferior) officers persuaded the chief justice to do justice to the case. He accordingly drove out the procuress, and the wife of the cow-keeper from the village, and the barber being released, returned home.

I repeat, therefore,—*I for having touched the damsel Swarna-rekha &c.*

অথ স্বয়ং কৃতোযং দোষোঽত্র বিস্ময়নং নোচিতং ক্লণং বিমৃ
 শ্যামিচ্চ যথানযোঃ সৌহার্দ্যং ময়া কারিতং তথা মিচ্চ
 ভেদোপি ময়া কার্য্যঃ । যতঃ ॥ অতথ্যান্যপি তথ্যানি
 দর্শয়ন্ত্যতিপেশলাঃ । সমেনিস্তোদ্রতানীব চিত্রকর্ম্মবি
 দোজনাঃ ॥ অপরচ্ছ ॥ উত্পন্নেষ্বপি কার্য্যেষু মতির্যস্য
 ন হীযতে । স নিস্তরতি দুর্গাণি গোপী জারহ্ময়ং যথা ॥
 করটকঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ ॥ দমনকঃ কথয়তি অস্তি
 দ্বারবত্যাং পুৰ্য্যাং কস্যচিদ্রোপস্য বধূর্বম্বকী সা গ্রামস্য
 দাণ্ডনায়কেন তত্পুত্রেণ চ সমং রমতে । তথা চোক্তাং ॥ না
 মিস্তৃষ্যতি কাষ্ঠানাং নাপগানাং মহোদধিঃ । নান্তকঃ
 সর্ব্ভূতানাং ন পুংসাং বামলোচনা ॥ *❀*❀*

অনন্তর এই দোষ স্বয়ং কৃত ইহাতে বিনাপ উচিত নয়
 কিঞ্চিৎ কাল বিবেচনা করিয়া কহিল হে মিত্র ইহার
 দিগের যেমন সৌহার্দ্য আমি করাইয়াছি তেমন সুহৃদ্ভেদ
 ও আমি করি যেহেতুক চিত্রকর লোকেরা যেমন সমান স্থান
 কেও উচ্চ নীচ দেখায় তেমন অতিশয় খল লোকেরা
 মিথ্যাকে ও সত্য করিয়া দেখায় । অপর কার্য্য উপস্থিত
 হইলে যাহার বুদ্ধি ভ্রংশ না হয় সে লোক বিপৎসকলকে
 তরে যেমন গোপা দুই উপপতি ব্রজহিত বিপৎ হইতে তরি
 য়াছিল । করটক জিজ্ঞাসা করিলেক এ কি পুকার ।
 দমনক কহিতেছে । দ্বারবতী নামে পুরীতে কোন গোপের

বধু থাকে সে তুষ্ট। পুনের কোটালের এবং তাহার পুত্রের
সহিত ক্রীড়া করে তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন যে কাঠেতে
অগ্নি তৃপ্ত হয় না নদীতে সমুদ্র তৃপ্ত হয় না সমস্ত পুণিতে
ও যম তৃপ্ত হয় না পুরুষেতে জী লোক তৃপ্ত হয় না।

Now continued Damanaka, as this also is an evil of our own seeking, it does not become us to grieve about it. And having considered for a moment, he added, — Friend, the friendship which subsists between them was brought about by me, and, by me, that friendship may be dissolved; for,

Skilful men make falsehood look like truth; and those acquainted with the painter's art, make an even surface appear uneven





The understanding which, upon unexpected occurrences, remaineth unaffected, may pass through the greatest difficulties, like the farmer's wife with her two gallants.

How was that? demanded Karataka, and Damanaka recounted the following story:

FABLE VII.

AT a place called Dwāravatī, a certain farmer had a beautiful wife, who used to keep company, at the same time, with the magistrate of the place, and his son, according to these sayings:

The fire is never satisfied with the addition of fuel, the ocean with the influx of rivers, the angel of death with the mortality of all things which have life, nor a beautiful woman with the conquest of all mankind!

ଅଥ କଦାଚିତ୍ ସା ଦଢ଼ନାୟକ ପୁତ୍ରେଣ ସହ ରମଣାଣା
 ତିଷ୍ଠତି ଅଥ ଦଢ଼ନାୟକୋପି ରନ୍ତୁଂ ତତ୍ରାଗତଃ ତମାୟାନ୍ତଂ
 ଦୃଷ୍ଟ୍ବା ତତ୍ପୁତ୍ରଂ କୁଶୁଲେ ନିଃସ୍ନିପ୍ୟ ଦଢ଼ନାୟକେନ ସହ ତଥୈବ
 କ୍ରୀଡ଼ତି ଅନନ୍ତରଂ ତସ୍ୟାଭର୍ତ୍ତା ଗୋପୋଗୋଷ୍ଠାତ୍ ସମାଗତଃ
 ତମାଲୋକ୍ୟ ଗୋପ୍ୟୋକ୍ତଂ ଦଢ଼ନାୟକ ଧ୍ବଂ ଲଗୁଡ଼ଂ ଗୃହୀତ୍ବା
 କୋପଂ ଦଶୟନ ସତ୍ବରଂ ଗଚ୍ଛ । *****

ଅନନ୍ତର ଏକ ଦିନ ସେ ଦଣ୍ଡ ନାୟକେର ପୁତ୍ରେର ସହିତ କ୍ରୀଡ଼ା
 କରିତେହିଲ ପରେ ଦଣ୍ଡନାୟକ ଓ କ୍ରୀଡ଼ା କରିବାର ନିମିତ୍ତେ ସେ
 ସ୍ଥାନେ ଆଇଲ ତାହାକେ ଆସିତେ ଦେଖିଲା ତାହାର ପୁତ୍ରେକେ
 ଡୋଲେତେ କେଲିଲା ଦଣ୍ଡନାୟକେର ସହିତ ସେହି ପ୍ରକାରେହିଁ କ୍ରୀଡ଼ା

করিতেছে অনন্তর তাহার ভর্তা গোপ গোষ্ঠেইতে আইল
তাহাকে দেখিয়া গোপী কহিল হে কোটাল তুমি লণ্ড
লইয়া ক্রোধ দেখাইয়া শাস্ত্র যাও।

One day, as she stood playing with the magistrate's son, she happened to see his father coming towards them; upon which hiding the young man in the barn, she began to amuse herself with the justice himself. In the mean time, however, the husband making his appearance, she hastily told the magistrate to take a stick in his hand, and depart in a hurry, and with his eyes flaming, as it were, with anger.

মথা তেনানুষ্ঠিতে গোপেন গৃহমাগত্য भार्या पृष्ट्वा केन
कार्येन दण्डनायकः समागत्यात्र स्थितः । सा ब्रूते
अथं केनापि कार्येन पुत्रस्योपरि क्रुद्धः स च भार्यमाणो
यत्रাগत्य प्रविष्टः मया कुशुले निःक्षिप्य रक्षितः । तत्
पित्रा चान्निध्यात्र न दृष्टः अतएवायं दण्डनायकः क्रुद्ध
एव गच्छति ततः सा तत्पुत्रं कुशुलाद्वहिष्कृत्य दर्शित
वती ॥ तथा चोक्तं ॥ आहारोद्दिगुणः स्त्रीणां बुद्धिस्ता
सां चतुर्गुणा । षड्गुणो व्यवसायश्च कामश्चाष्ट गुणः
स्मृतः ॥ अतोऽहं ब्रवीमि उत्पन्नेष्वपि कार्येषु इत्यादि।
करटको ब्रूते अस्त्वेवं किन्त्वनयोर्महानन्योन्यनिसर्गे।
पजातस्नेहः कथं भेदयितुं शक्यः दमनको ब्रूते उपायः
क्रियतां ॥ तथा चोक्तं ॥ उपायेन हि यच्छक्यं न तच्छक्यं
पराक्रमैः । काक्या कनकसूत्रेण कृष्णसर्पे। निपातितः ॥

কোটাল সেই পুকার করিলে পরে গোপ গৃহেতে আসিয়া
পত্নীকে জিজ্ঞাসিলেক কি নিমিত্তে দণ্ডনায়ক এ স্থানে আসি
য়াছিল সে কহিতেছে এ ব্যক্তি কোন কার্যের নিমিত্তে
পুত্রের উপর ক্রুদ্ধ হইয়াছে সে পুত্র ও তাড়মান হইয়া এখা
নে আসিয়া পুৰিষ্ট হইয়াছে আমি তাহাকে ডোলে ফেলিয়া
রাখিয়াছি। তাহার পিতা অশ্বেষণ করিয়া দেখিতে পাইল
না এই নিমিত্তে এ কষ্ট হইয়া যাইতেছে তাহার পর সে
কোটাল পুত্রকে ডোলহইতে বাহির করিয়া দেখাইল। তাহা

পণ্ডিতকর্তৃক কথিত আছে স্ত্রী লোকেরদিগের আহার দ্বিগুণ
বুদ্ধি চতুগুণ ব্যবসায় ছয়গুণ কাম অষ্টগুণ অতএব আনি
বলিকার্য্য উপাশ্রিত হইলে যাহার বুদ্ধি নষ্টা না হয় ইত্যাদি।
করটক বলিতেছে এই পুকার হউক কিন্তু ইহারা পরস্পর
স্বভাবেতে উপজাত অতিবড় স্নেহ কি পুকারে ভেদ করা
ইতে সমর্থ হইবে দমনক বলিতেছে উপায়কর পণ্ডি
তেরা তাহা কহিয়াছেন উপায়েতে যাহা করিতে শক্য হয়
বিক্রমেতে তাহা করিতে শক্য হয় না যেমন কাকী স্বর্ণ
সূত্রের দ্বারা কাল সপর্কে নষ্ট করিয়া ছিল।


This being done accordingly, the farmer came up to his wife, and asked her what had occasioned the justicetobe there in such a passion. Why, said the artful woman, you must know, that, for some cause orother, he isangry with his son, who flying here for protection, I concealed him in the barn; but the father coming, and not finding him, is gone away in a rage. Saying this, she conducted her young gallant from the barn, and introduced him to her husband, according to this saying.

What women eat, we are told, is two-fold; their cunning four-fold; their perseverance six-fold; and their passions eight-fold.

Wherefore, I repeat,—*The understanding &c.*

Be it so, replied, Karataka; but how will it be possible to dissolve the ingrafted friendship which subsists between them. Some artifice must be thought of, replied Damanaka; according to this saying:

That may be effected by stratagem, which could not be effected by strength. A female crow, by means of a golden chain, caused the death of a black serpent.

করটকঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ । দমনকঃ কথয়তি
 কলিংখিচ্চিরৌ বায়সদম্পতী নিবসতঃ তয়োশ্চাপত্যানি
 তত্‌কোটরাবস্থিতানি কৃষ্ণাসপেঁঞ খাদিতানি । ততঃ
 পুনর্গর্ভবতৌ বায়সৌ বায়সমাহ নাথ ত্যজ্যতাময়ং তহঃ
 অত্রাবস্থিতকৃষ্ণাসপেঁঞাবযোঃ সন্ততিঃ সততং ভক্ষ্যতে
 ॥ যতঃ ॥ দুষ্টা भार्य्या शष्ठं मित्रं भृत्याश्चेत्तरदायकाः॥
 ससर्पे च गृहे वासोमृत्युरेव न संशयः ॥ वायसो ब्रूते प्रिये
 न भेतव्यं वारं वारं मयैतस्य महापराधः सोढः इदानीं
 पुनर्न चिन्तयः । वायस्याह कथमेतेन बलवता सार्द्धं
 भवान् विग्रहितुं समर्थः । वायसो ब्रूते अलमनया
 शङ्कया ॥ यतः ॥ बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्वुद्धेस्तु कुतो बलं ।
 पश्य सिंहो मদোन्मत्तः शशकेन निपातितः ॥ वायসী বি
 হস্যাহ কথমেতৎ বায়সঃ কথয়তি । **

করটক জিজ্ঞাসা করিতেছে এ কি গুণ্ডার। দমনক কহিতেছে
 কোন এক বৃক্ষেতে কাকদম্পতী বাস করে বৃক্ষকোটরে
 স্থিত তাহারদিগের সম্ভান সকলকে কালসপেঁজে খায় ।
 তদনন্তর পুনর্বার কাকী অন্তরাপতা হইয়া কাককে কহিল
 হে স্বামি এই বৃক্ষ ত্যাগ কর এই তরুতে অবস্থিত কৃষ্ণসর্প
 সর্বদা আমরদিগের সম্ভানকে ভক্ষণ করে যেহেতুক ভুট্টা ছী
 খল মিত্র গুণ্ডান্তরদায়ক দাগ আর সর্পের সহিত বর্তমান
 গৃহেতে বাস এই সকল নৃত্যর স্বরূপ ইহাতে সম্ভব নাই ।

বায়স বলিতেছে হে পুয়ে ভয় কর্তব্য নয় মুহূর্ত্ত আনি
ইহার অতিশয় অপরাধ সহিয়াছি সম্প্রতি আরক্ষণ কর্তব্য
নয় । বায়সী কহিল কিপুকারে এই বলবানের সহিত তুমি
যুদ্ধ করিতে সন্মত হইবা । কাক কহিতেছে এ শঙ্কা বৃথা
যেহেতুক যাহার বুদ্ধি তাহার বল নির্বুদ্ধির কোথায় বল
দেখ শশককর্তৃক মদোন্মত্ত সিংহ বিনাশিত হইল । কাকী
কহিল ইহা কি পুকার । কাক কহিতেছে ।

How was this brought about? demanded Karataka;
and Damanaka told the following story.

FABLE VI.

THE female companion of a crow resided in a certain tree, where she had young ones; but they were all devoured by a black serpent, who concealed himself in the hollow of its trunk. Now, finding herself breeding again, she said to her mate,—My dear, let us abandon this tree; for we shall never be able to raise any of our offsprings, because of that vile black serpent; for, you know,

A bad wife, a false friend, servants who give pert answers, and living in a house infested by serpents, is death, as it were, inevitable.

My dear, replied the crow, thou shalt have no farther cause to be alarmed. I have pardoned his offence again and again; but this time he shall be prevented. How, husband, said the female, wilt thou be able to contend with one so powerful? Never fear, answered her mate;

He who hath sense hath strength. Where hath he strength who wanteth judgment? See how a lion, when intoxicated with anger, was overcome by a rabbit.

How was that? demanded the female; and the crow related the following tale:

ଅସ୍ତି ମନ୍ଦ୍ରନାମ୍ନି ପର୍ବତେ ଦୁର୍ଦ୍ଦାନ୍ତୋନାମ ସିଂହ: ସର୍ବ ସର୍ବଦା
 ପଶୁନାଂ ବଧଂ କୁର୍ବନ୍ନାସ୍ତି । ତତ: ସର୍ବୈ: ପଶୁଭିର୍ମିଳିତ୍ବା ସ ସି
 ହୋବିଶ୍ଚ୍ୟତ: ସୃଗେନ୍ଦ୍ର କିମର୍ଥମେକଦା ପଶୁଘାତ: କ୍ରିୟତେ ଯଦି
 ପ୍ରସାଦୋ ଭବତି ତଦା ବୟମେବ ଭବଦାହାରାୟ ପ୍ରତ୍ୟହମେକୌ
 କପଶୁମୁପଘୌକୟାମ: । ତତ: ସିଂହେନୋକ୍ତଂ ଯଦେତଦଭିମତଂ ଭବ
 ତାଂ ତର୍ହି ଭବତୁ ତତ: ପ୍ରଭୃତି ଏକୈକଂ ପଶୁମୁପକାଳ୍ପିତଂ ଭକ୍ତ୍ୟ
 ଜ୍ଞାସ୍ତି ଅଥ କଦାଚିତ୍ ଦୃଢ଼ଶଶକସ୍ୟ ବାର: ସ ମାୟାତ: ସୋ
 ଽଚିନ୍ତୟତ୍ । ତ୍ରାସହେତୋର୍ବିନୀତିସ୍ତୁ କ୍ରିୟତେ ଜୀବିତାଶୟା ।
 ପଞ୍ଚତ୍ବଂ ଶେଢ଼ମିଦ୍ଧ୍ୟାମି କିଂ ସିଂହାନୁନୟେନ ମେ ॥ ତନ୍ମନ୍ଦଂ ମନ୍ଦଂ
 ଗଚ୍ଛାମି ତତ: ସିଂହୋପି କ୍ତୁଧାପୋଡ଼ିତ: କୋପାତ୍ତମୁବାଚ
 କୁମରଂ ବିଲମ୍ବ୍ୟ ସମାଗତୋସି ।

ମନ୍ଦ୍ର ନାମ ପର୍ବତେ ଦୁର୍ଦ୍ଦାନ୍ତ ନାମେ ଏକ ସିଂହ ଥାନ୍ତେ ସେ ନିରନ୍ତର
 ପଶୁମାନଙ୍କର ବଧ କରେ । ଅନନ୍ତର ସକଳ ପଶୁମାନେ ମିଳିଯାଇ ସେହି
 ସିଂହଙ୍କେ ନିବେଦନ କରନ୍ତି ଯେ ସିଂହ କି ନିମିତ୍ତେ ଏକ କାଳେ
 ତେହି ପଶୁମାନଙ୍କେ ବଧ କର ଯଦି ଅନୁଗ୍ରହ ହୁଏ ତବେ ଆମମାନେ
 ଆପନଙ୍କର ଆହାରର ନିମିତ୍ତେ ପ୍ରାୟ ଏକ ୨ ପଶୁ ଉପାଟିକନ
 ଦେଇ ଅନନ୍ତର ସିଂହ ବଳିନ ତୋମାନଙ୍କର ଯଦି ଏହି ଅଭିମତ
 ତବେ ତାହାହିଁ ଉକ୍ତ ତଦବଧି ସେହି ସିଂହ ଏକ ୨ ପଶୁ ଉପାଟିକନ
 ଗ୍ରହଣ କରନ୍ତ ଥାନ୍ତେ । ଅନନ୍ତର ଏକ ଦିବସ ଏକ ବୃକ୍ଷଶାଖାଙ୍କର
 ଖାଲ ଆସିଲେ ସେ ଚିନ୍ତା କରନ୍ତି ଜୀବିତାଶାହେତୁକ ଭୟପୁରୁଷ

বিনয় করে যদি পঞ্চত্বই পাইব তবে সিংহের অনুময়েতে
আমার কি পুয়োজন এইহেতুক মন্দ করিয়া গমন করি।
তাহার পর সিংহ ও ক্ষুবর্ত হইয়া কোপেতে তাহাকে
কহিল কি নিমিত্তে তুই এত বিলম্ব করিয়া আসিতেছিন্ ।

FABLE IX.

Upon the mountain Mandara, there lived a lion, whose name was Durdānta, who was perpetually complying with the ordinance for animal immolation, so that, at length, all the different species assembled, and, in a body, represented, that as by this present mode of proceeding, the forest would be cleared all at once, if it pleased his highness, they would, each of them in his turn, provide him an animal for his daily food, and the lion gave his consent accordingly. So every beast delivered his stipulated provision, till at length, it coming to the rabbit's turn, he began to meditate in this manner —For the sake of our own souls, and in hope of life, homage is paid: but if I must meet this fate, what need have I to respect the lion! Then I will approach him slowly, as if fatigued. The lion, by this time, began to be very hungry; so, seeing the rabbit coming towards him, he called out in a great passion,—What is the reason thou comest so late?

શશકો બ્રવોત્ દેવ નાહમપરાધ્યઃ આગચ્છન્ પથિ સિંહાન્ત
 રેણ વલાદૃતઃ તસ્યાગ્રે પુનરાગમનાય શપથં કૃત્વા સ્વામિ
 નં નિવેદયિતુમત્રાગતોસ્મિ । સિંહઃ સકોપમાહ સત્વરં ગ
 ત્વા દુરાત્માનં દર્શય ક્વા સ દુરાત્મા તિષ્ઠતિ તતઃ શશકર્તા
 ગૃહીત્વા ગમોરકૂપં દર્શયિતું ગતઃ તત્રાગત્ય સ્વયમેવ પશ્ય
 તુ સ્વામીત્યુક્ત્વા તસ્મિન્ કૂપજલે તસ્ય સિંહસ્યૈવ પ્રતિવિમ્બં
 દર્શિતવાન્ તતોઽસૌ પ્રકટિતદંઘ્રાનલપ્રકરકમ્પિતસ્ત
 વ્યકેસરઃ ક્રોધાત્પ્લાતોદર્પાન્તસ્યોપરિ આત્માનં નિઃસ્રિ
 પ્ય પૃચ્છત્વં ગતઃ અતોહં બ્રવીમિ બુદ્ધિર્યસ્યેત્યાદિ । વાય
 સ્યાહ શ્રુતં મયા સર્વં સમ્પ્રતિ યથા કર્તવ્યં તદ્બૂહિ વાય
 સોઽવદત્ અત્રાસન્ને સરસિ રાજપુત્રઃ પ્રત્યહમાગત્ય સ્નાતિ
 સ્નાનસમયે તદક્ષાદવતારિતતીર્થશિલાનિહિતકનક
 સૂત્રં ચઙ્ચા વિધૃત્યાનીયાસ્મિન્ કોટરે ધારયિષ્યસિ । *

શશક વાલન મહારાજ આમિ અપરાધી નહે પાથેતે આગ
 મન કરત અનાસિંહ કર્તૃક વલેતે ધૃત હૈયાહિનામ
 તાહાર જાક્ષાતે પૂનશ્ચ આગમનેર નિમિત્તે દિવ્ય કરિયા
 પુત્રુકે નિવેદનકરિતે એથાને આઈનામ સિંહ કષ્ટે હૈયા
 કહિન શાઘુ ગિયા દેખા સે દુષ્ટાઆ કોથા થાકે તાહારગર
 શશક તાહાકે લઈયા એક ગભીર કૂપ દેખાઈવાર નિમિત્તે
 ગેલસેથાને યાઈયા પુત્રુ આપનિ દેખુન હૈયા કહિયા સેહ
 કૂપ જલે સિંહ આપનારિ પુતિવિશ્વ દેખિન અનન્તર એ

সিংহ কোপেতে কল্পিত হইয়া অহঙ্কারেতে তাহার উপরে
আপনি ঝম্প দিয়া পঞ্চত্ব পাইল। অতএব আমি বলি যা
হার বুদ্ধি তাহার বল ইত্যাদি। বায়সী কহিল আমি সকল
শুনিলাম ইদানী যে পুকার কর্তব্য তাহা বল বায়স কহিল
এই সন্নিধিবর্ত্তি সরোবরে রাজপুত্র^১ পুতাহ আসিয়া স্নান
করেন স্নান কালে তাঁহার শরীরহইতে নামিত জল সমীপস্থ
পুস্তারতে স্থাপিত স্বর্ণসূত্র চক্ষুতে করিয়া ধরিয়া আনিয়া এই
কোটরে রাখিবা।

Please your highness, said the rabbit, as I was coming along, I was forcibly detained by another of your species; but having given him my word, that I would return immediately, I came here to represent it to your highness. Go quickly, said the lion in a rage, and shew me where this vile wretch may be found! Accordingly, the rabbit conducted the lion to the brink of a deep well, where being arrived,—There, said the rabbit, look down and behold him; at the same time he pointed to the reflected image of the lion in the water; who, swelling with pride and resentment, leaped into the well, as he thought, upon his adversary, and thus put an end to his life. I repeat, therefore, *He who hath sense &c.*

I have attended, said the female, to all this; and now, do as thou shouldest do in this matter. Every day, observed the crow, the king's son comes to bathe in the adjacent pool: do thou take up his necklace of gold which shall take off, and lay upon a stone on the bank, and drop it into the hole where the serpent is.

অথ কদাচিত্ স্নাতুং জলং প্রবিষ্টে রাজপুত্রৈ বায়স্যা তদনু
 স্মিতং অথ কনকমূত্রানুসরণপ্রবৃত্তৈ রাজপুরুষৈস্তত্র তদ্রূপো
 দৃশ্যে কৃষ্ণসর্পো দৃষ্টো অ্যাপা দিতস্ত অতোঃহং ব্রবামি উপা
 ধ্যে নহি যচ্ছক্যমিত্যাदि । করটকো ব্রূতে যদ্যেবং তর্হি গচ্ছ
 ভবন্ শিবাশ্তে সন্তু পত্ন্যাঃ । ততোঃ দমনকঃ পিঙ্গলক
 সমীপং গত্বা প্রণম্যোবাচ দেব অত্যধিকং কিসাপি মহা
 ভয়কারি কার্য্যং মন্যমানঃ সমাগতোস্মি ॥ যতঃ ॥
 আপদ্যুন্মার্গগমনে কার্য্যকালাত্যয়েযু চ। কল্যাণবচনং
 ব্রূয়াদপৃষ্টোপি হিতো নরঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ ভোগস্য ভাজনং
 রাজা ন রাজা কার্য্যভাজনং । রাজকার্য্যপরিধ্বংশী মন্ত্রী
 দোষেণ লিপ্যতে ॥ তথা হি পশ্য অমাত্যানা মেষ ক্রমঃ ॥

অনন্তর কোন দিন স্নান করিবার নিমিত্তে রাজভগ্নার জলে
 পুবেশ করিলে কাকী তাহা করিল । পরে রাজপুরুষেরা স্বর্ণ
 সূত্রের অনুেষণ করিতে গিয়া সেই বৃক্ষকোটরে কোন সর্পকে
 দেখিল এবং মারিল । অতএব আনি বলি উপায়েতে যাহা
 করিতে শক্ত হয় ইত্যাদি । করটক বলিতেছে যদি এইরূপ
 তবে তুমি গমন কর তোমার পথে মজ্জলহউক । অনন্তর দমন
 ক পিঙ্গলকের নিকট গিয়া পুণাম করিয়া কহিল হে মহা
 রাজ অতিশয় কোন মহাভয়জনক কার্য্য জানিয়া আই
 লাম যেহেতুক বিপৎকালেতে এবং উপপথগমন জনয়েতে

এবং কার্যকালের অতিক্রমণে সুহৃৎলোক জিজ্ঞাসিত
না হইলে ও মজল বাক্য কহিবক অপর রাজা ভোগের পাত্র
কার্যের পাত্র নহে রাজকর্ম্মনষ্ট কারক মন্ত্রী দোষেতে
নিপু হয় তাহা দেখ মন্ত্রিরদিগের এই ক্রম ।

Some time after, when the king's son was bathing in the pool, the female crow did as she was directed, and the people sent to look after the golden chain found it in the hole, and killed the serpent. Wherefore, *I say that may be effected by stratagem, &c.* If it be so, replied Karataka, go, and may thy ways be prosperous!

Damanaka, accordingly, went into the presence of Pingalaka; and having respectfully bowed, he addressed him in these words: please your highness, I am come upon an extraordinary piece of intelligence which, in my opinion, is not auspicious; for,

He who hath another's welfare at heart should, in cases of calamity, erring from the right path, or when time and opportunity are passing away, declare his wholesome counsel, even unasked.

Again:

The sovereign being a vessel for the distribution of happiness, and not for the execution of affairs, the minister who shall bring ruin upon the business of the state is a criminal.

They say also, speaking of ministers:

ধরং প্রাণপরিত্যাগঃ শিরসোবাপি কৰ্ত্তনং । ন তু স্বামি
 পদাৱাপ্তিপাতকেচ্ছোরূপেত্শনং ॥ পিঙ্গলকঃ সাৱরমাছ
 অথ ভৱান্ কিম্বক্তুমিচ্ছতি । দমনকোব্রূতে দেৱ
 সঞ্জীৱকস্তৱোপরি অসদৃশব্যৱহারীৱ লক্ষ্যতে তথা
 চাক্ষত্ৱত্রিধানে শ্রীমদেৱপাদানাং শক্তিৱয়নিন্দাং কৃৎৱা
 রাজ্যমেৱাভিলষতি এতচ্চুৎৱা পিঙ্গলকঃ সমৰ্যং
 সাশ্চর্য্যং মত্ৱা তূষাণীং স্থিতঃ দমনকঃ পুনরাছ দেৱ
 সৰ্ৱমাৱ্যপরিত্যাগং কৃৎৱা একএৱাযং যস্ত্বয়া সৰ্ৱাধি
 কারী কৃতঃ স এৱদোষঃ ॥ যতঃ ॥ অতুষ্কৃতি মন্ৱিণি
 পার্থিৱে চ বিষ্টম্ৱ পাদাৱুপতিষ্টতে শ্রীঃ । সা স্ত্রীস্বম
 ৱাদসহাৱস্য তযোৰ্দ্ধমোৱেকতরং জহাতি ॥ *❀*

পুণ পৱিত্যাগ ও ভাল মন্তকচ্ছেদন ও ভাল স্বামির পুভুত
 পুণপৱকপ পাতককে ইচ্ছা করে যে লোক তাহার উপেক্ষা
 করা ভাল নয় । পিঙ্গলক আদর করিয়া কহিল ইহার পর
 তুমি কি বলিতে ইচ্ছা করিতেছ দমনক বলিতেছে হে মহা
 রাজ সঞ্জীৱককে তোমার উপর অনুগম্যুক্ত ব্যবহারির ন্যায়
 দেখিতেছি আর আমাদের সাক্ষাতে জীযুত মহারাজের চর
 ণেরপুভাব উৎসাহ মন্তকপশক্তিৱয়ের নিন্দা করিয়া রাজত্ব
 বাঞ্ছা করিতেছে । ইহা শুনিয়া পিঙ্গলক ভীত হইয়া চমৎ
 কার মানিয়া চুপ করিয়া থাকিল দমনক পুনশ্চ বলিল

হে পুভো সমস্ত মন্ত্রিদিগেকে ত্যাগ করিয়া এক এই সঞ্জী বককে যে তুমি সর্বাধিকারী করিয়াছ সেই দোষ রাজা ও মন্ত্রী অতুষ্টিত হইলে সম্পত্তি পাদদ্বয়কে অবলম্বন করিয়া থাকেন সে সম্পত্তি স্ত্রী স্বভাবহেতুক ভর না সহিতে পারিয়া তাহার দুয়ের মধ্যে অন্য তরকে ত্যাগ করেন ।

Cutting off the head, or forsaking life, is better than negligence, from the wicked lust of obtaining the station of the master.

The lion then graciously asked him, what it was that he wished to represent; and Damanaka replied,—Please your highness, this same Sang-jivaka is not such a faithful servant to thee, but that he can speak disrespectfully of thy three powers (resolution, authority, and good counsel) in my presence; and I know he has even an inclination for the sovereignty. Upon hearing these words, the lion was greatly alarmed, and remained in silent astonishment; whilst Damanaka continued thus: your highness, in dismissing all your ministers, and appointing this bull to the superintendence of all affairs, has committed a great error. It is said,

When both the sovereign and the minister are very highly exalted, Sree (Fortune) standeth tottering with both her legs. That female, by nature, being unable to support so great a load, is obliged to forsake one of the two.

সিংহো বিমৃশ্যাচ্ছ ভদ্র যদ্যপি এবং তথাপি সঞ্জীবকেন সহ
 মম মহান্ স্নেহঃ ॥ পশ্য ॥ কুর্ধ্বন্নপি ব্যলোকানি যঃ প্রিয়ঃ
 প্রিয়এব সঃ ॥ অশেষদোষদুষ্টোপি কাযঃ কস্য ন বল্লভঃ ॥
 অন্যচ্ছ ॥ অপ্রিয়াণ্যপি কুর্বাণো যঃ প্রিয়ঃ প্রিয়এব সঃ ॥
 দগ্ধমন্দিরসারোপি কস্য বজ্রাবনা দরঃ ॥ দমনকঃ পুন
 রে বাহু দেব স এবাতিদোষঃ ॥ যতঃ ॥ যস্মিন্নেবাধিকং চক্ষু
 রা দোহয়তি পার্থি৷ ॥ তুতে মা ত্যে প্যুদা গোনে স লক্ষ্ম্যাশ্রী য
 তে জনঃ ॥ শ্রুণু দেব ॥ অপ্রিয়স্যাপি পথ্যস্য পরিণামঃ সুখা
 বহঃ ॥ বঁক্কা যোতা চ যত্রাস্তি রমন্তে তত্র সম্পদঃ ॥
 ত্বয়া চ মূলভৃত্যানপাশ্রয়মাগন্তুকঃ পুরষ্কৃতঃ এতচ্ছানু
 চিতং কৃত ॥ যতঃ ॥ মূলভৃত্যান্ পরিত্যজ্য নাগন্তুন্ প্রতি
 যাল্লভেৎ ॥ নাতঃ পরতরা দোষো রাজ্যভেদকরো যতঃ ॥ সিংহো
 ভূতে কিমাশ্চর্য্যমযা যদময়বাচং দত্বানীতঃ সংবর্হিতস্ব

সিংহ বিবেচনা করিয়া কহিল ভাল যদ্যপি এমন তথাপি
 সঞ্জীবকের সহিত আমার বড় প্রীতি দেখ যে পুিয় সে অপুিয়
 কর্ম করিলে ও পুিয়ই থাকে অনেক দোষেতে নিগুহইলে ও
 শরীর কাহার পুিয় না হয় আর অত্যন্ত অপুিয় কার্য্য করিয়া
 ও পুিয় হইতেছে দেখ উত্তম গৃহদাহ করিলে ও অগ্নিতে কা
 হার আদর নাই । দমনক পুনর্বার কহিল হে মহারাজ সেই
 বড় দোষ যেহেতুক নৃপতি যে পুণ্ড্রিতে বা অমাত্যেতে কিম্বা
 উদাসীনেতে চক্ষুকে অধিক আরোহণ করণ সে লোক সম্প্র

ভির আশ্রয় হয় শুন হে মহারাজ অপূর্য অথচ পথ্য ইহার শেষ সুখ দায়ক হয় যাছাতে বক্তা ও শ্রোতা থাকে তাহাতে ঐশ্বর্য্য ক্রীড়া করে তুমি পুধান দাসেরদিগকে পরিত্যাগ করিয়া আগন্তুকের পুরস্কার করিয়াছ ইহা অনুচিতকরিয়াছ যেহেতুক মূলভূত্যেরদিগকে পরিত্যাগ করিয়া আগন্তুককে পুতিপালন করিবেনা কেননা ইহাহইতে আর বড় দোষ নাই যেহেতুক রাজত্বের নষ্ট কারি। সিংহ বলিতেছে কি চমৎকার আমি অভয় বাক্য দিয়া আনিয়াছি এবং বাটাইয়াছি।

The lion having considered for a moment, replied,—
'Tis well; but provided it be as thou representest, still I have a great regard for Sangjivaka, and observe, that

He who is dear to one, is dear even in the very commission of a fault. When the materials of a house are burnt, upon whose fire falleth disgrace?

Please your highness, said Damanaka, that even should not be; but it is true, that

The man on whom the sovereign placeth an extraordinary degree of regard is the favourite of fortune; whether he be a son, a minister, or a stranger.

And please to observe,

To the unkind the rum of the worthy bringeth delight. Fortune delighteth to be where there is a babbler, and a listener.

And thus a primitive servant is neglected, and a stranger promoted. They say,

A prince should not, because of the offence of an old servant, entertain a stranger, lest, between them disensions be created in the state.

Thy words, exclaimed the lion, fill me with astonishment! Didst thou not thyself quiet my apprehensions, and present him to me?

তত্ কথং মহ্যং দ্রুহ্যতি। দমনকো ব্রূতে দেব।। দুর্জনো নার্জবং
 য়াতি সেব্যমানোপি নিত্যশঃ। স্বেদনাভ্যজ্ঞনোপাধৈঃ শ্বপু
 চ্ছমিব নামিতং ॥ অপরঞ্চ ॥ স্বেদিতো মর্দিতশ্চৈব রজ্জু
 মিঃ পরিবেষ্টিতঃ। মুক্তো দ্বাদশমির্ধর্মৈঃ শ্বপুচ্ছঃ প্রকৃতি
 গতঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ বর্জয়ন্ বাথ সন্মানং খলানাং প্রীতয়ে
 কুতঃ। ফলন্ত্যমৃতসেকেপি ন পথ্যানি বিষদ্রুমাঃ ॥
 অতোঃ হং ব্রবীমি ॥ অষ্টশ্লোকোপি দ্বিতং ব্রূয়াৎ তস্য নেচ্ছেৎ
 পরাভবং। এষ এব সত্যং ধর্মো বিপরীতমতোঃ ন্যথা ॥
 তথা চোক্তং ॥ সস্তিগ্ধো ঽকুশলান্নিবারয়তি যস্তত্ কর্ম
 যন্নির্মলং সা স্ত্রী যানুবিধায়িনী স মতিমান্ যঃ সন্নি
 রম্যর্চ্যতে। সা শ্রীর্য়্যা ন মদং करोতি স সুখী যস্তৃষ্ণয়া
 মুচ্যতে তন্মিত্রং যদক্সত্রিমঃ স পুরুষো যঃ স্থিত্যতে নেन्द्रিযৈঃ।

তবে কি পুকারে আগাকে নষ্ট করিতে ইচ্ছা করে। দমনক
 বলিতেছে হে মহারাজ নিরন্তর সেব্যমান হইলে ও দুষ্ট লোক
 সারল্য পায় না। যেমন তাপ ও তৈলাদি মর্দন দ্বারা অগ্নির
 লাজুল কখন সোজা হয় না অপর অগ্নির পুচ্ছ স্বেদিত ও
 মর্দিত ও রজ্জুকরণক বেষ্টিত হইলে ও দ্বাদশ বর্ষের পর মুক্ত
 হইলে পুনশ্চ আপনার স্বভাবকে পায়। এব° সম্মানকে
 বাচাইলে ও খলের পুীতির নিমিত্ত কোথায় যেমন বিষ
 বৃক্ষ সুধাসিক্ত হইলে ও পথ্যকে পুসব করে না। অতএব
 আমি বলি যাহার পরাজয় ইচ্ছা না করিবেক তৎকর্তৃক

জিজ্ঞাসিত না হইলে ও হিত বা ক্য বলিবেক উত্তম লোকে
রদিগের এই ধর্ম যাহার পরাজয় ইচ্ছা করিবেক তৎক
তৃক পৃষ্ট হইলে ও অধম লোক হিত কহিবে না পণ্ডি
তেরা তাহা কহিয়াছেন যে লোক অমঙ্গল হইতে বারণ
করে সেই বয়স্য সেই কর্ম যে নির্দান সেই স্ত্রী যে সহকা
রিনী সেই বুদ্ধিমান যে পণ্ডিতকর্তৃক সম্মানিত হয় সেই
ঈশ্বর্য্য যে দত্ততা না জন্মায় সেই সুখী যে তৃষ্ণারহিত
সেই মিত্র যে অকৃত্রিম সেই পুরুষ যে ইন্দ্রিয়ের বশ নয়।

How then, now he is promoted, can he meditate evil?
Please your highness, said Damanaka,

The wicked, even whilst receiving favours, incline to
their natural dispositions, as a dog's tail, after every
art of anointing and chaffing, to its natural bend.

A cur's tail may be warmed, and pressed, and bound
round with ligatures, and, after a twelve year's labour
bestowed upon it, still it will return to its natural form.

Again:


In gratifying the wishes of men of vicious principles,
when shall we find improvement, happiness, and purity?
If the tree be poisonous, the fruit is unwholesome, al-
though sprinkled with the water of immortality.

Wherefore, I say,

He who doth not wish another's ruin, should, even
unasked, speak to him for his good This is supreme
duty, and the contrary is the opinion of bad men.

For it is declared,

He is kind, who guardeth another from misfortune;
that is an action, which is free from impurity; she is a
woman, who can command herself; he is a worthy per-
son, who is much respected by good men; he is a minis-
ter, who doth not behave with insolence and pride; he
is happy; who is forsaken by his passions; that is friend-
ship, which is not feigned; he is a man, who doth not
suffer his members and faculties to give him uneasiness.

যদি সঞ্জীবকব্যসনার্হিতোবিজ্ঞাপিতোপি ন নিবর্ত্ততে
 তদস্মদীদৃশি মৃত্যে ন দোষঃ ॥ তথা চ ॥ নৃপঃ কামাশক্তো
 গণয়তিনকার্য্যং ন চ হিতং যথেষ্টং স্বচ্ছন্দঃ প্রবিচরতি
 মত্তোগজদ্বব । ততোমানধ্মাতঃ সপততি যদা শোকগহনে
 তদা মৃত্যে দোষান্ স্ত্রিয়তি ন নিজং বেত্যবিনয়ং ॥ পিঙ্গ-
 লকঃ স্বগতং । ন পরস্যাপরাধে ন পরেণাং দণ্ডমাচরেৎ ।
 আত্মনাবগতং কৃৎবা বধ্নীয়াৎ পূজয়েচ্চ বা ॥ তথা চোক্তা ॥
 গুণদোষাবনিশ্চিত্য বিধির্নয়হনিয়হে । স্বনাশায় যথা
 ন্যক্তোদর্পাত্ সর্পমুখে করঃ ॥ প্রকাশং ব্রূতে তদা সঞ্জীবকঃ
 কিং প্রত্যাदिश्यतां । দমনকঃ সসংমমমাহ দেব সামৈব
 মেতাवता मञ्जुभेदो जायते ॥ তথা হ্যুক্তা ॥ **

সঞ্জীবকের বাসনেতে পাড়িত মহারাজ বিজ্ঞাপিত হইলেও
 যদ্যপি নিবৃত্ত নাহন তবে এতাদৃশ অম্মৎ ভূত্যেতে দোষ নাই
 তাহাজানি রাজা ক'মাসক্ত হইয়া কার্য্য গণনা করে না আর
 হিত ও গণনা করে না নতু হস্তির ন্যায় স্বচ্ছন্দ হইয়া
 যথেষ্ট গমন করে অনন্তর অপমানিত হইয়া সে যখন
 শোকরূপ অরণ্যেতে পড়ে তখন ভূত্যেতে দোষ ক্রোধান
 করে স্বকীয় অবিনয় জানে না । পিঙ্গলক অন্তঃকরণে
 ভাবনা করিলেক যে পরের অপরাধেতে পরের দণ্ড ক
 রিবে না আপনি জ্ঞাত হইয়া দমন করিবেক কিম্বা সন্মান
 করিবেক তাহা গণিতেরা কহিয়াছেন অহঙ্কারপুষ্ট

সপের মুখেতে হস্তদেওয়া যেমন আপনার নাশেরনিমিত্তে
হয় তেমনি গুণদোষ নির্ণয় না করিয়া অনুগৃহ করা আপন
নাশের নিমিত্ত হয়। পিঙ্গলক স্পষ্ট করিয়া বলিতেছে তবে
সঞ্জীবককে কি আজ্ঞা করিব দমনক সম্মুখেতে বলিল
হে ভূপতে এই পুকার করিবেন না এক্ষণে মন্ত্র ভেদ হয়
তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন।

But if when all the inconveniences respecting Sangji-
va' a have been pointed out, your highness does not
abandon him, there is no blame in your servant It is
said,

When a prince is attached to his inclinations, he nei-
ther counteth the business which should be done, nor
his own benefit. He proceedeth at liberty, wherever his
passions lead him, like an intoxicated elephant At
length, when puffed up with pride, he falleth into a pro-
found melancholy, he throweth the blame upon his ser-
vants, and doth not discover his own misconduct.

To all this the lion observed.—'Tis said,

One should not lift the rod against our enemies upon
the private information of another, but having, by our-
selves, made inquiry, we may either punish or commend.

They say also,

To seize and punish, before due investigation, may
tend to our own destruction. It is like rashly forcing
one's hand into the mouth of a serpent.

It speaks plainly; nevertheless, shall proclamation be
made that Sangjivaka is guilty of death?

Damanka, a little confounded at this, replied,—Please
your highness, not so by any means, for by such proce-
dure a breach is produced in our secret council, and
they say,

মদ্রবীজমিদং গুপ্তং রক্ষণীয়ং যথা তথা । মনাগপি ন
 ভিয়েত তদ্বিন্নং ন প্রোহতি ॥ কিঞ্চ ॥ আদরস্য প্রধানস্য
 কৰ্ত্তব্যস্য চ কৰ্ম্মণঃ । তিপ্রমক্রিয়মাণস্য কালঃ পিবতি
 তদ্রসং । তদবশ্যং সমারম্ভোমহতা প্রযত্নেন সম্বাদনীযং ।
 কিঞ্চ ॥ মদ্রোযোধদ্রবাধোরঃ সৰ্ব্বাঙ্গৈঃ সৎষ্টনৈরপিচিরং ন
 সহতে স্খাতুং পরেভ্যোভেদশঙ্কয়া ॥ যযসৌ দৃষ্টদোষোপি ।
 দোষান্নিবর্ত্য সম্ব্যাতব্যস্তদতোবানুচিতং ॥ যতঃ ॥ সঙ্কদু
 ষ্টন্তু যন্মিত্রং পুনঃ সম্ব্যাতুমিচ্ছতি । স মৃত্যুমেব গৃহ্ণাতি
 গৰ্ভমশ্বতরো যথা ॥ কিঞ্চ ॥ অন্তর্দৃষ্টত্বমায়ুক্তঃ সৰ্ব্বানর্থ
 করঃ কিল । শকুনিঃ শকটারশ্চ দৃষ্টান্তাবত্র ভূপতে ॥
 সিদ্ধোব্রূতে জ্ঞায়তাং তাবত্ কিমস্মাকমসৌ কৰ্ত্তুং সমর্থঃ
 দমনকআহ দেব ॥ অজ্ঞান্দিগ্ভাবমজ্ঞাত্বা কথং সামর্থ্য
 নির্ণয়ঃ । পশ্য টিট্টিমমাত্রেণ সমুদ্রোব্যাকুলীকৃতঃ ॥

যেকপ অতান্ন ও ভেদ না হয় সেই পুকারে এ মদ্ররূপ বীজ
 কে গোপনে রক্ষা করিবে কেননা সে বীজভিন্ন হইলে আর
 অঙ্কুর হয় না ॥ আর পুধানের সমাদর ও কর্তব্য যে কৰ্ম্ম তাহা
 শাস্ত্র না করিলে কাল তাহার রস পান করে । সেইহেতুক
 আরক্ত কৰ্ম্ম অতি যত্নেতে সম্পন্ন করা আবশ্যক আর মূর্থ
 যোদ্ধা সৰ্ব্বাঙ্গ আবৃত হইলে ও যেমন শত্রু হইতে ভেদশঙ্কা
 পুষুক্ত চিরকাল যুদ্ধস্থলেতে থাকিতে পারে না এইরূপ মদ্র
 সৰ্ব্বাঙ্গ আবৃত হইলে ও শত্রু হইতে ভেদশঙ্কা পুষুক্ত চিরকাল
 থাকিতে পারেনা ॥ আর যদি এ লোক দৃষ্টদোষ হইলে ও

দোষহইতেনিবৃত্তি করিয়া সন্ধি কর্তব্য সে অত্যন্ত অনুপযুক্ত
যেহেতুক একবার দোষেতে দুষ্ট যে মিত্র তাহাকে পুনর্বার
সন্ধিকরিতেষেইচ্ছা করে সে মৃত্যুকেই গৃহণ করে খচরী যেমন
মৃত্যুরনিমিত্তে গর্ভ গৃহণ করে । অপর অন্তঃকরণ দুষ্ট অথচ
কর্মাবান লোক নিশ্চয়সমস্ত অনর্থকারী হেনমহারাজইহাতে
দৃষ্টান্ত শকুনি আরশকটার । সিংহ বলিতেছে জান এ ব্যক্তি
আমারদিগের কি করিতে সমর্থ হয় সে বলিল হে মহারাজ
অজ্ঞানি ভাব না জানিয়া কি পুকার শক্তির নিশ্চয় হইবে
দেখ টিউড পক্ষীমাত্র সমুদকে ব্যাঘ্রল করিয়াছিল ।

Having sown the seed of secrecy, it should be properly guarded, and not in the least broken; for being broken, it will not prosper.—But, Time drinketh up the essence of every great and noble action, which ought to be performed, and is delayed in the execution.

This being the case, what hath been begun should certainly be prosecuted with the utmost vigour, for, The resolutions of counsel are like a timid warrior, who, although attended by all his troops, beareth not to stand long, for fear of being defeated by the enemy.

But after all, if when his offence shall be proved, he should be pardoned, and still retained, it will be exceedingly improper, for,

He who wisheth to keep a friend after he hath once offended, receiveth death, as the Aswatari the belly.

When a bad man is employed near one, whatever he doeth is unprofitable. The Sakuni and the Sakata may here serve a prince for emblems of such an one.

Let me understand, said the lion, what it is he may be able to do against us; and Damanaka replied in the following lines:

Not knowing the nature of a man's connexions, how shall we discover what he is able to do? The sea was once got the better of by a simple partridge.

সিংহঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ । দমনকঃ কথয়তি ॥ দক্ষিণ
সমুদ্রতীরে টিট্টিভদম্পতী নিবসতঃ তত্র চাসন্নপ্রসবাটি
ট্টিভী ভর্ত্তারমাহ নাথ প্রসবযোগ্যস্থানং বিধৃতমনুস
ম্ভীয়তাং । টিট্টিভোঽবদৎ ভার্ঘ্যং নন্বিদমেবস্থানং প্রসূ
তি যোগ্যং ॥ সা ব্রুতে সমুদ্রবেলয়া ব্যাপ্যতে স্থানমেতৎ ॥
টিট্টিভোঽবদৎ কিমহং নির্বলঃ সমুদ্রেণ নিগ্রহীতব্যঃ ।
টিট্টিভীবিহস্যাহ স্বামিস্ত্বয়া সমুদ্রেণ চ মহদন্তরং ॥
অথ বা ॥ পরাভবং পরিচ্ছেতুং যোগ্যা যোগ্যং ন বেতি যঃ ॥
অস্লীহ যস্য বিজ্ঞানং কচ্ছ্রেণাপি ন সীদতি ॥ অপিচ ॥
অনুচিতকার্য্যারম্ভঃ স্বজনবিরোধাবলীযসা স্ফূট্য ।
প্রমদাজনবিশ্বাসোমৃত্যোর্দ্ধারিণি চত্বারি ॥ ততঃ সঙ্ক
চ্ছ্রেণ স্বামিবচনাৎ সা তত্রৈব প্রসূতা এতৎ সর্ব্বং শ্রুত্বা
সমুদ্রেণাপি তচ্ছক্তিজ্ঞানার্থং তদাণ্ডান্যপহৃতানি । *

সিংহ পুশ্ন করিতেছে ইহা কি পুকার । দমনক কহিতেছে ।
দক্ষিণ সমুদ্রতীরে টিট্টিভেরা স্ত্রী পুরুষে বাস করে তাহাতে
পুসব কাল নিকট হইলে টিট্টিভী পতিকে বলিল হে নাথ
পুসবোপযুক্ত নির্জন স্থান অনুসন্ধান কর । টিট্টিভ বলিল হে
পুিয়ে এই স্থানে সে বলিল এস্থান সমুদ্রবেলাকর্তৃক আক্রান্ত
হয় টিট্টিভ বলিল আমি কি দুর্বল যে সমুদ্র আমাকে নিগৃহ
করিবেন টিট্টিভী হাসিয়া বলিল হে আমি তোমাতে আর
সমুদ্রতে বিস্তর অন্তর টিট্টিভ বলিল যে লোক জানেনা
অর্থাৎ যাহার বুদ্ধি নাই সে দুঃখের পারিচ্ছদ করিতে পারেনা

আর ঘাঁহার বুদ্ধি আছে সে কষ্টেতেও অবসন্ন হয় না অনূপ
যুক্ত কার্যের আরম্ভ ও অন্তরঙ্গের সহিত বিরোধ ও বলব
নের সহিত আশ্চর্য্য ও জীবনোন্মেষদিগেতে বিশ্বাস এই চারি
মূর্ত্তার দ্বার^১ অনন্তর পতির বাক্যহেতুক সে ঐ স্থানেতেই
পুসব হইল । এই সকল শুনিয়া সমুদ্র ও তাহার মানার্থ
জানিবার নিমিত্তে সেই অণুসকল অপহরণ করিল ।

How was that? demanded the lion; and Damanaka related the following story:

FABLE V.

ONCE upon a time a female partridge, who resided upon the sea shore, finding herself pregnant, said to her mate,—My dear, pray let a private place be sought convenient for me to be brought to bed in. Is not this where we are a proper place for that purpose? demanded the partridge. No, replied the female, because it is frequently overflowed by the tide. What! exclaimed the male, am I so much less powerful than the sea, that I should suffer myself to be insulted, even in my own house? My dear! replied the female, laughing, there is a great difference between thee and the sea; otherwise,

He whose understanding can discern what is, and judge what should, or should not be applied to prevent misfortune, never sinketh under difficulties.

The commencement of an improper thing, quarrel with relations, defiance to the strong, and confidence in the woman, are a doors to death.





After this, however, and in obedience to the commands of her mate, she laid her eggs in the same place, and the sea, to try the power of the partridge, came and carried them off in triumph;

ততচ্চিট্টিভো শোকান্না মর্জ্যারমাহ নাথ কষ্টমাপ্যতং
 তাস্ম্যন্ডানি মে নষ্টানি । চিট্টিভোঽবদৎ প্রিযে মা ভৈষীঃ
 ইত্যুক্তা পল্লিণাং মেলকং কৃৎবা পল্লিস্বামিনোগহুডস্য
 সমীপং গতঃ ॥ তত্র গত্বা সকলবৃক্ষান্ চিট্টিভেন ভগব
 নোগহুডস্য পুরতোনিবেদিতং দেব সমুদ্রেণাচ্ছং স্বমৃদহাব
 স্থিতোবিদ্যাপরাধেনৈব নিমৃদীতঃ ততস্তদ্বচনমাকার্য
 গুরুত্বমাতা প্রভূর্ভগবান্ নারায়ণঃ সৃষ্টিস্থিতিপ্রলয়হেতু
 বিজ্ঞপ্তঃ সমুদ্রং অন্ডদানায়াদিদেশ ততোভগবদাজ্ঞা
 মৌলৌ নিধায় সমুদ্রেণ তান্যন্ডানি চিট্টিভায় সমর্প
 তানি অতোঽহং ব্রবীমি অংগাঙ্গিভাবমজ্ঞাত্বা ইत्याদি ।

তাহার পর চিট্টিভী সোকাতুরা হইয়া ভর্তাকে বলিল হে
 পুণনাথ দুঃখ উপস্থিত হইল আমার সেই অণ্ড নষ্ট হইল
 চিট্টিভ বলিল হে পুিয়ে ভয় করিও না ইহা বলিয়া পক্ষির
 দিগের মিলন করিয়া পক্ষিরদিগের পুধান গৰুড়ের নিকট
 গেল যেখানে যাইয়া চিট্টিভ সকল বৃক্ষান্ত ভগবান গৰুড়ের
 অগ্রেতে নিবেদন করিল হে পুভো আপন গৃহেতে অবস্থিত
 আমি অপরাধ ব্যতিরেকে সমুদ্রকর্তৃক নিগৃহীত হইয়াছি ।
 অনন্তর তাহার বচন শুনিয়া সৃষ্টি স্থিতি পুনরায় কারণ ভগ
 বান্ নারায়ণপুত্র বিজ্ঞাপিত হইয়া সমুদ্রকে অণ্ডদানের নি

মিত্তে আদেশ করিলেন তাহার পর সমুদ্র ভগবানের আজ্ঞা
মস্তকে করিয়া সে অণু সকল টিউভকে সমর্পণ করিলেন।
অতএব আমি বলি অস্বাভাব না জানিয়া ইত্যাদি।

whereupon, the poor female, overwhelmed with affliction, said to her husband, O master of my heart, what a misfortune has befallen us! The sea has stolen all my eggs! My dear, replied the partridge, do not be alarmed, but wait and see what I am capable of doing So, upon saying this, he assembled all the other birds, and repaired with them into the presence of the king of birds, and laid their grievance before him; who, having heard it, considered for a moment what he should do.—I will, said he to himself, state the case to the great and mighty lord, Nārāyana, the author of creation, preservation, and destruction, and he will wipe away our sorrows. Accordingly, the eagle, attended by the rest of the birds, addressed their complaint to Nārāyana, saying,—O Lord! Even whilst thou art master, the sea hath dared thus to overwhelm us! The deity having considered their complaint, commanded the ocean to surrender the eggs; and the king of waters placed the high decree upon his crown, and delivered up the eggs accordingly; and the birds having gained what they wanted, returned thanks, and retired to their own abodes. I repeat therefore, *Not knowing &c.*

শাস্ত্রাতিক্রমমজ্ঞাত্বা বৈরমারমতে দ্বিষঃ । স পরামব
 মাজ্ঞোতি সমুদ্রমিব তিষ্টিমাৎ ॥ রাজাহ কথমসৌ জ্ঞাত
 ত্যোদ্রোহবুদ্ধিরিতি । দমনকোব্রূতে যদাসৌ সদৰ্পঃ শৃঙ্গা
 যপ্রহরণাভিমুখশ্চকিতমিব আগচ্ছতি তদা জ্ঞাস্যতি
 স্বামী । এবমুক্তা সঞ্জীবকসমীপং গতঃ তত্র গতশ্চ
 মন্দমন্দমুপসর্পন্ বিক্লিতমিবাत्মানমদর্শয়ত্ সঞ্জীব
 কেন সাদরমুক্তাং ভদ্র কুশলং তে । দমনকোব্রূতে অনু
 জীবিনাং কুতঃ কুশলং ॥ যতঃ ॥ সম্যক্তথঃ পরাধীনাঃ
 সদা চিন্তননির্ভৃতং । স্বজীবিতেষু বিশ্বাসস্তেষাং যে রাজ
 সেবকাঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ কোথ্যান্ প্রাপ্য ন গর্বিতো বিষয়িনঃ
 কস্মাপদোক্তং গতাঃ । স্ত্রীभिঃ কস্য ন লুপ্তিত্বং ভুবি মনঃ
 কোবাঈ রাজ্ঞাং প্রিয়ঃ ॥ কঃ কালস্য ভুজান্তরং ন চ
 গতঃ কোর্ধী গতো গৌরবং । কোবা দুর্জনবাগুরাসু পতিতঃ
 স্ত্রেমেণ যাতঃ পুমান্ ॥ *****

রাজা বলিল ইনি হিংস্রক ইহা কি পুকারে জানিব দগ
 লক বলিতেছে যখন এই সঞ্জীবক গর্ভিত হইয়া শৃঙ্গাগুরুপ
 শৃঙ্গাভিমুখ হইয়া আসিবেক তখন পুতু জানিবেন । এই
 রূপ করিয়া সঞ্জীবক নিকটে গেল সে স্থানে গিয়া অল্প
 নিকটে গমন করত বিস্ময়াপন্নের ন্যায় আপনাকে দেখা
 ইল সঞ্জীবক আদর করিয়া কহিল হে মিত্র তোমার মঙ্গল ।
 দমনক বলিতেছে ভূত্যেরদের দমন কোথায় যেহেতুক




যাহারা রাজার আশ্রিত তাহাদিগের সম্পত্তি পরায়ত্ত আর
অন্তঃকরণ সর্বদা দুঃখিত আর স্বকীয় পুণ্যেতে ও অপুণ্যে ।
অপর কোন লোক ধন পাইয়া অহংকৃত নাইয় আর বিষয়ের
বিপৎ না হয় আর পৃথিবীতে কাহার মন স্ত্রী কতৃক খণ্ডিত
না হয় আর রাজার পুত্র কে হয় আর যনের হস্তদ্বয়ের মধ্যে
কে না যায় আর কোন যাচক গৌরব পায় আর কোন পুরুষ
দুর্জনের পাশেতে পতিত হইয়া মজল পায় ।

How shall we discover,, said the lion, when the bull is maliciously inclined? Your highness, replied Damanaka, will know when you shall behold him coming, with those weapons the tips of his horns pointed towards you, looking as if alarmed. Having said this, he went where Sangjivaka was; and being in sight of him, he advanced by slow degrees, and made himself appear as if agitated by something. Health and happiness attend thee! said Sangjivaka, with great marks of politeness. Alas! replied Damanaka, where is there any happiness for those who are in a state of dependance? For,

The fortunes of those who serve princes are in the power of others; their minds are never at ease; and they have no confidence even in their own lives!

Again:

Who having obtained riches, is not proud? From whose misfortunes do the luxurious become so? Whose heart hath not been tormented by women? Or who is dear to a king? Who is there not within the arms of time? What begger ever arriveth at consequence? Or what man who hath fallen into the snares of the wicked hath escaped in peace?

সঞ্জীবকোনেতং সখে ব্রূহি কিমেতৎ । দমনক আহ কিং
 ব্রবীমি মন্দভাগ্যঃ ॥ পশ্য। মজ্জনপি পথোরাশৌ লব্ধ্যা
 সর্পাবলম্বনং । ন মুচ্যতিন ঘাঘত্নে তথা মুগ্ধো স্থি সंप্রতি
 ॥ যতঃ ॥ একত্র রাজবিশ্বাসী নশ্যত্যন্যত্র বাশ্বদঃ । কিং
 করোমি ক্ব গচ্ছামি পতিতো দুঃখসাগরে ॥ ইত্যুক্তা দীর্ঘ
 নিঃশ্বস্যোপবিষ্টঃ সঞ্জীবকোব্রূতে মিত্র তথাপি সুবিস্তারং
 মনোগতমুচ্যতাং । দমনকঃ সুনিশ্চতমাহ যদ্যপি রাজ
 বিশ্বাসো ন কথনীয়স্তথাপি ভবাঃ স্নাদীযপ্রত্যয়াদা
 গতঃ ময়া পরলোকার্থিনাবশ্যং তব হিতমাখ্যেয়ং শৃণু
 অয়ং স্বামী তবোপরি বিহতবুদ্ধীরহস্যুক্তবান্ সঞ্জীবক
 মেব হত্বা স্বপরিবারং তর্পয়ামি । ****

সঞ্জীবক কহিলহে সখে বন । দমনক বলিল মন্দভাগ্য
 আমি কি বলিব দেখে সমুদ্রে মজ্জন করিয়া সর্পকে অবলম্বন
 পাইয়া যেমন ভাগ করিতে পারে না ধরিতে ও পারেনা
 সেইরূপ ইদানী আমি মুগ্ধ হইতেছি যেহেতুক এক পুরুষ
 রাজার পুত্রায় নষ্ট হয় অন্যত্র বাস্কর নষ্ট হয় অতএব কি
 করি কোথায় যাই দুঃখার্গবে পতিত হইয়াছি ইহা কহিয়া দীর্ঘ
 নিশ্বাস ফেলিয়া বসিল । সঞ্জীবক বলিতেছে তুমি আমার
 কৃতজ্ঞ তথাপি হে সখে অন্তঃকরণস্থ তাবৎ কহ । দমনক


নির্জনে কহিল যদ্যপি রাজবিদ্বানস্বাক্য অবক্তব্য তথাপি
আমার পুত্রেতে তুমি আসিয়া এ স্থানে আছ সেইহেতুক
পরলোকাথা' আনি তোমার হিত অবশ্য কহিব শুন এইপুত্রে
তোমার উপরে বিকার প্রাপ্তচিত্ত হইয়া নির্জনেতে কহিলেন
মঞ্জীবককে নষ্ট করিয়া নিজপরিবারকে তর্পণ করিব।

Pray, friend, said the bull, inform me what all this means! Oh! my friend, replied he, what shall I say, but that I am very unfortunate!

I am now like one plunged in a deep water calling out for help, who findeth many things hanging down to assist him, which he neither quitteth nor taketh hold of.

Confidence in the prince, all at once, ruineth one friend or other! What shall I do? Whither shall I go? I am fallen into a sea of trouble!

Having said this, he heaved a deep sigh, and sat down; when Sangjivaka desired him to relate, more fully, the cause of his uneasiness, and Damanaka with great shew of secrecy said,— Although it be highly improper to abuse the confidence of one's sovereign, yet, as it was at our instance thou camest, it behoveth me, as I hope for welfare myself hereafter, to inform thee of what concerns thy own welfare. Attend then.—His highness is very much enraged against thee, and has declared in private, that he will have Sangjivaka killed; and that he will treat his attendants with his flesh.

এতচ্ছুত্বা সঞ্জীবকঃ পরং বিধাদমগমত্ দমনকঃ পুন
 রাহ অলং বিধাদেন প্রাপ্তকালকার্যমনুষ্ঠীয়তাং । সঞ্জী
 বকঃ স্ফুটং বিমৃশ্যাহ নিশ্চিতমিদমবধীরিতং ॥ যতঃ
 দুর্জনগম্যানার্য্যঃ প্রায়েণাপাত্রমৃদ্ধবতি রাজা । কৃপণানু
 সারি চধনং দেবোগিরিজলধিবর্ষী চ ॥ স্বগতং কিং বা দুর্জন
 চেচ্ছিতং ন বেদ্য তদ্ব্যবহারং বিনেতুং ন শক্যতে ॥ যতঃ ॥
 কস্বিদাশ্রয়সৌন্দর্য্যাঙ্কুশে শোভামসজ্জনঃ । প্রমদা
 লোচনন্যস্তং মলীমসমিবাংজনং ॥ তত্র বিচিন্ত্যোক্তং
 কষ্টং কিমিদমাপতিতং ॥ যতঃ ॥ আরাধ্যমানো নৃপতিঃ
 প্রযত্নাৎ ন তোষমায়াতি কিমত্র চিত্রং । অযং ত্বপূর্ব্ব
 প্রতিমাविशेषो यः सेव्यमानो रिपुतामुपैति ॥ *

ইহা শুনিয়া সঞ্জীবক বড় বিষম হইল দমনক পুনশ্চ কহিল
 বিষমতা নিরর্থক কালোপযুক্ত কর্ম অনুষ্ঠান কর । সঞ্জীবক
 কিঞ্চিৎকাল বিবেচনা করিয়া কহিল ইহা নিশ্চয় বটে যেহে
 তুক জীলোকেরা পুায় দুষ্টলোককে গমন করে রাজা পুায়
 অপাত্রপোষক হয় আর ধন পুায় কৃপণানুগত হয় আর দেব
 তা পুায় পর্ব্বতেতেও সমুদেতে দৃষ্টি করেন । মনে পুনর্বার
 বিতর্ক করিল এ আশ্রয়গত কিম্বা খল চেষ্টিত জানিতে পারি না
 তাহার ব্যবহার ও নিকপণ করিতে সমর্থ হই না যেহেতুক
 কোন অসাধু লোক আশ্রয়ের সৌন্দর্য্যহেতুক শোভাধারণ

করে যেমন মলিন কজল কামিনীর চক্ষুকে প্লাপ্ত হইয়া
শোভাধারণ করে তাহার পর বিবেচনা করিয়া কহিতেছে
হায় একি কষ্ট পড়িল যেহেতুক অত্যন্ত আয়াসেতে সেব্যমান
নরপতি তুষ্টি পান না এ কি আশ্চর্য্য চমৎকৃত পুতিনা ইনি
যে আরাধ্যমান হইলে বৈরী হন ।

The bull, upon hearing this, became very sorrowful; whilst the artful Damanaka cried,—It is in vain to be melancholy; rather let something be pursued suitable to the occasion. Sangjivaka was thoughtful for a moment and then calmly said,—It is true, for

Women repairth unto bad men, sovereigns, for the most part, are cherishers of the undeserving. Riches are attendants of the miser; and the heavens rain plentifully upon the mountains and the sea !

He again reflected within himself, — I do not know whether this conduct proceeds from himself, or he has been actuated to it by some malicious person. How then the truth of this business be ascertained !

The unfortunate man who possesseth splendour from the glory of him on whom he dependeth, will find it as fatal as a foul collyrium put into the eye by the hand of imprudence.

But when I reflect, how hard is the sentence which hath been pronounced against me !

The king hath been courted with unremitting pains; why then is he not pleased? Herein is the wonder ! This too is a circumstance before unparalleled: one whilst he is served is about to be an enemy !

নদ্যমশক্যার্থঃ প্রমেয়ঃ । যতঃ । নিমিত্তমুদ্दिश्य हि यः
 प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति ॥ अकारणद्वेषि
 मनस्तु यस्य कथं जनस्तं परितोषयिष्यति॥किं मयापकृतं
 राज्ञः अथ वा निर्निमित्तापकारिणश्च भवन्ति राजानः ।
 दमनकोब्रूते एवमेतत् शृणु । विज्ञैः स्निग्धैरुपकृतमपि
 द्वेष्यतामेति कश्चित् साक्षादन्यैरुपकृतमपि प्रीतिमेव
 पयाति । चित्रं चित्रं किमथ चरितं नैकभावाश्चयाणां
 सेवाधर्मः परमगहनोयोगिनामप्यगम्यः ॥ अन्यच्च ॥
 सुकृतशतमसत् नष्टं सुभाषितशतं च नष्टमवद्वेषु ।
 वचनशतमवचनकरेषु बुद्धिशतमचेतनेषु नष्टं ॥किञ्च॥
 चन्दनतरुषु भुजङ्गा जलेषु कमलानि तत्र च ग्राहाः।
 गुणघातिनश्च खलाभोगेषु अलं मुखान्यविघ्नानि॥❀*

ইহার পুতিকাৰ অশকাই যেহেতুক যে লোক কোন কারণ
 উদ্দেশ্য করিয়া ক্রোধ করে সে কারণ পাইলে সে লোক
 নিশ্চয় পু সন্ন হয় যাহার মন নিমিত্ত ব্যতিরেকে ছেষি হয়
 কি ক্রপে লোক তাহাকে সন্তুষ্ট করিবেক । আর कहिन
 রাজার অপকার আনি কি করিয়াছি কিম্বা রাজারা সর্বদা
 অপকারক হয় দমনক বলিতেছে এই পুকার বটে শুন বিজ্ঞ
 মিত্রকর্তৃক উপকৃত হইলে ও কোন লোক শত্রুতাচরণ করে
 আর অন্যকর্তৃক সাক্ষাৎ অপকৃত হইলে ও তুষ্ট হয় অন
 বস্থিতচিত্তের একি আশ্চর্য্য চরিত্র সেবাধর্ম্ম অতিশয়

দুর্জয় যোগিরদের ও অবোধ্য । অপর পাপাত্মাতেপুণ্য
শত নষ্ট মুখেতে শত কথিত নষ্ট অবচনকারিতে বচন শত
নষ্ট অচেতনেতে বুদ্ধি শত নষ্ট হয় অপর ভোগ বিষয়েতে
অতিশয় সুখ পাইয়া খল লোকেরা গুণঘাতক হয় দেখ
চন্দন বৃক্ষেতে সর্পেরা থাকে আর জলেতে কমল হয়
তাহাতে নকরাদি জলজন্তুরা থাকে ।

Then, this may be deemed something inexplicable; but,
The man who, having discovered some unfavourable
token, giveth way to his passions, will certainly fail in
pursuit of it. How shall one give satisfaction to him,
whose mind is displeased without a cause?

What offence have I given to the king ; or are princes
apt to become enemies without sufficient cause?

Damanaka replied,—Thus it is ! Hear me:

Some are discontented, even with the assistance of the
whole body of able men, whilst others are pleased when
offences are committed in their sight. The duties of ser-
vitude are exceedingly profound. they are impractica-
ble, even to those who are in the habit of doing penance;
because those who are not servants for one thing alone,
must submit to be directed by the eye at the sovereign's
will.

A hundred good actions are lost upon the unworthy; a
hundred fine speeches are lost upon the ignorant; a
hundred good qualities are lost amongst men who are
destitute of good qualities; a hundred times speaking
is lost upon those who are not inclined to converse; a
hundred understandings are lost upon the insensible.

Serpents are found upon the sanders tree; in the wa-
ters the lotus flowers with alligators; and in the midst
of full enjoyment those who dispute about the quality.

অন্যস্ব ॥ মূলং ভুজঙ্গৈঃ কুমুমানি ধৃঙ্গৈঃ শাখা প্লবনৈ
 শিখরাণি মল্লৈঃ । নাস্ত্যেব তচ্চন্দনপাদপস্য যন্নাশ্রিতং
 দুষ্টতরৈশ্চ হিংস্রৈঃ ॥ দমনকো ব্রূতে যথং তাবত্ স্খামো বাচি
 মধুরো বিষহৃদযো জ্ঞাতঃ । যতঃ । দূরা দুচ্ছিতপাণি
 রার্জনয়নঃ প্রোত্সারিতা দ্বাসনো গাঢ়ালিঙ্গনতত্পরঃ প্রিয়
 কথাপ্রশ্নেষু দত্তাদরঃ । অন্তর্ভূতবিষো বহ্নির্মধুময়শ্চা
 নীবমাযাপটুঃ কৌণামাযমপূর্ব্বনাটকবিধির্ঘঃ শিচ্চিতো
 দুর্জনৈঃ ॥ তথাহি । পোতো দুস্তরবারিরাশিতরণে দীপোন্ম
 কারাগমে । নির্ঘাতে ব্যজনং মদান্বকরিণাং দর্পোপশান্ত্যৈ
 শ্রুণি । ইত্থং তদ্ভুবি নাস্তি যস্য বিধিনা নোপায়চিন্তা
 কৃতা । মন্যে দুর্জনচিত্তট্টিহরণে ধাতাপি ভগ্নোদয়মঃ ॥

বৃক্ষের মূলকে মর্প মকল পুষ্পকে ভুঙ্গর শাখাকে প্লবনর অগ্নি
 ভাগকে ভল্লক চন্দনবৃক্ষের আর এমনত জ্ঞান নাহি যে দুষ্ট
 হিংসুক জন্তু কর্তৃক আশ্রিত না হইয়াছে দমনক কহিতেছে
 এই পুতু নিষ্টেভাষী বিষতুল্যান্তঃকরণ ইহা আমি জানিলাম
 যেহেতুক দূরহইতে উদ্ধতহস্ত এবং মজলচক্কু এবং অক্ষাঙ্গন
 দাতা এবং নির্ভর আলিঙ্গনে তৎপর এবং প্রিয় বাক্যের
 জিজ্ঞাসাতে কৃতাদর এবং চিন্তিতে গুপ্ত বিষ এবং বাহ্যেতে
 মধুন্ময় এবং অতিশয় মায়া পটু একি চনৎকৃত নর্ত্তনবিধি
 মাঝে দুর্জনেরা শিক্ষা করিয়াছে । তাহা কহিয়াছেন নির্বীত
 জ্বলেতে পাখা মন্তুহস্থির গর্ভবিনাশের নিমিত্তে অক্লুশ দুস্তর

জলসমুদয়গণের নিমিত্তে নৌকা অস্বকারোপস্থিতিতে
পুদীপ এই পুকারে পৃথিবীতে তাহা নাই যাহার উপায় চিন্তা
বিধাতা না করিয়াছেন আনি এই নানি যে খলান্তঃকরণ
চরিত্র হরণের নিমিত্তে বিধাতা ও ভগ্নোদ্যোগ হইয়াছেন।

The root is infested by serpents, the flowers by bees, the branches by monkeys, and the top by bears, in short; there is not a sander tree which is not surrounded by the vilest impurities.

Our master, observed Damanaka, is one of those who carry honey in their speech, and poison in their hearts; according to this description:

He holdeth out his hands at a distance; he appeareth with a wet eye; he relinquisheth one half of his seat; he is fond of close embracing; his words in conversing are kind and gentle; he bestoweth compliments, his inside is naught but poison, whilst without he is covered with sweets, and he is rich in extreme deceit. What name is there for this before unheard-of mimick art, which is inculcated by wicked men?

It is said,

The boat was invented upon crossing pieces of water which were difficult to pass, the lamp, upon the approach of darkness, the fan, upon a defect of wind; and a hook, in humbling the pride of an intoxicated elephant! In short, there is not any thing in the world, wherein the idea of invention was not suggested by Providence. But, in my opinion, Providence itself would fail in its endeavours to prevent what passeth in the minds of wicked men.

সঞ্জীবকঃ পুনর্নিশ্বস্য কষ্টং ভো কথমহং শস্যমলংকঃ
 সিংহেন নিপাতিতথ্যঃ । যতঃ ॥ দ্বয়োরেব সমং বিচিং দ্বয়োরেব
 সমং বলং । তথোর্ব্বিবাদোমন্তথ্যোনোক্তমাধমযোঃ ক্বচিৎ ॥
 পুনর্ব্বিচিন্ত্য কেনাযং রাজা সমোপরি বিকারিতঃ ন
 জানে ভেদমুপগতাৎ রাজ্ঞঃ সদা ভেতথ্যং । যতঃ । মন্নিং
 পৃথিবীপালচিন্তং বিঘটিতং ক্বচিৎ । বল্যং স্ফটিক
 স্যেব কোহি সম্ভাতুমীশ্বরঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ বজ্রং চ রাজ
 তেজস্ব দ্বয়মেবাতিভীষণং । একমেকত্র পততি পতত্যন্যত্
 সমন্ততঃ ॥ ততঃ সংগ্রামে মৃত্যুরেব বরমিদানীং তদাজ্ঞানু
 বর্ত্তনমযুক্তং । যতঃ । মৃতঃ প্রাপ্নোতি বা স্বর্গং শত্রুং হত্বা
 মুদ্রানি বা । ভাবাপি হি শূরাণাং গুণাবেতৌ সুদুর্লভৌ ॥

সঞ্জীবক পুনর্বার নিশ্বাস ফেলিয়া কহিল ও হে এ কি ব্যা
 মোহআমি শস্যভক্ষক আমাকে কেন সিংহ নষ্ট করিবেযেহে
 তুক উভয়ের তুল্য বল ও ধন থাকিলে বিবাদ হয় দুর্ব্বলের
 সহিত বলবানের যুদ্ধ কোথায় পুনর্বার চিন্তা করিয়া কহিল
 আগার উপরে এই রাজাকোন লোক কতৃক বিঘটিত হইয়া
 ছেন আমি জানি না বিকার প্ৰাপ্ত রাজা হইতে স্বর্দদ। ভয়কর্ত্ত
 বা যেহেতুক স্ফটিকের বলয়কে সন্ধান করিতে যেমন কেহ
 সমর্থ হয় না তেমনি পৃথিবীপতির অন্তঃকরণ মন্ত্রিকর্ত্তক
 বিঘটিতহইলে কেহ সন্ধান করিতে শক্ত হয় না। অপর বজ্র
 আর রাজ বিঘটন দুই অত্যন্ত ভয়ানক ইহার মধ্যে বজ্র

এক স্থানেতেই পড়ে অন্য যে রাজবিঘটন সে সর্বত্র
পড়ে সেই হেতুক যুদ্ধেতে নৃত্যকেই স্বীকার করি এখন
তাহার আজ্ঞা পুতিপানন অনুপযুক্ত যেহেতুক নরিনে
স্বর্গ পাইব কিম্বা শত্রুকে নষ্ট করিনে সুখ পাইব অতএব
বীরেরদের এ দুই গুণ দুর্লভ।

Sangjivaka again heaved a deep sigh, and exclaimed, how hard it is, that this poor feeder upon grass and grain should be an object worthy to be ruined by a lion!

The disputes of two of equal strength and fortune are worthy of attention, but not of two, the one great the other humble.

The bull having again considered a while, continued saying,—I know not by what fault of mine the rājā has been injured, that he should be at variance with me! It is best therefore to be for ever jealous of a prince.




If ever the mind of a king, which is like a bracelet of solid crystal, is injured by his minister, who is the artist that can repair it?

A thunderbolt, and the power of kings, are both dreadful! But the former expendeth its fury at once, whilst the latter is constantly falling upon our heads.

Therefore by battle must protection from death be sought, to supplicate him would now be absurd.

Since,

Or dying, he obtaineth heaven; or having killed his enemy, the enjoyments of life. Both these hard-to-be-acquired blessings are the rights of heroes.

যুদ্ধে কালস্বাথং । যত্রাযুদ্ধে ধ্রুবং মৃত্যুর্যুদ্ধে জীবিতসংশয়ঃ ।
 তমেব কালং যুদ্ধস্য প্রবদন্তি মনীষিণঃ ॥ যতঃ ॥
 অযুদ্ধে হি যদা পশ্যেত্ন কিঞ্চিদ্ধিতমাत्मनঃ । যুধ্যমায
 স্তদা প্রাজ্ঞোম্রিয়তে রিপুণা সহ ॥ অযে চ লভতে লক্ষ্মীং
 মৃতেনাপি সুরাঙ্গনাং । চণবিধ্বংসিনঃ কায়াঃ কা
 চিন্তা মরণে রণে ॥ এতচ্ছিন্তয়িত্বা সঞ্জীবকং আহ ভো
 মিত্র কথমসৌ মাজ্জিঘাংসুর্জাতব্যঃ । দমনকো ব্রূতে
 যদাসা স্তম্ভকর্ণঃ সমুন্নতলাংগূল উন্নতচরণো বিক
 তাস্বক্স্বাং পশ্যতি তদা ত্বমেব স্ববিক্রমং দর্শয়িষ্যসি ।
 যতঃ । বলবানসি নিস্তেজাঃ কস্য নাভিমবাস্পদং ।
 নিঃশঙ্কং दीयতে লোকৈঃ পশ্য ভস্মচये पदं ॥ কিন্তু
 সর্বমেতৎ সুমুগ্ধমনুষ্টাতব্যং নো চেন্ন তং বাদ্ধামিত্যুক্তা
 দমনকঃ করटकसमीपं गतः । ****

সংগ্রামের এই সময় যখন যুদ্ধ না করিলে অবশ্য মৃত্যু যুদ্ধে
 তে পুণ্য সংশয় পণ্ডিতেরা সে কালকেই যুদ্ধের কাল বলেন
 যেহেতুক যুদ্ধ না করিলে যদি আপনার মঙ্গল দেখে না তবে
 পণ্ডিত ব্যক্তি যুদ্ধ করিয়া শত্রুর সঙ্গে মরে । আর জয় হইলে
 রাজলক্ষ্মী পায় মরিলে দেবকন্যা পায় কণকালঙ্কার
 শরীর অতএব কি চিন্তা যুদ্ধেতে মরণেতে ইহা চিন্তা করিয়া
 সঞ্জীবক বলিল হে মিত্র কি প্রকারে জানিব যে এ দুর্বুদ্ধি
 আনাকে নষ্ট করিতে ইচ্ছা করিয়াছে ইহা কহ দমনক বলি

তেছেযখন ঐ শুদ্ধকর্ণ উজ্জ্বলাঙ্গুল হইয়া সঙ্গতপাদ হইয়া
বিস্তারিত মুখ হইয়া তোমাকে দেখিবেক তখন তুমি ও
আপন পরাক্রম দেখাইবা যেহেতুক নিস্তেজ লোক বলবান
হইলে ও কাহার পরাজয়ের স্থান না হয় দেখ লোকেরা শঙ্কা
রহিত হইয়া ভয়রাশিতে পা দেয় কিন্তু গোপনেতে এই
সকল অযুগল কর্তব্য নতুবা তুমি ও থাকিবা না আমি ও
থাকিব না ইহা কহিয়া করটকের নিকটে গেল।

As out of battle death is certain, and in the field life doubtful, the learned call it *the only time of battle*

When out of battle he beholdeth no happiness for himself, the wise man embraceth death fighting the foe

In victory he obtaineth fortune, and in death celestial beauty Seemg that our bodies are so very fragile, why should we hesitate about dying in the battle?

Let me clearly understand, my friend, how I am to discover when he is determined to put me to death When the rājā shall cock his tail, lift up his paws, and look at thee with his mouth open, and with his ears erect, replied Damanaka, then will be the time for thee also to display thy prowess.

Strong even without vigour, who may not experience the situation of being defeated? Observe how fearlessly people put their feet upon a heap of ashes!

But it is necessary that every thing be conducted with the greatest privacy; otherwise neither thou nor I shall remain alive.

Having said this, Damanaka went to join Karataka,

করটকেনোক্তং কিং নিষ্পন্নং । দমনকেনোক্তং নিষ্পন্নোসা-
 ন্যোন্মভেদঃ । করটকো ব্রূতে কোত্র সন্দেহঃ । যতঃ । বন্ধ্যুঃ
 কো নাম দৃষ্টানাং কুপ্যতে কো ন যাচিৎ ॥ কো ন তৃপ্যতি
 বিত্তেন কুঠ্যে কো ন পণ্ডিতঃ ॥ অন্যত্র ॥ দুর্ভিক্ষঃ ক্রিয়তে
 ধূর্তৈঃ শ্রীমানাত্মবিবৃদ্ধয়ে । কিং নাম খলসংসর্গঃ কুরুতে
 নাশ্রয়াশ্রবৎ ॥ ততো দমনকঃ পিঙ্গলকসমীপং গত্বা দেব
 সমাগতো সৌ পাশাশয়ঃ ততঃ সজ্জীভূয় স্থায়তামিত্যুক্ত্বা
 পূর্বাশ্রয়াকারং কারয়ামাস । সজ্জীবকোপ্যাগত্য তথা
 বিধি বিকৃতাকারং সিংহং দৃষ্ট্বা স্বানুরূপং বিক্রমং চকার
 ততস্তয়োৰ্যুদ্বৈ সজ্জীবকঃ সিংহেন ব্যাপাদিতঃ । অথ সজ্জী-
 বকং সেবকং পিঙ্গলকো ব্যাপাশয় বিশ্রান্তঃ সমোক ইব
 তিষ্ঠতি ব্রূতে চ কিং ময়া দারুণং কৰ্ম কৃতং ॥ *❧❧*

করটক কহিল কি সম্পন্ন হইল দমনক কহিল পরস্পর
 ভেদ নিষ্পন্ন হইল করটক বলিল সম্ভেদ কি যেহেতুক
 দুর্জনের বান্ধব কে অধিক যাচিত হইলে কে ক্রুদ্ধ না
 হয় ধনেতে কে তৃপ্ত না হয় নিদ্রিত কর্ম্মেতে কে পণ্ডিত
 নয় অপর ধূর্ত লোকেরা আশ্রিতেচ্ছাতে উত্তম লোক
 কে ও দুর্ভিক্ষ করে কেননা বহির ন্যায় খলসংসর্গ কি
 না করে । পরে দমনক পিঙ্গলকের সম্মিথানে গিয়া কহিল
 হে মহারাজ ঐ পাশিষ্ট আইল অতএব সমজ্জ হইয়া থাক
 ইহা কহিয়া পূর্বোক্ত আকার করাইল অনন্তর সজ্জীবক ও

আইল সেই পুকার বিকারপাণ্ড সিংহকে অবলোকন করি
য়া নিজানুকূপ পরাক্রম করিল তাহার পর তাহারদিগের
বড় যুদ্ধ হইলে পরে সিংহকর্তৃক সঞ্জীবক বিনাশিত হইল
তাহার পর পিঙ্গলক সঞ্জীবককে নষ্ট করিয়া বিশ্রাম করিয়া
সশোকের ন্যায় থাকিয়া কহিল নির্দয় আমাকর্তৃক কি
দাক্ষণ কৰ্ম্মকৃত হইল ।


who asked him what was effected. Why, replied the former, a reciprocal breach hath been effected between the two. What doubt of it? cried Karataka, for they say,

What a name is relation amongst wicked men? *Who will not be angry when over and above solicited? Who groweth satisfied with riches? Who cannot be eminently skilful in an evil art?*

Likewise:

A man is rendered miserable by artful people, and prosperous from the greatness of his soul. What, doth not a troop of villains act like the fire, (whose epithet is destroyer of that which is intrusted to him?)

After this Damanaka went to the lion, and cried out,—
Please your highness, that vessel of iniquity is coming! Prepare thyself, and let him approach! Having said this, he caused the lion to put himself in the attitude before described; and Sangjivaka being arrived, upon seeing the lion with his countenance thus altered, began himself to display a corresponding show of defiance. At length there ensued a furious battle, in which the poor bull having been killed by the lion, the latter overcome with fatigue, and standing, as it were, full of affliction, exclaimed,—Alas! what a cruel action have I been guilty of!

যতঃ ॥ পরৈঃ সমুজ্যতে রাজ্যং স্বয়ং পাপস্য ভাজন ।
 ধর্মাতিক্রমতোরাজা সিংহোহস্তিবধাদিব ॥ অপরञ्চ ॥
 भूयैकदेशस्य गुणान्नितस्य भृत्यस्य वा बुद्धिमतः
 प्रणयः । भृत्यप्रणयो मरणं नृपाणां नष्टापि भूमिः
 मुलभानभृत्याः ॥ दमनकोब्रूते स्वामिन् कोयं नूतनो
 न्यायः यदरातिं हत्वा सन्तापः क्रियते । तथा चोक्तं ।
 पिता वा यदि वा भ्राता पुत्रो वा यदि वा सुहृत् ।
 प्राणच्छेदकरा राज्ञা हन्तव्या भूतिमिच्छता ॥ अपिच ॥
 धर्मार्थकामतत्वज्ञो नैकान्तकरुणो भवेत् । न हि
 हस्तस्य मप्यन्नं क्षमावान् भक्षितुं क्षमः ॥ किञ्च ॥ क्षमा
 सत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणं । अपराधिषु सत्त्वेषु
 नृपाणां सैव दूषणं ॥ *

যেহেতুক নিঃস্ব যেন হস্তিবধপুযুক্ত পাপভাগী আপনি
 হয় নৃপাদি অন্যকর্তৃক উপভুক্ত হয় এইরূপ রাজা ধর্মের
 অতিক্রমণে আপনি পাপের আশ্রয় হন রাজ্য পর
 কর্তৃক উপভুক্ত হয় । অপর উর্বরাভূমির নাশ আর বুদ্ধি
 মান দাসের নাশ ইহার মধ্যে ভৃত্যের নাশ রাজাদিগের
 মরণতুল্য কেননা ভূমি ভুষ্টা হইলে ও পুনশ্চ মিলে ভৃত্য
 নষ্ট হইলে পাওয়া দুর্লভ দমনক বলিতেছে পুত্র এ কি নূতন
 ন্যায় যেবৈরিকের নষ্ট করিয়া সন্তাপ করিতেছেন বিজ্ঞকর্তৃক

ভাষা কথিত আছে পিতা কিম্বা ভ্রাতা কিম্বা পুত্র কিম্বা বন্ধু
ইহারা ও যদি জীবনবিনাশকারক হয় তবে ঐশ্বর্য্য ইচ্ছা
করেন যে রাজ্য তৎকর্তৃক বধ্য হয় আর ধর্ম্ম অর্থ কামের
যথার্থজ্ঞাতা লোক একান্ত দয়ালু হইবেন যেহেতুক ক্ষমা
যুক্ত লোক করস্থিত অনেকে ও ভক্ষণ করিতে শক্তি হয় না
অপর শত্রুতে এবং মিত্রেতে যতিরদিগেরই ক্ষমা ভূষণ
রাজারদিগের অপরাধি লোকেতে সেই ক্ষমাই দোষ।

If the dominion be enjoyed by others, he himself is the vessel which containeth the the fault. Should a prince transgress the law, he is like the lion after the murder of the elephant.

The loss of territory, or of a wise and virtuous servant, is a great loss. The loss of servants is death to sovereigns, and the loss of empire, for servants are not easily to be found.

What novelty is this? cried Damanaka. It is very unusual for one to lament having put a faithless enemy to death, and indeed it is very improper to do so.

Or father, or if a brother; or son, or if a friend, be a conspirator against his life, he should be put to death by a prince who wisheth his own welfare.

One acquainted with the principles of justice and political interest, should neither be hastily severe; nor ever ready to pardon, although money be in the hand. It is proper to swallow mercy.

It is a virtue in hermits to forgive their enemies, as well as their friends; but it is a fault in princes to shew clemency towards those who are guilty.

অপরঞ্চ॥ রাজ্যলোভাদহংকারাদিচ্ছতঃ স্বামিনঃ পদং
 প্রাচক্ষিত্তং তু তস্যৈকং জীবোৎসর্গো ন চাপরং ॥ অন্যच्च
 রাজা ঘৃণী ব্রাহ্মণঃ সর্বভক্ষুঃ স্ত্রী চাবশা দুঃপ্রকৃতি
 সহায়ঃ । প্রেথ্যঃ প্রতীপোদ্ধিতঃ প্রমাদো ত্যজ্যাঙ্গমে সা
 ক্তত ন বেত্তি যঃ ॥ বিশেষতश्च । সত্যানৃতা च पुरुष
 प्रियवादिनोच हिंसा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या
 नित्यव्यया प्रचुररत्नधनागमा च वाराङ्गनेव नृपनीति
 रनेकरूपा ॥ इति दमनकेन सन्तोषितः पिङ्गलकः स्वा
 प्रकृतिमापन्नः सिंहासने समुपविष्टः । दमनकः प्रहृष्ट
 मना विजयतां महाराज शुभमस्तु सर्वजगतामित्युक्त्वा
 यथासुखमवास्थितः ॥



অপর রাজ্যলোভ প্রযুক্ত অহংকারেতে স্বামির পদ যে ইচ্ছা
 করে তাহার প্রাণত্যাগই এক প্রায়শ্চিত্ত অন্য নয় অপর ঘৃণা
 যুক্ত রাজা ও সর্বভক্ষক ব্রাহ্মণ ও অবশ্যভূতা ভাষা ও দুষ্ট
 স্বভাব সহায় ও পুতিকূল ভৃত্য ও অনবধানী নিযুক্ত লোক
 ও যে লোক কৃতকর্মকে মানে না এ সাত জন ত্যাজ্য ।
 বিশেষত বেশ্যার ন্যায় রাজনীতি অনেকরূপা হয় সত্য
 ভাষিণী এবং মিথ্যাভাষিণী ও হয় নিষ্ঠুর ভাষিণী এবং
 প্রিয়বাদিনী ও হয় হননশীলা এবং দয়ালু ও হয় কৃপণ হয়
 এবং দানশীলা ও হয় ও অনবরত ব্যয় শীলা হয় এবং পুচ্ছ

মিত্র ও ধনাগম হয় এইরূপ দমনককর্তৃক পিঙ্গলক পরি-
তোষিত হইয়া স্বকীয় স্বভাব প্রাপ্ত হইয়া সিংহাসনে উপ-
বিষ্ট হইলেন। দমন পুরুষচিন্ত হইয়া কহিল মহারাজ জয়
হউক ইহা কহিয়া পরমাত্মদে থাকিল।

There is no other but one expiation for him who, from pride and the lust of power, shall wish for his master's station, and that is death !

A meek-hearted prince, a Brāhman who eateth of all things alike, an unruly wife, a bad-principled companion, an unfaithful servant, and a presumptuous superintendent, and he who acknowledges not a benefit received, should all be put away: they are not worthy to be tried seven times.

But the following lines give a very particular picture of the behaviour of princes:

The conduct of princes, like a fine harlot, is of many colours, true and false; harsh and gentle; cruel and merciful, niggardly and generous, extravagant in expence, and solicitous of the influx of abundant wealth and treasure.

The lion having been thus composed by the arts of Damanaka, at length recovered his natural temper of mind, and seated himself on his throne; and Damanaka, with his heart full of exultation, having wished victory to the mighty king, and happiness to all the world, lived ever after according to his wish.

বিষ্ণুশর্মোবাচ সুহৃদ্রেদঃ শ্রুতস্তাবদ্ববদ্বিঃ । রাজপুত্রা
 জ্জ্বঃ ভবত্‌প্রসাদাত্‌ শ্রুতঃ সুখিনো ভূতাবয়ং । বিষ্ণু
 শর্মাব্রবীত্ । অপরমপীদমস্তু । সুহৃদ্রেদস্তাবদ্ববতু ভব
 তাং শত্রুনিলয়ে ত্বলঃ কালাক্রাণ্ডঃ প্রলয়মুপসর্পত্বহরহঃ ।
 জনো নিত্যং ভূয়াত্‌ সকলসুখসম্পত্তিবসতিঃ কথারম্যে
 রম্যে সততমিহ বালোপি রমতাং ॥ ইতি দ্বিতোপদেশে
 সুহৃদ্রেদো নাম দ্বিতীয়কথাসংগ্রহঃ সমাপ্তঃ ॥ *❀*
 বিষ্ণুশর্ম্মা কহিলেন তোমরা সুহৃদ্রেদ শ্রবণ করিলে । রাজ
 প্রমোদেরা কহিলেন আপনকার অনুগ্রহেতে শুনিলাম আম
 রা আশ্বাদিত ও হইলাম । বিষ্ণুশর্ম্মা বলিলেন আর ও এই
 পুকার হউক আপনকারদিগের অরিগৃহে সুহৃদ্রেদ হউক
 আর কালকর্তৃক আকৃষ্ট হইয়া থল লোক পুত্ৰহ পুনর্যবে
 প্ত হউক আর লোক সকল সুখজনক ঐশ্বর্য্যতে পরিপূর্ণ
 হউক আর এই রমণীয় কথারস্তে সর্বদা বালক ও ক্রীড়া
 করুন । ইতি দ্বিতীয়া সুহৃদ্রেদকথা সমাপ্তা ।

Vishnu-Sarmā having thus concluded his second head,
The Separation of a Favourite, gave notice to the
 young princes; who declaring they were well pleased
 with it, he gave them his blessing, and repeated the
 following lines:

May such a breach between friends happen but in the
 house of your enemies! May traitors, day by day, be
 led by Time to their destruction! May the people be
 perpetual possessors of abundance, and all the blessings
 of life! And may youth for ever find amusement here
 in this pleasant garden of fable!

THE END OF THE SURIDBHEDA.

॥ अथ विग्रहः ॥

पुनः कथारम्भकाले राजपुत्रा ऊचुः आर्य्य राजपुत्रावय
तद्वियहं श्रोतुं नः कुतूहलमस्ति । विष्णुशर्मणोक्तं यदेव
भवद्भोरोचते कथयामि श्रूयतां यस्यायमायः
श्लोकः । हंसैः सह मयूराणां विग्रहे तुल्यविक्रमे ।
विश्वस्य वञ्चिता हंसाः काकैः स्थित्वारिमन्दिरे ॥
पुनर्द्धार कथारम्भकाले राजपुत्रेरा कहिलेन हे श्रोत्रो
आमरा राजनन्दन এইहेতুক বিগ্রহ শুনিবার নিমিত্তে
আনারদিগের কোতুক আছে । বিষ্ণুশর্মা বলিলেন তোমা
রদিগের যাহাতে কচি হয় তাহা কহি শুন যাহার পুথন
শ্লোকার্থ এই হংসের সহিত যুদ্ধেতে ময়ূরেরদিগের তুল্য
পরাক্রমেতেও কাককর্তৃক শত্রুগৃহে থাকিয়া পুত্যয়ো
পাদন করিয়া হংস বঞ্চিত হইল ।

CHAP. III.
OF DISPUTING.

THE time set apart for hearing these stories being arrived, the young princes reminded Vishnu-Sarmā in these words:—Worthy Sir ! As we are the sons of a prince, it will afford us very great amusement to hear what relates to Disputing. And Vishnu-Sarmā replied, if it will give you pleasure I will proceed to recount what is connected with that head, to which the following verse is the introduction:

In a quarrel between the geese and the peacocks, in which is displayed equal valour, the geese, having trusted them, are betrayed by the crows who were in the camp of the enemy.

রাজপুত্রা জ্যুঃ কথমেতৎ । বিষ্ণুশর্মা কথয়তি অস্তি
 কপূরদ্বীপে পদ্মকোলিনামধেয়ং সরঃ তত্র হিরণ্যগর্ভো নাম
 রাজহংসঃ প্রতিবসতি স চ সর্ষ্পৈর্জলচরপশুভির্মিলিত্বা
 পশুরাজ্যেঃশিষিক্তঃ ॥ যতঃ ॥ যদি ন স্যাদন্নরপতিঃ
 সম্যঙ্গেতা ততঃ প্রজাঃ । অকর্ণধারা জলধৌ বিপ্লবেতেহ
 নৌরিব ॥ অপরঞ্চ ॥ প্রজাং সংরক্ষতি নৃপঃ সা বর্জয়তি
 পার্থিবং । বর্জনাঙ্গচরণং শ্রেয়স্তুদभावे सदप्यसत् ॥
 একদাসৌ রাজহংসঃ সুবিস্তীর্ণকমলপর্যঙ্কে সুখাসীনঃ
 পরিবারপরিবৃতস্তিষ্ঠতি ততঃ কুতস্থিদেশাঙ্গত্য দীর্ঘ
 মুখো নাম বকঃ প্রণম্যোপবিষ্টঃ । রাজোবাচ দীর্ঘমুখ
 দেশান্তরাঙ্গতোসি বার্তাং কথয় । স ব্রূতে দেব । অস্তি
 মহতী বার্তা তাং বক্তুং সত্বরমাগতোহং শ্রুয়তাং । ❀

রাজহংসারেরা কহিলেন এ কি পুকার বিষ্ণুশর্মা কহিতে
 ছেন । কপূরদ্বীপেতে পদ্মকোলি নামে সরোবর থাকে তাহা
 তে হিরণ্যগর্ভনামে রাজহংস বাস করে সকল জলচর পক্ষি
 রানিলিয়া তাহাকে পক্ষিরাজ্যেতে অভিষিক্ত করিল । যে
 হেতুক সন্ধ্যা পুকার নায়ক নৃপতি যদি না থাকে তবে সন্মু
 দ্ধেতে নাবিক রহিত নৌকা যেমন নগ্ন হয় এমনি পুজারী
 উপদ্রুত হয় আর রাজা পুজাকে রক্ষা করেন পুজা রাজাকে
 বাড়ায় বর্জনহইতে রক্ষণ মঙ্গলদায়ক কেননা রক্ষণ না করি
 লে বিদ্যমান ও অবিদ্যমান হয় । এক দিন এই রাজহংস

অতিশয় বিস্তারিতকমলপর্যাক্ষেতে পরিবার লোকেতে
বেষ্টিত হইয়া সুখোপবিষ্ট আছেন অনন্তর দীর্ঘমুখ নামে
বক কোন দ্বীপহইতে আসিয়া পুণাম করিয়া বসিল রাজা
বলিলেন হে দীর্ঘমুখ তুমি অন্য দেশহইতে আইলা বৃত্তান্ত
কহ সে বলিল হে মহাজার বড় বার্তা আছে তাহা কহিবার
নিমিত্তেই আমি হ্রাতে আইলাম তাহা শুন ।

How was this? demanded the young princes; and Vish-
nu-Sarmā related as follows:

FABLE I.

IN Karpura-dwipa there is a famous lake which is distinguished by the name of the Padma-keli where used to reside a royal goose, whose title was Hiranya-Garbha, and who had been anointed their king by all the birds who are wont to frequent the waters.

If there were no king, the people would thence be entirely ruined: they would be here like a boat in the water without a pilot.

The king protecteth the people; and they support the greatness of their sovereign. But protection is better than greatness; for the one cannot exist without the other.

One day as the royal goose was sitting upon a bed of lotus flowers finely spread, surrounded by his attendants, there arrived from some distant country a certain booby, whose name was Dirgha-mukha, who, having made his obeisance, drew near. Dirgha-mukha ! said the king, thou art lately come from foreign countries: pray inform me what news. Please your highness, replied the booby, I have some very important news, anxious to relate which I made haste to come here.

অস্মি জম্বুদ্বীপে বিন্ধ্যানাং গিরিস্তত্র চিত্রবর্ণা নাম
 ময়ূরঃ পশ্চিরাণো নিবসতি তস্যানুচরৈশ্চরদ্ভিঃ পশ্চিভিরহং
 দগ্ধারণ্যমধ্যে চরন্নবলোকিতঃ পৃষ্টস্য কল্বং কুতঃ
 সমাগতোসি । তদা মযোক্তং কর্পূরদ্বীপস্য রাজচক্রবর্তিন
 নোহিরণ্যগর্ভস্য রাজহংসস্যানুচরোহং কৌতুকাৎ দেশান্তরং
 দৃষ্টমাগতোস্মি । এতচ্ছুত্বা পশ্চিভিরুক্তং অনযোদে শয্যোঃ
 কো দেহো ভদ্রতরো রাজাচ । মযোক্তং আঃ কিমেব
 মুচ্যতে মহদন্তরং যতঃ কর্পূরদ্বীপঃ স্বর্গেব রাজহংসস্য
 দ্বিতায়ঃ স্বর্গপতিঃ অত্র মরুস্থলে পতিতায়ূয়ং কিঙ্করুথ
 অস্মদেহে গম্যতাং । ততোস্মদ্বচনমাকার্য্যং সর্বং সক্রোপা
 বভূমুঃ । তথাচোক্তং । পয়ঃ পানং ভুজঙ্গানাং কেবলং বিষ
 বর্জনং । উপদেশাচ্চি মূর্খানাং প্রক্রোপায় ন শান্তয়ে ॥

জম্বুদ্বীপেতে বিজ্ঞা নামে পর্বত আছে তাহাতে চিত্রবর্ণ নামে
 ময়ূর পক্ষিরদের রাজা বাস করে তাহার অনুচর পক্ষি
 কতক দক্ষারণ্যমধ্যেতে চরত আগাকে দেখিয়া তাহার
 জিজ্ঞাসা করিল কে তুমি কোথাহইতে আইলা তখন
 আমি কহিলাম আমি কর্পূর দ্বীপচক্রবর্তী হিরণ্যগর্ভ নামে
 হংসরাজের অনুচর কৌতুকপুযুক্ত দেশান্তর দেখিতে আসি
 য়াছি । তাহা শুনিয়া পক্ষিরা কহিল তবে এই দুই দেশের
 মধ্যে কোন দেশ বড় ভাল কোন রাজা বা বড় ভাল ।
 অন্তর আমি কহিলাম আঃ কি কহিতেছ অনেক অন্তর

যেহেতুক কপূরদ্বীপ স্বর্গই রাজহংস দ্বিতীয় স্বর্গপতি ইন্দ্র
তুল্য এই মরুভূমিতে পড়িয়া তোমরা কি কর আমার
দেশে আইস অনন্তর আমার বাক্য শ্রবণ করিয়া সেই পার্শ্ব
রা সরোষ হইল পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন যে সর্পেরদের
দুগ্ধ পান কেবল বিষবর্জক হয় ও মূঢ়েরদিগের উপদেশ
ক্রোধের নিমিত্তেই হয় শান্তির নিমিত্তে হয় না।

In Jambu-dwipa, there is a mountain called Vindhya, where reigns Chitravarna, a peacock, who is there king of the winged tribes. As I was walking one day over a place where the grass and underwood had been burnt down, I was discovered by some of his attendants who were passing by; and upon their asking who I was, and whence I came, I replied, that I came from Karpura-dwipa, that I was an attendant of the royal goose, king Hiranya-Garbha, and that I came there out of curiosity to see foreign countries. They then asked me which of these two countries I thought the best; and I said,—O what a question is this! There is a vast difference between them: Karpura-dwipa is a heaven of a place! Then what do you do in such a barren country as this? Come away, and accompany me into our country. But upon hearing me talk in this manner, they seemed to be very much displeased. They say,

A draught of milk to serpents doth nothing but increase their poison. Good counsel bestowed upon fools doth rather provoke, than satisfy them.

অন্যত্র ॥ বিদ্বানেবোপদেষ্যো মা বিদ্বাংসু কদাচন ।
 বানরানুপদিষ্যথ স্থানধৃষ্টা যয়ুঃ স্নগাঃ ॥ রাজোবাচ
 কথমেতৎ । দীর্ঘমুখঃ কথয়তি অস্মি নর্মদাতীরে বিশা
 লঃ শালমলীতরূপ্তবনির্মিতনীডকোডে পল্লিনোনিবসন্তি
 সুখেনাথৈকদা বর্ষাসু নীলপটলৈরাবৃতে নভস্থলে ধারা
 সারৈর্মহতী বৃষ্টির্বমূব ততোবানরাংশ্চ তরুতলেঽবস্থিতান্
 শীতাকুলান্ কম্পমানানবলোক্য ক্রপয়া পল্লিধিরুক্তং
 ভো ভো বানরাঃ শৃণুত । অস্ম্যভিনির্মিতানোডাশ্চন্দ্ৰমা
 ব্রাহ্মতৈস্কৃণৈঃ । হস্তপাদাদিসংযুক্তা যুয়ং কিমিতি সৌদথ
 ততশ্চুত্বা বানরৈর্জাতমর্ষরালোচিতং অহো নির্বাতনোড
 গর্ভাবস্থিতাঃ সুখিনঃ পল্লিণো স্মান্তিন্দন্তি ভবতু তাব
 দ্বৃষ্টে রূপশমঃ । অনন্তরং একবানরেণোক্তং ॥ ❀❀❀

অগরপাণ্ডিতেই উপদেশ করণোপযুক্ত মূর্খকে কদাচনয় মূঢ়
 বানরের দিগেকে উপদেশ করিয়া পক্ষিরা স্থান ভ্রুষ্ট হইয়া
 ছিন । রাজা কহিলেন এক পুকার দীর্ঘ মুখ কহিতেছে ।
 নর্মদাতীরে এক অতিবড় শালমলি বৃক্ষ থাকে সেই তরুতে
 আপন চঞ্চু করণক নির্মিত নীড়মধ্যে পক্ষিরা বর্ষাতে
 ও সুখেতে বাস করে অনন্তর নীলবর্ণ পটের তুল্য মেঘ
 সমূহেতে গগনমণ্ডল আচ্ছন্ন হইলে পরে স্থূল ধারেতে
 অতিবড় বৃষ্টি হইল সেই অকতলেতে বানরেরদিগেকে
 আদ্ভুত শীতার্ভ কম্পিত কলবর দেখিয়া করুণা

পুষ্প পক্ষিরা কহিল ও হে বানরেরা শুন আমাদের
চক্ষুনাভেতে আহত তৃণকরণক নীড় নির্মিত হইয়াছে
পাণি পাদবিশিষ্ট তোমরা কেন এই পুকারে অবসন্ন হইতে
ছ তাহা শুনিয়া জাতক্রোধ বানরেরা আলোচনা করিলবায়ু
রহিত নীড়মধ্যে অবস্থান পুষ্প সুখী হইয়া পক্ষিরা
আমাদিগকে নিন্দা করিতেছে ভাল বৃষ্টির উপশম হউক।

A wise man is worthy to be advised; but an ignorant one never. Certain birds, having given advice to a troop of monkeys, have their nests torn to pieces, and are obliged to fly away.

The royal goose demanded to know how that was; and the booby repeated the following story:

FABLE II.

ON the banks of the river Narmadā, upon a neighbouring mountain, there was a large Sālmah, wherein certain birds were wont to build their nests and reside, even during the season of the rains. One day the sky being overcast with a troop of thick dark clouds, there fell a shower of rain in very large streams. The birds seeing a troop of monkeys at the foot of the tree, all wet, and shivering with cold, called out to them,—Ho, monkeys! why don't you invent something to protect you from the rain?

We build ourselves nests with straws collected with nothing else but our bills. How is this, that you, who are blessed with hands, and feet, yield to such sufferings?

The monkeys hearing this, and understanding it as a kind of reproach, were exceedingly irritated, and said amongst themselves,—These birds there, sitting comfortably out of the wind within their warm nests, are laughing at us! So let them, as long as the shower may last.

॥ অনন্তরং শান্তে পাণীযবর্ষে তৈর্বানরৈর্ঘৃক্ষমাশ্রয়্য সর্বৈ
নীডা ভগ্নাস্তেষামণ্ডানি চাধঃপাতিতানি । অতোহ
ব্রবীমি বিদ্বানেষোপদেষ্টব্যত্যাदि । রাজোবাচ ততস্তৈঃ
কিং কৃতং । বকঃ কথয়তি ততস্তৈঃ পল্লিभिः কোपादुक्तং কে
নাসৌ রাজহঁসো রাজা কৃতः । ততোমযোপজাতকোপেনোক্তং
যুগ্মদীঘমযূরঃ কেন রাজা কৃতः । एतच्छ्रुत्वा ते सर्वे मां
हंतुमद्यतास्ततोमयापि स्वविक्रमो दर्शितः ॥ यतः ॥
अन्यदाभूषणं पुंसां क्षमा लज्জেव योषितां । पराक्रमः
परिभवे वैजात्यं सुरतेष्विव ॥ राजा विहस्य।ह । आत्म
नश्च परेषां च यः समोक्ष्य बलावलं । अन्तरं नैव
जानाति स तिरस्क्रियते ऽरिभिः ॥ अन्यच्च ॥ सुचिरांह
चरन्नित्यं क्षেত্রে शस्यमबुद्धिमान् । द्वोपि चर्मपरिक्लेशो
वाग्दोषाद्गर्दभो हतः ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*

তাহার পর জলবর্ষন নিবৃতি হইলে সেই মর্কটেরা বৃক্ষ আরো
হণ করিয়া সকল বাসা ভাঙিল তাহারদিগের অণ্ড সকল ও
নীচেতে ফেলাইয়া দিল । অতএব আমি বলি পণ্ডিতেই উপ
দেশ করণোপযুক্ত ইত্যাদি রাজা কহিলেন তাহার পরে
কি করিল বক বলিতেছে । অনন্তর পক্ষিরা ক্রোধেতে কহি
ল তোর রাজ হংসকে কে রাজা করিয়াছে তাহার পর আমি
ওজাতক্রোধ হইয়া কহিলাম তোমাদের ময়ূরকে কে রাজা
করিয়াছে ইহা শুনিয়া তাহার সকলে আমাকে নষ্ট করিতে

উদ্যত হইল। তাহার পর আমি ও নিজ পরাক্রম দেখাই
লাম যেহেতুত জীলোকেরদিগের যেমন লজ্জা ভূষণ এমন
অন্যকর্তৃক পরাভব কালব্যতিরিক্ত কালেতে ক্রমাই পুরু
ষেরদিগের ভূষণ এবং রতি কালেতে জীলোকেরদিগের যে
রূপ নির্লজ্জতা ভূষণ এই রূপ অন্য কর্তৃক পরাভব কালে
তে পুরুষের পরাক্রমই ভূষণ। রাজা হাস্য করিয়া কহি
লেন যে জন আপনার ও পরের বলাবল দেখিয়া অন্তর না
জানে সে জন শত্রু কর্তৃক তিরস্কৃত হয় অপর ব্যাঘ্র চর্ম্মাবৃত
নির্বুদ্ধি গর্দভ ক্ষেত্রেতে বহুকাল পর্য্যন্ত পুতাহ শস্য ভক্ষণ
করত বাঁকা দোষেতে নষ্ট হইল।

In short, as soon as the rain subsided, the whole troop of them mounted into the tree, where tearing all the nests to pieces, the eggs fell upon the ground and were broken. I say therefore, *A wise man is worthy to be advised; &c.*




Well, said the royal goose, what did the birds say after they had heard this story? Why, please your highness, they were in a great passion, and asked, who made that same goose a king? In answer to which, I too, in the anger which such a question created, cried,—By whom was this same peacock made a king? and, upon my saying this, they tried to kill me, and in return, I displayed no little valour.

An occasional dress to a man is as forgiveness and modesty to a woman. Courage when surrounded is like being captive amongst men endued with clemency.

The royal goose smiling at this, said,

A man who, having well compared his own strength or weakness with that of others, after all, doth not know the difference, is easily overcome by his enemies.

A fool is always discovered if he stayeth too long, like the ass dressed in a tiger's skin, from his voice.

વકઃ પૃચ્છતિ કથમેતત્ । રાજા કથયતિ અસ્તિ હસ્તિ
નાપુરે વિલાસો નામ રજકલસ્ય ગર્દભોતિવાહનાદુર્વ
લો મુમૂર્ષુરિવાભવત્ તતસ્તેન રજકેનાસૌ વ્યાઘ્રચર્મણા
પ્રચ્છાદ્યારણ્યસમીપે શસ્યત્તેવે નિયુક્તઃ તતોદૂરાત્તમવ
લોક્ય વ્યાઘ્રવુદ્ધા ત્તેવપતયઃ સત્વરં પલાયન્તે અથૈકદા
કેનાપિ શશ્વરક્તકેન ધૂષરકમ્બલક્રતતનુત્રાણેન ધનુઃ
ક્રાણ્ડં સજ્જીકૃત્યાનતકાયેનૈકાન્તસ્થિતં તં ચ દૂરા
દૃષ્ટ્વા ગર્દભઃ પુષ્ટાક્ષો યથેષ્ટશસ્યમક્ષણજાતવલઃ
ગર્દભીયમિતિ મત્વા ઉઘ્ચૈઃ શબ્દં કુર્વાણસ્તમભિમુખં
સ ધાવિતઃ શશ્વરક્તકેન ગર્દભો ચિત્કારશબ્દાન્નિશ્ચિ
ત્યાઽયમિતિ લીલ્યૈવ વ્યાપાદિતઃ । અતોઽહં બ્રવીમિ
સુચિરં હિ ચરન્નિત્યમિત્યાદિ । ****

વક પુછ કરિતેહે એ કિ પુકાર રાજા કહિતેહન । હસ્તિ
નાનગરે વિલાસ નામે રજક થાકે તાહાર એક ગર્દભ
અતિશય વહન પુચ્કુ દુર્બલ મુમૂર્ષુર તુલ્ય હૈન અનન્તર સેહૈ
રજક એ ગાધાકે વ્યાઘ્રચર્મોતે આજ્ઞાદન કરિયા કાનનસમી
પે શસ્ય મધ્યે નિયુક્ત કરિન તાહાર પર દૂરહૈતે તાહાકે
દેથિયા વ્યાઘ્ર વુક્ષિતે ક્ષેત્રપાલકેરા પલાય । અનન્તર
એક દિવસ કોન શસ્યપાલક જીવે પાંડુવર્ગ કમ્બલેતે

শরীরান্ধাদন করিয়া তীর ধনুক সজ্জা করিয়া সঙ্কুচিত শরীরেতে নির্জনেতে থাকিল যথাভিলষিত শস্যাহারপুষ্কৃত জাতবল পুষ্টকলেবর সেই গর্দভ তাহাকে দূরহইতে দেখিয়া গর্দভী জ্ঞান করিয়া উদ্বেগে শব্দ করত তাহার সম্মুখে ধাবন করিল । তদনন্তর সে শস্যরক্ষক গর্দভ এ ইহা চীৎকার শব্দেতে নিশ্চয় করিয়া অনায়াসেতে নষ্ট করিল অতএব আমি বলি সুন্দররূপে পুতাহচরত ইত্যাদি ।

How was this? said the booby; and the royal goose related the following tale:

FABLE III.

AT Hastināpura there lived a certain fuller, whose name was Vilāsa. He had a jack ass who was grown exceedingly weak by carrying burdens too great for his strength, and, as it were, almost at the point of death. In this condition the fuller dressed him up in a tiger's skin, and let him loose in a field of corn; so that the people belonging to the field having observed him at a distance, ran away with the idea of its being a real tiger. After a while, however, a man whose business was to watch the field, having dressed himself in a kind of armour made of an ass's skin, and furnished himself with a bow and arrows, ventured to approach him; and the supposed tiger, who was now grown plump and fat, spying him at a little distance, and thinking it was a female of his own species, began to welcome her by setting up a loud braying, and immediately trotting up before her. But the man having discovered from his voice what he really was, the poor ass was soon overcome for his love. I say, therefore, *A fool is always discovered &c.*

দীর্ঘমুখো ব্রূতে ততঃপল্লিভিরুক্তং অরে পাপ দুষ্ট বক অস্মা
 কংভূমৌ চরন্নস্মাকং স্বামিনমধিচ্চিপসি তন্ন চান্তব্যমি
 দানোমিত্যুক্তা সৰ্বে মাং চক্ষুৰ্ভিহঁত্বা সঙ্কোপাজ্জ্বঃ পশ্য
 রে মূৰ্খ স হঁসস্তব রাজা সৰ্ব্বথা মৃদুস্তস্য রাজ্যাধি
 কারোনাस्ति যত একান্তমৃদুঃ করতলস্যমপ্যর্থং রচ্চি
 তুমত্তমঃ স কথং পৃথিবীং শাস্তি রাজ্যং বা তস্য কিং কিন্তু
 ত্বচ্ছ কূপমণ্ডুকস্তেন তদাশ্রয়মুপদিশসি শৃণু।
 সেবিতব্যোমহাটল্লঃ ফলচ্ছায়াসমন্নিতঃ। যদি দৈবাৎ
 ফলং নাस्ति ছায়া কেন জিবার্য্যতে ॥ অন্যচ্ছ ॥ হীন
 সেবা ন কৰ্ত্তব্য কৰ্ত্তব্যোমহদাশ্রয়ঃ পযোপি শৌণ্ডিকী
 হস্তে বারুণীত্যভিধীয়তে ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

দীর্ঘমুখ বনিতেছে তাহার পর গন্ধিরা কহিল অরে পাপ
 দুষ্ট বক আনারদিগের স্থানে চরত আনারদিগের স্বামিকে
 নিন্দা করিতেছিস এই হেতুক তোমাকে এখন কমা করা
 নয় ইহা কহিয়া সকলে চক্ষু করণক আনাকে ভাঙনা
 করিয়া কষ্টে ইহঁয়া কহিল দেখ রে মূর্থ তোর রাজা সেই হংস
 সৰ্ব্বপুকারে মৃদু তাহার রাজ্যেতে অধিকার নাই যেহেতুক
 নিতান্ত মৃদু ব্যক্তি হস্ততলস্থিত ও ধনকে রক্ষা করিতে অস
 মর্থ সে কি পুকারে পৃথিবী শাসন করিবেক তাহার রাজ্যই
 বাকি কিহু তুমি কূপমণ্ডুক এইহেতুক সে আশুব্রকে উপদেশ

করিতেছ শুন ফল এবং ছায়াতে যুক্ত বৃক্ষ সেবাকরণোপযুক্ত
কেমনা দৈবাৎ যদি ফল না থাকে তবে ছায়া কে বারণ করে
অপর ক্ষুদ্রের সেবা কর্তব্য। নয় মহতের আশুয়ই কর্তব্য কে
ননা শৌণ্ডিকহস্তস্থিত দুধকে ও লোকেরা মদিরা বলে।

After that, said the booby, the birds called out to me,
—Rascal! vile booby! Dost thou dare speak thus slight-
ingly of our sovereign? This is not to be suffered by us
presently! And, saying this, they began to attack me
with their bills, and to brave me in this manner.—Ob-
serve, thou stupid animal! thy goose is always a soft
spiritless creature; although he is by no means so very
mild in the government of his dominions; but he is inca-
pable of possessing as much wealth as would lie in the
palm of one's hand; how then shall he command the
universe? As for thyself, thou art like an angry frog;
but he is thy superior. Hear this:

A large tree, which yieldeth both fruit and shade, is
highly to be esteemed; but if Providence, per chance,
may have denied it fruit, by whom is its shade refused?

Court should not be paid to the indigent; but to him on
whom there is great dependance. Even milk in the hand
of a tavern keeper is called an intoxicating liquor.

অন্যচ্চ ॥ মহানপ্যত্পতাং যাতি নির্গুণে গুণবিস্তরঃ ।
 আধারাধেয়भावेन गजेन्द्रद्वय दर्पणे ॥ विशेषतश्च । व्यप-
 देशेऽपि सिद्धिः स्यादतिशक्ते नराधिपे । शशिनो व्यपदेशেন
 शशकाः सुखमासते । मयोक्तं कथमेतत् । पक्षिणः कथञ्च
 न्ति कदाचिदपि वर्षासु दृष्टेरभावात् त्वषार्त्तो गজयूथो
 व्यथयति नाह नाथ কোভ্যুপাধেঃ স্মৃৎকং জীবনাথ নাস্তি
 শুভ্রজন্তুনাং নিমজ্জনস্থানং বয়শ্চ নিমজ্জনস্থানাভাবা
 ন্মৃতা হর্দ্যব কিং কূর্ম্মঃ ক্ব যামঃ ততোহস্তিরাজোনাতিদূর
 গত্বা নির্মালং ক্লদং দর্শিতবান্ ততোদিনেষু গচ্ছন্তু
 তত্তীরাবস্থিতগজপাদাহতিভিশ্চূর্ণিতাঃ শুভ্রশশকাঃ
 অনন্তর শিলীমুখো নাম শশকশ্চিন্তয়ামাস যনে
 গজযুথে পিপাসাকুলিতে প্রত্যহমত্রাগন্তব্যং । ❀*

অপর আশ্রয়শ্রুতি শব্দকপুযুক্ত হস্তিশ্রেষ্ঠ ও যেকপ
 দর্পণেতে ক্ষুদ্রতাকে পায় এইকপ গুবান মহানোক ও
 ক্ষুদ্রের আশ্রয়েতে তুচ্ছতাকে পায় । বিশেষত অতিসমর্থ
 রাজাতে হ্রনোক্তিতে ও কার্য সম্পন্ন হয় কেননা শশকেরা
 ক্ষুদ্রশব্দে হ্রনোক্তিবারী সুখেতে আছে । আমি কহিলাম
 এইক পুকার পরিক্রা কহিল । কোন সময় বর্ষাকালে অন্য
 বৃষ্টিহেতুক তৃষ্ণাতুর জগযুথ যুথপাতিকে কহিল হে পুভু
 আমারদিগের জীবনের নিমিত্তে কি উপায় ক্ষুদ্র জন্তুরদি
 গের মজ্জন স্থান নাই আমরা অবগাহনস্থানের অভাব

পুষ্কৃত মৃতের ন্যায় আছি কি করিব কোথা যাব তাহারপর
গজরাজ গিয়া সমীপে এক ভাল জলাশয় দেখিল । অনন্তর
কিছু দিন গেলে পরে সেই সরোবর সমীপস্থিতকু দুশশকে
রা হস্তিপদাঘাতদ্বারা চূর্ণ হইল শিলীমূখ নামে শশক ভাব
না করিল তৎক্ষণাৎ এই হস্তিঘূথ পুত্ৰ্যহ এই স্থানে আসিবেক ।

Even the greatest are reduced to littleness, and those of abundant qualities to insignificance, by the properties of that by which they are opposed; like the royal elephant in the mirror.

Besides,

Great things may be effected by wise counsel, when a sovereign enemy may be too powerful. Certain rabbits were enabled to live in comfort, through the policy of one of their brethren.

I asked them how this was? And the birds related as follows.

FABLE IV.

ONCE upon a time, for want of rain in due season, a troop of elephants being greatly distressed for water, addressed their chief in these words:—What resource have we, except in that hollow sinking ground inhabited by those little animals! but deprived of that too, whither, Sir, blinded as it were, shall we go? What shall we do? Upon hearing their complaints, then chief, after travelling with them a great way, discovered a fountain of clear water. But as many rabbits who happened to be in their burrows were crushed to death under the feet of so many elephants trampling over their warren; at length, one of them, who was called *Sili-Mukha*, reflected in this manner:—This troop of elephants, oppressed with thirst, will be coming here every day to drink,

অতোবিনশ্যত্যস্মৎকুলং । ততো বিজয়ো নাম বৃদ্ধশশকৌ
 ঽবদৎ মা বিধীদত মযা ত্র প্রতীকারঃ কৰ্ত্তব্যঃ ততোসৌ
 প্রতিজ্ঞায় চলিতঃ গচ্ছতা চ তেনালোচিতং কথং গজযুথ
 সমীপে স্থিত্বা বক্কথং । যতঃ । স্পৃশন্নপি গজো ন্তি জিহ
 ন্নপি ভুজঙ্গমঃ । পলায়ন্নপি ভূপালঃ প্রহসন্নপি দুর্জনঃ ॥
 অতোহং পর্বতশিখরমারুহ্য যুথনাথং স্ংবাদয়ামি তথা
 নুষ্টিতে যুথনাথউবাচ কল্লং কুতঃ সমায়াতঃ স ব্রূতে
 শশকৌহং ভগবতা চন্দ্রেণ ভবদন্তিক প্রেষিতঃ যুথপতি
 রাহ কার্য্যমুচ্যতাং । বিজয়ো ব্রূতে । উদ্যতেষ্বপি শস্ত্রেণ
 দূতো বদতি নান্যথা । স দৈবাবধ্যभायेन यथाधैस्य हि
 वाचकः॥तदहं तदाज्ञया ब्रवीमि शृणु यदेते चन्द्रसरो
 रत्तकाः शशकास्त्वया निश्चारितास्तदनुचितं कृतं ।

অতএব আমাদের জল নষ্টে হইবেক । তদনন্তর বিজয়
 নামে বৃদ্ধ শশক বলিল বিষয় হইও না ইহাতে আমি
 পুতিকা করিব তাহার পর পুতিজ্ঞা করিয়া চলিল গমন
 করত সে আলোচনা করিল হস্তিযুথ সন্নিধানে থাকিয়া কি
 পুকারে বলিব যেহেতুক হস্তা স্পর্শকরত নষ্ট করে সর্প
 ঘৃণ করত নষ্ট করে রাজা পলায়ন করত নষ্ট করে দুর্জন
 হাঙ্গা করত নষ্ট করে অতএব পর্বত শিখরে আরোহণ করি
 য়া যুথপতিকে কহি তাহা করিলে যুথপতি কহিল কে তুমি
 কোথা হইতে আইলা । সে বলিল আমি শশক ভগবান

চন্দ্র আপনকার নিকটে পৌরণ করিয়াছেন যখনাথ কহিল
কার্য্য কহ বিজয় বলিতেছে শস্ত্র উখিত হইলে ও দূত অন্য
থা কহে না যেহেতুক দূত অবধ্যভাবেতে সর্বদাই যথার্থের
বক্তা হয় সেইহেতুক আমি তাঁহার আজ্ঞাতে বলি শুন যে
এই চন্দ্র সরোবরের রক্ষক শশকেরা তোমাকর্তৃক দূরীকৃত
হইয়াছে তাহা অনুচিত করিয়াছ।

At length, our whole race will be destroyed ! But
the old buck, whose name was Vijaya, said to him,—
Fooler, don't be uneasy, for I am going to prevent what
you dreadest. Saying which, he set off to try how he
could oppose them, but as he went along, he began to
consider how he should approach so formidable a troop;
for, observed he, they say,

An elephant killeth even by touching, a serpent even
by smelling, a king even by ruling, and a wicked man
by laughing at one

Wherefore, I will mount the summit of a rock to ad-
dress the head of the troop. This being put in execution
accordingly, the chief elephant asked him who he was,
and whence he came. I am, replied he, an ambassador sent
here by the god Chandra. Declare the purport of thy
commission, said the elephant. Sir, replied the rabbit, as

Ambassadors, even when the weapons of war are lifted
up, speak not otherwise than for the benefit of their
state; and although they speak boldly according as it is
their advantage, they are not to be put to death.

Then I will declare what are the commands of the god
Chandra. He bade me say, that in driving away, and
destroying the rabbits who are appointed to that Duty,
you have done ill;

তে শশকাশ্চিরমস্মাকং রক্ষিতাঃ অতএব মে শশাঙ্ক ইতি
 প্রসিদ্ধিঃ এবমুক্তবতি দূতে যুথপতির্ভয়াদিদমাহ প্রাণি
 ধেহি ইদমজ্ঞানতঃ কৃতং পুনর্ন কৰ্ত্তব্যং দূতউবাচ যযেব
 তদত্র সরসি কোপাত্ কম্পমানং ভগবন্তং শশাঙ্কং প্রণম্য
 প্রসাদ্য গচ্ছ ততোরাত্রৌ যুথপতিং নীত্বা জলে চঞ্চলং
 চন্দ্রবিম্বং দর্শয়িত্বা যুথপতিঃ প্রণামং ক্লারিতঃ উক্তম্ভ
 তেন দেব অজ্ঞানা দনেনাপরাধঃ কৃতস্ততঃ স্তম্যতাং নৈব
 বারান্তরং বিধাস্যতে ইত্যুক্তা প্রস্থাপিতঃ অতোঽহং ব্রবী
 মি ব্যপদেশেপি সিদ্ধিঃ স্যাদिति । ততোমথোক্তং সএবাস্ম
 ত্প্রভুরাজহংসঃ মহাপ্রতাপোঽতিসমর্থঃ ত্রৈলোক্যস্যাপি
 প্রমুখং তত্র যুজ্যতে কিং পুনরাজ্যমिति । *❀❀*

সে শশকের। বহুকাল আগাদিগের রক্ষিত অতএব আমার
 নাম শশাঙ্ক এই পুসিক আছে । এই পুকারে দূত কহিলে
 পরে যুথস্বামী ভয়েতে ইহা কহিল অবধান কর অজ্ঞান
 প্রযুক্ত ইহা করিয়াছি পুনর্বার করিব না দূত বলিল যদি এই
 ক্রপ তবে এই সরোবরে কোপেতে কম্পিত কলেবর ভগ
 বান শশাঙ্ককে পুগাম করিয়া পুসন্ন করিয়া গমন কর । অন
 তর রাজিতে যুথপতিকে লইয়া জলেতে চঞ্চল চন্দ্রমণ্ডল
 দেখাই । যুথস্বামিকে পুগাম করাইল আর সে কহিল হে
 চন্দ্র অজ্ঞান প্রযুক্ত ইনি অপরাধ করিয়াছেন তাহা ক্ষমা কর

দ্বারান্তর একপ করিবেন না ইহা কহিয়া পুস্থান করাইল। অ
তএব আমি বলি অতিসমর্থ রাজাতে ইত্যাদি। তাহার পর
আমিকহিলাম সেইমহাপুতাপাঅতিসমর্থ আমাদেরস্বামী
রাজহংস তাহাতে ত্রিভুবনের কত্ৰ উচিত হয় রাজ্য কি।

for, said he, they are my guards, and it is notorious that the figure of a rabbit is my emblem.

The head elephant, upon hearing this being greatly alarmed, declared that they had offended through ignorance, and would never go to the fountain again. If this be your resolution, said the ambassador, go this once, and make your submissions before the Deity himself, whom you will see in the fountain, quite agitated with anger, and when you have pacified him, you may depart. —Accordingly, as soon as it was night, the ambassador Vijaya having conducted the chief of the elephants to the fountain, there shewed him the image of the moon, trembling, as it were, upon the smooth surface of the water, and when he had made him bow down to it, in token of submission, he said,—Please your divinity! What hath been done having been done through ignorance, I pray thee pardon them! and upon saying this, he caused the elephant to depart. I repeat therefore, *Great things may be effected &c.*

After that, continued the booby, I ventured to say, that our king too was powerful and valiant, and that he was worthy to be the master of the three worlds,

মদাহং তৈঃ পশ্চিমির্দৃষ্ট কথমস্মদুগৌ চরসি ইত্যভি
 ভাষ্য রাজশ্চিবর্ণস্য সমীপং নীতঃ ততো রাজাঃ পুরোমাং
 প্রদর্শ্য তৈঃ প্রণম্য উক্তং দেব অধীর্যতাং । এষ দৃষ্টো বকঃ
 যদস্মদেগ্রে চরণপি দেবপাদানধিল্পিপতি । রাজাহ
 কোঃ যং কৃতঃ সমাচাতঃ । তে ঋচুর্হিরণ্যগর্ভনাম্নো রাজ
 হংসস্থানুচরঃ কর্পূরদ্বীপাঙ্গতঃ । অথাহং গৃধ্রেণ মন্নি
 ণা পৃষ্ঠঃ কলত্র মুল্যো মব্রীতি মযোক্তং সর্বশাস্তার্থ
 পারগঃ সর্বজ্ঞো নাম চক্রবাকঃ । গৃধ্রো ব্রূতে যুজ্যতে স্বদেশ
 জোঃ সৌ ॥ যতঃ ॥ স্বদেশজং কুলাচারং বিশুদ্ধমথ বাশুচি
 নশ্চ ব্রহ্মময়সনিনং ব্যভিচারবिवর্জিতং । অধীতব্যব
 হারজ্ঞং মৌলি ল্যাতং বিপশ্চিতং অর্যস্যোত্যা দকশ্চৈব বিদ
 ধ্যান্নাব্রিণং নৃপঃ ॥ অন্তরে শুকেনোক্তং দেব কর্পূরদ্বী
 পাং দযোল্লস্তু দ্বীপাং জম্বুদ্বীপান্তর্গতা এব ।


তখন আর দূরে তুই আমারদের স্থানেতে চরিতেছিস ইহা
 কহিয়া পাঁকুরা আনাকে চিবর্ণের সন্নিধান লইয়া গেল
 অনন্তর রাজার অগ্রেতে আনাকে দেখাইয়া তাহার পুণাম
 করিয়া কহিল হে মহারাজ অবধান করুন এই দূরে বক যে
 আমারদের দেশে চরত ও মহারাজের চরণের নিন্দা করে ।
 রাজা কহিল কে এ কোথা ইহাতে আনিয়াছে তাহার কহিল
 দ্বিগণগর্ভ নামে রাজহংসের অনুচর কর্পূর দ্বীপ ইহাতে
 আনিয়াছে । অনন্তর গৃধ্র ন্যতিকর্তৃক আমি জিজ্ঞাসিত হই

জান সেখানে পুথান মন্ত্রীকে আনি কহিলান সকল শাস্ত্রার্থ
বেত্তা সর্বজ্ঞ নামে চক্রবাক । গৃধ্র বলিতেছে উপযুক্ত বটে
এ ব্যক্তিস্বদেশজাত যেহেতুক নিজদেশ জাত স্নানচারবেত্তা
উৎকোচধনা গ্রাহক পবিত্র মন্ত্রজাতা বাসনরহিত ব্যভিচার
দোষেতে রহিত ব্যবহারজ্ঞ উত্তম বংশজাত খ্যাত পণ্ডিত
ধনের উৎপাদক এতাদৃশ ব্যক্তিকে রাজা মন্ত্রী করিবেক ।
ইত্যবসরে শুক কহিল হে রাজাধিরাজ কপূরদ্বীপগুপ্ততি
ক্ষুদ্রদ্বীপ জম্বুদ্বীপের মধ্যেই ।

upon which they laid hold of me with their beaks; and, asking me what business I had in their country, they carried me before their chief Chitra-varna; and when they had shewed me to him, bowing to their king, they said,—Please your highness, let this guilty booby be confined, for he dares, even whilst he is travelling in our land, to treat with contempt your royal feet! The king, in anger, demanded to know whence I came; and they informed him, that I was the servant of the goose Ihanya-garbha, and that I came from Karpura-dwipa. —After that, the minister, who was a vulture, asked me who was the prime minister in this country, and I told him, a Chakra-vāka whose name was Know-all You esteem him, replied the vulture, because he is your countryman, they say, indeed,

A king should engage for his minister one who is a native of his own country; pure in all his ways, and cleanly in his dress; not one who is an outcast, addicted to idle pleasures, or too fond of women, but one of good repute, who is well versed in the rules of disputation, is of firm mind, and expert in raising a revenue.

A parrot next spoke, and observed, that as Karpura-dwipa was comprehended in Jambu-dwipa,

তত্রাপি দেবদাদানামেবাধিপত্যং ততো রাজ্ঞাপ্যুক্তং এবমৈব ॥
 যতে: ॥ রাজা মন: শিশুশ্চৈব: প্রমাদো ধনগর্দিত: ।
 অপ্রাপ্যমভিবাঙ্গন্তি কিং পুনর্লভ্যতেপি যত: ॥ ততো মযোক্তং
 যদি বচনমাশ্রিত্বৈবাধিপত্যং সিদ্ধ্যতি তদা জম্বুদ্বীপেষু
 স্নাত্ প্রমোহির্হরণ্যগর্ভস্য স্বাম্যমস্মি । শুকোব্রূতে কথমত্র
 নির্ণয়: মযোক্তং সংগ্রামএব । রাজ্ঞা বিহস্যোক্তং স্বস্বা-
 মিনং গত্বা সজ্জীকুরু । তদা মযোক্তং স্বদূতোপি প্রস্থাপ্য-
 তাং । রাজোবাচ । ক: প্রযাস্যতি দৈত্যেন যতএবম্মূতো
 দূত: কার্য্য: । ভক্তোগুণী শুচির্দত্ত: প্রগল্ভোব্যসনী চর্ম্মী ।
 দ্বাচ্ছাণ: পরমর্ম্মজ্ঞো দূত: স্যাৎ প্রতিभाववान् ॥ গৃধ্রো বদ-
 তি সন্ত্যেবদূতাবহব: কিন্তু দ্বাচ্ছাণএবকর্ত্তব্য: ॥ * 

তাহাতে ও মহারাজের চরণের পুভুত তাহার পর রাজ
 কর্ত্তক ও কথিত হইল এই বটে যেহেতুক রাজা ও মদিরা
 পানাদি পুষ্পুক্ত মত্ত ও বালক ও অববেচক ও ধনগর্দিত
 ইহারাদুষ্প্রাপ্য বস্তুকে ও অভিনাষ করে যাহা পুণ্য হয়
 তাহার কথা কি । তদনন্তর আমি কহিলাম যদি বাক্যমা-
 ত্রেতেই আমি ব্রসিদ্ধি হয় তবে জম্বু দ্বীপেতে ও আমাদের
 আমি হিণ্যগর্ভের পুভুত আছে শুক বলিতেছে ইহাতে
 কি নিশ্চয় আমি কহিলাম যুদ্ধই । রাজা হাস্য করিয়া কহি-
 লেন আপন পুভুকে গিয়া পুষ্পত কর তখন আমি কহিলাম

আপন দূতকে ও পাঠাও । রাজা বলিলেন দৌত্যকর্মেতে কে যাইবে যেহেতুক এই পুকার দূত কর্তব্য অনুরক্ত ও গুণবান ও পবিত্র ও নিপুণ এবং বক্তা বাসনরহিত ও ক্রমাযুক্ত পরমর্থাবোক্তা অনুভবদ্বারা কার্য্যবোদ্ধা এতাদৃশ লোক দূত হয় । গৃধ্র বলিতেছে অনেক দূত আছে কিন্তু ব্রাহ্মণই কর্তব্য যেহেতুক ।

the authority of his Majesty's feet certainly extended over that country also; to which the king of the birds replied,—Thus it is!

Sovereigns, the libidinous, and children, with madmen, and such as are made vain by riches, are over anxious for what is not attainable, and how much more so for what is to be procured!

Upon this, I said,—If dominion were obtained by words only, then might all Jambu-dwipa be subject to my king. Let it be declared how, said the parrot, and where he will give proofs of it! And I replied,—In battle! At this their king laughing, said,—Go to thy master, and tell him to make preparations for it. Send thy own ambassador, said I. Who shall go? asked the king; for an embassy such a person is required as is described in these lines:

An ambassador should be a trusty servant, endued with good qualifications, pure in his principles, clever, agreeable, unaddicted to fruitless pleasures, patient, and, with all, a Brāhman who is well acquainted with the moral and religious customs of strangers, and the nature of opposition.

Although there are many such to be found, here exclaimed the vulture, still a Brāhman is to be preferred; for,

যতঃ॥ প্রসাদং কুরুতে পতুঃ সম্যগ্গতিং নাভিবাঙ্ঘ্রতি। কালি
 মা কালকূটস্য মাপ্যেতীশ্বরসঙ্গমাৎ ॥ রাজাহততঃ শুক
 এব ব্রজতু শুক ত্বমেবানেন সহ গত্বা অক্ষদমিলিষিতং
 ব্রূহি। শুকো ব্রূতে যথাজ্ঞাপয়তি দেবঃ কিন্ত্বযং দুর্জনে
 বকস্তুদনেন সহ ন গচ্ছামি ॥ তথা চোক্তং ॥ খলুঃ
 কৰোতি দুর্জন্তি নুনং ফলতি সাধুষু। দশাননোহরেত
 সীতাং বন্ধনং স্যান্মহোদধিঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ ন স্যাৎ তব্ধং ন
 গন্তব্যং দুর্জনেন সমং ক্বচিৎ। কাকসঙ্গাদ্বিতোহংসস্তি
 ষ্ঠন্ গচ্ছ্যৎশ্চ বর্তকঃ ॥ রাজোবাচ। কথমেতৎ। শুকঃ কথ
 যতি অস্ত্যুজ্জয়িনী বর্ষাপ্রান্তরে প্লবতরুঃ তত্র হংসকাকৌ
 নিবসতঃ কদাচিত্ ত্রীষ্মসময়ে পরিব্রাজন্তঃ কশ্মিত্
 পথিকস্তত্র তরুতলে ধনুঃ কাণ্ডং সন্নিধায় সুপ্তঃ।

স্বামির পুণ্যমতাকেই করে ঐশ্বর্যকে অভিলাষ করে না যেম
 ন শিবের কণ্ঠে লগ্নকাল কূটের কৃষ্ণবর্ণ যারনা অর্থাৎ স্বামির
 শুকবর্ণ সৌন্দর্য্য গৃহণ করেন। রাজা বহিলেন সেই হেতুক
 শুকই গমন করুন হে শুক তুমিই ইহার সহিত গমন করিয়া
 আমাদের বাঞ্ছিত বল শুক বলিতেছে মহারাজ যে পুকার
 আজ্ঞা করেন কিন্তু এই বকদুর্জন এই হেতুক ইহার সহিত
 গমন করিব না তাহা পণ্ডিতকর্তৃক উক্ত আছে খল লোক
 দুষ্কর্ম করে সজ্জনেতে অবশ্য ফলে রাবণ সীতাকে হরণ
 করিল সমুদ্রের বন্ধন হইল অগর দুষ্ট লোকের সহিত

থাকিবে না গমন ও করিবে না কেননা কাক সমভিব্যাহারে
হংস থাকত এবং বর্ত্তক গমন করত নষ্ট হইল । রাজা
বলিলেন ইহা কি রূপ শুক कहিতেছে । উজ্জয়নির পথের
মধ্যে এক পাকুড বৃক্ষ থাকে তাহাতে হংস আর কাক
বাস করে গ্রীষ্ম কালেতে এক দিন কোন পথিক শ্রান্ত হই
য়া রক্ষতলেতে ধনু ও শর রাখিয়া নিদ্রা গেল ।

He acteth according to the pleasure of his employer;
he seeketh not wealth; even by the company of Shiva,
the black hue of the venom is not to be removed.

This being the case, let the parrot, said the king,
along with this person; and, upon thy arrival, make
known our will It shall be according to your highness's
commands, replied the parrot; but this booby is a vile
animal, and I am not used to go any where with a person
of bad character They say,


A villain is sure to commit some evil action, and he
succeedeth amongst good men. Sitā was seized by Rā-
vana. The ocean may have bonds.

*It is not proper either to stay, or to go any where,
along with an evil-disposed person. A goose suffered for
staying with a crow, and a Varttaka (Quail) for
going with him.*

How was this? demanded the king; and the parrot re-
counted the following story:

FABLE V.

ON a private road in Ujjayini there was a large pip-
pala tree, where lived together a goose and a crow. Once
upon a time in the cold season, a traveller came there,
and having placed his bow and his arrows safe away
under the tree, he went to sleep.

তত্র স্ফল্যান্তরে তন্মুখাত দৃষ্টচ্ছায়া অপগতা ততঃ
 সূর্য্যতেজসা তন্মুখং ব্যাপ্তমবলোক্য তদ্বৃদ্ধস্থিতেন হংসেন
 ক্রপয়া পক্ষৌ প্রসার্য্য পুনস্তন্মুখে চ্ছায়া দৃষ্টা ততো
 নির্ভরনিদ্রাসুখিনা তেন মুখব্যাধানং কৃতং অথ সুখম
 সহিষ্ণুঃ স্বभावदौर्जन्येन स काकस्तस्य मुखे पुरीषोत्
 सर्गं कृत्वा पलायितः ततो यावदसौ पान्थ उत्थाय ऊर्द्धं
 निरोक्षते तावत्तेनावलोकितो हंसः काण्डेन हतो व्यापा
 दितः । वर्त्तककथामपि कथयामि एकदा भगवतो ग
 रुडस्य यात्राप्रसङ्गेन सर्वे पक्षिणः समुद्रतीरं गताः
 ततः काकेन सह वर्त्तकश्चलितः अथ गोपालस्य गच्छतो
 दधिभाण्डाद्वारं वारं तेन काकेन दधि लायते ततो याव
 दसौ दधिभाण्डं भूमौ निधाय ऊर्द्धमवलोकते ताव
 त্তेन काकवर्त्तकौ दृष्टौ । *


তাঁহাতে কিঞ্চিৎ কালের পর তাঁহার মুখহইতে বৃক্ষচ্ছায়া
 গেল । তদনন্তর সূর্য্যাকিরণব্যাগ্ত তাঁহার মুখ দেখিয়া ঐ
 বৃক্ষস্থিত হংস দয়াহেতুক পক্ষদ্বয় বিস্তার করিয়া পুনর্বার
 তাঁহার মুখেতে ছায়া করিল তাঁহার পর সে অতিশয় নিদ্রা
 গেল মুখেতে মুখ ব্যাধান করিল অনন্তর স্বভাব দুর্জনতা
 হেতুক পরমুখামহনশীল ঐ কাক তাঁহার মুখেতে বিষ্ঠা ত্যাগ
 করিয়া পলাইল তৎপরে যখন ঐ পক্ষিক উঠিয়া উচ্চেতে
 অবলোকন করিল তখন তৎকর্তৃক সে হংস নিরীক্ষিত

हईया बाणकरणक बद्ध हईया विनाशित हईल बर्तकैर कथा
 कहि । एकदिवस भगवान् गङ्गदेर यात्रापुसङ्गते सकल
 पाकिरा समुद्र तीरे गेल तदनन्तर काकेर सङ्गते बर्तक
 चलिल । ताहार पर याईतेहिन ये गोप ताहार दधि भाङ्ग
 हईते पुनः२ সেই काक दधि खाईते नागिना अनन्तर यখন
 ऐ गोपाल दधिभाङ्गके भूमিতে রাখिया উদ্বেते निरीक्षण
 करिल तখন ताहाकर्तृक काक ও বর্তক অবলোকিত হইল

A few minutes after, the shade of the tree passed away from his face, and presently it was covered by the scorching rays of the sun; upon seeing which, the goose, who was in the tree, expanded his wings, and again a shadow was formed as before. A little while after, in the enjoyment of a sound nap, the man happening to open his mouth, the crow dropped his excrement into it, and flew out of the way. But the man waking, and seeing the goose upon the tree, concluded that it was he; so, being in a passion, he took his bow, and with an arrow drawn home to his ear, shot him dead upon the spot. I say, therefore, *It is not proper to stay, &c.* I will now relate the history of the Varttaka, continued the parrot.

FABLE VI.

ONCE upon a time all the birds of the air went in a body upon a pilgrimage to the sea side in honour of Garuda; and amongst the rest, the crow went accompanied by a Varttaka. As they flew along, the crow repeatedly stole and ate of some curds out of a pot which a farmer was carrying upon his head; but as soon as the man put the pot upon the ground, and saw the crow and the Varttaka together in the air,

ততস্তেন। খেদিতঃ কাকঃ পলায়িতঃ বর্জকঃ স্বভাব
 নিরপরাধো মন্দগতিস্তেন প্রাপ্তো ব্যাধিতঃ অতোচ্চং
 ব্রবীমি ন স্খ্যাতব্যং ন গন্তব্যমিত্যাदि। ততো ময়োক্তা
 ভ্রাতঃ শুকঃ কিমেবং ব্রবীষি মাং প্রতি যথা অমদেবস্তথা
 ভবানপি। শূকেনোক্তং অস্ত্যেবং ॥ কিञ्চ ॥ দুর্জনৈরুচ্যমা
 নানি সম্মতানি প্রিঘাণ্যপি। অকালকুসুমानीব ময়ং
 সঞ্জয়ন্তি হি ॥ দুর্জনত্বञ्চ ভবতো বাক্যা দেব জ্ঞাতং
 যদনयो ভূপালয়োर्वিग्रहे भवद्वचनमेव निदानं। पश्य।
 प्रत्यक्षेपि कृते दोषे मूर्खः शान्तेन तुष्यति। रथकारो नि
 जां भार्यां सजारां शिरसा करोत् ॥ राज्ञोक्तं कथमे
 तत्। शुकः कथयति अस्ति दौवनश्रीनगरे मन्दमति
 नाम रथकारः स च स्वभार्यां बन्धकीं जानाति जारेण
 समं स्वच्छक्षुषा नैकस्थाने पश्यति। **

তদনন্তর তাহাকর্তৃক দূরীকৃত হইয়া কাক পলাইল
 নিরপরাধী স্বভাবতো মন্দগতি তাহা কর্তৃক পাপ
 হইয়া ব্যাধিত হইল। এই নিমিত্তে আমি বলি
 দৃষ্টলোকের সহিত থাকিবে না ইত্যাদি। তাহার পর
 আমি বলিলাম ভ্রাতা শুক এ কি বলিতেছে আমার
 পুতি শ্রীযুক্ত মহারাজ যে রূপ আপনি ও সে রূপ শুক
 কহিল এই বটে কিন্তু দুর্জনকর্তৃক পুিয় অথচ সম্মতকথিত
 হইলে ও অকাল পুষ্পের ন্যায় ভয় জন্যায় আপনকার

বচনেতেই দুর্জনত্ব অবগত করিয়াছে যে এই দুই রাজার
সংগামেতে আপনকার বাক্যই কারণ দেখ সাক্ষাৎ
অপরাধ করিলে ও মূর্থ সাল্লানাতে তুষ্ট হয় কেননা উপপ
তির সহিত আপন জায়াকে রথকার মস্তকেতে করিয়া
ছিল। রাজা জিজ্ঞাসিলেন এ কি পুরকার শুক বলিতেছে।
যৌবনশুনীগরে মন্দমতি নামে রথকার থাকে সে আপন
পত্নীকে দূষরিত্রা করিয়া জানে কিন্তু উপপতির সহিত
একস্থানে নিজচক্ষুতে কখন দেখে না।

the former, being guilty, flew out of the way; but the
latter, being but slow of flight, was caught and instantly
killed. I say, therefore,—*It is not proper either to stay,
or to go &c.*

I then said,—Brother parrot, what is the reason thou
railest thus against me? I esteem thee, nevertheless, as
the feet of his highness! Be it so, replied the parrot, but,

When sincere and beloved friends are counted by those
of bad character, it createth in me as much dread, as
the sight of flowers out of season.

Thy being a rascal is made evident to me from thy
conversation; for if there should be any falling out be-
tween our two masters, thy tongue will be the cause,

Observe:

*A fool will rejoice and be happy, even when offences
are committed before his eyes. A certain wheelwright
put his own wife with her gallant upon his head.*

How was that? said the king and the parrot related
the following story:

FABLE VII.

IN Sri-nagara there lived a wheelwright, whose name
was Dull-wit; who, though he believed his wife was
false to his bed, had never, with his own eyes, seen her
with her gallant.

ততোঽসৌ রথকারোঽহমন্যং গ্রামং গচ্ছামীত্যুক্তা
 চলিতঃ কিঞ্চদূরং গত্বা পুনরাগত্য পর্য্যঙ্কে স্বগৃহে
 নিবৃত্তং স্থিতঃ অথ রথকারোগ্রামান্তরং গত্বত্যুপজাত
 বিশ্বাসঃ স জারঃ সন্ধ্যাকালং বাগতঃ পশ্চাত্তেন
 সমং তस्याং পর্য্যঙ্কে ক্রীডন্তী পর্য্যঙ্কতলস্থিতস্য ভর্গুঃ
 কিञ্চিদঙ্গস্পর্শাৎ স্বামিনং মায়াবিনমিতি বিজ্ঞায
 বিপক্ষাভবৎ ততোজারেণোক্তং কিমিতি ত্বমद्य ময়া সঙ্ঘ
 নির্ভরং ন রমসে বিস্মিতেব প্রতিभासि মে ত্বং । তথোক্তা
 অনभिज्ञোঁসোঁ মম প্রাণেশ্বরোঁযেঁন মমাকৌমারং সখ্যং
 সোঁঽয়গ্রামান্তরং গতঃ তেন বিনা সকলজনপূর্ণেঁ ঽপি গ্রামে
 মাং প্রতি অরণ্যবৎ भाति কিং भावि তच्च পরস্থানে কিং
 খাদিতবান্ কথং বা প্রসুপ্তঃ ইত্যস্মদ্বৃদ্যং বিদীৰ্য্যতে ।

তার পর ঐ রথকার আনি অন্য গ্রামে গমন করি ইহা কহি
 য়া চলিল কিছু দূর গিয়া পুনশ্চ আসিয়া পর্যাঙ্কতলে নিজগৃহে
 পুচ্ছন্ন হইয়া থাকিল । অনন্তর রথকার গ্রামান্তরে গিয়াছে
 ইহাতে সেই জার জাত পুতায় হইয়া সায়ং কালেতেই আইল
 অনন্তর তাহার সহিত সেই খড়্গাতে ক্রীড়া করত পর্যাঙ্ক
 তলস্থিত স্বামির কিঞ্চিৎ অঙ্গস্পর্শেতে স্বামিকে কণটী
 জালিয়া বিষণ্ণ হইল তাহার পর উপগতি কহিল কেন
 তুমি অদ্য আমার সহিত গাঢ়রমণ করিতেছ না তুমি
 আমার নশকে বিম্বিতার নায়^১ পুতিভা পাইতেছ ।

নে কহিল ও ছে মূর্খ সে আমার প্রাণনাথ তাঁহার সহিত
আমার বাল্যাবধি বন্ধুত্ব। তিনি আজি গ্রামান্তরে গিয়া
ছেন তাঁহার ব্যতিরেকে সমস্ত মনুষ্যেতে গ্রাম পূর্ণ থাকিলে
ও আমার পুতি কাননতুল্য পুকাশ পাইতেছে কি হইবে
তিনি পরস্থানে কি ভ্রমণ করিয়াছেন কি পুকারে বা শয়ন
করিতেছেন এই নিমিত্তে আমার হৃদয় বিদীর্ণ হইতেছে।

So he pretended that he was going out of town, but after he had gone a little way, he returned home, and privately hid himself under the bed. In the mean time, the gallant, supposing the wheelwright was actually gone out of town, made his appearance, and, soon after, the wife retired with her lover to the same bed; where they began to converse without restraint. But just now, from the feel of something touching the under part of the bed, she concluded that her husband was beneath, and so was a little disconcerted; upon which her gallant said,—What is the reason thou dost not enjoy the present moment free from care? Thou appearest as if thou wert alarmed at something! Alas! replied the artful woman, he who is the lord of my life is gone abroad to-day; wherefore the city, though ever so full of inhabitants, to me appeareth a mere desert! What is to be done! What has he eaten in a foreign place, and how is he now sleeping! Oh! How my heart throbs for these things!

જારોગ્રૂતે તવ કિમેવં સ્નેહમૂસીરથકારઃ વન્ધવ્યવદતરે
 વર્ધર કિમ્બદસિ। ષ્ઠણુ । પરુષાણ્યપિ યા પ્રોક્તા દૃષ્ટાયા
 ક્રોધચત્તુષા। સુપ્રસન્નમુલો ભર્તુઃ સા નારી ધર્મભાગિની॥
 અપરશ્ચ ॥ નગરસ્થો વનસ્થો વા પાપો વા યદિ વા શુદ્ધિઃ ।
 યાસાં સ્ત્રીણાં પ્રિયો ભર્ત્તા તાસાં લોકામહોદયાઃ ॥
 અન્યચ્ચાભર્ત્તા હિ પરમં માર્યાભૂષણં ભૂષણૈર્વિના। યથા
 વિરહિતા તેન શોભનાપિ ન શોભના। ત્વં જારઃ પાપમતિ
 મનોલૌલ્યાત્ પુષ્પતામ્બૂલસદૃશઃ કદાચિત્ સેવ્યસે કદા
 ચિન્ન સેવ્યસે ચ સચ સ્વામી માં વિક્રેતું દેવેભ્યો બ્રાહ્મણે
 ભ્યોપિ દાતુમોશ્ચરઃ કિં વઙ્ગના તસ્મિન્ જીવતિ જીવામિ
 તન્મરણં ચાનુમરણં કરિષ્યામિ ઇતિ પ્રતિજ્ઞા વર્ત્તતે ॥

જાર કહિતેહે તોમાર કિ એપુકાર સુહૃદ્જ્ઞાન રથકાર ।
 વન્ધકી વનિલ અરે વર્ધર કિ વનિતેહિમ શુન શ્રામિકત્ક
 યે સ્ત્રી નિઠૂરવાકા ઓ કથિત હય ઓ કોપચક્ષુતે દૃષ્ટ હય
 મે સુપ્રસન્નમુલો સ્ત્રી ભર્તાર ધર્મભાગિની હય । અપર નગરહૈ
 વા હૈક વનહૈ વા હૈક અપવિદ્હૈ વા હૈક પવિદ્હૈવા
 હૈક શ્રામિયે સ્ત્રીલોકેરદિગેર પ્રિય હય મેહૈ સ્ત્રીલોકેર
 દિગેર ઉત્તમ સર્ગ હય । અપર નારી જનર અલક્ષ્યવાતિરે
 કે ઓ શ્રામી ઉત્તમ અલક્ષ્ય ભત્કત્ક વિરહિતાયે નારી

সে শোভিতা হইয়া ও শোভিতা নয় । তুমি উপপতিপাপ
নতিঅন্তঃ করণের চাক্ষুশ্য পুযুক্ত পুণ্ডিতাধ্বনের ন্যায় কদা
চিৎ সেবা হওকদাচিৎ সেবা না হওতিনি ভক্তা আমার
বিক্রয় করিতেও দেবতাকে ও ব্রাহ্মণকে দিতে পুভু হন কি
বিস্তার কহিব তিনি বাচিলে বাঁচি তাঁহার মরণ হইলে
অনুমরণ করিব এই পুতিজ্ঞা আছে ॥

Then is thy wheelwright, said the gallant, a subject
worthy of all this tenderness? he who calls thee whore,
and strumpet? Villain! exclaimed she, what is this thou
sayest? Hear me!

She is a virtuous woman, who, when spoken harshly
to, and viewed with angry eyes, appeareth before her
husband with a mild and placid countenance.

The regions of eternal happiness are provided for those
women, who love their husbands the same in a wilder-
ness, as in a city; be he a saint, or be he a sinner.

A husband is a woman's first ornament, although him-
self be unadorned; but when she is without one, be she
ornamented, she is not adorned.

Thou art very fine, to be sure, and hast the appearance
of a figure made up of garlands and flowers, Pray do
people ever worship thee? My husband, if he chooses,
can sell me to the gods, or give me to the Brāhmans;
but what of that?

I live in him living, and in him, my beloved, will I
live when dead; for upon his death, to die after him is
my firm resolve.

যতঃ ॥ তিস্রঃ কোর্ধ্যঃ কোটী চ যানি সৌমানি
 জানিষে । তাবৎ কালং বসেৎ স্বর্গে ভর্ত্তারং যাঃনগচ্ছতি ॥
 অন্তঃ ॥ অ্যালয়াহী যথা অ্যালং বলাদুদ্বরতে বিলাত্ ।
 তদ্বভর্ত্তারমাदाय स्वर्गलोके महीयते ॥ অপরঃ ॥
 চিতো পরিষ্রজ্য বিচেতনে পতিং । প্রিয়া হি যা মুञ্চতি
 দেহমাत्मनঃ। কৃৎবাপি प्रापं शतसंख्यमप्यहৌ पतिं महीत्वा
 सुरलोकमाप्नुयात् ॥ এতৎ সর্বং শুভা স রথকারোঃ বদত্
 ধন্যোঃ হং यस्यে दृशी प्रियवादिनी स्वामिवत्सला भार्य्येति
 मनसि निधाय तां खट्वां स्त्रीपुरुषसहितां मूर्ध्नि कृत्वा
 शानन्दं ननर्त्त अतोऽहं ब्रवीमि प्रत्यक्षेपि कृते दोषइ
 त्यादि । ততোহং তেন রাজা যথা व्यवहारं संपूज्य प्रस्था
 पितः शुकोपि मम पश्चादागच्छन्नास्ते एतत् सर्वं परि
 ज्ञाय यथा कर्त्तव्यमनुसन्धीयतां । * * * *

যেহেতুক মনুষ্যশরীরে সাক্ষাৎ তিন কোটি লোম আছে
 যে স্ত্রী স্বামির সহিত সহবাস করিবে সে স্ত্রী তাবৎকাল
 স্বর্গেতে বাস করিবে । এবং সাধুভিত্তি যেমন গর্ভ হইতে
 সপর্কে উদ্ধার করে সেইরূপ পতিকে উদ্ধার করিয়া লইয়া
 স্বর্গেতে যায় । অপর যে পুত্রস্ত্রী চিত্তে মৃত পতিকে আলি
 লন করিয়া আপনার শরীরকে ত্যাগ করে শতসংখ্য ও পাপ
 করিয়া এই স্ত্রী স্বামিকে গ্রহণ করিয়া দেবলোকে গমন করে ।
 এই সকল শুনিয়া রথকার বলিল আনি ধন্য যাহার এত

কুশা পুত্রভাষিণী আমি বৎসলা পত্নী ইহা অন্তঃকরণে ক
রিয়া জী পুরুষ সহিত সেই খট্টাকে মস্তকে করিয়া আত্ম
দেতে নৃত্য করিল । এই নিমিত্তে আমি বলি সাক্ষাৎ ও
অপরাধ করিলে ইত্যাদি । তাহার পর সেই রাজা ব্যব
হারানুসারে আমাকে সন্মান করিয়া বিদায় করিলেন শুক
ও আমার পশ্চাৎ আসিতেছে এই সকল জানিয়া যাহা
কর্তব্য তাহা অনুসন্ধান কর ।

For,

The woman who followeth her husband may remain in
heaven for a million and a half of years, or for as many
as there are hairs upon the body.

As the snake-catcher by force draweth up the serpent
from its hole; so, having taken her husband, she is to
be raised into heaven.

Him should she attend whilst living, and him should
she sleep with when dead, to whom her father may have
given her, or her brother according to her father's will.

The foolish wheelwright, upon hearing all these fine
speeches, said to himself,—O what a lucky fellow I am,
to possess a wife who can speak of me with such tender
love and affection! and, saying this, he rose with the
bed and its contents, and began to dance for joy. I re-
peat therefore,—*A fool &c.*

After this, continued the booby, as soon as the king
had paid me the usual compliments, I was dismissed,
and the parrot is coming behind. And now that I have
apprized your highness of all this, let that which is most
proper be pursued.

অজ্ঞানবাক্যবিহীতস্যাহ দেব বকেন তাবদেয়ান্তরমপি
 নান্যথা শক্তি রাজকার্য্যমনুষ্ঠিতং কিন্তু দেবস্বभाव
 'যমূর্খাণাং' ॥ যতঃ ॥ যতং দৃষ্টান্ন বিবদেদিতি বিজ্ঞস্য
 সম্মতং । বিনা হেতুমপি ইদংমেতন্মূখস্য লক্ষণং ॥ রাজাহ
 কিমতীতোপাস্তম্ভনে প্রস্তুতমনসম্বীযতাং । চক্রোব্রুতে
 দেব বিজনে ব্রবীমি ॥ যতঃ ॥ বর্ণাকারপ্রতিধ্বানৈর্নববক্ত
 বিকারতঃ । অযুহন্তি মনোধীরাস্তস্মাদ্রহসি মস্রযেতং ॥
 অন্যচ্চ ॥ আকারৈরিঙ্গিতৈর্গত্যা চেष्टয়া ভাষণেন চ। নেত্র
 বক্তাবিকারাভ্যাং জ্ঞায়তেঃস্তুর্গতং মনঃ ॥ রাজা মন্দী চ তত্র
 স্থিতঃ অন্যে অন্যত্র গতাঃ চক্রোব্রুতে দেবাহমেবং জানামি
 কস্যাপ্যস্মান্নিয়োগিনঃ প্রেরণায় বকেনেদমনুষ্ঠিতং ॥

চক্রবাক হাম্য করিয়া কহিলেন হে মহারাজ বক দেশান্তর
 গিয়া জানর্থানুসারে রাজকার্য্য অনুষ্ঠান করিয়াছে কিন্তু হে
 ভূপালমূর্খেরদের এইস্বভাব যেহেতুক শতও দিবেক তথাপি
 বিবাদ করিবেক না ইহা পণ্ডিতের সম্মত কারণ ব্যতিরেকে
 ও যুক্ত ইহা মূর্খের লক্ষণ । রাজা কহিলেন অতীতের অ
 নুভবেতে কি পুয়োজন উপস্থিত অনুসন্ধান কর । চক্র
 বাক বলিতেছে হে মহারাজ নির্জনে বলিব যেহেতুক বর্ণ
 দ্বারা আকার দ্বারা পুতিধ্বনিদ্বারা চক্রবিকারদ্বারামুখবিকার
 দ্বারা পণ্ডিতেরা মানস তর্ক করে সেইহেতুক নির্জনে মন্ত্রণা

করিবেক অপরআকারদ্বারা ইজিতদ্বারা গমনদ্বারা চেটা দ্বারা
বাক্যদ্বারা চক্ষুর বিকারদ্বারা মুখের বিকারদ্বারা অন্তরস্থিত
মন জ্ঞাত হয় । রাজা ও মন্ত্রী সে স্থানে থাকিলে ন অন্য
লোকেরা স্থানান্তরে গেল চক্রবাক বলিতেছে হে মাহরাজ
আমি এইরূপ বুঝিতেছি আমাদের কোন নিয়োগি লো
কের পুরণের নিমিত্তে বক এই অনুষ্ঠান করিয়াছে ॥

What! exclaimed the minister Chakra-vāka, the king's affairs have been forwarded, to the utmost of his abilities, by a booby, who happened to travel into a foreign country! But, please your highness, he has acted according to his nature.

One may give him a hundred instances from holy writ, that he should not dispute; still, it is the character of a fool to make a disturbance without a cause.

Have done with these reproachful sayings! said the royal goose, and attend to what has been reported. Please your highness, replied the minister, I speak to you in private; for,

Those who are aware of it can interpret the mind from the changes of the eyes and other members; and even by the report of shape and complexion.

And upon this, the rest withdrawing, the king and his minister were left by themselves, I think, said the minister, that this has been brought about by a spy sent by some officer of our government. They say,

যতঃ ॥ বৈদ্যানামাতুরঃ শ্রেয়ান্ অসনীমৌনি
 যোগিনীং । বিদুষাং জীবনং মূল্যঃ সদ্বর্ণোজীবনংসতাং ॥
 রাজাব্রবীত্ । ভবতু কারণমত্র পঞ্চান্নিরূপণীয়ং
 সম্প্রতি যত্ কৰ্ত্তব্যং তন্নিরূপ্যতাং । চকবা কোব্রূতে দেব
 শ্রুণুধি স্তাবত্ প্রহীযতাং । ততস্তদনুষ্ঠানং বলাবলজ্ঞ
 জানীমঃ ॥ তথা হি ॥ ভবেত্ স্বপরাধ্রাণাং কার্য্যা
 কার্য্যাবলোকনে । চারচতুর্মহোভৰ্ত্তুর্যস্য নাস্তগম্যএব
 সঃ ॥ সচ দ্বিতীয়ং বিশ্বাসপাত্ৰং গৃহীত্বা যাতু তেমাশৌ
 স্বয়ং তত্রাবস্থায দ্বিতীয়ং তত্রৈত্ মস্বকাৰ্য্যং সুনিশ্চিতং
 নিশ্চিত্য নিগদ্য প্রস্থাপয়তি ॥ তথা চোক্তাং ॥ তীৰ্থাশ্রমে
 সুরস্থানং শাস্ত্রবিজ্ঞানহেতুনা । তপস্বিব্যজ্ঞনোপেতৈঃ স্বচ
 রৈঃসহ সম্বদেত্ ॥ গূঢ়চারস্ব যোজলে স্যলৌ চরতি ততো
 সাবয় বকোনিযুজ্যতাং । *❀*❀*❀*❀*

যেহেতুর্ক চিকিৎসকেরদিগের রোগাই মঙ্গল অধিকারি
 রাজারদের বাসনি ব্যক্তিই মঙ্গল পণ্ডিতেরদের মূর্থই জীবন
 জ্ঞান্নাকেরদিগের উত্তম জাতিই জীবনরাজ। বলিভেন হউক
 ইহা পশ্চাৎ নির্ণয় করা যাইবে ইমানী যাহা কৰ্ত্তব্য তাহা
 নিকাপণ কর । চক্রবাক বলিতেছে হে মহারাজ দূত পুস্থান
 ককক তবে অনুষ্ঠান এবং বলাবল জানিব নিজদেশের
 ও পরদেশের কার্য্যাকার্য্যের দর্শনেতে পৃথিবী পতির দূতই

চক্ষুহীন যাহার চর নাই সে অন্ধই। সে দ্বিতীয় বিশ্বস্ত লোককে
নইয়া যাউক তাহার সহিত ও দূত আপনি সেস্থানে অবস্থান
করিয়া দ্বিতীয় মনুষ্যকে সে স্থানের মন্ত্রণা ও নির্জনস্থান
নিরূপণ করিয়া কহিয়া পাঠাউক বিজ্ঞেরা কহিয়াছেন তীর্থ
স্থানেতে এবং দেবস্থানেতে শাস্ত্রজ্ঞানহেতুক তপস্বিচিহ্নেতে
চিহ্নিত স্বকীয় দূতদ্বারা সমস্ত জ্ঞাত হইবে যে জলে ও স্থলে
চরে সেই গুঢ় চার সেই হেতুক এই বককেই নিয়োগ কর।

A sick man is the best subject for a physician, and an active emissary for the officers of government, fools are the support of the learned, and a man of secrecy suits a king.

Let the cause alone, said the king; at present it should be determined what ought to be done; then say! First, please your highness, replied the minister, let a spy be sent, and then we shall learn the situation of the country, with its strength and weakness; for they say,

A prince should have a spy to observe what is necessary, and what is unnecessary, to be done in his own, as well as in his enemy's country. He is the king's eye; and he who hath him not is blind.

And let him take a second person with him, in whom he can confide; whom he shall send back, well disguised, charged with such secrets as are worthy to be communicated; whilst he himself remains upon the spot.

He should command his emissaries to go disguised in company with those penitents, who travel with beards under pretence of studying in the courts of temples, and places of holy visitation.

The emissary we send should be one who will go about privately, and who will pass through land and water,

স্বতঃসিদ্ধিঃ এব কস্বিদ্ধকো দ্বিতীয়ত্বেন প্রযাতু তদ্বৎ
 সৌক্যাস্থ রাজদ্বারে তিষ্ঠন্তু কিন্তু দেব এতদপি সুগুপ্ত
 মনুষ্যাতব্যং ॥ যতঃ ॥ ষট্‌কর্ণোভিযতে মদ্বস্তথা
 প্রাপ্তস্য বার্তনয়া । ইত্যাत्मনা দ্বিতীয়েন মদ্বঃ কার্যী
 মহৌধ্যতা ॥ পশ্য । মদ্বভেদেপি যে দোষাভবন্তি
 পৃথিবীপতে । ন শক্যাস্তে সমাধাতুমিতি নীতিবিদাং
 মতং ॥ রাজা বিমৃষ্যোবাচ প্রাপ্তস্তাবন্ময়োত্তমঃ প্রাণি
 ধিঃ । মদ্বী ব্রূতে তদা সংগ্রামবিজয়োঽপি প্রাপ্তঃ অন্তরে
 প্রতীহারঃ প্রবিশ্য প্রাণম্যোবাচ দেব জম্বুদ্বীপাদাগতো
 দ্বারি শুকস্টিষ্ঠতি । রাজা চক্রবাকমালোক্যে ।
 চক্রবাকোণোক্তং তাবদ্বত্বাবাসে তিষ্ঠতু পশ্চাদানীয দ্রষ্ট
 ব্যঃ প্রতিহারস্তমাवासस्थानं नीत्वा गतः । राजाह

এইকণ দ্বিতীয় কোন বক যাউক তাহার গৃহের লোকেরা
 রাজদ্বারে থাকক কিন্তু হে রাজাধিরাজ ইহা ও অত্যন্ত
 গোপনে কর্ভব্য যে হেতুক মন্ত্রণা ষট্‌কর্ণ হইলে ভিন্ন হয়
 আর বার্তা পুাপ্ত হইলে ভিন্ন হয় এই নিমিত্তে রাজা
 আপনি দ্বিতীয় মন্ত্রির সহিত মন্ত্রণা করিবেক দেখে নৃপ
 তি মন্ত্রভেদ হইলে যে দোষ হয় তাহা সন্নাধান করিতে শক্য
 হয় না নীতিজ্ঞেরদিগের মত এই রাজা বিবেচনা করিয়া
 কহিলেন আমি উত্তম চর পাইয়াছি । মন্ত্রী বলিতেছে
 তবে যুদ্ধেতে জয় ও পাইলা ইত্যবসরে দ্বারী পুবেশ করিয়া

পুণাম করিয়া বসিল হে মহারাজ জম্বুদ্বীপহইতে শুক আসিয়া দ্বারেতে আছে । রাজা চক্রবাককে অবজ্ঞাকন করিলেন চক্রবাক কহিল আবাসেতে গিয়া থাকুন পশ্চাৎ আনিয়া দেখা যাইবেক দ্বাররক্ষক তাহাকে আবাসস্থানে লইয়া গেল রাজা কহিলেন ।

and I know of no one, except the booby, who is endued with these requisites; wherefore, let him be appointed. In the mean time, let all the inhabitants keep within our castle, and, till the messenger return, let profound secrecy be pursued; for

The deliberations of council are discovered if heard by six ears, as well as any private information; wherefore, a king should entrust his counsels only to himself and a second person.

The injury which is done to princes, from their counsel's being discovered, are not to be repaired, say those who are acquainted with the rules of policy.

Well, said the king, now I have found such an excellent emissary, what next?—Your highness, replied the minister, hath but to enter the field of battle, and victory will follow.

They were now interrupted by the entrance of one of the guards, who informed them, that there was a parrot waiting at the gate, just come from Jambū-dwipa. The king looked at the minister, and the minister said, Lead him into a separate apartment, and sometime hence he may be admitted. According to the commands of his highness! said the guard; upon which he went away, taking the parrot with him.

বিগ্রহস্থাপনং সমুপস্থিতশ্চকোব্রূতে দেব প্রাগেব বিগ্রহো
 ন বিধিঃ ॥ যতঃ ॥ স কিং মৃত্যুঃ স কিং মম্বী যচ্ছাদাবেব
 ভূপতিং । যুদ্বৈয়োগং স্বভূত্যাগং নির্দিশত্যবিচারিতং ॥
 অপরশ্চ ॥ বিজিতুং প্রযতে চারীন্ন যুদ্ধেন কদাচন ।
 অতিল্যোবিজযোযস্বাদৃশ্যতে যুদ্ধমানযোঃ ॥ অন্যশ্চ ॥
 সাম্রা দানেন ভেদেন সামস্তৈরথবা পৃথক্ । সাধিতুং
 প্রযতে চারীন্ন যুদ্ধেন কদাচন ॥ অপরশ্চ ॥ সর্ব্বেব জনঃ
 শূরোহ্যনাঙ্গাদিতবিগ্রহঃ । অদৃষ্টপরসামর্থ্যঃ সর্দর্পঃ
 কোমবেন্ন হি ॥ কিঞ্চ ॥ ন তথোত্যাপ্যতে গ্রাণা প্রাণিভি
 হীরাণ্যৈ যথা অল্যোপায়ান্মহাসিদ্ধিরেতন্মদ্রফলং মহত্
 কিন্তু বিগ্রহমুপস্থিতং বিলোক্য অবক্রীযতাং ॥ যতঃ ॥

সংগ্রাম উপস্থিত চক্রবাক বলিতেছে যে মহারাজ পুথ
 মেতে যুদ্ধ কর্তব্য নয় যেহেতুক সে কি দান আর সে কি
 মম্বী যে অগ্নিতেই নৃপাতিকে বিচার না করিয়া রণের
 উদ্যম করিতে এবং স্বকীয় জ্ঞান ত্যাগ করিতে পরামর্শ
 দেয় । অপর বিপক্ষকে জয় করিবার নিমিত্তে সামাদি দ্বারা
 যত্ন করিবেক সংগ্রাম দ্বারা কদাচ করিবে না যেহেতুক
 যুদ্ধমান দুই জনের মধ্যে কাহার জয় ইহা নিশ্চয় জানা
 যায় না অপর সাম দান ভেদ ইহার পুতোকে কিছা সমস্তে
 তে বিপক্ষকে সমাধান করিতে যত্ন করিবেক কদাচ যুদ্ধেতে
 করিবে না । অপর অকৃত যুদ্ধ সকল লোকই বীর কেননা

পরের শক্তি না দেখিয়া কে গর্হিত না হয় আর মনুষ্য
কর্তৃক যেমন কাঠ করণক পাষণ উত্থাপিত হয় তেমন
মনুষ্যকর্তৃক কাঠবাতিরেকে পুস্তর উত্থাপিত হয় না অল্প
উপায়েতে যে মহৎকার্য্য নিষ্পন্ন হয় ইহা মন্ত্রণার বড় কল
কিন্তু সংগ্ৰাম উপস্থিত দেখিয়া ব্যবহার কর যেহেতুক ।

So, said the king, discord is arrived, and is in attendance! Yes, please your highness, replied the minister; but discord is not necessity.

Is he a minister, or a counsellor, who, upon the first alarm, and without due consideration, adviseth his sovereign either to commence hostilities, or to quit his ground?

A wise man may strive to conquer, but he should never fight; because victory, it is observed, cannot be constant to both the combatants.

A prince should use each and every of these means, in order to obtain peace from the enemy: viz. submission, presents, or, sowing the seeds of dissension among his confederates; but he should never fight.

A man should never display his bravery who is unprepared for battle; nor bear the marks of defiance, until he hath experienced the abilities of his enemy.

Not more easily is a house supported by mankind with a prop, than great achievements from trifling means. This is the great fruit of councils.

But when we perceive that we are threatened with war, let preparations be made; for

অঘাকালকৃতোদ্যোগাৎ শ্রবিঃ ফলবতী ভবেৎ । তদ্রত্না
 তিরিখ্যং দেব চিরাৎ ফলতি রত্নায়াৎ ॥ অপরঞ্চ ॥
 মহতোদূরভীৰুত্বমাসন্নৈ শূরতা গুণঃ । বিপন্নৌ চ মহা
 স্ত্রীকৌর্ধীরতামনুগচ্ছতি ॥ অন্যঞ্চ ॥ প্রত्यूহঃ সৰ্ব্বসিদ্ধী
 নামুত্তাপঃপ্রথমঃকিলা অতিশীতলমপ্যম্মঃ কিং ভিনত্তি
 ন ভূমৃতঃ ॥ বিশেষতশ্চ মহাবলোসৌ চিত্রবর্ণেরাজা ॥
 যতঃ ॥ বলিনা সহ যোদ্ধব্যমিতি নাস্তি নিদর্শনং ।
 তদ্যুদ্বং হস্তিনা সার্দ্ধং নরাণাং মৃত্যুমাভবেৎ ॥ অন্যঞ্চ ॥
 স মূৰ্খঃ কালমপ্রাপ্য যোঽপকর্ত্তরি বর্ত্ততে । কলির্ধ্বল
 বতা সার্দ্ধং কৌটপস্তোদ্ধমোযথা ॥ কিঞ্চ ॥ কৌৰ্ম্ম
 সঙ্কোচমাখ্যায় ব্রহ্মারমপি বর্ণয়েৎ । প্রাপ্তকালে তু
 নোতিস্তুভক্তিষ্টেৎ কুরসপংবৎ ॥ *❀*❀*❀*❀

হে মহারাজ জন্মানুসারে উদ্যোগেতেই যেমন কৃষি ফল
 বতী হয় সেইরূপ রক্ষণ হেতুক এই নীতি চিরকালেতে
 কলে । অপর অনাসন্ন কার্যেতে বড় লোকের ভীকতা
 শুণ কার্য আসন্ন হইলে শৌর্য্যই শুণ আর সন্নৌ
 কেরা বিপত্তিতে ঐধ্যাবলম্বন করে অপর পুথনত উদ্ভা
 প নিশ্চয় সকল কার্যের বিষু কেননা অত্যন্ত শাতন
 জন কি পর্বতকে ভেদ করে না বিশেষে মহাবল ঐ
 চিত্রবর্ণরাজা যেহেতুক বলবানের সহিত যুদ্ধ করিবেক
 ইহা নিদর্শন নাই কেননা মনুষ্যেরদিগের হস্তি সহিত যে

যুদ্ধে সে মরণকে উপস্থিত করে । অপর সময় না পাইয়া বল
বান অপকারকে যে বর্ত্তে সে মূৰ্খ কেননা যেমন পিপীলিকা
দের পালকের উৎপত্তি এইরূপ বলিয় সহিত কলহ । আর
নীতিজ্ঞ ব্যক্তি কখন শরীরের ন্যায় সঙ্কোচ পাইয়া পুহার
কেও সহ্য করিবে সময়ানুসারে খল সপের ন্যায় উঠিবেক

The field is fruitful from having been cultivated in due season. It is the same with political measures; but these too advance slowly, not instantly, to maturity.

When the quality of bravery is near, a great man's terrors are at a distance. In the hour of misfortune such a great man overcometh bravery.

Great warmth, at first, is the certain ruin of every great achievement. Doth not water, although ever so cool, moisten the earth?

Besides, an' please your highness, king Chitra-varna is very strong; and,

There is no ordinance obliging us to fight those who are stronger than ourselves.—Such fighting, as it were, with an elephant, is the same as men's fighting against rocks.

He is a fool who turneth upon his opponent, before he hath found a proper opportunity. The efforts of him, who contendeth with one stronger than himself, are as feeble as the exertions of an insect's wings.

A prudent soldier, keeping within his tortoise-like shelter, may, indeed, sustain the force of arms; and when occasion may suit, he may sally forth like an enraged serpent.

মহত্যল্লেখ্যপাণ্ডুঃ সমমেব ভবেত্ ক্রমঃ । সমুন্মূল্যি
 তুং হৃদ্যান্ তৃণানীব নদীরয়ঃ ॥ অতস্তদুতাপ্যাস্বাস্থ্য
 তাবদ্বিত্যং যাবদুর্গঃ সজ্জীকৃত্যতে ॥ যতঃ ॥ একঃ শতং
 যোধয়তি প্রাকারস্থো ধনুর্ধরঃ । শতং শতসহস্রাণি তস্মা
 দুর্গং বিশিধ্যতে ॥ কিঞ্চ ॥ অদুর্গো বিধায়ঃ কস্য নারো পরি
 ভবাস্পদং । অদুর্গো নাশ্রয়ো রাজা পোতচ্যুতমनुধ্যবত্ ॥
 দুর্গং কুর্য্যান্মহাখাতমুচ্চপ্রাকারসংযুতং । সযত্নং সজলং
 শৈলসরিম্মরুবনাশ্রয়ং ॥ বিস্তীর্ণং চাতিবিধমং ধনধান্য
 রসান্বিতং । অপ্রবেশপ্রসারস্ব সন্নৈতা দুগসম্পদঃ ॥ স্বাম্য
 মাত্যসুহৃৎকোষোরাষ্ট্রদুর্গবলানি চ । পরসরোপকারী চ
 রাজ্যং সমাক্রমুচ্যতে ॥ দুর্গাধ্যক্ষো বলাধ্যক্ষো ধনাধ্যক্ষ
 ভূপতিঃ । দূতঃ পুরোধাদৈবজ্ঞো ভিষজো মন্ত্রিণো মতাঃ ॥ *

উপায়ভুক্ত ব্যক্তি বড় বিষয়েতে কিঞ্চিৎ অল্প বিষয়েতে সমানই
 ক্রম হয় যেমন নদীবৈগ তৃণ সকলকে উন্মূলন করে এই
 কাপ বৃক্ষ সকলকে ও উন্মূলন করে অতএব তাহার দূতকে
 ও আশ্বাস করিয়া তাবৎ পর্য্যন্ত রাখ যাবৎ পর্য্যন্ত দুর্গ
 সমজ্জ না হয় যেহেতুক প্রাকারস্থ ধনুর্ধর এক ব্যক্তি শত
 লোকের সহিত যুদ্ধ করে শতলোক লক্ষলোকের সহিত
 যুদ্ধ করে সেই হেতুক দুর্গ প্রশস্ত হয় । আর অদুর্গ দেশ
 কোন বৈরিকর্তৃক পরাভব স্থান না হয় নোকাচ্যুত মনু
 ষ্যের ন্যায় অদুর্গ রাজা আশ্রয় কর্তব্য নয় পর্বতনদী, মল্ল

ভূমি অরণ্য আশ্রয়েতে উচ্চপাকারযুক্ত অতিশয় খাত
সযজ্ঞ সজল দুর্গ করিবেক বিস্তীর্ণ অতিবিবম ও ধন ধান্য
লবণাদিযুক্ত ও পুবেশ নির্গমরহিত এই সাত দুর্গ সম্পত্তি
স্বামী অমাত্য সুহৃৎ কোষ রাষ্ট্র দুর্গ বল ইহারা পরস্পর
উপকারক সপ্তাঙ্গ রাজ্য হয় দুর্গাধ্যক্ষ বনাধ্যক্ষ ধনাধ্যক্ষ
রাজাদূত পুরোহিত দৈবজ্ঞ বৈদ্য ইহারা নক্সাকারক হয় ।

Please your highness, attend to this:

One who is master of ever so little art may be able, on a great occasion, to root up trees with as much ease, as the current of a river the reeds and grass.

Then let this ambassador, the parrot, be detained and amused, until we shall put our fortifications in good condition.

A single bowman standing upon the battlements fighteth a hundred, and a hundred ten thousand: wherefore, a castle is to be preferred.

What sovereign, whose country is furnished with strong holds, is subject to defeat? The prince of a country, without strong holds, is as a man who is fallen from his ship.

He should build a castle with a large ditch and lofty battlements, and furnish it with machines for raising water; and its situation should be in a wood upon a hill, and where there are springs of fresh water.

It should be spacious, but very uneven; and supplied with large store of liquor, grain, and money; and with gates and sallyports; for these are the seven treasures of a castle.

রাজাহ দুর্গানুসন্ধানেন কৌনিযুজ্যতাং । চকৌব্রুতে । যৌযজ
 কুশলঃ কার্য্যে তন্তত্র বিনিযোজযেত্ । কর্ম্মস্বদৃষ্টকর্ম্মা
 য় শাস্ত্রশোপি বিমুহ্যতি ॥ তদাহুযতাং সারসঃ তথা
 নুষ্ঠিতে সতি আগতং সারসমালোক্য রাজৌবাচ ভো
 সারস ত্বংসত্বরং দুর্গমনুসন্ধ্যেহি । সারসঃ প্রণম্যোবাচ
 দেব দুর্গং তাবদিদমেব চিরাত্ সুনিরূপিতমাস্তে মহত্
 সরঃ কিন্তত্র মধ্যবর্ত্তিহীপে দ্রব্যসংগৃহঃ কার্য্যতাং ॥ অতঃ ॥
 ধান্যানাং সংগৃহো রাজনুত্তমঃ সর্ব্বসংগৃহাত্ । নিলিঙ্গং হি
 মুখে রত্নং ন কুর্থাৎ প্রাণধারণং ॥ কিञ্চ ॥ ত্ব্যাতঃ সর্ব্বর
 সানাং হি লবণ্যারসউত্তমঃ ॥ গৃহীতञ্চ বিনা তেন ব্যভ্রনং
 গোমযাযতে ॥ রাজাহ সত্বরং গত্বা সর্ব্বমনুতিষ্ঠ যুনঃ প্রবি
 শ্য প্রতীহারোব্রুতে দেব সিংহলদ্বীপাদাগতো মেঘবর্ণো নাম
 বাঘসঃ সপরিবারোদ্বারি তিষ্ঠতি দেবপাদং দ্রষ্টুমিচ্ছতি ॥

রাজা বলিলেন দুর্গের অনুসন্ধানেন্তে কে নিযুক্ত হইবে চক্র
 বাক বলিতেছে যে কর্ম্মেতে যে দক্ষ সেই কর্ম্মেতে তাহাকে
 নিয়োগ করিবেক অদৃষ্টকর্ম্মা যে লোক সে শাস্ত্রজ্ঞ হইলে ও
 কর্ম্মবুধ হয় সেহেতুক সারসকে আহ্বান কর তাহা করিলে
 পর সারসকে আগত দেখিয়া রাজা বলিলেন ও হে সারস
 তুমি শাস্ত্র দুর্গের অনুসন্ধান কর সারস পুণাম করিয়া বলিল
 হে মহারাজ এই বৃহৎ সরোবরে অনেক কালদুর্গ নিরূপিত
 আছে কিন্তু এই মধ্যবর্ত্তি হীপে দ্রব্য সংগৃহ করুন যেহেতুক

হে মহারাজ সকল সংগৃহীত ধান্যের সংগৃহ উত্তম কেন না মুখেতে নিষ্কিঞ্চ রত্নযে জনসে ব্যক্তি জীবন ধারণ করিতে পারে না এবং সকল রসের মধ্যে লবণরস উত্তমরূপে খ্যাত তাহা ব্যতিরেকে বাঞ্ছন গোময়ের ন্যায় হয় ॥ রাজা কহিলেন স্বরাতে গিয়া সমস্ত অনুষ্ঠান কর । পুনর্বার পুবেশ করিয়া দ্বারা বলিতেছে হে রাজাধিরাজ সিংহলদ্বীপহইতে মেঘবর্ণ নামেকাক সপরিবারে আসিয়া দ্বারেতে আছে মহারাজার চরণ দেখিবার নিমিত্তে বাঞ্ছা করিতেছে ।

Who, demanded the king, should be appointed to prepare our castle? The minister replied,

Every one should be employed in that business he is best acquainted with. One who hath had no experience in civil affairs, although he may be a good soldier, would be at a loss in business of that kind.

Then let the Sārāsa be called, concluded the minister. This being done accordingly, and the Sārāsa arrived, the king gave him encouragement, and told him to put the castle in good order. The Sārāsa, bowing, replied, please your highness, the castle has lately been well examined. There is a large reservoir in it, in the centre there is an island, in which it is proper that there should be a store of grain laid up.

A store of grain, O king! is the best of stores. A gem cast into the mouth will not support life.

Of all sapid things, salt being esteemed the first, some should be laid in; for without it the beard is bedaubed.

Go then, said the king, and attend to what is necessary to be done. Just now a door-keeper came in, and said,—Please your highness, one cloud-colour, a crow, is just arrived from Singhala-dwipa, who, with his attendants, desires to behold the foot of your highness.

রাজাঃ কাকাঃ পুনঃ সর্বজ্ঞাবজ্ঞদৃষ্টারম্ । তদ্ববতি
 সংঘাত্যত্বনুবর্ততে । অকোব্রুতে দেব অস্ত্যেবং কিল্
 কাকঃ স্থলচরঃ তেনাস্তদ্বিপক্ষে নিযুক্তঃ কথং সংঘাত্যঃ
 তথা চোক্তং ॥ আত্মপক্ষং পরিত্যজ্য পরপক্ষেণু যোরতঃ
 স পরৈর্হন্যতে মূঢ়ো নীলবর্ণশৃগালবৎ ॥ রাজোবাচ কথ
 মেতৎ । মন্ত্রী কথয়তি অস্ত্যরণ্যে কক্ষিত্ শৃগালঃ
 স্তেচ্ছ্যা নগরোপান্তে শ্রাম্যন্ নীলীমাণ্ডে পতিতঃ পশ্চাত
 ততত্যাশ্রয়মসমর্থঃ প্রাতরাত্মানং মৃতবৎ সন্দর্শ্য স্থিতঃ
 অব নীলোমাণ্ডস্থামিনা মৃত ইতি জ্ঞাত্বা তস্মাত্ সমু
 ত্যায় দূরে গীত্বা অপসারিতস্তস্মাত্ পলায়িতঃ ততোঽসৌ
 যনং গত্বা স্বকীয়মাত্মানং নীলবর্ণমবলোক্য চিন্তয়ত।

রাজা বলিলেন কাকেরা নরঘাতক হয় এবং বহুদশী হয় অতএব
 সংগৃহ কর্তব্য ইহা বুঝিতেছি চক্রবাক বলিতেছে হে মহা
 রাজ এই বটে কিন্তু কাক স্থলচর সেই জন্যে আশ্রয়দিগের
 বিপক্ষেতে নিযুক্ত কি পুকারে সংগৃহ করা যায় । পিণ্ডেত্রা
 তাহা কহিয়াছেন যে লোক স্বপক্ষকে পরিত্যাগ করিয়া
 পরপক্ষেতে আসক্ত হয় সে মূর্থ নীলবর্ণশৃগালের ন্যায় পর
 কর্তৃক হত হয় রাজা কহিলেন এ কি পুকার মন্ত্রী কহিতেছে
 কোননেতে কোন শৃগাল থাকে সে আপন ইচ্ছাতে নগরোপা
 ন্তে ভ্রমণ করত নীলীমাণ্ডে পড়িল অনন্তর তাহাই হইতে উঠি

তে পারিল না পুভাত কালে আপনাকে মৃতের ন্যায় দেখা
ইয়া থাকিল । তাহার পর নীলী ভাণ্ডের স্বামী মৃত ইহা
জানিয়া তাহাহইতে উঠাইয়া দূরে লইয়া ফেলিল সে স্থান
হইতে জম্বুক পলাইল অনন্তর ঐ শৃগাল অরণ্যে গিয়া নিজ
শরীরকে নীলবর্ণ দেখিয়া চিন্তা করিল ।

A crow, said the king, is a wise bird, and a great ob-
server of things, and that being the case, let him be re-
ceived. He is so, replied the minister; but a crow is
a land bird, and consequently of a different party to us;
how then can he be received in contempt of our own
party? It is said,

*The fool who forsaketh his own party, and delighteth
to dwell with the opposite side, may be killed by them;
as was the case with the blue jackal.*

How was this? demanded the king; and the minister
related as follows:

FABLE VIII.

A certain jackal, as he was roaming about the borders
of a town, just as his inclinations led him, fell into a
vat of indigo; but being unable to get out, in the morn-
ing he feigned himself dead. The master of the vat
thinking that he was really dead, took him and out,
threw him at a distance. The sly animal instantly got up,
and ran into the woods; when, observing that his coat
was turned blue, he meditated in this manner:—

অহমিদানীমুত্তমবর্ণসদা হং স্বকীযোত্কার্ণং কিং ন স
 ধয়ামি ইত্যালোচ্য শৃগালানাহুং তেনোক্তং । অহং ভগ
 বত্যা বনদেবতয়া স্বহস্তেনারণ্যরাজ্যে সর্বৈষধিরসেনাভি
 বিকৃতঃ তদ্যারম্ভ্যারণ্যেঽসদাশ্রয়া ব্যবহারঃ কার্য্যঃ ।
 শৃগালাস্তু তং বিশিষ্টবর্ণমবলোক্য সাষ্টাঙ্গপাতং প্রণ
 ম্যোচুঃ যথাজ্ঞাপয়সে দেব ইত্যনেনৈব ক্রমেণ সর্বৈষ্মরণ্য
 ষাতিষ্মাধিপত্যং তস্য বমূব ততস্তেন স্বজ্ঞাতিভিরাবৃতেনা
 ধিক্যং সাধিতং ততস্তেন ব্যাঘ্রসিংহাদীনুত্তমপরিজনান্
 প্রাপ্য সদসি শৃগালানবলোক্য লজ্জমানেনাবজ্রয়া স্ব
 জ্ঞাতয়ঃ সর্বৈদুরীকৃতাঃ ততোবিষম্যান্ শৃগালানবলোক্য
 কেচনচিত্ পৃঙ্খশৃগালে নৈতৎ প্রতিজ্ঞাতং মাভিষীদত ।

আমি উত্তমবর্ণ হইয়াছি তবে আমি আপনাদি উৎকৃষ্ট
 তাকে কেন সাধন না করি এই আনোচনা করিয়া শৃগালে
 দিগকে আস্থান করিয়া সে কহিল । ভগবতী বনদেবতা
 কর্তৃক স্বহস্তদ্বারা সর্বোষধি করণক বন রাজ্যেতে আমি
 অভিষিক্ত হইয়াছি এই হেতুক আজি অবধি কাননেতে
 আমার আজ্ঞাতে কর্ম করিবে । শৃগালেরা তাহাকে উত্তম
 বর্ণ দেখিয়া অষ্টাঙ্গ পূজা করিয়া কহিল হে মহারাজ
 আপনি যে রূপ আজ্ঞা করেন এই পুকারে সমস্ত বনবাসি

পাশ্চাতে তাহার পুত্ৰ হইল অনন্তর সে স্বকীয় জাতিতে পরি-
বৃত্ত হইয়া মহত্ত্ব সাধন করিল তাহার পর সে ব্যাঘ্র সিংহাদি
উৎকৃষ্ট পরিজনকে পাইয়া সভাতে শূগালেরদিগকে দেখিয়া
লজ্জিত হইয়া সক্ষম জাতিতে অগমান করিয়া দূর করিল
তদনন্তর শূগালেরদিগকে বিমনা দেখিয়া কোন বৃক্ষ জম্বুক
এই পুতিজ্ঞা করিল তোমরা বিষয় হইও না।

I am now of the finest colour ! what great exaltation may I not bring about for myself? Saying this, he called a number of jackals together, and addressed them in the following words:—Know that I have lately been sprinkled king of the forest, by the hands of the goddess herself who presides over these woods, with a water drawn from a variety of choice herbs. Observe my colour, and hence forward let every business be transacted according to my orders. The rest of the jackals, seeing him of such a fine complexion, prostrated themselves before him, and said,—According as your highness commands! By this step he made himself honoured by his own relations, and so gained the supreme power over those of his own species, as well as all the other inhabitants of the forest. But after a while, finding himself surrounded by a levee of the first quality, such as the tiger and the like, he began to look down upon his relations; and, at length, he kept them at a distance. A certain old jackal perceiving that his brethren were very much cast down at this behaviour, cried,—Do not despair!

অদনেনানভিজ্ঞেন নীতিবিদোমস্ম্যজ্ঞা বচং স্বসমীপাত্
 ষরিভূতাঃ তদযথাঃ তদযথ্যতি তথা বিধেয়ং ততোঃ সমী ব্যাঘ্রা
 দযোবর্ণমাশ্রয়িপ্রলম্বাঃ শৃগালমজ্ঞাত্বা রাজানমিম
 মন্যন্তে । তদযথাঃ পরিচিতোভবতি তথা কুরুত তত্র
 চৈবমনুষ্টেয়ং যতঃ সর্বং সন্ধ্যাসময়ে সন্নিধানৈ মছারাব
 মেকদৈব করিষ্যত ততস্তং শব্দমাकर्ण্য জাতিস্বভাবা ত্তে
 নাপি শব্দঃ কৰ্ত্তব্যঃ ততস্তথানুষ্ঠিতে সতি তদ্বৃत्तং যতঃ যঃ
 স্বভাবোহি যস্যাস্তে স নিত্যং দুরতিক্রমঃ । অথ যদি কি
 যতে রাজা তত্ কি নাশ্চতুপানহং ॥ ততঃ শব্দাদভিজ্ঞায়
 স ব্যাঘ্রেণ হতঃ । তথা চোক্তাং । ছিদ্ৰং মৰ্ম্ম চ বীৰ্য্যঞ্চ
 সৰ্ব্বং বেত্তি নিজোরিপুঃ । দহত্যন্তর্গতশ্চৈব শুষ্কং বৃক্ষমিবা
 মল্লঃ ॥ অতোঃ হং ব্রবীমি আত্মপদং পরিত্যাগাদিত্যাदि ।

নীতিকর মৰ্ম্মবিৎ আগর। এই অনভিজ্ঞকর্তৃক যে পরাভূত
 হইয়াছি সেইহেতুক যে কাণে এনষ্ট হয় তাহা কর্তব্য এই
 ব্যাঘ্রপুষ্টিরা বর্ণ মাত্র দেখিয়া শৃগাল না জানিয়া ইহাকে
 রাজা করিয়া মানে । তবে এ যে কাণে পরিচিত হয় সেইকাণে
 কর তাহাতে এইপুকার কর্তব্য সকলে সায় কালে সমীপে
 তে এক কালে অতিশয় শব্দ করিবা তাহার পর সেই শব্দ
 শ্রবণ করিয়া জাতি স্বভাব হেতুক সেও রব করিবেক । অন
 স্তর সেই পুকার করিলে তাহা হইল যেহেতুক যাহার যে
 স্বভাব আছে সে সর্বদাই অপরিহার্য কেননা যদি অক্ষর রাজা

হয় তবে সে কি চৰ্মপাদুকা ভোজন করে না তাহার পর
শব্দেতে জ্ঞান করিয়া ব্যাঘ্র সে শৃগালকে নষ্ট করিল ।
বিজ্ঞরা তাহা কহিয়াছেন ছিদ্র ও মৰ্ম ও বল সমস্তই নিজ
বিপক্ষলোক জানে আর অগ্নি যেমন শুষ্ক বৃক্ষকে দাহ
করে এই রূপ অন্তঃকরণস্থ ব্যাপারকে দাহ করে অতএব
আনি বলি যে লোক স্বপক্ষকে ত্যাগ করিয়া ইত্যাদি ।

If it continue thus, this imprudent friend of ours will force us to be revenged. Let me alone to contrive his downfall. The lion, and the rest who pay him court, are taken by his outward appearance; and they obey him as their king, because they are not aware that he is nothing but a jackal. do something then by which he may be found out. Let this plan be pursued: assemble all of you in a body about the close of the evening, and set up one general howl in his hearing, and I'll warrant ye, the natural disposition of his species will incline him to join in the cry; for,

Whatever may be the natural propensity of any one, is very hard to be overcome. If a dog were made king, would he not gnaw his shoe starps?

And thus, the tiger discovering that he is nothing but a jackal, will presently put him to death. In short, concluded the minister, the plan was executed, and the event was just as it had been foretold. They say,

An intimate enemy is acquainted with every thing which relateth to one: our blemishes, our hearts, and our degree of courage. *

I repeat therefore, *The fool &c.*

দেবাজ্ঞাপয় হুনি দুঃ শূকং সর্বজ্ঞো রাজানং কাকঞ্চ
 শান্তিযন্ ব্রূতে শৃণু তাবৎ । ন সা সমাধিঃ ন সন্তি
 বৃদ্ধাবৃদ্ধান তে যে ন বদন্তি ধর্মী । ধর্ম্যঃ সনো যত্র ন সত্য
 সন্তি সত্যং ন তথ চ্ছলমশ্যুপেতি ॥ যতো ধর্ম্যশ্চৈষঃ ।
 দূতো ম্লেচ্ছো প্যবধ্যঃ স্যাৎ রাজা দূতমুখো যতঃ । উচ্যতে
 অপি শস্ত্রেণ দূতো বদতি নান্যথা ॥ কিঞ্চ ॥ স্বাপকর্ষং
 পরোক্তকর্ষং দূতো ক্তৈর্মন্যতে তু কঃ । রুদৈবাবধ্যভাবেন দূতঃ
 সর্বং হি জল্পতি ॥ ততো রাজা কাকঞ্চ স্বাং প্রকৃতিমা পন্ন
 শূকো প্যুত্থায় চলিতঃ পশ্চাচ্চ কবাকেনা নীয প্রবোধ্য
 কনকালঙ্কারাদিকং দত্ত্বা সপ্রেষিতো যযৌ শূকোপি
 বিণ্ধ্যা চল রাজানং প্রণতবান্ রাজো বাচ শূক কং বার্তা

হে নারাজ আজ্ঞা করণ দুষ্ট শূককে নষ্ট করি সর্বজ্ঞ
 রাজাকে এবং কাককে সন্তুষ্ট না করত বলিতেছে শুন যে
 সভাতে বৃদ্ধ নাই সে সভাই নয় যে বৃদ্ধেরা ধর্ম্য বলে
 না তাহার বৃদ্ধই নয় যে ধর্ম্মেতে সত্য নাই সে ধর্ম্ম নয়
 যে সভাতে ছল আছে সে সভা নয় যেহেতুক এই ধর্ম্ম
 ম্লেচ্ছদূত ও অবধ্য হয় যেহেতুক রাজা দূতমুখ অতএব
 শস্ত্র উন্মিত হইলে ও দূত অন্য পুকার বলে না আর কোন
 ব্যক্তি দূতের বাক্যেতে আপনাকে অবদন করিয়া ও পরকে
 উত্তম করিয়া মানে দূত সর্বদাই অবধ্যভাবেতে সমস্তই
 বলে । তাহার পর রাজা এবং কাক আপন স্বভাবকে গোহন

শুক ও উঠিয়া চলিল পশ্চাৎ চক্রবাককর্তৃক আনয়ন
করিয়া পুৰোধ করিয়া স্বর্গালঙ্কা রাতি দিয়া পুরিত হইয়া
গেল । শুক ও বিষ্ণাচলের রাজাকে পুণাম করিল ।
রাজা কহিলেন শুক বৃত্তান্ত কি ।

Give but the word, and I will kill this infamous parrot!
In the mean time, the minister, who was engaged in pa-
cifying the king, repeated these lines.

That is not council, wherein there are no sages; they are
not sages, who do not declare men's duty; that is not a
duty, in which there is not virtue; and that is not virtue
from which fear approacheth us.

The law speaks thus: but, moreover, this parrot is a
Brāhman, and they say also,

An ambassador, although he be a barbarian, is not to
be put to death; for he is only the mouth of his master:
no, not even when the weapons of war are lifted up; and
how much less, if he be a Brāhman !

An ambassador never payeth any regard either to his
own inferiority, or other's superiority; but under the
decree of fate, that he is not punishable, he speaketh
without reserve.

Upon hearing these maxims, both the king and the crow
were pacified; both the king and the parrot got up and
went away. But upon a motion of the minister's, things
having been explained to him, he was brought back, and
dismissed with presents of golden ornaments, rich dress-
es, and the like.

The parrot returned to the Vindhya mountains, where
paying his respects to Chitra varna his own sovereign,
the king no sooner perceived him, than he called out,—
Well, parrot, what intelligence hast thou brought me?

কৌটিল্যোক্তো দেশঃ । শুক্লোম্মূতে দেব সন্তোষাদিয়ং বার্তা ।
 সম্প্রতি যুদ্ধোযোগঃ ক্রিয়তাং দেশায়াসৌ কপূরদ্বীপঃ স্বর্গে ক
 দেশঃ রাজা চ দ্বিতীয়ঃ স্বর্গপতিঃ কথং বর্ণয়িতুং শক্যতে
 ততঃ সর্বান শ্রিষ্টানাং হুয় রাজা মন্বয়িতুমুপবিষ্টঃ আ
 চ সম্প্রতি কর্তব্যবিগ্রহে যথা কর্তব্যং উপদেশং ব্রূতে বিগ্র
 হঃ পুনরবশ্যং কর্তব্যঃ ॥ তথা চোক্তাং ॥ অসন্তুষ্টা দ্বিজা
 নষ্টাঃ সন্তুষ্টা ইব পার্থিবাঃ । সলজ্জা গণিকা নষ্টা
 নির্লজ্জাশ্চ কুলস্থিয়ঃ । দূরদর্শী নাম মৃধো ব্রূতে দেব
 ব্যসনিতয়া বিগ্রহো ন বিধিঃ ॥ যতঃ ॥ মিত্রামাত্যসু
 হৃদগায়দাস্যুর্দ্বিধমক্লয়ঃ । শত্রুণাং বিপরীতাশ্চ কর্তব্যো
 বিগ্রহস্তদা ॥ অন্যচ্চ ॥ ভূমির্মিত্রং হিরণ্যশ্চ বিগ্রহস্য
 ফলং ত্রয়ং । যদৈতন্নিশ্চিতং ভাবি কর্তব্যো বিগ্রহস্তদা ॥

এ দেশ কি কণ শুক বলিতেছে যে মহারাজ সপক্ষেতে
 এই বার্তা হেদানী সপ্তাঙ্গের উদ্যোগ করুন এই কপূরদ্বীপ
 স্বর্গের এক দেশ রাজা ও দ্বিতীয় স্বর্গপতি কি পুকার
 বুঝনা করিতে সমর্থ হই । অনন্তর সকল শিষ্টেরদিগকে
 আহ্বান করিয়া সম্মেলন করিবার নিমিত্তে বসিনেন আর কহি
 লেন সপ্তাঙ্গ কর্তব্য যুদ্ধেতে যে পুকার কর্তব্য তাহা উপ
 দেশ কর কিন্তু যুদ্ধ অবশ্য কর্তব্য । তাহা পণ্ডিতের কহি
 সাছেন সমস্ত রাজারা যেন নষ্ট হয় এমনি অসন্তুষ্ট ব্রাহ্ম

যেৱা নষ্ট হয় এব° লজ্জিতা বেশ্যাৱা নষ্টা হয় এব° নিৰাজ্জ
অলজ্জীৱা নষ্টা হয় । দুৰদশা নামে গুণু বলিতেছে হে মহা
ৰাজব্যসনিহ হেতুক যুদ্ধ বিহিত নয় যেহেতুক নিত্ৰ নস্ত্ৰী
সুহৃদ সকল যখন অনুগত হয় আৰ বিপক্ষেরদিগের ইহাৰ
বিপৰীত হয় তখন রণ কৰ্তব্য অপর ভূমি নিত্ৰ স্বৰ্গএই তিন
সংগ্ৰামের ফল ইহা যখন নিশ্চিত হয় তখন বিগ্ৰহ কৰ্তব্য ।

What sort of a country is it? Please your highness, replied the parrot, the sum of my intelligence is this,—
Let preparations be made for war! As to the country, it is a portion of the heavenly regions, and its king is a second Indra; then how is it possible to describe it? The peacock king, upon hearing this, sent for his chiefs, and sat down to consult with them. On the subject of the war, said the king, which is presently to be entered into, advise what is proper to be done; for, again I say, war is absolutely resolved upon. They say,

Brāhmanṣ are ruined when discontented, like sovereigns when contented. Modesty is ruin to a harlot, and immodesty to women of good repute.

Amongst the rest, there was a vulture whose name was Far-see, who arose and said,—Please your highness,—Fate would not be idle in fighting with thee; for When sons, with friends and attendants, are firmly attached, and in opposition to the enemy, then war may be commenced.

Territory, friends, and gold, are the three fruits of war. When these are certain, it is proper to commence hostilities against the enemy.

রাজা হু মদ্বলং তাবদবলোকযতুমব্রী তদেতেষামুপযোগী
 জ্ঞাতামেবমাচ্ছয়তাং মৌহুর্নিকঃ নির্ণয় শুমলম
 দদাতু । মব্রী ব্রূতে তথাপি সহসা যাত্রাকরণমনুচিত
 ॥ যতঃ ॥ বিশন্তি সহসা মূঢ়ায়ে বিচার্য্য দ্বিষদ্বলং ।
 খলু পারাপরিষ্বলং লভন্তে তে সুনিশ্চিতং ॥ রাজা হু মদ্বিন্
 মমোত্সাহমঙ্গং সর্ধথা মা দ্বযাঃ বিজিগোষ্যযা পরমু
 নিমাক্রামতি তথা কথয় । মব্রী ব্রূতে তত্ কথয়ামি
 কিন্তু তদনুষ্ঠিতমেব ফলপ্রদং ॥ তথ্যোক্তং ॥ কিমব্রুণ
 ননুষ্ঠানাচ্ছাস্তবিতৃথিবীপতেঃ । নহৌষধপরিজ্ঞানা
 দ্বাধেঃ শান্তিঃ ক্বচিৎসবেত ॥ রাজা দেশস্থানতিক্রমণীয়ঃ
 যথা শ্রুতং তন্নিবেদয়ামি শৃণু । নদ্যদ্রিবনদুর্গেষু যত্র যত্র
 ভয়ং নৃপ । তত্র তত্র চ সেনানী যাযাদ্ব্যহী কতে বর্লৈঃ ।

রাজা বলিলেন হে মন্ত্রী আমার মৈন্য নিরীক্ষণ কর আর
 উহারদের উপযোগিতা জান এবং দৈবজ্ঞকে আহ্বান কর
 শুভ লগ্ন নির্ণয় করিয়া দেন । মন্ত্রী বলিতেছে তথাপি
 অকস্মাৎ যাত্রা উপযুক্ত নয় যেহেতুক যে মূঢ়লোকেরা
 শত্রুর বল বিচারনা করিয়া সহসা মৈন্য মধ্যে প্রবেশ করে
 তাহার নিশ্চয় শত্রুধারালিঙ্গন পায় । রাজা কহিলেন হে
 মন্ত্রী আমার উৎসাহ ভঙ্গ সর্দথা করিও না জন্মেছু ব্যক্তি
 যে প্রকারে পরস্থানাক্রমণ করে তাহা কর । গৃধ্র বলি
 তেছে তাহা কহি কিন্তু তাহার অনুষ্ঠানই ফলদ হয় ইহা পণ্ডি

তেরা কহিয়াছেন শাজ্জ্ঞ নৃপতির অনুষ্ঠান না করিলে মন্ত্র
গাতে কি পুয়োজন যেহেতুক ঔষধ জ্ঞানেতে রোগের শমতা
কোথাও হয় না রাজা আর দেশ অতিক্রমণীয় নয় যে রূপ
শুনিয়াছি তাহা নিবেদন করি শুনুন । হে নরপতি যে
স্থানে নদী গিরি কানন দুর্গেতে তন্ন আছে সেই স্থানে ব্যুহী
কৃত সৈন্যের সহিত সেনাপতি যাউক ।

Let my minister observe what I am about to order, said the king; let the services of these my officers be engaged by an advance of a part of their pay; and then let the soothsayer be called, and let him fix upon a lucky moment for us to begin our march. Yet, please your highness, observed the minister, it is not proper to march rashly; for they say,

Those fools who rashly, and without investigation, rush upon the forces of the enemy, will doubtlessly be embraced with the edges of their swords.

Minister, replied the king, thou shouldest not endeavour to break the force of my ardour. Tell me rather how one who wishes for conquest advanceth into the country of the enemy. Please your highness, said the minister, this subject too if pursued may yield fruit; for they say,

What is the use of advice given to a sovereign according to the authority of books, if it be not followed? A patient will never recover his health merely from the description of a medicine.

But as the commands of majesty are not to be neglected, I will proceed to repeat what I have heard upon the subject of war. Please to attend, your highness:

Troops, with every thing which can make them formidable, should be stationed upon the rivers, upon the mountains, in the woods, in the strong holds, and wher ever else there is danger.

বলাধ্যক্ষঃ পুরোযাযাত প্রবীরপুরুষান্বিতঃ । মধ্যে কলত্র
 স্বামী চ কোষঃ বলা চ যদ্বল ॥ পার্শ্বয়োঃ মধ্যোর
 আচক্ষ্যানাং পার্শ্বতোরথাঃ । রথানাং পার্শ্বাধানানাং নাগা
 নাশ্চ পদাতয়ঃ ॥ পশ্চাত্ সেনাপতির্থাযাত লিঙ্গানাশ্চ
 সযন্ শনৈঃ । মদ্রিभिঃ সুমতৈর্যুক্তঃ প্রতিঘৃহ্য বলং তৃপঃ ॥
 সমেযাদ্বিষমং নাগৈর্জলাঘ্যং স মর্দীধরঃ । সমমশ্বৈর্জলং
 নৈभिঃ সর্ঘ্বত্রৈব পদাতিभिঃ ॥ হস্তিনাং গমনং প্রোক্তং প্রশস্তং
 জলদাগমে । তদন্যত্র তুরঙ্গানাং পলীনাং সর্ঘ্বদৈব হি ॥
 শৈলেষু দুর্গমাগেষু বিধেয়ং নৃপরাক্ষণং স্বযোধৈরক্ষিতস্যাপি
 শয়নং যোগিনিদ্রয়া ॥ নাশয়েত্ কর্ণযেচ্ছত্রূন দুর্গকণ্ঠে
 কামর্দকৈঃ । পরদেশপ্রবেশে চ কুর্য্যাদাটবিকান্ পুরঃ ॥ *

উৎকৃষ্টে বীর পুরুষের সহিত সেনাধ্যক্ষ অগ্রেতে যাউক
 মধ্যেতে জীলোক পুতু ভাণ্ডার আর উত্তম যে বল ইহারা
 যাউক দুই পার্শ্বতে ঘোটকেরা ঘোটকের পার্শ্বতে রথ
 রথের পার্শ্বতে হস্তি হস্তিসকলের পার্শ্বতে পদাতির
 যাউক পশ্চাৎ সেনাপতি থিহমান সেনাকে আশ্বাস করত
 অগ্নে যাউক মদ্রিরএব উত্তম যোদ্ধার সহিত রাজা সৈন্য
 লইয়া জলযুক্ত পর্বতবিশিষ্ট উচ্চনীচ দেশ হস্তিতে সম ভূমি
 দেশ আশ্রিতে জলে নৌকাতে সর্বত্রই পদাতির সহিত যাই
 বেক । বর্ষাকালে হস্তির গমন প্রশস্ত করিয়াছেন অন্য কালে
 ঘোড়ার সর্ঘ্বদাই পদাতির গমন প্রশস্ত পর্বতেতে আর দুর্গম

পথেতে রাজার রক্ষা কর্তব্য । যোদ্ধা কতক রাজা রক্ষিত হইলে ও যোগির ন্যায় নিদ্রাতে শয়ন করিবেন অর্থাৎ অতন্ন কাল শয়ন করিবেন । দুর্গ ও ক্ষুদ্র শত্রু ও উপনন্দকদ্বারা বৈরিকে নষ্ট করিবেক এবং আকর্ষণ করিবেক পরদেশ পুবে শেতে বনজ লোকের দিগকে অগ্নে করিবেক ।

The Adhyaksha should march before accompanied by the bravest men; in the centre the seraglio, the swāmi, the treasure chest, the magazines of provisions, and every thing else which may be valuable.

On each flank the horse, on the two flanks of the horse the chariots, on the two flanks of the chariots the elephants, and on the two flanks of the elephants the foot.

In the rear should march the Sēnā-pati (general) occasionally encouraging such as seem to be melancholy. And the king should take the field accompanied by his counsellors and choicest heroes.

The uneven ground, swampy places, and hills, should be cleared by the elephants, the plains by the horse, the rivers by boats, and the foot should be employed every where.

Upon the arrival of the rains it is best to march with elephants only, they say; but at other times, with all the four distinction of troops.

Amongst hills, and in narrow passes, it is proper that the chief should be guarded by some of his best troops; and the same when he is asleep, with watchful care.

The army should strive to destroy, and distress the enemy by rolling stones down from the tops of steep places; and as soon as they enter the enemies' country, the Attavika should be formed before.

যত্র রাজা ততঃ কোষাবিনা কোষান্ন রাজতাম্ । সৃষ্টৌষ্য
 স্তৌদঘাত্ কোহি দাতুর্ন যুধ্যতে ॥ যতঃ ॥ ন নরস্য
 নরোদাসোদাসস্বার্থস্য ভূপতে । গৌরবং স্খাঘবং বাপি ধনা
 ধননিবন্ধনং ॥ অম্বেদে ন চ যুধ্যত রক্তেঐব পরস্পরং ।
 বল্লগুসৈন্যশ্চ যত্ কিঞ্চিন্মধ্যে যুদস্য কার্যেত্ ॥ পদা
 তিষ্ম মহীপাল পুরোঃনীকস্য যোজয়েত্ । উপহৃৎস্বারিমা
 সীচ্চ রাষ্ট্রং চাস্যোপপীডয়েত্ ॥ স্যন্দনাস্বৈঃ সমে যুধ্যেদ
 নূপে নৌর্দ্বিপৈস্তথা । বৃহত্তগুন্মাতৃতে চাপৈরসিচর্ম্মাযুধৈঃ
 স্থলে ॥ দূষয়েচ্চাস্য সততং যবসান্নোদকেন্দ্রনং । ভিন্ধ্যা
 ঐব তডাগানি প্রাকারান্ পরিখাংস্তথা ॥ বলেধু প্রমুক্তো
 হস্তী ন তথান্যোমহীপতেঃ । নিজৈরবযবৈরেবমাংসজ্ঞো
 ঽষ্টায়ুধঃ স্মৃতঃ ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*❀*

যে স্থানে রাজা থাকেন সেই স্থানে কোষ রাখিবেক
 কেন না ধনাগার বাতিরেকে রাজত্ব হয় না তাহাইহে
 নিজ দাসেরদিগকে দিবেক কেননা দাতার ইহিয়া কোন
 লোক যুদ্ধ না করে যেহেতুক হে নৃপতি অনুযোয় ভৃত্য
 অনুযায় নয় কেবল ধনের দাস কেননা ধন ও অধন নিমিত্তেই
 মহত্ত্ব ক্ষুদ্রত্ব হয় । সেনারা পরস্পর একা ইহিয়া যুদ্ধ করিবেক
 এবং রক্ষা ও করিবেক আর যে কিছু উত্তম সৈন্য তাহা
 ব্যাহের মতো করিবেক । হে রাজাধিরাজ সেনার আগে
 তে পদাতিকে নিয়োগ করিবেক বৈরিকে রোধ করিয়া

যাকিবেক আর ইহার দেশকে ও ব্যানোহ দিবেক । সমভূমিতে রথ ও অশ্বতে যুদ্ধ করিবেক জনপ্লাবিত দেশেতে নৌকা ও হস্তিতে যুদ্ধ করিবেক বৃক্ষলতাকীর্ণ দেশেতে ধনুর্বাণ দ্বারা যুদ্ধ করিবেক স্থানেতে খড়্গ চর্ম অস্ত্রদ্বারা যুদ্ধ করিবেক তড়াগ ও পুকার ও পরিখা এই সকলকে নষ্ট করত বিপক্ষের ঘাসি অন্ন জন কাঠকে সর্বদা নষ্ট করিবেক । রাজার সৈন্যের মধ্যে গজই প্রধান অন্য কেহ তাদৃশ নয় কেননা আপন অবয়বেতেই হস্তী অষ্টআয়ুধে কর্ম্মকরে ।

Wherever the chief is, there should the treasure chest be; for without treasure there is no superiority. And some of it should be distributed amongst the principal officers; for who will not fight for one who giveth freely?

Man is not a servant for the man, but for the thing. A chief's consequence, or insignificance, dependeth upon his having wealth, or no wealth.

The troops should fight without breaking; and they should defend one another. Whatever military stores there may be should be put in the centre of the ranks.

And when the chief hath given check to the enemy, he should endeavour to distress the country. Upon level ground he should fight with chariots and his horse; and in places overflowed with water, either with boats or elephants.

Amongst trees and bushes he should fight with bows and arrows; and upon open ground, with sword and shield: and he should, always endeavour to destroy, or render useless, the enemy's straw, corn, water, and fire wood.

He should destroy likewise their reservoirs, their ramparts, and their ditches and trenches. The chief's elephants should be the first in the army, and not disordered.

বলমস্বস্ত্য সৈন্যানাং প্রাকারোজঙ্গমোযতঃ । তস্মাদস্বাধি
 ধৌরাজা বিজয়ী স্যস্তদ্বিষ্যহে ॥ তথা চৈব ॥
 যুদ্ধমানাহযারুণাং দেবানামপি দুর্জয়াঃ । অপিদূর
 স্থিতাস্তেষাং বৈরিণোহস্তবর্জিতঃ ॥ প্রথমং যুদ্ধকারিত্ব
 সমস্তবলপালনং । দিগ্ভাগযোধযোধিত্বং পশ্চাদ্ধর্ম
 প্রচক্ষতে ॥ স্বभावशूरमस्तत्रमविरक्तं जितश्रमं ।
 प्रसिद्धक्षत्रियप्रायं बलं श्रेष्ठतमं विदुः ॥ यथा प्रभुक्रता
 न्मानाद्युध्यन्ते भुवि मानवाः । न तथा बद्धभिर्दৈर्द्रविष्यै
 रपि भूपतेः ॥ तथाप्यसारसारः क्रियतां ॥ यतः ॥ वरम
 क्षयबलं सारं न कुर्यान्मुण्डमण्डलीं । कुर्यादसारभङ्गोहि
 सारभङ्गमपि द्रुपदं ॥ अप्रसादोऽनधिष्ठानं देयांश्चहरणञ्च
 यत् । कालयापोऽप्रतीकारस्तद्वैराग्यस्य कारणं ॥

যেহেতুক সেনার মধ্যে অশ্ব সেনা সজীব প্রাকার হয় সেই
 হেতুক ঘোঁটকাধিক যাহার সে রাজা স্থলযুদ্ধেতে জয়ী হয় ।
 তাহা কথিত আছে অশ্বাক্ষত যোদ্ধার। দেবতারদিগেরও অ
 জেয় কেননা দূরস্থ বিপকেরাও তাহার হস্তগত হয় । সকল
 সৈন্যের রক্ষা করা প্রথম যুদ্ধকরা দিগ্‌নির্গম করা পথশোধ
 ন করা যোদ্ধারদিগের রক্ষা করা পদাতিকের কার্য কহেন
 স্বভাবত শূর অস্ত্রবিৎ অবিরক্ত অশ্রান্ত পুসিক ক্ষত্রিয় তুল্য
 এইসকল সৈন্যকে বিজয়ী উত্তম করিয়া জানেন । পৃথিবীতে
 অসীমকৃত সম্মানেতে অনুযোরা যাদৃশ যুদ্ধ করে রাজা অনেক

ধন দিলে ও তাদৃশ যুদ্ধ করে না। তথাপি অসার সার বিবেচনা করুন যেহেতুক উত্তম অল্প সৈন্য ও ভাল মন্তকশ্রেণ্য করিবেন। যে নিমিত্তে অধম সৈন্যের ভয় উত্তম সৈন্যের ভয় করে। আর অপুস্পন্নতা যুদ্ধস্থলে অনাগমন দাতব্য বেতনাদি না দেওয়া কাল যাপন করা পুতিকাৱনা করা এই সকল যুদ্ধেতে ও দাস্যের চিহ্ন।

They say, he who fighteth with elephants and camels, fighteth, as it were, with his own arms. The horse is the strength of the army. The horse is as a moving bulwark.

Wherefore, the chief who hath most horse in a land fight is victorious. Those who fight mounted on horses are hard to be defeated, even by the hosts of heaven; for let the enemy be at ever so great a distance, they are, as it were, in their hands.

The chief employment for the foot is fighting, guarding the whole army, and clearing the roads about.

The best kind of troops are declared to be those who are naturally brave, skilled in the exercise of arms, attached, inured to fatigue, renowned, and soldier-like.

Men, O prince, do not fight so well in this world, even for very large pecuniary rewards, as for honours bestowed by their commander.

A small army consisting of chosen troops is far better than a vast body chiefly composed of rabble; for when the bad give way, the good are inevitably broken in consequence.

Not to protect, not to be present, to be sparing of gifts, to procrastinate, to have no wardour who may introduce suppliants; these are the causes of disaffection.

আপিডযন বলং যত্রোজ্জিগীষুরতিপোষয়েৎ । সুখসা
 অদ্বিষাং সৈন্যং দীর্ঘপ্রাচ্যাণপিডিতং ॥ দায়াদাদপরো
 মন্ত্রোনাস্তি ভেদকরোদ্বিষাং । তস্মাদুত্থাপয়েৎকাদাচাদ
 তস্য বিদ্বিষঃ ॥ সম্ভায যুবরাজ্যেন যদি বা মুখ্য
 মদ্বিষা ॥ অন্তঃ প্রকোপনং কার্য্যমভিযোক্তুঃ স্থিরাत्मनঃ ॥
 ক্লুরং মিত্রং রणे চাপি ভক্তং দত্ত্বা বিঘাতয়েৎ । অথবা
 গোয়হাক্ষষ্টান্নলক্ষ্যায়িতবন্ধ্যনাৎ ॥ স্বরাষ্ট্রং বাস
 যেন্নাজা পরদেশাবগাহনাৎ । অথ বা দানমাননাভ্যাং
 বাসিতং ধনদং হি তত্ ॥ রাজাহ আঃ কিং বজ্রনোদিতেন ।
 আত্মোদয়পরয়ানির্দ্বয় নীতিরিতীয়তৌ । তদূরীকৃত্য
 কৃতিমির্বাচস্পত্যং প্রতীয়তে ॥ মদ্বিষা বিহস্যোচ্যতে
 সর্বমেতৎ বিশেষতস্তু উচ্যতে ॥ *❀*❀*❀*❀

জয়েচ্ছু রাজা দুঃসাধ্য শত্রুর সেনাকে ব্যামোহ দেওত
 অনায়াসসাধ্য বিপক্ষের দূরদেশ গমন শান্ত সেনাকে
 অতিশয় পোষণ করিবেক । আর শত্রুর ভেদ কারক দায়াদ
 ব্যতিরেকে অন্য মন্ত্রনাহি অতএব সে বিপক্ষের দায়াদকে
 যত্ন করিয়া উঠাইবেক যুব রাজের সহিত কিম্বা পুধান মন্ত্রির
 সহিত সন্ধি করিয়া স্থিরচিত্ত অভিযোক্তার অন্তঃকরণে ক্রোধ
 করাইবেক । খল মিত্রকে যুদ্ধেতে ভঙ্গ দিয়াও নষ্ট করিবেক
 কিম্বা গোগৃহের আরহণ পুযুক্ত ও তাহার পুধান আশ্রিতের
 দের বন্ধন হেতুক । রাজা পরদেশাক্রমণ করিয়া স্বদেশ রক্ষা

করিবেক কিম্বা দান ও সম্মানদ্বারা রক্ষা করিবেক যেহেতুক
সে রক্ষণই ধনদ হয়। রাজা কহিলেন আঃ অনেক কথাতে
কি পুরোজন আপনার বুদ্ধি পরের হানি এই নীতি তাহা
কে স্বীকার করিয়া বিজ্ঞরা বাচস্পত্য জ্ঞানকে পায়। মন্ত্রী
হাস্য করিয়া কহিতেছে এই সকল বিশেষ করিয়া কহেন।

He who wisheth for victory should endeavour to harass the enemy without distressing his own troops. An enemy's army which has been harassed for a long time, may be easily defeated.

There is not a better counsellor than a competitor for the overthrow of an enemy; wherefore great pains should be taken to raise such a claimant.

Having entered into a confederacy with some one amongst the chief's sons, or with one of his principal counsellors, at length, it will be proper, with a firm resolution, to provoke him to fight.

And when a chief shall have given him an overthrow by means of his nearest friends, he may put his enemy to death.

Let a prince make his own regions popular, for the sake of possessing that of another: or by bestowing gifts, and conferring honours, with like popularity, let him acquire the odour of fame for generosity.

What is the use of saying so much upon the subject? said the king, interrupting him:

One's own exaltation is another's tribulation, and both, they say, is policy. Having granted this, our fine language is contradicted by our actions.

The minister smiling at this, replied,—It is entirely so, but,

কিন্তু অন্যদৃষ্টিভুলং সত্বমন্যচ্ছাস্তমিযচ্ছিতং ।
 সামান্যাদিকরণং হি তেজস্টিমিরয়ো কৃতঃ ॥
 ততস্তথা রাজা মৌহুর্তিকাবেদিতলয়ে প্রাস্থ্যতঃ অথ
 প্রহিতপ্রাণিধির্হিরণ্যগর্ভায়াগত্য উবাচ দেব সমাগত
 প্রাথো রাজা চিববর্ণঃ সমুপ্ৰতি মলয়পর্বতাধিত্যকায়াং
 সমাবাসিতকটকোঃ অনুবর্ন্ততে দুর্গশোধনং প্রতিস্থানমনু
 সম্ভ্রাতব্যং যতোসৌ মৃগো মহামতী কিঞ্চ কেনচিত্ সছ
 তস্য বিশ্বাসকথা প্রসঙ্গে নৈব তদিজিতমবগতং ময়া
 যদনেন কোপ্যস্বদুর্গে প্রাগেব নিযুক্তঃ । চকোব্রুতে দেব
 কা কএবাসৌ সম্ভবতি । রাজাহ ন কদাচিদেতৎ যদেব
 তদা কথং তেন শুকস্যাভিমবোদ্যোগঃ কৃতঃ ॥ অপরঞ্চ ॥
 শুকস্যাগমনাত্ তস্য বিগ্রহোহাসাহঃ সচিরাদব্রাহ্মণে ।

কিন্তু এক প্রাণী উচ্ছৃঙ্খল অপর প্রাণী শাস্ত্রনিয়ন্ত্রিত
 যেহেতুক আলোক ও অন্ধকারের সামান্যাদিকরণ্য কোথায়
 অর্থাৎ যেমন এক অধিকরণে আলোক ও অন্ধকার দুই
 থাকে না এমনি একাধারে উচ্ছৃঙ্খল ও শাস্ত্রনিয়ন্ত্রিত দুই
 থাকে না । তাহার পর রাজা উঠিয়া দৈবজ্ঞকর্তৃক জ্ঞাপিত
 লগ্নেতে যাত্রা করিলেন । অনন্তর পুরিত চর হিরণ্যগর্ভ
 জমীপে আসিয়া কহিল হে মহারাজ চিববর্ণ রাজা আগত
 প্রায় সম্প্রতি মলয়পর্বত সন্নিধানে বাস করিতেছে অনু
 জ্ঞান দুগানুজ্ঞান কর্তব্য যেহেতুক এ গৃধ্রমহামতী আর

কোন ব্যক্তির সহিত তাহার পুত্রের কথানাগাতে
তাহার ইন্দ্রিত আনি দ্বিতীয় হইয়াছি যে ঐ রাজা কোন
লোককে আনারদিগের দুর্গেতে পূর্বেতেই প্রেরণ করি
য়াছে। চক্রবাক বলিতেছে হে মহারাজ কাকই এ সম্ভব হয়।
রাজা বলিলেন ইহা কদাচ নয় যদি এমন রটে তবে কেন
সে শুকের পরাভবে উদ্যম করিল এবং শুকের আগমনেতে
তাহার যুদ্ধোৎসাহ সে অনেক কাল এ স্থানে আছে।

One is lofty, powerful, and a villain, whilst another
is guided and restrained by moral laws. When shall we
find the same superiority in light and darkness?

At length the king got up and resolved to march at
the time appointed by his astrologer; but just then
the spy who was sent to observe motions of the enemy
returned, and informed Hiranya-garbha that king Chitra-
varna was almost arrived, and that at present he was
near the Malaya mountains, that the construction of a
castle was instantly to be resolved, for the vulture was
a very wise minister; and that from the tenour of his
conversation there was reason to believe, that he had a
spy even then within the castle To all this the minister
replied, that if there was a spy, it could be no one but
the crow, whom they had entertained. That can never
be, replied the king; for if he had been so, how came it
to pass that he shewed such readiness to punish the
parrot? And besides, war was not resolved till very
lately upon the return of their ambassador the parrot.

ମନ୍ତ୍ରୀ ବ୍ରୁତେ ତଥାପ୍ୟାଗନ୍ତୁ: ଶକ୍ତନୀୟ: ॥ ରାଜାହ ଆଗନ୍ତୁକା
 ହି କିଦାଚିଦୁପକାରକାଢ଼ଶ୍ୟର୍ତ୍ତେ । ଶୃଣୁ । ପରୋପି ହିତବାନ
 ବନ୍ଧୁର୍ବନ୍ଧୁରପ୍ୟହିତ: ପର: । ଅହିତୋଦେହଜୋଘ୍ୟାଧିର୍ହିତମାର
 ଘ୍ୟମୌଷଧଂ ॥ ଅପରଞ୍ଚ ॥ ଆସୀଦ୍‌ବୀରବରୋନାମ ଶୁଦ୍ରକସ୍ୟ
 ମହୋଦୃତ: । ସେବକ: ଶତ୍ପକାଳେନ ସ ଦଦୌ ସୁତମାତ୍ମନ: ॥
 ଚକ୍ର: ପୃଚ୍ଛତି କଥମେତତ୍ । ରାଜା କଥୟତି ଅହଂ ପୁରା
 ଶୁଦ୍ରକସ୍ୟ ରାଜ୍ଞ: କ୍ରୀଡ଼ାସରସି କର୍ପୂରକେଲିନାମ୍ନୋରାଜହଂସ
 ସ୍ୟ ପୁତ୍ରପ୍ତା କର୍ପୂରମଞ୍ଜୟା ମହାନୁରାଗବାନଭବଂ ତବ ବୀର
 ବରୋନାମ ମହାରାଜପୁତ୍ର: କୁତଞ୍ଚିଦ୍‌ଦେଶାଦାଗତ୍ୟ ରାଜଦ୍ୱାର
 ଲୁପଗମ୍ୟ ପ୍ରତୀହାରମୁବାଚ ଅହଂ ତଦ୍‌ଦେତନାର୍ଥୀ ରାଜପୁତ୍ରୋରାଜ
 ଦର୍ଶନଂ କାରୟ ତତ୍‌ସ୍ତେନାସୌ ରାଜଦର୍ଶନଂ କାରିତୋବ୍ରୁତେ ଦେବ
 ଯଦି ମୟାସେବକେନ ପ୍ରଯୋଜନମସ୍ତି ତଦାସ୍ମଦ୍‌ଦତ୍ତେନଂ କ୍ରିୟତାଂ

ମନ୍ତ୍ରୀ ବଳିତେଛେ ତଥାପି ଆଗନ୍ତୁକ ଶକ୍ତନୀୟ । ରାଜା କହିଲେନ
 ଆଗନ୍ତୁକ ବାଞ୍ଛି ଓ କଦାଚିଂ ଉପକାରକ ହୁଏ ଶୁନ ପର ଓ ହିତ
 କାରୀ ବନ୍ଧୁ ହୁଏ ବନ୍ଧୁ ଓ ଅହିତକାରୀ ପର ହୁଏ ଶରୀରଜାତ
 ରୋଗ ଅହିତ ହୁଏ ବନ୍ଧା ଓ ବଧ ହିତ ହୁଏ । ଅପର ଶୁଦ୍ରକ ରାଜାର
 ବୀରବର ନାମେ ଡୁଆଁ ଥିଲ ସେ ଅତୀତ କାଳେତେ ନିଜ ପୁତ୍ରକେ
 ବାଳି ଦିଆ ଥିଲ । ଚକ୍ରବାକ୍ କହିତେଛେ ଏ କି ପ୍ରକାର । ରାଜା
 କହିତେଛେନ । ଆମି ପୂର୍ବେତେ ଶୁଦ୍ରକ ରାଜାର କ୍ରୀଡ଼ା ମରୋବରେ
 କର୍ପୂରକେଲିନାମା ରାଜହଂସେର କନ୍ୟା କର୍ପୂରମଞ୍ଜରୀର ସହିତ
 ଅତିଶୟ ଅନୁରାଗୀ ହୁଅନ୍ତି ଯେତେବେଳେ ତାହାତେ ମହାରାଜପୁତ୍ର ବୀର

বর নামে কোনদেশহইতে আসিয়া রাজদ্বারে গিয়া দ্বারিকে বলিল আমি বেতনাথী রাজপুত্র রাজদর্শন করাও। তার পর তাহাকর্তৃক ও রাজদর্শন কারিত হইয়া বলিতেছে হে মহারাজ যদিপি অশ্রদ্ধতোতে মহারাজের পুয়োজন থাকে তবে আমার বেতন কর।

Nevertheless, answered the minister, it is proper to suspect one who came to us as he did. True, replied the king, provided he be guilty of any improper action; but,

A stranger, if well disposed, is a friend; but a friend, if ill-disposed towards one, is a stranger. A distemper although generated in the body, is malignant; whilst a drug produced in the woods proveth salutary.

King Sudraka had a servant, by name Vira-vara who in a very short time offered up his own son.

How was that? said the minister; and the king related the following tale.

FABLE IX.

IN former days I used to amuse myself with a certain female of my own species, whose name was Karpura-manjari, and who was the daughter of the royal gander Karpura-keli, in a pleasure lake belonging to king Sudraka. One day a young man, whose name was Vira-vara, and who proved to be a Raja-putra come from some distant country, presented himself before the porter who stood at the king's gate, and addressed him in the following words:—I am a soldier in search of employment; pray procure me a sight of the king. The porter conducted the stranger in to the presence of his master; to whom, he addressed himself as follows:—Sir, if thou hast any occasion for my service, let my pay be fixed.

শূদ্রকউবাচ । কিলে বর্জনং । বীরবরোব্রূতে প্রত্যহং সুবর্ণ
 পঞ্চ শতানি দেহি । রাজাহ কা তে সামগ্ৰী । বীরবরো
 ব্রূতে দ্বৌ বাহু তৃতীয়শ্চ লব্ধঃ । রাজাহ নৈতচ্ছব্য
 তচ্ছ্রুত্বা বীরবরস্থলিতঃ অথ মদ্বিভিক্তং দেব দিনচতু
 ষ্ঠ্যস্য বর্জনং দত্ত্বা জ্ঞায়তামস্য স্বরূপং কিমুপযুক্তোঽয়ং
 এতাষদ্বর্জনং গৃহ্ণাত্যনুপযুক্তোবেতি ততোমদ্বিবচনাদা
 হুয বীরবরায তাম্বূলং দত্ত্বা পঞ্চশতানি সুবর্ণানি
 দত্তানি তদ্বচনং তদ্বিনিয়োগশ্চ রাজা সুনিশ্চিতং নিরু
 পিতঃ তদদ্বৈ বীরবরেণ দেবেভ্যোব্রাহ্মণেভ্যোদত্তং স্থিতত্স্যা
 দ্বৈ দুঃখিতৈভ্যঃ তদবশিষ্টং ভোজ্যযথবিলাসব্যয়েন এতন্
 সৰ্বং নিত্যকৃত্যং কৃত্বা রাজদ্বারমহর্নিশং লব্ধপাণিঃ শেতৈ
 যদা চ রাজা স্বয়ং সমাদিশতি তদা স্বগৃহমপি য়াতি

শূদ্রক বলিল তোমার বেতন কি বীরবর বলিতেছে
 প্রত্যহ পাঁচ শত সুবর্ণ দেও রাজা বলিলেন তোমার
 সামগ্রী কি বীরবর বলিতেছে বাহু দুই খণ্ড তৃতীয় রাজা
 বলিলেন তসামগ্রী নয় তাহা শুনিয়া বীরবর চলিল ।
 অনন্তর অমাত্যেরা কহিল হেমহারাজ চারি দিবসের বেতন
 দিয়া ইহার স্বরূপ জান এ লোক কেমন উপযুক্ত এত বেতন
 লয় অনুপযুক্তই বা । তৎপরে মন্ত্রিরবাক্যেতে আহ্বান করিয়া
 বীরবরকে পান দিয়া পঞ্চশত সুবর্ণ দিলেন তাহার বাক্য

আর তাহার বিনিয়োগ রাজানির্জনে নিকপণ করিলেন বীর
বর তাহার অর্ধেক দেবতারদিগকে ও ব্রাহ্মণেরদিগকে
দিল অবশিষ্টের অর্ধেক দুঃখিরদিগকে তদবশিষ্ট খাদ্য দুব্যা
দিতে ব্যয় এই সকল নিত্য কর্ম করিয়া রাজদ্বারেতে দিবা
রাত্রি থল্লহস্তেতে শয়ন করে যখন রাজা আপনি আজ্ঞা
করেন তখন নিজগৃহে যায় ।

The king asked him, how much? and he replied. five hundred suvarnas a day. What weapons hast thou' demanded the king My two arms, replied the soldier, and my sword, which makes a third. This will not do, concluded the king; upon which the soldier bowed, and took his leave. The minister happening to be present, said,—Please your highness, give him four days' pay, and learn what sort of a man he is, and what assistance he can be of. According to the minister's advice, the man being called back, they gave him Tāmbula, and four days' pay in advance; to the expenditure of which the king very privately attended, and found that he gave one moiety to the gods and the Brāhmans, one-fourth to the poor, and spent the remainder in food and amusements; and that after performing these several praiseworthy actions, he attended sword in hand at the king's gate day and night, and never went to his lodgings without his master's express permission.

অথৈকদা কৃষ্ণচতুর্দশ্যাং রাজৌ রাজা স কৃষ্ণং কন্দন
 ধ্বনিং শ্রুত্বা ব শূদ্রকউবাচ কঃ কোঽব হারি তেনোক্ত
 দেবাহ বীরবরঃ । রাজোবাচ কন্দনানুসরণং ক্রিয়তা
 বীরবরোযথা জ্ঞাপয়তি দেব ইত্যুক্তা চলিতঃ রাজা চ
 চিন্তিতং ন তদুচিতং অথং একাকী রাজপুত্রোময়া সূচী
 ভেদে তমসি প্রেরিতঃ তদনুগত্বা ক্রমেতদिति নিরূপয়ামি
 ততো রাজাপি খড়্গমাধায় তদনুসরণক্রমেণ নগরাদ্ব
 হির্নির্জগাম গত্বা চ বীর্বেণ সা রুদতী রূপযৌনসম্য
 ন্না সর্বাঙ্গলঙ্কারভূষিতা কাচিত্ স্ত্রী দৃষ্টা পৃষ্টা চ কা
 ত্বং কিমর্থং রোদিষি স্ত্রিয়োক্তা অহমেতস্য শূদ্রকস্য
 রাজলক্ষ্মীস্বিরাদেতস্য ভুজচ্ছায়ায়াং মহতা সুখে
 বিশ্রান্তা ইদানীমন্যত্র গমিষ্যামি । *❀*❀*❀

অনন্তর এক দিবস কৃষ্ণ পক্ষীয় চতুর্দশী রাত্রিতে রাজা
 কৃষ্ণগার সহিত রোদন শব্দ শুনিলেন শূদ্রক কহিলেন
 কে কে এই দ্বারে সে কহিল হে মহারাজ আমি বীরবর
 রাজা বলিলেন ক্রন্দনের অনুসরণ কর বীরবর কহিলেন
 হে মহারাজ যেপুকার আজ্ঞা করেন ইহা কহিয়া চলিল ।
 রাজা ভাবনা করিলেন ইহা উপযুক্ত নয় ঘোর অন্ধকারে
 একাকী এই রাজপুত্র পেরিত হইল সেই হেতুক পশ্চাৎ
 গমন করিয়া কি এ ইহা নিরূপণ করি তাহার পর রাজা
 ও অগ্নি লইয়া তাহার অনুসরণ ক্রমেতে নগরের বাহিরে

গেলেন গিয়া বীরবরকতৃক সেই রোদিনকারিণী রূপযো
বনসম্পন্ন। সর্বানন্সার ভূষিতা কোন স্ত্রী নিরীক্ষিতা হইল
আর জিজ্ঞাসিতা হইল কে তুমি কি নিমিত্তে রোদন কর
স্ত্রী কহিল আমি এই শূদ্রকের রাজলক্ষ্মী চিরকাল ইহার
বাহুছায়াতে বড় সুখে বিশ্রাম করিয়াছিলাম সম্প্রতি
অন্য ভ্র গমন করিব।

On the fourteenth night of what is called the dark side of the moon, the king heard a noise like one bitterly crying, upon which he called out to know who was waiting at the door, and his faithful Vira-vara answering that he was there; he ordered him to pursue the crying which they heard; so, saying, I obey your highness's commands, away he ran. In the mean time, the king reflected in this manner:—I have done wrong to send this soldier away by himself in such a dark cloudy night. I will even go too and see what is the matter. So saying, he took his sword, and thus followed till he got without the city; and presently after he saw the soldier with a female endued with perfect youth and beauty, and richly attired, who was weeping. Who art thou, and why dost thou weep? demanded Vira-vara. I am, said the female, the goddess Sri, the fortune of king Sudraka's dominions, who hath long dwelt happily under the shadow of his wings, but, alas! I am now about to flee to some other place of refuge.

বীরবরোব্রূতে যত্রাপায়ঃ সম্ভবতি তত্রোপায়োঽস্মি তত্
 কথং স্যাৎ পুনরিহাবলম্বনং ভবত্যাঃ লক্ষ্মীরবাচ যদি
 ত্বমাत्मनঃ পুত্রং শক্তিধরং দ্বাত্রিংশলক্ষলোপেতং ভগবত্যাঃ
 সর্বমঙ্গলাযা উপহারী কৰোষি তদাহ পুনরত্র সুচিরং
 নিবসামীত্যুক্তাঃ দৃশ্যা ভবত ততো বীরবরেণ স্বমৃচ্ছং গত্বা
 নিদ্রায়মানা স্ববধূঃ প্রবোধিতা পুত্রস্ব তৌ নিদ্রাং পরিত্য
 জ্য উত্থায্য উপবিষ্টৌ বীরবরস্তত্ সর্বং লক্ষ্মীবচনমু
 ক্তবান্ । তচ্ছ্রুত্বা সানন্দঃ শক্তিধরোব্রূতে ধন্যোহমেবম্
 তঃ স্বামিরাজ্জ্বরল্যার্থং যন্মমোপযোগঃ শ্লাঘ্যস্তত্ কো
 ধুনা বিলম্বস্য হেতুঃ এবম্বিধে কর্ম্মণি দেহস্য বিনিয়োগঃ
 শ্লাঘ্যঃ ॥ যতঃ ॥ ধনানি জীবিতম্ভৈব পরার্থে প্রাপ্তভূত
 জেৎ । সন্নিহিতং বরং ত্যাগো বিনাশে নিঘতে সতি ॥

বীরবর বলিতেছে যেখানে অপায় হয় সেখানে উপায় ও
 আছে তবে কি পুকারে এখানে পুনর্বার আপনকার অব
 স্থান হয় লক্ষ্মী কহিলেন যদ্যপি বত্রিশলক্ষলোপেত যুক্ত
 আপন পুত্র শক্তিধরকে তুমি ভবগতী সর্বমঙ্গলাকে বলিদে
 ও তবে আমি পুনশ্চ এখানে বহুকাল বাস করি ইহা কহিয়া
 অদৃশ্য হইলেন । তাহার পর বীর বর আপন গৃহে গিয়া
 নিদ্রিত আপন পত্নীকে আর পুত্রকে জাগাই লেন তাহার
 দুই জন নিদ্রা ত্যাগ করিয়া উঠিয়া বলিল । বীরবর সেই
 সকল লক্ষ্মীর বাক্য বলিলেন তাহা শুনিয়া আহাদিত

ইহঁয়া শক্তিধর বলিতেছে ধন্য আমি আমার রাজারকার
নিমিত্তে যে আমার এতদংশ উপযোগিতা সে শ্লাঘ্য তবে
এখন গোণের কারণ কি এতদংশ কার্যোতে শরীরের নিয়োগ
শ্লাঘ্য। যেহেতুক পণ্ডিত ব্যক্তি ধন আর পুণ পরের নিমিত্তে
ত্যাগ করিবেক কে নন। শরীরনাশ অবশ্য হবেই ইহাতে
সাধুর নিমিত্তে ত্যাগই ভাল।

What, O goddess, said the soldier, will induce thee to tarry still longer here? If, replied the goddess, thou wilt offer up thy own son Sakti-dhara, who is distinguished by two and thirty marks, to the goddess who resideth over the welfare of all nature, then will I remain here for a much longer period of time, and saying this, she vanished from his sight.

Viravara now went home, and called up his son and his wife, who were both asleep; who having risen accordingly he related to them every thing which had passed with the goddess. His son, the moment he had concluded, exclaimed in a transport of joy,—O how fortunate I am, who can thus be the means of preserving my sovereign and his dominions! Then, O father, what occasion is there for any further hesitation or delay; since the assistance of this body is at all times ready upon such an occasion as this? For they say,

A good man should forsake wealth, and even life itself, for another. It is good to sacrifice one's self for a holy person upon the approach of his destruction.

করিয়া আপনার শিরশ্ছেদন করিলেন তাহারপর বীরবলের
 স্ত্রী ও স্বামিপুত্র শোকার্ত হইয়া তাহা করিল। রাজা সেই
 সকল দেখিয়া বিষয়াপন্ন হইয়া চিন্তা করিলেন আমার
 তুল্য ক্ষুদ্র জন্তুরা জন্মিতেছে ও মরিতেছে পৃথিবাতে
 ইহার তুল্য লোক হয় নাই ও হবে না সেইহেতুক ইহাতে
 রহিত হইয়া আমার রাজত্ব নিষ্প্রয়োজন তদনন্তর শূদ্রক ও
 নিজ মন্তক ছেদন করিবার নিমিত্তে খড়্গ উঠাইলেন।

This simple saying, added the mother, belongs particularly to our tribe; then if he be not permitted to do so, how else can we give an equivalent for the splendid salary which the king allows us? Having considered this proposal, they all went to the temple of the goddess; and when they had worshipped her image, the father Vira-vara addressed her in these words:—O goddess! let Sudraka our sovereign be prosperous! Saying which, he cut off his son's head. Thus, said he to himself, have I earned the wages which I received from my sovereign, and now let me pay the forfeit of my son's life! and instantly he cut off his own head. His wife too, overpowered with grief for her husband and son, followed their example. The king, filled with astonishment at the scene before him, said to himself:

Such little animals as myself come into life, and die away without end; but there never has been, nor ever will be, in this world one like unto him!

Oh, I can have no further enjoyment of these my dominions! Saying thus, he lifted up his sword to cut off his head also;

অথ, ভগবত্যা সর্বমঙ্গলদা রাজহস্তে ধৃতজ্ঞস্য পুত্রমস-
 ন্নাশ্বি তে এতাবতা সাহসেন অলং জীবনান্তেপি তব
 রাজ্যভগ্নেনাশ্বি । রাজা চ সাষ্টাঙ্গপাতং প্রণম্যোবাচ
 দৈবিকিং মে রাজ্যেন জীবিতেন বা কিং প্রযোজনং যদ্যহ
 মনুকম্পনীয়স্তদা মমায়ুঃশেষেণ অযং সদারপুত্রাবীর-
 বরোজীবতু অন্যথাহং যথাপ্রাপ্তিং গতিমচ্ছামি । ভগবত্যু-
 বাচ পুত্রানেন তে সত্যোতর্কষণে মৃত্যুবাৎসল্যেন চ তব তুষ্টি-
 স্তি গচ্ছ বিজয়ী ভব অযমপি সপরিবারো রাজপুত্রোজী-
 বতু ইত্যুক্তা দেব্যদৃশ্যাভবত্ । ততোবীরবরঃ সপুত্রদারো
 মৃহং গতঃ রাজাপি তৈরললিতঃ সত্বরমন্তঃপুরং প্রবিষ্টঃ
 অথ প্রभाতে বীরবরোদ্ধারস্থঃ পুনর্ভূপালেণ পৃষ্টঃ সন্-
 আহ দেব সা রুদতী স্ত্রী মামবলোকাৎ দৃশ্যাভবত্ ॥

অনন্তর ভগবতী সর্বমঙ্গলা রাজার হস্ত ধরিলেন আর
 কহিলেন পুত্র আমি তোমাকে পুসন। হইলাম এত সাহস
 নিরর্থক পুণ্যান্তে ও তোমার রাজ্যভঙ্গ নাই রাজা অষ্টাঙ্গ
 পুণ্য করিয়া কহিলেন হে দেবি আমার রাজ্যে পুণ্যই
 বাকি পুণ্যোজন যদ্যপি আমি অনুগ্রহীত হই তব আমার
 অযুর শেষেতে সদারপত্য এই বীরবর বাঁচুক নতুবা ইহার
 যেগতি পাইয়াছে সেই গতি আমি পাই ভগবতী কহিলেন
 হে পুত্র তোমার এই সত্য সন্ধানতাতে আর ভৃত্যবাৎ-
 সল্যেতে তোমাকে তুষ্ট হইলাম যাও জয়মল্ল হও এই

সপরিবার রাজহম্মার ও বাঁচুক ইহা কহিয়া দেবী অন্তর্হিতা
হইলেন। তদনন্তর বীরবর সদারপুত্র গৃহে গেলেন রাজা
ও তাহার দিগের অনক্ষিত হইয়া শাঘু অন্তঃপুরে পুবেশ
করিলেন। অনন্তর প্রাতঃ কালে দ্বারস্থ বীরবর পুনশ্চ
জিজ্ঞাসিত হইয়া কহিলেন হে মহারাজ রোদনকারিণী সে
স্ত্রী আমাকে নিরীক্ষণ করিয়া অদৃশ্যা হইল।

but on the instant, she on whom dependeth the happiness of all, making herself evident under human form, seized him by the hand, and said,—My son, forbear this rashness! At present thy kingdom is not subdued! The king prostrated himself before her, and said,—O goddess! of what use to me is dominion, or even life? If thou hast any compassion for me, O let Virava, with his family, be restored to life; or if it be not thy will, permit me to pursue the path wherein I was found by thee! The goddess replied,—I am well pleased with this thy noble generosity and tenderness; then go thy ways, and prosper; and let this man, his wife, and son, all rise up and live! The king rendered thanks, and returned unobserved to an apartment of his palace to sleep. Virava too being restored to life, together with his wife and son, he conducted them home.

Virava being again on guard at the king's door, and being questioned by him respecting the person who was heard crying, replied, that upon her being seen she became invisible,

ম কাপ্যন্যা বার্তা বিদ্যতে তদ্বচনমাকর্ণ্য রাজাচিন্ত
 যত্ কথময়ং শ্লাঘ্যোমহাসত্বঃ ॥ যতঃ ॥ প্রিয়ং কুর্য্যাদ
 ঋপণঃ শূরঃ স্যাদবিকত্যনঃ । দাতা নাপাত্রবর্ধী চ প্রণ
 ল্মঃ স্যাদনিষ্ঠুরঃ ॥ এতন্মহাপুরুষলक्षणং এতস্মিন্ সর্ধ
 মস্মি ততঃ স রাজা প্রাতঃ শিষ্টসভাং কৃत्वा সর্ধেত্নান্ন
 প্রস্তুত্ব প্রসাদান্নসমৈ কর্ণাটরাজ্যং দদৌ তত্ কিমাগন্তু
 কোজাতিমাভ্রাদৃষ্টঃ তত্রাপি উত্তমাধমমধ্যমাঃ সন্তি ।
 চক্রবাকোব্রূতে । যোঽকার্য্যং কার্য্যবত্ শাস্তি স কিং মম্মী
 নৃপেচ্ছয়া । বরং স্বামিমনোদুঃখং তন্ন শাসেদকার্য্যতঃ ॥
 বৈয়োগুরুশ্চ মম্মী চ যস্য রাজ্ঞঃ প্রিয়ঃ সদা । শরীরধর্ম্ম
 কোষেভ্যঃ ছিপ্রং স পরিহীযতে ॥ ষ্ট্রণু দেব ॥ ❀

আর কোনবৃত্তান্ত নাই। তাহার কথা শুনিয়া রাজা চিন্তা
 করিলেন এই ব্যক্তি শ্লাঘ্য মহানর যেহেতুক কার্ণারহিত
 হইয়া পুত্র করিবেক শূর আত্মশ্লাঘারহিত হইবেক দাতা
 অপাত্র দায়ী হবেনা বাবদুক ব্যক্তি নিষ্ঠুর ভাষী হবেনা
 এই মহাপুরুষ লক্ষণ ইহাতে সমস্তই আছে। তাহার পর
 সেই রাজা পূর্বাঙ্কে শিষ্ট সভা করিয়া সকল বৃত্তান্ত পুস্তাব
 করিয়া অনুগৃহ পুষ্কৃত তাহাকে কর্ণাট রাজ্য দিলেন। তবে
 জাতিমাত্রেতেই কি আগন্তুক দুষ্ট তাহাতে ও উত্তম মধ্যম
 অধম আছে। চক্রবাক বলিতেছে রাজার ইচ্ছাতে যে
 অকার্য্যকে কার্য্য তুল্য করিয়া শাসন করে সে কি মম্মী

পুত্র মনের দুঃখ ও ভাল তথাপি অকার্য্যকে কার্য্য করি
য়া শাসন করিবেন। যে রাজার বৈদ্য ও গুরু ও মন্ত্রী
পুিয়দ হয় সে রাজা শরীর এবং ধর্ম্ম এবং ভাণ্ডারহইতে
পরিত্যক্ত হয় হে মহারাজ শ্রবণ করহ ।

and that there were no further tidings of her. The king
was exceedingly well pleased at this, and said within
himself,—What a praiseworthy man he was, repeating
these lines:

He should speak kindly, without meanness; he should
be valiant, without boasting; he should be generous,
shedding his bounty into the dish of the worthy; he
should be resolute, but not harsh.

This is the character of a great man! In this there is all!

In the morning early the king assembled a special
council, and when he had publickly proclaimed the pro-
ceedings of the night, he bestowed the government of
Karnāṭta upon his generous deliverer. After this, con-
cluded the royal goose, must every one who cometh
unasked be a villain? The truth is, there are three sorts
amongst such too good, bad, and indifferent.

The minister replied,

Is he a minister who, in obedience to his sovereign's
pleasure, payeth attention to what should not be done,
as if it were proper to be done? It is better that the
heart of the master should suffer pain, than that he should
be ruined by doing that which ought not to be done.

If the physician, the spiritual guide, and the minister,
become the flatterers of their prince, he is sure to lose
his health, virtue, and treasury.

Hear this, please your highness:

পুণ্যালম্ব্য যদেকেন তন্মমাপি ভবিষ্যতি । হত্বা ভিক্ষুং
মহালোভান্নিধ্বর্ষী নাপিতোযথা ॥ রাজা পৃচ্ছতি কথ
মেতৎ । মন্ত্রী কথয়তি অস্বয়োধ্বায়া চুডামণিনাম
কুত্রিযঃ তেন ধনার্থিনা মহতা লোভেন ভগবাংস্বন্দ্রাঙ্ক
চুডামণিচ্ছিন্নমারাধিতঃ ততঃ সৌণ্যপোঃসৌ স্বপ্নে দর্শ
নং দত্ত্বা ভগবদাশেষাশ্চেষ্টাশ্চেষ্টাঃ যত্নময়ং প্রাতঃ
সৌরং কৃৎবা লগুণং হস্তে কৃৎবা গৃহে নিধৃতং স্যাস্যসি
ততোঃ স্মিন্বেবান্নে সমাগতং ভিক্ষুং পশ্যসি তন্নির্দয়ং লগুণ
প্রহারেণ হনিষ্যসি ততঃ সুবর্ণকলসোভবিষ্যতি তেন
ত্বয়া যাবজ্জীবং সুখিনা ভবিতব্যং ততস্তথানুষ্ঠিতে তদৃ
শং তত্র সৌরকরণাযানীতেন নাপিতেনালোক্য চিন্তিতং
অয়ে নিধিপ্রাপ্তেরথমুপায়ঃ অহমপ্যেবং কিং ন করোমি ।

পুণ্যপুয়ুক্ত কোন এক ব্যক্তি যাহা পাইয়াছে তাহা আমার
ও ইহঁবে ইহা জ্ঞান করিয়া যে লোক কর্ম কর সেনষ্ট
হয় ইহাতে দৃষ্টান্ত অতিশয় মোভপুয়ুক্ত ভিক্ষুককে তা
ড়না করিয়া নিধার্থী নাপিত যেমন নষ্ট হইয়াছিল ।
রাজা জিজ্ঞাসিতেছেন এ কি পুকার । মন্ত্রী কহিতেছে ।
অযোধ্যাতে চুডামণি নামে ঋত্বিয় ছিলেন তিনি ধনের
নিমিত্তে ভগবান্ চন্দ্রচূড়কে বহুকাল আরাধনা করিলেন ।
তাহার পর নিম্পাপ ঐ ঋত্বিয়কে স্বপ্নে দর্শন দিয়া
নরেশ্বরের আজ্ঞাতে অবের আদেশ করিলেন যে তুমি

অদ্য পূর্বাঙ্কে কোর করিয়া হস্তেতে লগুড় করিয়া গৃহেতে
লুক্কায়িত হইয়া থাকিবা অনন্তর ঐ অঙ্গনেতে এক ভিক্ষু
ককে আসিতে দেখিবা তাহাকে নির্দয় লগুড় পুহারে নষ্ট
করিবা তাহার পর সুবর্ণ কলস হইবে তাহাতেই তুমি জী
বন পর্যান্ত সুখী হইয়া থাকিবা তদনন্তর তাহা করিলে
তাহা হইল । তাহাতে কোরকরণের নিমিত্তে আসিয়াছিল
যে নাপিত সৈ তাহা দেখিয়া চিন্তা করিল যে নিধি পাইবার
উপায় এই আমি ও এই পুকার কেন না করি ॥

The good which hath been gained by one will also be gained by me But the barber who wished for wealth, having through his infatuation killed a beggar, is put to death himself.

How came that about ? said the king; and the minister related the following story:

FABLE X.

IN the country of Ayōdhyā there was a Kshatriya, by name Churā-manī, who, being exceedingly anxious for the acquisition of wealth, offered up his prayers, with great fervour, to him in whose diadem is a crescent, and at length, one night, when he had been purified of his sins, that deity appeared to him in his sleep, and addressed him in these words: in the morning early, having shaved thyself, stand out of sight with a stick in thy hand, and when thou shalt see a beggar coming into the yard, thou wilt beat him to death with thy stick without mercy; for his dead body shall be changed into a pot of gold, which may serve to make thee as happy as thou canst wish for the rest of thy life —The instructions of the god were followed, and success attended; but the whole transaction having been observed by the barber, who came to shave the man, said to himself,—Ho, ho! this is the way to get money is it? Why then may not I do the same?

ততঃ প্রমৃতি নাপিতঃ প্রত্যহং তথাবিধোল্লগুডহস্তঃ সুমি
 শ্রুতং মিত্তৌরাগমনং প্রতীক্ষতে একদা তেন প্রাপ্তোমিসুর্ল
 গুণ্ডেন ব্যাপাদিতঃ তৎস্বাদপরাধাত্ সোপি নাপিতঃ রাজ
 পুরুষৈর্ব্যাপাদিতঃ অতোঃহং ব্রবীমি পুण्याস্তম্বং যদেকেনে
 ত্যাদি । রাজাহ । পুরাষ্টককথোদ্ধারৈঃ কথং মিণীযতে
 পরঃ । স্যান্নিষ্কারণবম্বুর্বা কিং বা বিশ্বাসঘাতকঃ ॥
 যাতে প্রস্তুতমনুসম্বীযতাং মলয়াধিত্যকায়াং চেত্ চিব
 বর্ণস্তদধুনা কিং বিধেয়ং মম্বী বদতি দেব আগতপ্রাণি
 ধিমুখান্ময়া শ্রুতং তন্মহামম্বিণোম্ভ্রস্ব উপদেশে যস্মিন্
 বর্ণেনানাৱরঃ কৃতঃ ততোঃসৌ মূঢ়োজেতুং শক্যঃ ॥ তথা
 চোক্তং ॥ লুম্বঃ কুরোঃসলসোঃসত্যঃ প্রমাদিভিরবস্থিতঃ ।
 মূঢ়োযোধাবমন্তা চ সুখচ্ছ্যেয়োরিণুঃ স্মৃতঃ ॥

সেই অবধি ঐ নাপিত পুত্রিদিন সেইরূপ লগুড় হস্ত হইয়া
 নির্জনেতে ভিক্ষুকের আগমন পুত্রীক্ষা করে। এক দিবস সেই
 নাপিতভিক্ষুককে পাইয়া নষ্ট করিল সেই নিমিত্তে রাজপুরু
 যেরা তাহাকে নষ্ট করিল । অতএব আমি বলি পুণ্যপুস্ক
 কোন ব্যক্তি ইত্যাদি । রাজা কহিলেন পূর্বকালের বৃত্তান্ত
 কথনদ্বারা কি পুকারেপর নিশীত হইবে কি কারণ বা
 তিরেকে বন্ধু হইবে কিম্বা বিশ্বাস ঘাতকই হইবে যাউক
 উপস্থিত অনুসন্ধান কর মনয় পর্বত মণীপে যদি চিত্রবর্ণ
 আশিয়াছে তবে এখন কি কর্তব্য মন্ত্রী বলিতেছে হে মহা

রাজ আগত দূতের মুখেতে আনি শুনিয়াছি এই মহা মন্ত্রী
গুপ্তের উপদেশেতে যে চিত্রবর্ণ অমাদর করিয়াছে সেই নি
মিত্তে এই চিত্রবর্ণ মূঢ়তাহাকে জয় করিতে শকা বটে বিজেরা
তাহা কহিয়াছেন লোভী ও খল ও অলস ও মিথ্যাবাদী ও
অনবধানস্থ ও মূঢ় আর যোদ্ধারদিগের অবজ্ঞাকারী এই
সকল বিপক্ষ অনায়াসেই হইয়াছে ॥

From that moment the barber used every day to con-
ceal himself with a large stick in his hand, waiting for
the coming of a beggar; and at length, when one came,
he beat him so unmercifully, that he died; and the con-
sequence was, that the barber was put to death by the
officers of justice for the crime.—I say, therefore, *The
good &c.*

The king replied,

How is a stranger to be found out by the repetition of a
parcel of old stories, whether he be one who hath no
motive, or a friend, or one who would betray one's
confidence?

Let the crow alone, and let us pursue what we have
to do. Chitra-varna is now in the neighbourhood of
Malaya. What is to be done? The minister replied,—
'Tis true he is come; but I have heard from the mouth
of a trusty spy, that Chitra-varna hath treated the wise
counsels of that great minister the vulture with contempt;
and therefore the fool may be defeated; for they say,

The enemy who is either avaricious, subject to passi-
on, unruly, treacherous, violent, fearful, unsteady, or
a fool, is easily to be defeated, we are told.

ততোঽসৌ যাবদস্মদুর্গদ্বাররোধনং কৰোতি তাবন্নয়দ্রিঘন
 বৰ্মসু তদ্বলানি হন্তুং সারসাদয়ঃ সেনাপত্যোন্যুজ্য
 ন্তাং ॥ তথা চ ॥ দীর্ঘবৰ্মপরিশ্রান্তং নয়দ্রিঘনসঙ্কুলং
 ঘোরাগ্নিভয়সংবৃত্তং স্তম্ভপিপাসাদ্বিতং তথা ॥ প্রমত্তং ভো
 জনব্যগ্রং ব্যাধিদুর্ভিক্ষপীড়িতং । অসংস্থিতমভূযিষ্ঠং বৃষ্টি
 বাতসমাকুলং ॥ পঙ্কপাংশুজলাচ্ছব্রং সুযত্নং দস্যুবিদ্রুতং
 যৎভূতং মহীপালঃ পরস্যৈন্যং বিঘাতয়েৎ ॥ অন্যচ্চ ॥
 অবস্কন্দভয়াদ্রাজা প্রজাগরকৃতশ্রমং । দিবাসুপ্তং
 সমাহন্যান্নিদ্ৰাব্যাকুলসৈনিকং ॥ অতস্তস্য প্রমাদিনো
 বলং গত্বা যথাবকাশং দিবানিশং ব্রন্থস্বস্মৈনাপত্যঃ
 তথানুষ্ঠিতে চিত্রবৰ্ণস্য সৈনিকাঃ সেনাপত্যস্য বহবো
 নিহতাঃ ততশ্চিত্রবর্ণোবিষম্ভঃ স্তমভ্বিণং দূরদর্শিনমাহ।

সেই হেতুক ঐ চিত্রবর্ণ যাবৎপর্যন্ত আগারদিগের দুর্গদ্বার
 রোধ না করে তাবৎপর্যন্ত নদী ও পর্বত ও বন ও পথেতে
 তাহার সেনাকে হানিবার নিমিত্তে সারসপুভৃতি সেনাপতি
 রা নিযুক্ত হউন বিজ্ঞেরা তাহা কহিয়াছেন দূরপথশ্রান্ত ও
 নদী গিরি অরণ্যেতে আত্মন ও ঘোরাগ্নি ভয়েতে ভীত ও ক্ষু
 ধা এবং পিপাসাতে পীড়িত ও মত্ত ও ভোজনব্যস্ত ও রোগী
 এবং দুর্ভিক্ষেতে পীড়িত ও অনাস্থায়ী ও অগ্ন ও বৃষ্টি এবং
 বায়ুতে ব্যাজন ও গন্ধ এবং ধূলি এবং জলেতে আচ্ছন্ন
 ও অতিশয় ব্যগ্র ও দগ্ন্য পীড়িত এবং মৃত শত্রুসেনাকে

রাজা নষ্ট করিবেন । অপর আক্রমণভয়েতে সেই রাজা
জাগরণশূন্য দিবাসুপ্ত নিদ্রাব্যাকুল সেনাকে নষ্ট করিবেন
এই নিমিত্তে গিয়া পুনস্তের বল অবকাশক্রমেতে আশা
রদিগের সেনাপতিরা নষ্ট করুক তাহা করিলে পরে চিত্র
বর্গের সেনা ও সেনাপতি অনেক নষ্ট হইল । তৎপরে
চিত্রবর্গ উদ্ভিষ্ট হইয়া আপন মন্ত্রী দূরদর্শিকে বলিল ॥

Then, before he shall have given orders to invest our castle, let the Sārasā and other generals be sent out upon the rivers, into the woods, upon the mountains, and through the passes, to destroy his forces They say,

If an enemy's army be fatigued by a long march, confined by rivers, hills, or forests; terrified by the apprehension of dreadful fires, distressed by hunger, thirst, and the like;

With their best provisions spoilt, afflicted with pestilence and famine, not steady, not numerous, embarrassed by rains and winds;

Incommoded by dirt, dust, or water, or destitute of good quarters; a prince may defeat it, and under any circumstances like these.

Or if an enemy be found sleeping in the day, from the great fatigue of watching for fear of a surprize, thus overpowered for want of rest, one may at all times easily defeat him.

Wherefore, let these generals march against the forces of that impetuous peacock, and fight them, either by day or night, as they may find it most expedient:

This advice being executed accordingly, the army of Chitra-varna was overthrown, and a great many of its principal leaders fell in the battle. Chitra-varna was exceedingly cast down at this event, and said to his minister the vulture,—

গাত কিমিত্যস্বাদুপেক্ষা ক্রিয়তে কিং জ্ঞাপি অবিনয়োম
 নাস্তি ॥ তথা চোক্তং । ন রাজ্যং প্রাপ্তমিত্যেব বর্ণিতম
 মসাম্প্রতং । শ্রিয়ং হ্যবিনয়োহনুজরারূপমিবোক্তমং ॥
 অপি চ ॥ দত্তঃ শ্রিয়মধিগচ্ছতি পথ্যাশৌ কল্যতী সুখ
 মরোগো চ । উদ্যুক্তোবিদ্যান্তং ধর্ম্মার্থযশাসি বিনীতঃ ॥
 মৃগোঽবদত্ দেব ঋণু । অবিদ্বানপি ভূপালো বিদ্যাবৃদ্ধোপ
 সেবযা । পরাং জ্ঞায়ামবাপ্নোতি জলাসন্নতর্য্যযা ॥ অন্যচ্চ
 ॥ পানং স্ত্রী মৃগয়া দ্যুতমর্থদূষণমেব চ বাগ্দণ্ডোচস্তু
 পারুষ্যং ব্যসনানি মহোভূজাং ॥ কিঞ্চ । ন সাহসে কান্ত
 রসানুবর্ত্তিনা ন চাপ্যুপাযোপহৃতান্তরাत्मনা । বিভূতযঃ
 শক্যমবাস্তুমূর্জিতানয়ে চ শ্রীর্থ্যে চ বসন্তি সম্পদঃ ॥

হে পিতঃ কেন আমাকে উপেক্ষা করিতেছে কোথাও কি আ
 নার অবিনয় আছে । পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন রাজত্ব
 পাইয়াছি ইহা জ্ঞান করিয়া অবিনয় করিবে না যেহেতুক
 বান্ধক্যাবস্থা যেকোন উত্তম সৌন্দর্য্য নষ্ট করে এই রূপ অবি
 নয় সম্পত্তি নষ্ট করে । আর কন্মনিপুণ লোক সম্পত্তি পায়
 পথ্যাশা লোক মজ্জল ও সুখ ও আরোগ্য পায় উদোগো
 লোক বিদ্যার সীমা পায় ও বিনয়েতে ধর্ম্ম ও অর্থ ও যশ
 পায় । গৃধ বনিতেছে হে মহারাজ শুন জনসমীপস্থ বৃক্ষ
 যেকোন বৃক্ষ পায় এইরূপ অজ্ঞ রাজা ও গুণবানকে নিকটে

রাখিয়া বৃদ্ধি পায় অপর মাদক দ্রব্যের পান জী মৃগয়া দূত
ক্রীড়া পরদ্রব্যের অপহরণ অবশ্য দেয়ের অদান নিষ্ঠুর বাক্য
নিরপরাধীকে দণ্ড করা এই সকল রাজারদিগের বাসন
আর কেবল সাহস মাত্রাবলম্বি লোক এবং উপায় রহিত
লোক ঐশ্বর্য্য পাইতে পারে না কিন্তু ন্যায়েতে ও শৌর্য্যেতে
সম্পত্তি পায়।

O, my father! why do you neglect me? How have I been
wanting in conduct?

Never before now was empire gained, thus to be lost!
The want of prudence destroyeth fortune, even as sick-
ness the greatest beauty

One who is expert gaineth fortune; he who eateth but
what is wholesome, health, and the healthy, ease, the
diligent, the end of knowledge, and he who is well
disciplined, virtue, profit, and reputation.

The vulture replied,—Please your highness,

A king, although he be not himself experienced, may,
if he has one old in wisdom about him, prosper, like a
tree which groweth by the water's side.

Drinking, women, hunting, gaming, borrowing of mo-
ney, harshness of speech, and severity, are great blem-
ishes in a prince.

Riches and prosperity are not possible to be acquired
by such as pursue power with sudden violence, nor by
those whose minds are at a loss for the means, for for-
tune dwelleth in good conduct and noble resolution.

ত্বয়া স্ববলোচ্চাহমবলোক্য সাহসৈকবাসিনা মথোপন্য
 স্তেষ্বপি মন্ত্রেধ্বনবধানং বাক্পারুষ্যস্ব কৃতং অতোদুর্নীতে:
 ফলমিদমনুভূয়তে ॥ তথা চোক্তং ॥ দুৰ্ম্মম্বিণং কমপথ্যা
 ন্তি ন নীতিদোষা সন্তাপয়ন্তি কমপথ্যভুজং ন রোগাঃ ।
 কং শ্রীর্ন দর্পয়তি কং ন নিহন্তি মৃত্যুঃ কং স্বীকৃতান
 বিষয়াঃ পরিতাপয়ন্তি ॥ অপরস্ব ॥ মুদং বিধাদঃ শরদং
 হিমাগমস্তমোবিল্বান্ সুকৃতঙ্কৃতঘ্নতা । ত্রিযোপয
 ত্তিঃ শুচমাপদং নয়ঃ শ্রিয়ঃ সমৃদ্ধাঅপি হন্তি দুর্নয়ঃ ॥
 ইত্যুক্তা তেন মম্বিণালোচিত প্রজ্ঞাহোনাঃ যং রাজা নো
 চেৎ কথং নীতিশাস্ত্রকথা কৌমুদীং বাগুল্কাভিস্তিমির
 যতি ॥ যতঃ ॥ यस্য নাস্তি স্বয়ং প্রজ্ঞা শাস্ত্রং তস্য করো
 তি কিং । লোচনাভ্যাং বিহীনস্য দর্পণঃ কিং করিষ্যতি ॥

তুমি নিজ সেনার উৎসাহ দেখিয়া সাহসিক আশ্রয়
 কর্তৃক উপদিষ্ট মন্ত্রগাতে অবধান করিয়াছ আর নিষ্ঠুর
 বাক্য কহিয়াছ অতএব এই দুর্নীতের ফল এই অনুভূত
 হইতেছে । পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন নীতি দোষ কোন
 দুষ্ট মন্ত্রকারকে না পায় ও রোগ কোন কুপথ্যাসিকে তাপ
 না দেয় সম্পত্তি কোন লোককে গরিব না করে যম কাহা
 কে নষ্ট না করে জীকৃত বিষয় কাহাকে তাপিত না করে
 বিষমতা হর্ষকে শান্ত কাল শরৎকে সূর্য অন্ধকারকে কৃত
 যুতা পুণ্যকে নিত্রদর্শন শোককে ন্যায় বিগতিক দূর্নীতি

অতিরিক্ত ঐশ্বর্যকে ও নষ্ট করে ইহা কহিয়া সে মন্ত্রী আ
লোচনা করিল এই রাজানিবুদ্ধি নতুবা কেন নীতি শাস্ত্রের
কথারূপ জ্যোৎস্নাকে বাক্যরূপ উদ্ধাতে করিয়া অন্ধকার
করিতেছে যেহেতুক যাহার বুদ্ধি নাই শাস্ত্র তাহার কি
করিবেক দুই চক্ষুতে রহিত ব্যক্তির দর্পণ কি করিবে।

But, continued the vulture, your highness, perceiving
the ardour of the forces, and from mere rashness, paid
no attention to the counsels I laid before you, and treat-
ed me with harshness of speech, this fruit, therefore, of
thy bad conduct, is now actually gathered.

Upon what minister do not the errors of conduct fall?
What man, who takes not proper regimen, do not
disorders torment? Whom doth not fortune make
proud? Whom doth not death destroy? To whom do not
the things which women do, give cause of great uneasi-
ness?

Melancholy overcometh cheerfulness, the winter au-
tumn, the sun darkness, ingratitude virtue, the ap-
pearance of friends grief, justice misfortune, and im-
prudence great prosperity

But, at that time, I said within myself,—This my mas-
ter is certainly destitute of wisdom, how he dimi-
nishes the lustre of good instructions by the meteor of
his own words!

For,

What will the wise precept. of books do for him who
is destitute of natural wisdom? What will a mirror do
for him who hath no eyes?

ইত্যালোচ্য তূष्ণীংস্থিতঃ অথ রাজা বহ্নাজ্জলিরাহ তাং
 অস্বয়ং মমাপরাধঃ ইদানীং যথাবশিষ্টবলসহিতং
 প্রত্যাঘ্র্য বিম্ব্যাচলং গচ্ছামি তত্রোপদিগ্ন গৃধ্রঃ স্বগতং
 চিন্তয়তি ক্রিয়তামত্র প্রতীকারঃ ॥ যতঃ ॥ দেবতাসু
 গুরৌ গোষু রাজসু ব্রাহ্মণেষু চ । নিযন্তব্যঃ সदा
 কোপোবালঘটনাতুরেষু চ ॥ মন্ত্রী প্রহস্য ব্রূতে দেব মা
 ভৈষীঃ সমাশ্বসি হি শৃণু দেব । মন্নিং ভিন্নসম্বানে
 ভিষজাং সন্নিপাতকে । কর্ম্মসি প্রেচ্ছ্যতে প্রজ্ঞাসুস্থে কোবা
 ন পাণ্ডিতঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ আরম্ভন্তেঃস্বমেবাজ্ঞাঃ কামং
 ব্যগ্রাভবন্তি চ । মহারম্মাঃ কৃতধিযসিষ্ঠন্তি চ নিরা
 কুলাঃ ॥ তদস্ব ভবত্প্রতাপাদেব দুর্গং ভঙ্কতা কোর্নিপ্রতা
 পসহিতং ত্বামচিরেণ কালেন বিম্ব্যাচলং নেম্যামি ॥

ইহা আলোচনা করিয়া চুপ করিয়া থাকিল । অনন্তর রাজা
 কৃতাজ্জলি ইহীয়া কহিলেন হে পিতঃ আমার এই অপরাধ
 আছে সম্প্রতি অবশিষ্টে সৈন্যের সহিত করিয়া বিম্ব্যা
 পর্বতে যে ক্রমে যাই তাহাতে উপদেশ কর । গৃধ্র অন্তঃ
 করণে চিন্তা করিতে লাগিল ইহাতে পুতীকার কর যে
 হেতুক দেবতাতে গুরুতে গুরুতে রাজাতে ব্রাহ্মণেতে বাল
 কেতে আতুরেতে কদাচ ক্রোধ কর্তব্য নয় । মন্ত্রী হাঁসিয়া
 কহিতেছে হে মহারাজ ভয় করিও না আশ্বাসিত ইহীয়া শুন
 নত্বিরদিগের ভিন্ন সম্বানেতে বৈদ্যেরদিগের সন্নিপাতেতে

বুদ্ধি জানা যায় সুস্থিতে কে বা পণ্ডিত নয় । অপর নিবুদ্ধি
লোকেরা অল্প কৰ্ম করে আর ব্যস্ত হয় সুবুদ্ধি লোকেরা
বড় কৰ্ম করে অথচ ব্যাকুল হয় না । সেইহেতুক আপন
কার অনুগৃহেতে দুর্গকে ভাঙ্গিয়া কীর্তি ও পুতাপের সহিত
তোমাকে অল্প কালেতেই বিদ্বাপর্ষতে লইয়া যাইব ।

And, for these reasons, I remained silent —The king, upon hearing this, joining his hands, said,—I agree that the fault was all my own ! But, in our present distress, thou shouldst instruct me how I shall be able to retreat, with the few troops I have left, to the Vindhya mountains ! The minister now resolved, within his own mind, that he ought to be reconciled to his master, re-collecting this saying :

Anger should always be restrained in the presence of the gods, before one's master, sovereign, or a Brāhman, in a cow-house, and not less where there are children, and aged or sick people.

Do not be alarmed ! said he to the king, smiling as he spoke, be comforted ! They say,

The wisdom of ministers shineth most upon the breach of concord, and of physicians in acute distempers. In peace, who is not wise ?

If fools undertake ever so little, they willingly become independent, whilst those who perform great actions, and are men of wisdom and experience, remain attached. This being the case, when by thy valour thou shalt have penetrated the castle of the enemy, I will, without delay, conduct thee, together with honour, glory, and thy army, safe back to the Vindhya mountains.

তোষিক সুবর্ণ বস্ত্রাদি দেও যেহেতুক যে অস্থানস্থিত কাকি
নীকে ও সহস্র নিক্ততুল্য জ্ঞান করিয়া সংগ্রহ করে আর
সময় বিশেষে কোটি ধনেতে ও মুক্তহস্ত হয় সেই রাজ
সিংহকে লক্ষ্মী ত্যাগ করেন না ।

How shall this be accomplished, said the peacock king, with so small a force? Please your highness, replied the vulture, the whole shall come to pass. But as the opposite of dilatoriness is a quality absolutely necessary for a conqueror to insure success, let instant orders be given for the blockade of the enemies castle.

Soon after this resolution, a spy came to the royal goose Hiranya-garbha, and told him that the peacock king, by the advice of the vulture his minister, small as his army was, had resolved to march and block up the castle gates. The king said, O Far-see, what is to be done now? Let our army, replied the minister, be divided into good and bad, and let presents be made to the whole, according to their deserts, of money, cloth, and the like, for it is said,

Fortune never forsaketh that lion, prince-who sometimes collects even twenty shells, which is found by chance in the road, and esteems them as thousand Niskas, but at other times bestows millions of weights of gold with a liberal hand.

॥ অন্যত্র ॥ ক্রতৌ বিবাহে ব্যসনে রিপুত্বে যশস্করে কস্ম
 ণি মিত্রসংগ্রহে । প্রিয়াসু নারীষু নরেষু বান্ধবেষ্বতিথ্যযো
 নাস্তি নরাধিপাশ্চসু ॥ যতঃ ॥ মূৰ্খঃ স্বল্পব্যয়চাৰ্য্যসাৎ
 সৰ্বনাশং কৰোতি হি । কঃ সুধীঃ সন্ত্যজদ্বাণ্ডং শুল্কস্থে
 বাতিসাদ্ভসাৎ ॥ রাজাহ কথমিহ সময়ে অতিথ্যযো
 যুজ্যতে উক্তঞ্চ আপদর্থং ধনং রত্নেদতি ॥ মন্ত্রী ব্রূতে
 শ্রীমতঃ কথমাপদঃ ॥ রাজাহ কদাচিচ্চলতে লঙ্কাঃ ।
 মন্ত্রী ব্রূতে সঙ্ঘিতার্থো বিনশ্যতি তদেব কাৰ্পণ্যং বিমুচ্য
 দানমানাভ্যাং স্বমট্যঃ পুরস্কিয়ন্তাং ॥ তথা চোক্তং ॥
 পরস্পরজ্ঞাঃ সংহৃষ্টাস্থ্যক্তাং প্রাণান্ সুনিশ্চিতাঃ । কুলী
 নাঃ পূজিতা সম্যগিব জয়ন্তে দ্বিষদ্বলং ॥

অপর যজ্ঞেতে ও বিবাহেতে বিপৎ কালেতে শত্রু ক্ষয়েতে
 বীর্ত্তিকর বর্শ্মেতে মিত্র করণেতে পুয় স্ত্রীতে বন্ধু লোকেতে
 হে মহারাজ এই আটেতে ব্যয় অতিশয় নাই যেহেতুক নিবু
 দ্বিলোক অতাল্প ব্যয়ের ভয়েতে সর্বনাশ করে কোন সুবুদ্ধি
 লোক শুদ্ধদানের ভয়েতে মোট ত্যাগ করোঁ রাজা কহিলেন
 কি পুকারে এ সময়ে অতিরিক্ত ব্যয় উপযুক্ত হয় পণ্ডিতেরা
 কহিয়াছেন বিপত্তির নিমিত্তে ধন রক্ষা করিবেক । মন্ত্রী
 বলিতেছে ধনবানের কি আপদ । রাজা কহিলেন লক্ষ্মী
 ও কখন যান । মন্ত্রী কহিতেছে সঞ্চিত ধন ও নষ্ট হয়


হে মহারাজ সেইহেতুক কৃপণতা ত্যাগ করিয়া দান ও সম্মানদ্বারা স্বকীয় যোদ্ধারদিগের পুরস্কার কর পাণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন পরস্পর জ্ঞাত ও হর্ষিত ও প্রাণত্যাগ করিতে উদ্যত ও অলীন ও সম্মানিত ইহারা বিপক্ষের সেনাকে জয় করে ।

A prince cannot be at an extraordinary expence on eight occasions. at a sacrifice, at a wedding, in times of distress, for the destruction of an enemy, in any meritorious work, in entertaining friends, upon women who are dear to him, and in relieving relations who are in want.

A fool, from the dread of ever so trifling expence, runneth every thing he undertaketh What wise man would, from extreme scrupulousness, entirely forsake a clean pot?

How, demanded the king, is it proper to be extravagant on any occasion, when they say,—*A man should keep his riches against accidents, &c?* How can one who is fortunate, said the minister, meet with accidents? Because fortune sometimes leaves one, replied the king. Hoarded treasure, observed the minister, is often lost; then away with parsimony, and let thy brave soldiers be distinguished by gifts and honours.

Those who have been preferred, and are well contented; such as are regardless of life, and have been proved; with those of noble birth, who have been treated with marks of distinction; will, all of them, be victorious over the forces of the enemy.

অপরঞ্চ ॥ স্বভট্টাঃ শীলসম্পন্নাঃ সৎহতাঃ কৃতনিশ্চয়াঃ
 অপি পঞ্চশতং শূরানিঘ्नন্তি রিপুবাहिनीং ॥ কিञ্চ ॥
 শিষ্টৈরপ্যবিশেষজ্ঞভূতশ্চ কৃতনাথকঃ । ত্যজ্যতে কিং পুন
 নান্যৈর্যশ্চাপ্যাत्मমরিনরঃ ॥ যতঃ॥সত্যং শৈথ্যং দয়া ত্যা
 গো নৃপস্যৈতে মহাগুণাঃ এभिর্মুক্তোমহীপালঃ প্রাপ্নোতি
 খলু বাচ্যতাং ॥ ইদৃশিপ্রস্তাবঅমাत्याস্তাবদেব পুর
 স্কর্তব্যঃ ॥ তথা চোক্তং ॥ ঘোচেন প্রতিবুদ্ধঃ স্যাৎ সহ
 তেনোদযৌ ব্যধৌ । সুবিশ্বস্তোনিয়োক্তব্যঃ প্রাণেষু চ ধনেষু
 চ॥যতঃ ॥ধূর্তঃ স্ত্রী বা শিশুর্যস্য মন্ত্রিণঃ স্যুর্মহীপতেঃ
 অনীতিপবনচ্চিত্তমঃ কার্য্য্য্য্যৈ সনিমজ্জতি ॥ শৃণু দেব
 হর্ষক্রোধৌ সমৌ यस্য শাস্ত্রার্থে প্রত্যয়স্তথা । নিত্যং মৃত্যা
 নৃপেচ্চা চ यस্য স্যাচ্ছনদা ধরা ॥ *

অপর শীলসম্পন্ন মিনিত প্রাণ তাগ করিতে
 উদ্যুক্ত শূর স্বকীয় পাঁচ শত যোদ্ধা ও শত্রু পক্ষীয়
 অনেক সেনাকে নষ্ট করে .। অপর শিষ্ট লোকেরা
 ও বিশেষ জ্ঞানরহিত ক্রোধী কৃত্যু আত্মস্তুরি লোককে
 তাগ করে অন্যেরা কি তাগ না করে যেহেতুক সত্য ও
 শৌর্য্য ও দয়া ও দান এই সকল রাজার বড় গুণ এই
 সকল গুণেতে রহিত রাজা নিতান্ত নিন্দ্যাতা পায় এতাদৃশ
 বিষয়েতে মন্ত্রিরদিগের তাবৎপর্য্যন্ত পুরস্কার কর্তব্য বিজ্ঞে
 রা তাহা কহিয়াছেন যে রাজা যে মন্ত্রিহইতে বাড়ে সে

রাজা। সে মন্ত্রিকে বাড়াইবেক আর ধন দিবেক এবং জীব
বিষয়েতে আর ধন বিষয়েতে অত্যন্ত বিশ্বস্ত পাত্রকে নি
য়োগ করিবেক যেহেতুক ধূর্ত ও স্ত্রী ও বালক ইহারা যে
রাজার মন্ত্রী সে রাজা অন্যায়রূপ বাযুতে বিক্ষিপ্ত হইয়া
কার্য্যরূপ সমুদ্রেতে মগ্ন হয় । শুন হে মহারাজ যাহার হর্ষ
ও ক্রোধ সমান আর শাস্ত্র পুতিপাদ্যেতে দৃঢ়জ্ঞান আর
সর্বদা ভৃত্যের অনপেক্ষা পৃথিবী তাহার ধনদা হন ।

A trifling force, consisting of only five hundred heroes, who are good soldiers, well experienced in the art of war, and resolute, when formed into a compact body, will beat a whole army of their enemies.

He who is devoid common of sense, furious, ungrateful, and voracious, is deserted by all honest men, how much, more by others'

The greatest qualities for the prince are, veracity, courage, generosity, and liberality. If a sovereign be destitute of these, he will certainly acquire the state of being talked of with contempt.

Ministers, likewise, should be distinguished and promoted, for,

The prince who is exalted by his minister, should in return prompt, and confer riches on him, and he should employ confidential men in affairs of life and fortune.

For,

The prince who hath for his advisers, knaves, women, children, or fools, is tossed by the winds of vice, and drowned in a sea of trouble!

Observe, you highness, that

The earth is bountiful unto him, who hath neither extreme joy nor anger in his breast, who hath a treasure with but little expence, and who hath servants who are always vigilant.

যেণাং রাজ্ঞা সহ স্যাতামুপচয়াপচয়ৌ ধ্রুবং । অমাত্যা
 ইতি তাদ্রাজা নাবমন্যেত্ কদাচন ॥ যতঃ ॥ মহোভূজো
 মদান্ধস্য সঙ্কীর্ণস্যেবদন্তিনঃ । স্বললতোহি করালম্বঃ
 সসুচ্ছত্ চিরচেষ্টিতং ॥ অথাগত্য প্রণম্য মেঘবর্ণোব্রূতে
 দেব দৃষ্টিপ্রসাদং কুরু ইদানীং বিপলোদুর্গদ্বারি বর্ততে
 তদেবপাদাদেশাদ্বহির্নিঃসৃত্য স্ববিক্রমং দর্শয়ামি তেন
 দেবপাদানামানৃণ্যমুপগচ্ছামি । অকোব্রূতে মৈব যদি
 বহির্নিঃসৃত্য চোদ্রব্যং তদা দুর্গাশ্রয়ণমেব নিঃপ্রয়োজনং ॥
 অপরঞ্চ ॥ বিষমোহি যথা নক্সঃ সলিলাগ্নির্গতোঽবশঃ
 বনাগ্নিনির্গতঃ শূরঃ সিংহোপি স্যাৎ শৃগালবৎ । দেব স্বয়ং
 গত্বা দৃশ্যতাং যুত্বং ॥ যতঃ ॥ পুরস্কৃত্য বলং রাজা যোধযেদ
 বলোকয়ন্ । স্বামিনাধিষ্ঠিতঃ শ্বাপি কিং নসিংহায়তে ধ্রুবং

রাজার সহিত যাহারদিগেরে বৃদ্ধি ও হ্রাস হয় তাহারদিগকে
 আশ্রিত্য বলিয়া রাজা কদাচ অবজ্ঞা করিবে না যেহেতুক
 ইন্দিরগুহ মধ্যস্থ স্তলনবিশিষ্টে মদাক্ষ ইন্দির যেমন ইন্দিরগত
 সুহৃদ লোকের বহুকাল চেষ্ঠাতে হয় এমনি কার্যেতে স্তলন
 বিশিষ্টে মদাক্ষ রাজার মন্ত্রিরদিগের বহুকাল চেষ্ঠাতে করের
 গৃহণ হয় । অনন্তর মেঘ বর্ণ আসিয়া পুণাম করিয়া বলিতে
 ছে হে মহারাজ অনুগৃহ পূর্বক অবলোকন করুন সম্প্রতি
 দুর্গদ্বারেতে বিপক্ষ আছে সেই হেতুক মহারাজার চরণের
 আজ্ঞা হইলে বাহিরে গিয়া নিজ পরাক্রম দেখাইতাহা কার

রাজা মহারাজের পারের অশ্বাশী হই। চক্রবাক বলিতেছে ইহা করিও না। যদিও বাহির হইয়া যুদ্ধ করা যায় তবে দুর্গাশ্রয় নিস্প্রয়োজন। অপর যেমন ভয়ানক অস্ত্রীর জলহইতে নিগত হইলে অবশ্য হয় বলবান সিংহ ও বনহইতে নিগত হইলে শৃগালের ন্যায় হয়। হে মহারাজ আপনি গিয়া যুদ্ধ দেখুন যেহেতুক রাজা দেখত সেনাকে অগ্নিতে করিয়া যুদ্ধ করাইবেক স্বান্যধিষ্ঠিত অশ্বর ও কি সিংহের ন্যায় আচরণ করে না।

Such ministers as resolve to prosper, or perish, with their sovereign, ought never to be disgraced by him.

For,

When a king, blinded by his rashness, is about to be overwhelmed in the ocean of his affairs, a friendly minister stretcheth out his hand from the dry land to assist him.

Just now the crow Cloud-colour came in, and, bowing, cried,—Please your highness, look yonder! The enemy is at the gate anxious for battle. But issue your commands, and I will sally forth and display my prowess, by which action I shall pay the debt I owe your highness! Not so, not so! replied Know-all, it is by no means proper to go forth to fight, if it were, there would have been no occasion for our taking shelter in the castle!

The alligator, matchless as he is, when he quitteth the water, is without power. Were even the lion to forsake the forests, he would doubtless be upon a level with the jackal.

Please your highness, said the crow, go yourself, and see the battle.

A king having advanced his forces, should fight, overlooking them, for who will not truly act the lion, when his master standeth over him?

অথ তেসর্বে দুর্গদ্বারং গত্বা মহাহ্রদং কৃতবন্তঃ অপরেদ্যুস্থিত
 বর্ণো রাজা মধুমুবাচ তাত স্বপ্রতিজ্ঞাতমধুনা নির্ধা
 হ্রয়মধোব্রূতে। দেব শৃণু তাবত্। অকালসহমত্যল্পমূর্খ
 ব্যসনিনাযকং। সুগুপ্তং ভীরুযোধস্ব দুর্গব্যসনমুচ্যতে ॥
 তত্তাবদত্র নাस्ति। উপজাপচ্ছিরাবোধে। ঽবস্কান্দস্তোত্র
 পুরুষঃ। দুর্গস্য লঙ্কানোপায়াস্বত্বারঃ কথিতাঃ স্মে ॥ অত্র
 যথাশক্তি ক্রিয়তে যত্নঃ কর্ণে কথয়তি এবমেব ততে। ঽনু
 দিতএব ভাস্করে চতুর্ধ্বপি দুর্গদ্বারেণ দৃশ্যে যুদে দুর্গাভ্য
 ন্তরমৃদে স্বে কদা কা কৈরগ্নিনির্লিপ্তস্ততোমৃদীতং মৃদীতং
 দুর্গমিতি কোলাহলং শ্রুত্বা সর্বতঃ প্রদীপ্তাগ্নিমবলোক্য
 রাজহংসসৈনিকা দুর্গবাসিনস্ব সত্বরং ঋদং প্রবিষ্টাঃ ॥

অনন্তর তাহার। সকলে দুর্গদ্বারে যাইয়া অতিবড় যুদ্ধ
 করিল। পরদিবস চিত্রবর্ণ রাজা গৃধ্রকে বলিল হে তাত
 এখন আপন পুতিজ্ঞা পুতিপালন কর। গৃধ্র বলিতেছে
 হে মহারাজ শুনুন বহুকালস্থায়ী ও অনেক সৈন্য পণ্ডিত
 বাসন রহিতের আশ্রয় ও সুখাত ও শরযোধ এই সকল
 দুর্গ গুণ। আর অল্পকালস্থায়ী ও অতল্প সৈন্য মূর্খ বাসনির
 আশ্রয় ও সুগুপ্ত ভীকযোধ এই সকল দুর্গ বাসন এখানে
 নাই কিন্তু ভেদ আর বহুকাল না বুঝা আর আক্রমণ
 আর উগ্ৰ পুরুষ এই চারি দুর্গলঙ্ঘনের উপায় কর্ণে কহি
 তেছে ইহাতে শঙ্কানুসারে এইরূপ যত্ন কর। তদনন্তর

সূর্যোদয়ের পূর্বেই দুর্গেরচারিদ্বারেতেই যুদ্ধহইলে পরে এক দিবস দুর্গমধ্যবর্ত্তি গৃহেতে কাকেরা অগ্নি ক্লেপণ করিল তাহার পর দুর্গ লইয়াছি এ কোলাহল শুনিয়া সর্বত্র জ্বলিতাগ্নি দেখিয়া রাজহংসের সেনারা আর দুর্গবাসি লোকেরা ত্বরিতে হুদে পুবেশ করিল ।

After this, they all marched to the castle gate, and fought a great battle In the mean time Chitia-varna, the peacock king, addressed his minister to fulfil his promise immediately, who replied,— Attend, please your highness.

A fortification is declared to be weak, when it is unable to hold out a long time, is extremely small, and very much exposed, or when commanded by a weak and unfortunate officer

But seeing that is not the case here,

There are four ways to take a fort, which are these: creating divisions, long blockading, surprise, and storming.

At present, only let the battle be maintained to the utmost of our power, concluded the vulture.

Early in the morning, even before the sun was up, when the battle had commenced at all the four gates of the castle, the crow, who was in the inside, contrived to set fire to every house. There was now a confused rumour, that the enemy had got possession, hearing which, and, at the same time, seeing a vast number of houses in flames, the troops of the royal goose, with all the private inhabitants, fled to the waters for security; according to this saying:

ଯତଃ ॥ ସୁମନ୍ଦିତମ୍ ସୁବିକ୍ରାନ୍ତମ୍ ସୁଯୁଦ୍ଧମ୍ ସୁପ୍ରତ୍ନାଦିତମ୍ । କାର୍ଯ୍ୟ
କାଳେ ଯଥାଶକ୍ତି କୃତ୍ୟାନ୍ନ ତୁ ବିଚାରୟେତ୍ ॥ ରାଜହଂସଃ
ସ୍ଵଭାବାନ୍ମନ୍ଦଗତିଃ ସାରସଦ୍ଵିତୀୟସ୍ତ୍ଵ ଚିତ୍ରବର୍ଣ୍ଣସ୍ୟ ସେନାପ
ତିନା କୁକୁଟେନାଗତ୍ୟ ବେଷ୍ଟିତଃ । ହିରଣ୍ୟଗର୍ଭଃ ସାରସମାତ୍ମ
ସାରସସେନାପତେ ମମାନୁରୋଧାଦାତ୍ମାନଂ କଥଂ ବ୍ୟାପାଦୟିଷ୍ୟ
ସି ତ୍ଵମଧୁନା ଗନ୍ତୁଂ ଶକ୍ତଃ ତତ୍ ଠତ୍ଵା ଜଳଂ ପ୍ରବିଶାତ୍ମାନଂ
ପରିରଚ୍ଚ ଅକ୍ଷତ୍ପୁତ୍ରଂ ଚୂଡାମଣିନାମାନଂ ସର୍ବଜ୍ଞସମ୍ମତ୍ୟା
ରାଜାନଂ କରିଷ୍ୟସି । ସାରସୋବ୍ରୂତେ ଦେବ ନ ବକ୍ତବ୍ୟମେବଂ ଦୁଃସହଂ
ବଚଃ ଯାବତ୍ ଚନ୍ଦ୍ରାକୈଂ । ଦିବି ତିଷ୍ଠତଃ ତାବତ୍ ବିଜୟତାଂ
ଦେବ ଅହଂ ଦେବ ଦୁର୍ଗାଧିକାରୀ ମନ୍ତ୍ରାଂସାମୃଗ୍ଵିଲିଖିନେ ଦ୍ଵାର
ବର୍ତ୍ତନା ପ୍ରବିଶତୁ ଶତ୍ରୁଃ ॥ ଅପରଞ୍ଚ ॥ ଦାତା ଶ୍ରୀମତୀ ଗୁଣ
ଗ୍ରାହୀ ସ୍ଵାମୀ ଦୁଃଖେନ ଲାଭ୍ୟତେ । ରାଜାହ ସତ୍ୟମେବୈତତ୍

ସେହେତୁକ କାର୍ଯ୍ୟ ଉପାସ୍ଥିତ ହୁଏଲେ ଯାହା ଗ୍ରହଣ କରିବା ଥାକେ
ଶକ୍ତିାନୁସାରେ ତାହା କରିବେକ କିନ୍ତୁ ଯୁକ୍ତ କରିବେକ କିନ୍ତୁ
ପାଳାୟନ କରିବେକ ବିଚାର କରିବେ ନା । ରାଜହଂସସ୍ଵଭାବତୋ
ମନ୍ଦଗତି ଆଉ ଦ୍ଵିତୀୟ ମାରଣ ଏହି ଦୁହେଁକେ ଚିତ୍ରବର୍ଣ୍ଣର ସେନା
ପତି କୁକୁଟ ଆସିବା ବେଢ଼ିଲ । ହିରଣ୍ୟଗର୍ଭ ମାରଣକେ ବନିଲ
ହେ ସେନାପତେ ଆମାର ଅନୁରୋଧେ ଆପନାକେ କେନ ନଷ୍ଟ କର
ତୁମି ଏଥନ ଯାହା ପାର ତାହା କରିବା ଜାଲେ ପ୍ରବେଶ କର
ଆପନାକେ ରକ୍ଷା କର ଚୂଡାମଣି ନାମ ଆମାର ଗୁଣକେ ସର୍ବ
ଜ୍ଞର ସମ୍ମତିରେ ରାଜା କରିବା । ମାରଣ ବନିତେହେ ହେ ମହା


রাজ এতাদৃশ দুঃসহ বাক্য বক্তব্য নয় যাবৎ পর্য্যন্ত চন্দ্র
সূর্য্য গগনে আছেন তাবৎপর্য্যন্ত মহারাজ আপনি জয়ী
হউন আমি দুর্গাধিকারী আমার মাংস রক্ত লিপ্ত দ্বারপথে
তে শত্রু পুবেশ করুক। অপর দাতা ক্ষমাবান গুণগ্রাহক
পুত্র কষ্টেতে মিলে। রাজা কহিতেছেন ইহা যথার্থই বটে।

Whatever hath been well consulted and well resolved, whether it be to fight well, or to run away well, should be carried into execution in due season, without any further examination.

The king having been thus abandoned by all but the Sārasa, and being by nature a slow walker, was made prisoner by the cock, who was the peacock's general; upon which he addressed the Sārasa in these words: general Sārasa! thou must not destroy thyself through my fault, but as thou hast it still in thy power to make thy escape, then go upon the waters, and, with the advice of Know-all, place Chura-karna my son upon the throne. O my royal master, replied the Sārasa, do not talk thus, for it is more, than I can bear. May the king still triumph over his enemies as long as the sun and moon shall last! I will again assume the command of the castle, and then let the foe enter besmeared with my blood!

A master is hard to be found, who is patient, generous, and a judge of merit.

True, said the king;

কিন্তু ॥ শুচির্দেহোঽনুরক্তশ্চ জানে মৃত্যোপি দুর্লভঃ ।
 সারসোব্রূতে শৃণু দেব ॥ যদি সমরমপাস্থ্য নাস্তি মৃত্যো
 র্ভয়মিতি যুক্তমিতোঽন্যতঃ প্রযাতুং । অথ মরণমবশ্যমেব
 জন্তোঃ কিমিতি মুধা মলিনং যশঃ ক্রিয়তে ॥ অন্যচ্ছ ॥
 ভবেস্মিন্ পবনোদ্ধান্নবীচিবিধমভঙ্গুরে । জায়তে পুণ্য
 যোগেন পরার্থে জীবিতব্যয়ঃ ॥ স্বাম্যমাত্মশ্চ রাষ্ট্রশ্চ দুর্গ
 কোষাবলং সুহৃতা রাজ্যাঙ্গানি প্রকৃতয়ঃ পৌরাণাং শ্রেণ্যো
 ঽপি চ ॥ দেব ত্বচ্ছ স্বামী সৰ্ব্বথা রক্ষণীয়ঃ ॥ যতঃ ॥
 প্রকৃতিঃ স্বামিনং ত্যক্তা সমৃদ্ধাপি ন জীবতি । অপি
 ধন্যন্তরির্বেদ্যঃ কিং কৰোতি গতাযুধি ॥ অপরচ্ছ ॥ নরেশে
 জীবলোকেঽয়ং নিমীলতি নিমীলতি । উদেত্যুদীয়মানৈ
 চ রবাবিব সরোরুহং ॥ অথ কুক্কুটে নাগত্য রাজহংসস
 শরীরে খরতুরনবাঘাতঃ কৃতঃ । *

কিন্তু পবিত্র কৰ্ম্মনিপুণ অনুরক্ত এতদ্রূপ ভূতা ও দুর্লভ
 সারস বলিতেছে শুন হে মহারাজ যদ্যপি সংগ্রাম ত্যাগ
 করিলে যমের ভয় না থাকে তবে অন্যত্র যাওয়া উপযুক্ত
 যদি পুণির মরণ অবশ্যই তবে কেন বৃথা অপয়শ করি
 অপর বায়ুর গমনেতে হয় যে ঢেউতাহার গমনের ন্যায় অ
 কালস্থায়ী যে এই সংসার ইহাতে পরের নিমিত্তে পুণ ত্যা
 গুপ্যপুযুক্ত হয় । আর স্বামী অমাত্য রাষ্ট্র দুর্গ কোষ সৈন্য
 সুহৃৎ নগরস্থ লোক এই আট পরম্পর উপকারক হেতু

রাজ্যস্থ হয়। হে মহারাজ তুমি স্বামী সর্বপুকারে রক্ষণীয়
যেহেতুক অমাত্য লোক বড় হইলে ও স্বামিকে পরিত্যাগ
করিয়া বাঁচে না গতায়ুতে ধন্যস্তরি বৈদ্যও কি করে। অপর
সূর্য্য অপুকাশ হইলে যেমন পান্ন অপুকাশ হয় এইরূপ
রাজ্য অপুকাশ হইলে এই প্রাণি সকল অপুকাশ হয় রবি
পুকাশ হইলে যেকপ কমল পুকাশ হয় সেইরূপ রাজ্য
পুকাশ হইলে এই প্রাণি সকল পুকাশ হয়। অনন্তর অকুট
আসিয়া রাজহংসের শরীরে তীক্ষ্ণ নখাঘাত করিল

But a servant, who is honest, clever, and attached, is hard to be found.

Attend to this, please your highness: if after having quitted the field of battle there were no fear of death, it would be proper to go hence, but is not death inevitable to all things? Besides, it would tarnish my reputation to quit thee now

In this world, which is as transient as the waves caused by the motion of an, life should be virtuously sacrificed for the benefit of others.

The sovereign, the minister, territory, strongholds, treasure, forces, and friends, are the members of government; also the nobles, and the order of citizens. Besides, thou art the sovereign and master, who is always to be guarded and protected

When Prakriti (nature) is forsaken by her lord, great as she is, she doth not survive it. When life hath taken its departure, though Dhanwantari be the physician, what can he do?

In the sovereign the whole world openeth and shutteth its eyes. Thus the lotus of the waters, upon the rising of the sun, reviveth upon his revival.

The cock then flew upon the royal goose, and began to wound him with his bill and claws,

সত্বরমুপসৃত্য সারসেন স্বদেহান্তরিতো রাজাজলে দ্বিতমঃ
 অথ কুকুটৈর্নল প্রহারজর্জরীকৃতেন সারসেন কুকুট
 সেনাবজ্রশোহতাঃপশ্চাত্ সারসোপি চক্ষুপ্রহারেণ বিবিদ্য
 ব্যাপাদিতঃ অথ চিত্র বণে । দুর্গং প্রবিশ্য দুর্গাবস্থিতং দ্রব
 ব্যাহয়িত্বা বন্দিभिর্জয়শব্দৈ রানন্দিতঃ স্বক্লান্ধাবার
 জগাম অথ রাজপুত্রৈরুক্তং তস্মিন্নাজবলে সপুণ্যবান্ সার
 সএব যেন স্বদেহত্যাগেন স্বামী রচিত্তিঃ । উক্তম্ভৈতৎ । জন
 যন্তিসুতান্ গাবঃ সর্ব্বে এব গবাচ্চতীন বিঘাণো স্মিহি
 তক্লান্ধকাচিদেবগবাংপতিঃ । বিঘ্ণুশর্ম্মী বাচ সতাবদ্বিযধ
 রোপরিজনঃ স্বর্গমুখমনুभवतु महासत्वः ॥ तथा चोक्तं ॥
 আহবেষু চ যেশূরাঃ স্বাম্যর্থ্যে ত্যক্তজীবিতাঃ । মর্ত্তমক্তাঃ
 কৃতজ্ঞাশ্চ তে নরাঃ স্বর্গগামিনঃ ॥

সারস শীঘ্র সমীপে আসিয়া রাজাকে আপন শরীরের
 মধ্যে করিয়া জলে পড়িল। তদনন্তর কুকুটেরদের নথ
 মুখ পুহারেতে কৃত বিক্রত হইয়া সারস অনেক কুকুট সে
 নাকে নষ্ট করিল। পশ্চাৎ সারস ও চক্ষু পুহারেতে কৃত
 বিক্রত হইয়া পুণ্যত্যাগ করিল। তাহার পর চিত্রবর্গদুর্গতে
 প্রবেশ করিয়া দুর্গস্থ দুব্য নকল লুটাইয়া বন্দিকত্বক জয়
 শব্দেতে আহ্বাদিত হইয়া স্বস্থানে গেলেন। অনন্তর রাজপু
 ত্রেরা কহিলেন সেই রাজসৈন্যেতে সারসই অতিবড় পুণ্য

যান যে নিজ দেহ ত্যাগ করিয়া স্বামিকে রক্ষা করিল ইহা
পাণ্ডিতকর্তৃক কথিত আছে গরুসকল গবাকৃতি সনাত্ত পুত্র
কেই জন্মায় শূদ্রেতে শোভিত অনেক গোর স্বামি এতাদৃশ
পুত্রকে কদাচিৎ কেহ জন্মায় । বিষ্ণুশর্মা কহিলেন সে মহা
সত্ত্ব বিদ্যা ধরী পরিবৃত্ত হইয়া স্বর্গসুখ অনুভব করুক ।
বিজ্ঞেরা তাহা কহিয়াছেন। পুভুভক্ত কৃতজ্ঞযে বীরবরসকল
সংগ্রামেতে পুতুর নিমিত্তে পুণ্যত্যাগ করে সে সব লোক
স্বর্গে গমন করে ।

but the Sārāsa screened his master under his own body; and although he himself was torn almost to pieces by the cock's beak and spurs, he still covered him till he got him safe into the water. Immediately after, the Sārāsa pecked the cock to death; but, at last, being attacked by a large party of birds, he lost his own life. Chitra-varna, the peacock king, now enters the castle, and having plundered it of every thing that had been left in it, he marched out again, saluted by his followers with shouts of victory!

The young princes now said to Vishnu-Sarmā,—In our opinions, the Sārāsa, in having thus preserved his master, at the expence of his own life, was the most virtuous bird in the army.

Cows bring forth young, all of the same shape of their parents; but few produce a king of the herd whose horns stroke his shoulders.

May the exalted being, replied Vishnu-Sarmā, who, of his own accord, purchaseth the regions of happiness with his own body, enjoy them, and be attended by Vi-dhyā-dharies! They say,

Such brave men as shed their blood in battle in their sovereign's cause; and such men as are faithful and grateful to their masters, are those who go to heaven.

যত্র তত্র হতঃ শূরঃ শত্রুभिঃপরিবেষ্টিতঃ অস্ত্রযান্ লভতে
 লোকান যদি ক্লৈব্যং ন গচ্ছতি ॥ অপরমপ্যেবমস্তু ॥ বি
 গ্রহঃ করিতুরঙ্গপত্তিभिর্নো কদাপি ভবতাং মছীভূজাং ।
 নীতিমদ্রপবনৈঃ সমাহৃতাঃ সংশ্রযন্তু গিরিগঙ্ধরং দ্বিষঃ ॥
 ইতি দ্বিতোপদেশে নীতিশাস্ত্রে বিগ্রহো নাম তৃতীয়ঃ
 পরিচ্ছেদঃ ॥

শত্রুকর্তৃকবেষ্টিত হইয়া শূর লোক যেখানে সেখানে নরে
 সে অক্ষয় স্বর্গ পায় যদ্যপি কাতরতা না পায় আর ও এই
 পুকার হউক আপনকাদের হস্তি ঘোড়া পদাতিরদ্বারা
 সংগ্রাম কদাচিৎ ও না হউক নীতি মন্ত্রণা রূপ বায়ুরদ্বারা
 আহত হইয়া শত্রু সকল গিরিগন্ধরকে আশ্রয় করুক ।
 ইতি বিগ্রহ কথা সমাপ্ত ।

Whenever a hero is killed, surrounded by the enemy,
 he obtaineth for himself those regions which are without
 decay; provided he doth not shew cowardice.

May no possessor of the earth ever have occasion to
 dispute with elephants, horses, and foot soldiers? May
 his enemies, defeated by the cleansing counsels of poli-
 cy, take shelter in the caverns of the mountains!

THE END OF THE BIGRAHA.

॥ अथ सन्धिः ॥

धुनः कथारम्भकाले राजपुत्रैरुक्तं आर्यं विग्रहः श्रुतोऽ
स्माभिः सन्धिरधुनाभिधीयतां । विष्णुशर्मणोक्तं श्रूयतां
सन्धिमपि कथयामि यस्यायमायः श्लोकः ॥ वृत्तं मह
ति संग्रामे राज्ञोर्णिहतसेनयोः । स्थेयाभ्यां गृध्रचक्राभ्यां
वाचा सन्धिः कृतः क्षणात् ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀

पूनु०८ कथारम्भसमये राजपुत्रगारेरा कहिलेन हे गुरो
आमरा विग्रह शुनिलाम सम्पुति जक्षि बन । विष्णुशर्मा
कहिलेन शुन जक्षि ओ कहि याहार पुथम श्लोकार्थ एही ।
अतिशय युद्ध इहिले परे दुई राजार अनेक सैन्या नष्ट
इहिले थाकिन ये गंधु ओ चक्रवाक ताहारा अन्न कालेतेही
वाक्याद्वारा जक्षि करिन ।

C H A P. IV.

OF MAKING PEACE.

NOW, said the young princes, please to inform us
of what relates to *making peace*. Attend then,
replied Vishnu-Sarmā: this is the introduction to it.

*At the conclusion of a great battle, in which the troops
of both kings have suffered, a treaty is presently
brought about by the two ministers, the vulture and
the Chakra-vāka.*

রাজপুত্রাজ্জ্বঃ কথমেতৎ । বিষ্ণুশর্মা কথয়তি ততস্তেন
 রাজহংসসেনোক্তং কেনাঙ্গদুর্গে নিচ্ছিতোঃস্মিঃ কিং পারক্যেন
 কিম্বাঙ্গদুর্গবাসিনা কেনাপি বিপদপ্রযুক্তেন । চকোব্রূতে
 দেব ভবতোনিষ্কারণবন্ধুরসৌ মেঘবর্ণঃ সপরিবারেন
 দৃশ্যতে তন্মন্যে তস্যৈব বিচেष्टিতমিদং । রাজা চ্চণং বিচি
 ন্ত্যাহ অস্মি তাবদেব মম দুর্দৈবমেতৎ ॥ তথা চোক্তং ॥
 অপরাধঃ স দেবস্য ন পুনর্মন্নিণাময়ং । কার্য্যং সুচরিত
 ক্বাপি দৈবযোগাভিনশ্যতি ॥ মন্ত্রী ব্রূতে উক্তমেবৈতৎ । বিধ
 মাং হি দশাং প্রাপ্য দৈবং গর্হয়তে নরঃ আত্মনঃ কর্ম্মদো
 ষাংশ্চ নৈব জানাত্যপণ্ডিতঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ সুহৃদাং হিত
 কামানাং যোবাक्यं নাভিনন্দতি । সকূর্ম্মদেব দুর্বাদ্বিঃ
 কাষ্টাঙ্কশ্চোবিনশ্যতি ॥

রাজনন্দনেরা কহিলেন ইহা কিপুকার বিষ্ণুশর্মা কহিতে
 ছেন । তাহার পর সেই রাজহংস কহিল আমার দুর্গে কে
 বহি পুদান করিল কি পরকীয় লোক কিম্বা বৈরিপুত্রিত
 আমার দুর্গ বাসী কেহ । চক্রবাক বলিতেছে হে ভূপাল
 আপনকার নিষ্পয়োজন মিত্র ঐ মেঘবর্ণ সপরিবার দৃষ্ট হয়
 না সেই নিমিত্তে বুঝি তাহারি অনুষ্ঠিত এই । রাজা কিঞ্চিৎ
 কাল ভাবনা করিয়া কহিলেন সেই বটে আমার দুর্দৈব এ
 পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন সে দোষ রাজার মন্ত্রির এ
 দোষ নয় কেননা সূচ্যটিত কার্য্য ও কোথা ও দৈবযোগেতে

नष्ट হয়। মন্ত্রী বলিতেছে ইহা কহাই আছে দুরবস্থা পাইয়া
লোক দৈবকে নিন্দা করে মুর্থ লোক আপনার কৰ্ম
দোষ জানে না অপর যে লোক হিতাভিলাষি বন্ধুরদগের
বচন শুনে নাসে কাষ্টচ্যুত নিরুজ্জ্বল কঙ্কণের ন্যায় নষ্ট হয়।

How was this? demanded the young princes; and Vishnu-Sarma related as follows:

FABLE I.

The royal goose, after his escape, asked who it was that set fire to the castle; whether one of the enemy, or some of their own party inhabiting our fort? and his minister, Chakra-vāka, replied,—Please your highness, that unnecessary connexion of your's, the crow Cloud-colour, together with his attendants, is no longer to be seen; wherefore, I conclude that it was contrived by him. The king, after a few moments consideration, exclaimed,—It is even so! It is my own evil seeking!

The fault shall be for ever his, and no more the minister's, by whom I believe our affairs, so well designed for our own advantage, were ruined.

They say, replied the the minister, that

When a man falls into misfortune, he accuses destiny; but unwisely perceiveth not his own faults.

He who doth not pay due regard to the advice of such friends as have his welfare at heart, may suffer for it, like the foolish tortoise, who fell from a piece of wood and was killed.

ଅନ୍ୟସ୍ତ୍ର ॥ ରକ୍ଷିତଂ ସଦା ବାକ୍ୟଂ ବାକ୍ୟାଙ୍ଗବତି ନାଶନଂ ।
 ହଂସାଭ୍ୟାଂ ନୀୟମାନାଭ୍ୟାଂ କୂର୍ମସ୍ୟ ପତନଂ ଯଥା ॥ ରାଜାହ
 କଥମେତତ୍ । ମନ୍ତ୍ରୀ କଥୟତି ଅସ୍ତି ମଗଧଦେଶେ ଫୁଲ୍ଲୋତ୍ପଳା
 ମିଧାନଂ ସରସ୍ତତ୍ର ଚିରଂ ସଞ୍ଜଟବିକଟନାମାନୌ ହଂସୌ ନିବ
 ସତଃ । ତयोର୍ମିତ୍ରଂ କମ୍ବୁଗ୍ରୀବନାମା କୂର୍ମସ୍ତ୍ଵ ପ୍ରତିବସତି ଅଥ
 ଏକଦା ଧୀବରୈରାଗତ୍ୟ ତତ୍ରୋକ୍ତଂ ଯଦତ୍ର ଅସ୍ମାଭିରଯୋଷିତ୍ବା
 ପ୍ରାତର୍ମତ୍ସ୍ୟକୂର୍ମାଦଯୋଧ୍ୟାପାଦୟିତବ୍ୟାଃ । ତଦାକର୍ଣ୍ଣ କୂ
 ର୍ମାହଂସାବାହ ସୁହୃଦୌ ଶ୍ରୁତୋଽୟଂ ଧୀବରାଲାପଃ । ଅଧୁନା
 କିଂ ମୟା କର୍ତ୍ତବ୍ୟଂ । ହଂସାବାହତୁର୍ଜ୍ଞାୟତାଂ ଧୁନସ୍ତାବତ୍ ପ୍ରାତ
 ଯଦୁଚିତଂ ତତ୍ କର୍ତ୍ତବ୍ୟଂ । କୂର୍ମାଂ ବ୍ରୁତେ ମୈବଂ ଯତୋଽପ୍ତବ୍ୟତି
 କାରୋଽହମତ୍ର ॥ ତଥା ଚୋକ୍ତଂ ॥

ସର୍ବଦା ବଚନକେହି ରକ୍ଷା କରିବେକ କେନନା ବାକୋତେ ନଷ୍ଟ ହସ୍ତ
 ହଂସଦ୍ଵୟକର୍ତ୍ତୃକ ନୀୟମାନ କମ୍ବୁଗ୍ରୀବ ପତନ ଯେମନ । ରାଜା
 କହିଲେନ ଏ କି ପ୍ରକାର ମନ୍ତ୍ରୀ କହିତେଛେ । ମଗଧଦେଶେ
 ଫୁଲ୍ଲୋତ୍ପଳ ନାମେ ମରୋବର ଆଛେ ତାହାତେ ଅନେକ କାଳ
 ସଞ୍ଜଟ ବିକଟ ନାମେ ଦୁଇ ହଂସ ବସତି କରେ ତାହାରଦିଗେର
 ସଥା କମ୍ବୁଗ୍ରୀବ ନାମେ କଛପ ବାସ କରେ । ଅନନ୍ତରୁ ଏକ ଦିବସ
 କୈବର୍ତ୍ତେରା ଆସିଲା ସେ ସ୍ଥାନେ କହିଲ ଯେ ଏ ସ୍ଥାନେ ଆମରା
 ଆଜି ବାସ କରିଲା କଳା ପ୍ରାତଃକାଳେ ମତ୍ସ୍ୟ କଛପାଦି
 ନଷ୍ଟ କରିବ । ତାହା ଶୁନିଲା କମ୍ବୁଗ୍ରୀବ ଦୁଇ ହଂସକେ କହିଲ ହେ






मित्रेरा कैवर्त्तेरदिगेर कथोपकथन शुनिला ईदानी
आमार कर्तव्य कि । हंसेरा बलिल पुनर्बार ताहा ज्ञान
प्रातःकाले याहा उपयुक्त ह्य ताहा करा याईवे । कछप
बलितेछे एमन नय येहेतुक এই स्थाने आमि ব্যतिक्रम
देखियाहि बिज्जेरा ताहा कहियाहेन ।

*One should always guard his speech; for from speak-
ing ruin often ensueth; as in the downfall of the tor-
toise, who was carrying along by two geese*

How was this? demanded the king; and the minister
related the following story:

FABLE II.

IN Magadha-dūsa, there is a large piece of water, which
is distinguished by the appellation Phullōtpala, or lotus
blossom; where lived together for a long time two geese,
named San-kata, and Bikata, and they had a tortoise cal-
led Kambu-griva, for their friend, who dwelt with them.
It happened once, that some fishermen coming that way,
said to themselves,—Let us stay here to-day; early in
the morning, we must contrive to catch some turtle,
and other fish. This having been overheard by the tor-
toise, he said,—My friends, you have heard the conver-
sation of these fishermen, then what do you think I had
best do? The two geese replied,—We shall know by
and by what is fit to be done. Not so! what is conceiv-
ed proper, that should be done immediately.

অনাগতবিধাতা চ প্রত্যুত্পন্নমতিস্তথা । দ্বাবেতৌ সুখমে
 ধ্যেতে যদ্ববিষ্যোবিনশ্যতি ॥ তাবাহতুঃ কথমেতৎ কূর্মঃ
 কথয়তি পুরাস্মিন্বেব সরসি এবং বিধেষু ধোবরেষু উপস্থি
 তেষু মতস্যবয়েণালোচিতং তত্রানাগতবিধাতা নামৈকো
 মতস্যস্তুনালালোচিতং যদহন্তাবৎ জলাশয়ান্তরং গচ্ছামী
 ত্যুক্তা কদান্তরং গতঃ অপরেণ প্রত্যুত্পন্নমতিনাস্তা মতস্যে
 নাভিহিতং ভবিষ্যদর্থে প্রমাণাভাবাত্ কুত্র ময়া গন্তব্যং
 তদুত্পন্নে যথাকার্য্যন্তদনুষ্ঠেয়ং ॥ তথা চোক্তং ॥ উত্পন্নামা
 পদং যস্তু সমাধত্তে স বুদ্ধিমান্ । বনিজোভার্য্যয়া জারঃ
 প্রত্যক্তে গোপনং কৃতঃ ॥ যদ্ববিষ্যঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ ।
 প্রত্যুত্পন্নমতিঃ কথয়তি পুরাণিকমপরে সমুদ্রদত্তো নাম
 বণিগস্তি তস্য রত্নপ্রভা নাম গৃহিণী স্বসেবকেন
 সহ সদা রমতে ॥ ******

অনাগত বিধাতা আর পুতুৎপন্নমতি এই দুই জন সুখী
 হয় আর যদ্ববিষ্য নষ্ট হয় ইংসেরা কহিল এ কি পুকার
 কর্ম কহিতেছে । পূর্বে এই সরোবরে জানিয়া এই কাপে উপ
 স্থিত হইলে পরে তিনমৎস্য পরামর্শ করিতে লাগিল
 তাহারমধ্যে অনাগত বিধাতা নামে এক মৎস্য কহিল আমি
 অন্য পুষ্করিণীতে যাই ইহা বলিয়া জলাশয়ান্তরে গেল ।
 পুতুৎপন্নমতি নামে মৎস্য কহিল তাবি বিষয়েতে নিশ্চয়
 নাই আমি কোথা যাইব তাহা উপস্থিত হইলে যাহা হয় তাহা

করিব বিজেরা তাহা কহিয়াছেন যে লোক উপস্থিত বিপৎ
কে সমাধান করে সেই বুদ্ধিমান ইহাতে নিদর্শন বণিকের
পত্নী উপপাতিকে পুতাক্কতো গোপন করিল। যন্তবিষা পুশ
করিতেছে এ কি পুকার পুতুৎ পন্নমতি কহিতেছে। পূর্বে
বিক্রম পুরেতে সমুদুদত্ত নামে এক বণিক থাকে রত্নপুভা
নান্নী তাহার গৃহিণী এক নিজ ভৃত্যের সহিত ক্রীড়া করে।

These two, Fate-not-come, and Wit-against- it-when-come, both of them happily flourish; whilst What-will-be loseth his life.

How was that demanded the two geese; and the tortoise related the following story:

FABLE III.

Formerly, in this very piece of water, when the same danger threatened them, as now threatens us, it was foreseen by three fish. One of them, whose name was *Fate-not-come*, said,—Let us go to some other piece of water, saying so, he removed himself to a different pool. The second, who was called *Wit-against-it-when-come*, said,—In an affair which is about to come to pass, one should not proceed without an authority; now it is said,

He is a wise man who can conquer an accident when it happeneth. A merchant's wife charged her gallant with theft, before her husband's face.

The third fish, who was called *What-will-be*, asked him how that was; and the second fish related as follows:

FABLE IV.

AT Vikrama-pura there lived a merchant, whose name was Samudra-datta, and his wife, who was called Ratna-prabha, was always amusing herself with one or other of the servants.

অথৈকংদা সা রত্নপ্রভা সমুদ্রদত্তেনাবলোকিতা ততঃ
 সা বম্বকী সত্বরং ভর্তৃঃ সমীপং গত্বাহ নাথ এতস্য সেব
 কস্য মহতী নির্বৃতি যতো ঽয়ং চৌরিকী কৃৎবা কর্পূরং
 খাদতীতি ময়াস্য সুখমাশ্রায় জ্ঞাতং ॥ তথা চোক্তং ॥
 আহারোদ্বিগুণঃ স্ত্রীণামিত্যাदि। তচ্ছুত্বা সেবকেন প্রকু
 প্তোক্তং নাথ यस্য স্বামিনো গৃহে এতাৎদৃশী মাৰ্য্যা তত্র
 সেবকেন কথং স্খ্যাতব্যং যত্র প্রতিচ্ছলং গৃহিণী সেবকস্য
 মুখং জিঘ্রতি ততোসাবৃত্যায় চলিতঃ সাধুনা যত্নাৎ
 প্রবাহ্য ধৃতঃ অতোহং ব্রবীমি উত্পন্নামাপদমিত্যাदि। *

অনন্তর এক দিবস সেই রত্নপুভাছিল তাহা সমুদ্রদত্ত
 দেখিল। তাহার পর সে জনটা ব্যটিতি স্বামির সন্নিধানে
 গিয়া কহিল হে নাথ এই সেবকের অতিশয় নির্বাহ যেহে
 তুক চৌর্য্য ক্রিয়া করিয়া কর্পূর খায় ইহা আমি ইহার মুখ
 আঘ্রাণ করিয়া জানিলাম। তাহা কথিত আছে স্ত্রীলোকের
 দের আহারদ্বিগুণ তাহারদের বুদ্ধি চতুগুণ ইত্যাদি। তাহা
 শুনিয়া ভৃত্য ক্রোধ করিয়া কহিল হে

পুভো যে স্বামির গৃহেতে এতাদৃশী গৃহিণী সে স্থানে ভৃত্য
কি পুকারে থাকে যেখানে নিরন্তর পত্নী দাসের মুখের ঘৃণ
লয় তদনন্তর সে উঠিয়া চলিল তাহাকে মহাজন বহুতে
পুৰোধ করিয়া ধরিল। এই নিমিত্তে আমি বলি যে লোক
উপস্থিত বিপৎকে সমাধান করে ইত্যাদি।

One day it so fell out, that being seen by her husband
in that state, she ran instantly towards him and
cried,—My dear, this servant must be exceedingly dis-
tressed for food, for he has been eating some camphire
which I had brought home for thy use, and even now I
have smelt to him, and find his breath scented with it!
It is truly said,

What women eat is two-fold, their cunning four-fold, &c.
The servant, upon hearing the woman accuse him thus,
appeared to be offended, and exclaimed,—What man
can stay in a place with such a mistress as this, who is
every minute smelling the servants' mouths' saying
which he went away; but his master sent for him back,
and, with some difficulty, pacified him, and induced
him to stay. I say therefore, —*He is a wise man &c.*

ତତୋଽୟଂ ବିଷ୍ଣୁଂ ଶ୍ରୀକ୍ଷଣଂ । ଯଦ୍ଭାବି ନ ତଦ୍ଭାବି ଭାବି ଚେନ୍ନ
 ତଦନ୍ୟଥା । ଇତି ଚିନ୍ତାବିଷୟୋଽସମଗଦଃ କିଂ ନ ଯୋଚ୍ୟତେ ॥
 ତତଃ ପ୍ରାତର୍ଜାଲେନ ବହୁଃ ପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ପନ୍ନମତିର୍ମୃତବଦାତ୍ମାନଂ ସ
 ନ୍ଦର୍ଶ୍ୟ ସ୍ଥିତଃ ତତୋଽଜାଲାଦପସାରିତୋ ଯଥାସକ୍ତ୍ୟୁତ୍ପ୍ଳୁତ୍ୟ
 ଗଭୀରଂ ନୀରଂ ପ୍ରବିଷ୍ଟଃ ଯଞ୍ଜବିଷ୍ଣୁସ୍ତ୍ର ଧୋବରୈଃ ପ୍ରାମ୍ନୋଽପ୍ୟାପାଦିତଃ
 ଅତୋଽହଂ ବ୍ରବୋମି ଅନାଗତବିଧାତେତ୍ୟାଦି ତଦ୍ୟଥାହମନ୍ୟଞ୍ଜଂ
 ପ୍ରାମ୍ନୋମି ତଥାକ୍ରିୟତାଂ ହଂସାବାହତୁଃ ଜଳାଶୟାନ୍ତରେ ପ୍ରାମ୍ନେ
 ତବ କୁଶଳଂ ସ୍ଥାଳେ ଗଚ୍ଛତକ୍ଷେ କୌବିଧିଃ କୂର୍ମଃ ଆହ ଯଥାହଂ
 ଭବଜ୍ଞାଂ ସହ ଆକାଶବର୍ତ୍ତନା ଯାମି ତଥା ବିଧୌ ଯତାଂ ହଂସୌ
 ବ୍ରୁତଃ କଥମୁପାୟଃ ସମ୍ଭବତି କଚ୍ଛପୋଽବଦତି ଯୁବାଭ୍ୟାଂ
 ଯସ୍ତୁଧୃତଂ କାଷ୍ଠଫଣ୍ଡମେକଂ ମୟା ମୁଖେନାବଲମ୍ବ୍ୟ ଗନ୍ତବ୍ୟଂ
 ଯୁବୟୋଃ ପଲ୍ଲବଲେନ ମୟାପି ମୁଖେନ ଗନ୍ତବ୍ୟଂ । *❀❀❀*

ତାହାରପର ଯନ୍ତ୍ରବିଦ୍ୟା କହିଲ ଯେ ବିଷୟ ହେବାର ଉପଯୁକ୍ତ ନୟ
 ଜେ ହେବେ ନା ଯେ ବିଷୟ ହେବାର ଉପଯୁକ୍ତ ତାହାର ଅନ୍ୟଥା ହବେ
 ନା । ତଦନନ୍ତର ପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ପନ୍ନମତି ପ୍ରାତଃ କାଳେ ଜାଳେତେ ବନ୍ଧୁ
 ହେୟା ଆପନାକେ ମୃତ ତୁଳ୍ୟ ଦେଖାହେୟା ଥାକିଲ । ତାହାର
 ପର ଜାଳହେତେ ନିଃସାରିତ ହେୟା ଜାମାଥାମାନୁଜାରେ
 ଲଙ୍କାଦିୟ । ଅଗାଧଜଳେ ପ୍ରବିଷ୍ଠେ ହେଲ ଯନ୍ତ୍ରବିଦ୍ୟା କୈବର୍ତ୍ତ
 କର୍ତ୍ତୃକ ଧୃତ ହେୟା ବ୍ୟାପାଦିତ ହେଲ । ଏହି ନିମିତ୍ତେ ଆମି
 ବଲି ଅନାଗତ ବିଧାତା ହେତାଦି । ସେହି ହେତୁକ ଯେ ପ୍ରକାର
 ଆମି ଅନ୍ୟ ଜନାଶୟେ ଯାହି ତାହା କର । ଇଂରେଜ ବନିଲ

হুঁদান্তরে গেলে পরে তোমার কল্যাণ কিন্তু স্থলে গমন
করিবার তোমার কি উপায় । কমঠ কহিল যেকপে আমি
তোমাদের সহিত আকাশ পথেতে যাই তাহা কর হংসেরা
বলিল কি পুকারে উপায় সম্ভব হয় কুম্ভ বলিতেছে
তোমারদের দুই জনকত্ৰক চঞ্চুধৃত এক কাঠখণ্ডকে
আমি মুখেতে অবলম্বন করিয়া তোমাদের দুই জনের
পক্ষ বলেতে সুখে যাইব ।

To this *What-will-be* replied,—*That is not to be which is not to be &c.*

Early in the morning *Wit-against-it-when-come*, being caught in a net, feigned himself dead, and remained quiet; but he was no sooner thrown out of the net, than he sprang into deep water, and thus made his escape; whilst *What-will-be* was taken by the fishermen, and so lost his life. I repeat therefore, *These two*, Fate-not-come, &c.

Then, concluded the tortoise, let it be contrived how I am to get to another lake Where, demanded the two geese, will be the advantage of thy going to another place? Pray, replied the tortoise, only contrive the means, and I will go through the air along with you How, said the geese, are we to contrive the means? Why observed the tortoise, you must get a piece of wood, and take each of you one end of it in your beak, from which I can suspend myself by mouth, whilst you carry me along by the force of your wings.

হঁসৌ ব্রূতঃ সম্ভবত্যেব উপায়ঃ কিন্তু । উপায়ং চিন্তয়ন্
 প্রাজ্ঞোহ্যুপায়মপি চিন্তয়েত্ । পশ্যতোবকমূৰ্খস্য নকুলৈ
 র্ভক্ষিতাঃ প্রজাঃ ॥ কূৰ্মাঃ পৃচ্ছতি । কথমেতত্ তৌ কথয়তঃ
 অস্ত্যুত্তরপথে মধুকূটনাম্নি পৰ্বতে মহান্ পিপ্পলত
 তত্রানেকবকানিবসন্তি তস্য বৃক্ষাধস্তদ্বিধে সর্পোবালা
 পত্যানি খাদতি অথ শোকাক্তানাং বকানাং বিলাপং শ্রুত্বা
 কেচিৎকেচিৎনাভিহিতং এবং ন কুরুত যুযং মত্স্যানুপাদায়
 নকুলবিবরাদারম্ভ্য সর্পবিবরং যাবত্ পংক্তি ক্রমেণ বিকি
 রত ততস্তদা দ্বারলুপ্তৈ নকুলৈরাগত্য সর্পোদ্রষ্টব্যঃ স্বभाव
 ইদ্যা দ্বা দ্বা পা দয়িতব্যস্তথানুষ্ঠিতে তদ্বৃत्तं ততস্তত্র বৃক্ষে
 নকুলৈর্বকশাবকরাবঃ শ্রুতঃ পশ্যাত্তৈর্দত্তমারুহ্য বকশা
 বকান খাদন্তি অত্যাচাৰাং ব্রূবঃ উপায়ং চিন্তয়ন্তিত্যাदि।

দুই হংস বনিন এতাদৃশ উপায় সস্তব বটে কিন্তু সুবোধ
 লোক উপায় চিন্তা করত অপায়ও চিন্তা করিবেক কেননা
 দেখিতেছিল যে মূৰ্খ বক তাহার সন্তাননষ্টকর্তৃক ভক্ষিত
 হইল । কল্প পুশু করিতেছে এ কি পুকার তাহার। কহি
 তেছে । উত্তরপথে গন্ধুকূট নামে গিরিতে এক বৃহৎ অশ্ব
 খবৃক্ষ আছে তাহাতে অনেক বক বাস করে তাহারদের
 শিশু সন্তানেরদিগকে বৃক্ষতলস্থ গর্ভেতে মর্পে থান্ন অনন্তর
 শোকাতুর বকেরদিগের রোদন শুনিয়া কোন বক কহিল
 একপ বিলাপ করিও না তোমরা মৎস্য আনিয়া নষ্টলের

গর্ভকে আরম্ভ করিয়া সর্পের বিবরণ্যাস্ত পঙ্ক্তিক্রমেতে স্থাপন কর। তাহার পর সেই খাদ্য দুব্যালোভি নকুল আসিয়া সর্পকে দেখিবেক স্বাভাবিক শত্রুতাহেতুক তাহাকে নষ্ট করিবেক তাহা করিলে পরে তাহা হইল। তদনন্তর সেই তরুতে নকুলেরা বকবালকধ্বনি শুনিল পশ্চাৎ তাহারা বৃক্ষে আরোহণ করিয়া বকশিশুরদিগকে খাইল। এই জন্মে আনি বলি সুবোধ লোক উপায় চিন্তা করত ইত্যাদি।

This contrivance will thus do, replied the geese; but,

One who is wise, in contriving the means, should consider the consequence. Some foolish boobies' young ones were devoured by a weasel before their faces.

How did that happen? demanded the tortoise; and one of the geese related as follows:

FABLE V.

IN the north, upon the mountain called Gridhra-kuta, there was a large Pippala tree, wherein many boobies were wont to reside, and at the foot of the same tree a serpent lived in his hole, who used to devour the young boobies. An old bird, hearing the lamentations of the afflicted boobies for the loss of their little ones, addressed them in these words: you should do thus.—Get some fish, and draw them along upon the ground from the hole of a weasel, as far as the serpent's hole, where you will leave them. Presently, the weasel, attracted by the scent of food, will go to the serpent's hole, and thus he is certainly to be discovered, and, from there being a natural enmity between them, thus to be destroyed. The plan was accordingly executed, and the serpent was discovered and eaten by the weasels, but soon after, the cries of the young boobies being heard by them, they mounted the tree and devoured them also. We repeat therefore, said the two geese, *One who is wise, in contriving the means, &c.*

আবাভ্যাং নীয়মানং ত্বামবলোক্য লোকৈঃ কিস্বিদ্ধকৃত্য
 মেব । তদাকর্ণ্য যদি ত্বমুত্তরং দাস্যসি তদা ত্বন্মরণ
 তত্ সৰ্ব্বথাচৈব স্থীয়তাং কূৰ্ম্মোবদতি কিমহমপ্রাণঃ
 নাহমুত্তরং দাস্যামি কিমপি ন বক্তব্যং তথানুষ্ঠিতে
 তথাবিধং কূৰ্ম্মমালোক্য সৰ্ব্বং গোরক্ষকাঃ পশ্বাধ্বাবন্তি
 বদন্তিচ কিস্বিদ্ধদতি যদ্যযং কূৰ্ম্মঃ পততি তদাচৈব পত্না
 খাদিতব্যঃ কিস্বিদ্ধদতি অত্রৈব দগ্ধ্বা খাদিতব্যোঽয়ং
 কিস্বিদ্ধদতি গৃহং নীত্বা ভক্ষণীয়দতি তদ্বচনং শ্রুত্বা
 স কূৰ্ম্মঃ কোপাবিষ্টো বিস্কৃতপূৰ্ব্বসংস্কারঃ প্রাহ যুগ্মাভি
 র্ভক্ষ্যমভক্ষিতব্যমিতি বদন্তেব পতিতস্বৈৰ্য্যাপাদিতস্বঅতোঽহং
 ব্রবীমি সুহৃদাং হিতকামানামিত্যাदि । অথ প্রাণিধি
 র্বেকস্তত্রাগত্য উবাচ দেব প্রাগেব ময়া নিগদিতং ॥ *

আনারদের কতৃক নীয়মান তোমাকে নিরীক্ষণ করিয়া
 লোক অবশ্য কিছু বলিবেই তাহা শুনিয়া যদ্যপি তুমি
 উত্তর দিবা তবে তোমার মৃত্যু সেই নিমিত্তে সৰ্ব্বথা এই
 থানে থাক । করুণ বলিতেছে আমি কি অজ্ঞান আমি পুতু
 ত্তর দিব না কিছুই বলিবনা সেইরূপ করিলে পরে তরুণ
 কনঠকে অবলোকন করিয়া সকল গোরক্ষকেরা পশ্চাৎ
 ধাবমান হইল আর বলিল কেহ বলিতেছে যদি এই কূৰ্ম্ম
 পড়ে তবে এ স্থানেতেই থাক করিয়া থাই কেহ কহিতেছে
 এই স্থানেতেই দগ্ধ করিয়া থাই কেহ বলিতেছে গৃহে

जईया डक्कण करि सेई कथा सुनिय। ऐ कच्छप क्रोधाविष्ट
हईया पूर्ववाक्य विस्मृत हईया कहिन तोरा छाई थावि
इहा बलिबा नात्रे पड़िन आर ताहारदिगेर कतूक व्यापा
दित हईन । ऐइ निमित्ते आमि बलि हिताभिलाषि बद्धूर
दिगेर ईत्यादि । अनन्तर दूत बक सेथाने आसिया बलिन
हे महाराज पूर्वेतेई आमि कहियाहि ।

The people seeing us carrying thee along will cry out,
—What a curious sight! upon hearing which, if thou
makest any reply, thou wilt certainly lose thy life;
wherefore, upon all accounts, it is best to stay where
we are I will not speak a word, said the tortoise, what,
do you take me for a fool?

In the manner described, at length, the geese took up
the tortoise, and flew away with him, hanging to the
piece of wood, and presently, being discovered in that
situation by some cow-keepers in the fields, they pur-
sued them, crying out,—When he falls down, we will
dress him and eat him upon the spot, no, said one
of them, let us carry him home! upon hearing which,
the tortoise fell into a passion, to think how they intend-
ed to dispose of him, and whilst he opened his mouth
to say,—You shall eat dust first! down he dropped,
and was presently put an end to by those herdsmen.
I therefore repeat,—*He who doth not pay a due regard
to the advice of* concluded the minister.

The booby, who had been sent as a spy, having return-
ed, addressed the royal goose in these words:—Please
your highness, at the very beginning I represented,

ଦୁର୍ଗଶୋଧନଂ ହି ପ୍ରତୀକ୍ଷଣ କର୍ତ୍ତବ୍ୟମିତି ତଚ୍ଚ ଯୁକ୍ତାଭିର୍ନିକ୍ତମ୍
 ତଦନବଧାନସ୍ୟ ଫଳମନୁଭୂତମିତି ଦୁର୍ଗଦାହୋମେଷବର୍ଣ୍ଣେନ
 ଗୃହପ୍ରୟୁକ୍ତେନ ବାସିନେନ କୃତଃ । ରାଜା ନିଶ୍ଚୟାହ । ପ୍ରଣୟା
 ଦୁପକାରାହା ଯୋବିଶ୍ଵସିତି ଶତ୍ରୁଷୁ । ସମୁଦ୍ରବ ଦୃଷ୍ଟାୟାତ୍
 ପତିତଃ ପ୍ରତିବୁଦ୍ଧ୍ୟତେ ॥ ପ୍ରାଣିଧିରୁବାଚ ଇତୋଦୁର୍ଗଦାହମ୍ବିଧାୟ
 ଯଦାଗତୋମେଷବର୍ଣ୍ଣସ୍ତଦା ଚିତ୍ରବର୍ଣ୍ଣେନ ପ୍ରସାଦିତେନୋକ୍ତଂ ଅୟଂ
 ମେଷବର୍ଣ୍ଣେଽବ କର୍ପୂରହୃଦ୍ୟୋପରାଜ୍ୟେଽଭିଷିଚ୍ଛ୍ୟତାଂ ॥ତଥାଚୋକ୍ତଂ॥
 କୃତକୃତ୍ୟସ୍ୟ ଧୃତ୍ୟସ୍ୟ କୃତଂ ନୈବ ପ୍ରଣାଶୟେତ୍ । ଫଳେନ ମନସା
 ବାଚା ଦୃଢ୍ଵା ଚୈନଂ ପ୍ରହର୍ଷୟେତ୍ ॥ ଚକ୍ରବାକୋବ୍ରୁତେ ତତସ୍ତତଃ
 ପ୍ରାଣିଧିରୁବାଚ । ତତଃ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରିଣା ଗୃହେଣାଭିହିତଂ
 ଦେବ ନେଦମୁଚିତଂ ପ୍ରସାଦାନ୍ତରଂ କିମପି କ୍ରିୟତାଂ ॥ *❀*

ନିରନ୍ତର ଦୁର୍ଗଶୋଧନ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ତାହା ତୋରା କର ନାହିଁ ସେ
 ଅନବଧାନେର ଏହି କଳ ଅନୁଭୂତ ହୁଅନ୍ତେ । ଗୁପ୍ତ ପୁରୀତ
 ମେଷବର୍ଣ୍ଣକାକ ଦୁର୍ଗଦାହ କରିয়াଛେ ରାଜା ନିଶ୍ଚୟ ଯାଗ କରିয়া
 କଲିଲେନ ବୃକ୍ଷାଗୁଣ୍ଡେ ସୁଖ ଲୋକ ବୃକ୍ଷାଗୁଣ୍ଡେ ପତିତ ହୁଅନ୍ତେ
 ଯେମନ ଜାଗୁଁ ହୁଏ ଏହି କ୍ରମ ପ୍ରୀତିପୁଷ୍ପ କିନ୍ତୁ ଉପକାରପୁଷ୍ପ
 କ୍ତ ଯେଜନ ବିପକ୍ଷେତେ ପ୍ରତ୍ୟୟ କରେ ସେ ବିପଦଗୁଣ୍ଡ ହୁଅନ୍ତେ
 ଜ୍ଞାତ ହୁଏ ପ୍ରାଣିଧି ବନିନ ଏ ଜ୍ଞାନହୁଅନ୍ତେ ଦୁର୍ଗଦାହ କରିয়া
 ଯଥନ ମେଷବର୍ଣ୍ଣ ଗେଲ ତଥନ ପ୍ରମୁଖ ହୁଅନ୍ତେ ଚିତ୍ରବର୍ଣ୍ଣକଲିନ ଏହି
 ମେଷବର୍ଣ୍ଣକେ ଏହି କର୍ପୂରହୃଦ୍ୟୋପରାଜ୍ୟେ ଉପସ୍ଥିତ କର

বিজেরা তাহা কহিয়াছেন কৃতকৃত্য হাঙ্গের কৃতকে কনের দ্বারা ও মনের দ্বারা ও বাক্যের দ্বারা নষ্ট করিবে না আর ঐ ভৃত্যকে দেখিয়া হর্ষ জন্মাইবেক। চক্রবাক বলিতেছে তাহার পরে দূত কহিল তাহারপর মুখ্য মন্ত্রী গুণ্ডু কহিল হে মহারাজ ইহা উপযুক্ত নয় পুনাদাস্তুর কিছু কখন।

that it was necessary instantly to clear the castle; but that not having been done, this is the fruit of your neglect; and I have learnt, that the burning of the castle was effected by the crow Cloud-colour, who had been employed for that purpose by the enemy's minister the vulture. The king, sighing, said,

He who placeth confidence in an enemy, either from inclination or necessity, awaketh from his delusion, like one who hath fallen from the top of a tree in his sleep!

And when Cloud-colour, continued the spy, had effected the burning of the castle, he went to king Chitra-varna; who being well satisfied with what he had done, said,—Let this Cloud-colour be appointed governor of Kar-pura-dwipa; for, it is said,

One should not forget the labours of a servant who hath performed his duty; but should encourage him with rewards, with our hearts, with our speech, and with our eyes.

Then the vulture, who is the prime-minister, continued the spy, said,—Please your highness, let some station be given to him inferior to that of the principal one. for,

॥ ଯତ: ॥ ଅବିଚାରୟତୋୟୁକ୍ତିକଥନଂ ତୁଷଣଞ୍ଜନଂ । ନୀଚୈଷୁ
 ପଢ଼ତଂ ରାଜନ୍ ବାଲୁକାମିବ ମୁଚ୍ଚିତଂ ॥ ମହତାମାସ୍ପଦେ
 ନୀଚ: କଦାପି ନ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ: ॥ ତଥା ଚୋକ୍ତଂ ॥ ନୀଚ: ସ୍ଥାପ୍ୟପଦଂ
 ପ୍ରାପ୍ୟ ସ୍ବାମିନଂ ହନ୍ତୁମିଚ୍ଛତି । ମୂଷିକୋଽଧ୍ୟାସ୍ରତାଂ ପ୍ରାପ୍ୟ
 ମୁନିଂ ହନ୍ତୁଂ ଗତୋଽଥା ॥ ଚିତ୍ରବର୍ଣ୍ଣ: ପୃଚ୍ଛତି କଥମେତତ୍ ।
 ମନ୍ତ୍ରୀ କଥୟତି ଅସ୍ତି ଗୋତମସ୍ୟ ମହର୍ଷେ ଶ୍ଳୋକେନେ ମହାତ
 ପାନାମ ମୁନିସ୍ତତ୍ର ତେନ ମୁନିନା କାକେନ ନୀୟମାନୋମୂଷି
 କଶାବକୋଽଦୃଷ୍ଟସ୍ତତ: ସ୍ବଭାବଦୟାତ୍ମନା ତେନ ମୁନିନା
 ନୋବାରକଣ୍ଠେ: ସଂବର୍ଦ୍ଧିତସ୍ତତୋଽବିଡାଲସ୍ତଂ ମୂଷିକଂ ଶ୍ବାଦି
 ତୁମନୁଧାବତି ତମବଲୋକ୍ୟ ମୂଷିକସ୍ତସ୍ୟ ମୁନେ: କ୍ରୋଡ଼େ ପ୍ରବି
 ବେଶ୍ୟ ତତୋମୁନିନୋକ୍ତଂ ମୂଷିକତ୍ବଂ ମାର୍ଜ୍ୟାରୋଭବ ତତ: ସ ବି
 ଡାଲ: କୁକ୍କୁରଂ ଦୃଷ୍ଟ୍ବା ପଳାୟତେ ତତୋମୁନିନୋକ୍ତଂ । *❀*

ଯେହେତୁକ ବିଚାର ନାକରିয়া ପରାମର୍ଶ କହା ତୁଷଣଞ୍ଜନ
 ନ୍ୟାୟ ହେ ମହା ରାଜ ନୀଚେତେ ଉପକାର କରା ବାଲୁକାତେ
 ପୁଣ୍ଡାବ କରାର ନ୍ୟାୟ ମହତେର ଜ୍ଞାନେତେ ନୀଚକେ କଦାଚ କରିବେ
 ନା । ପଞ୍ଜିତେରା ତାହା କହିয়াଛେନ ନୀଚ ଲୋକ ପୁଣ୍ୟମିତ
 ପଦ ପାହିୟା ପୁତୁକେ ନଷ୍ଟ କରିତେ ଆକାଞ୍ଛ । କରେ ଉନ୍ମୁର
 ବାସ୍ତବ୍ୟ ପାହିୟା ସେମନ ମୁନିକେ ନଷ୍ଟ କରିତେ ଗିୟାଛିନ
 ଚିତ୍ରବର୍ଣ୍ଣ ଜିଜ୍ଞାସିତେଛେ ଏକିପୁକାର । ମନ୍ତ୍ରୀ କହିତେଛେ ।
 ଗୋତମ ମହର୍ଷିର ତପୋବନେ ମହାତପାନାମା ମୁନି ଥାକେନ
 ସେଥାନେ କାକକର୍ତ୍ତବ୍ୟ ନୀୟମାନ ଏକ ମୂଷିକ ମିଶ୍ରୁ ସେହି

মুনিকর্তৃক পুণ্ড্র হইল। তদনন্তর স্বভাবদয়ালু সেই মুনিকর্তৃক উড়ি ধান্যের কণার ভক্ষণদ্বারা বর্জিত ও হইল তাহার পর সেই মুষিককে খাইবার নিমিত্তে এক বিড়ান পশ্চাৎ ধাবন করে উন্দুর তাহা নিরীক্ষণ করিয়া সেই মূনির কোলেতে পুবেশ করিল। তাহার পর মুনিকহিলেন হে মুষিক তুমি মার্জার হও তদনন্তর সে বিড়ান দ্রকুরকে দেখিয়া গলায় তৎপরে মুনিকহিলেন।

How is it possible to punish one who hath been raised to a superior station? The assistance, O king, which is rendered to those of low degree, is like making water on sand.

A low person should never be placed in the station of the great.

One of low degree having obtained a worthy station seeketh to destroy his master. like the mouse, who, having been raised to the state of a tiger, went to kill the hermit

How was that? said the peacock king, and the minister related the following story:

FABLE VI.

IN the forest of the prophet Goutama, which is dedicated to acts of penitential mortifications, there was a hermit, whose name was Mahā-tapā. One day seeing a young mouse fall from the mouth of a crow near his hermitage, out of compassion he took it up, and reared it with broken particles of rice. One day, a cat pursued the mouse, which fled into the bosom of the hermit, who observing this, metamorphosed his mouse into a cat; but his cat being afraid of his dog, he changed her

কুক্কুরাদিভেপি ত্বমেব কুক্কুরোভব ॥ সচ কুক্কুরোব্যাঘ্রা
 দ্বিভেতি ততস্তেন মুনিনা কুক্কুরোব্যাঘ্রঃ ঠতঃ অথ তং ব্যাঘ্রং
 মুনির্মূষিকোঽযমিতি পশ্যতি অথ তং মুনিং দৃষ্ট্বা ব্যাঘ্রঞ্চ
 সর্ঘে বদন্তি অনেন মুনিনা মূষিকোব্যাঘ্রতাং নোতঃ । এত
 শ্চুত্বা স ব্যাঘ্রোঽচিন্তয়ত্ যাবদনেন মুনিনা স্খাতব্যং
 তাবদিদং মে স্বরূপাখ্যানমকীৰ্ত্তিকরং ন পলায়িষ্যতে
 মূষিক ইত্যলোচ্য তং মুনিং হন্তুং গতস্ততোমুনিনা তজ্জ্ঞা
 ত্বা পুনর্মূষিকোভব ইত্যুক্ত্বা মূষিকএব ঠতঃ অতোঽহং
 ব্রবীমি নীচঃ শ্লাঘ্যপদমিত্যাদি । অপরঞ্চ সুকরমিদ
 মिति ন মন্তব্যং । শৃণু ভক্ত্যিত্বা বহুন্ মতস্যানুত্তমা
 ধমমধ্যমান্ । অতিলোভাদ্রকঃ পশ্চান্মৃতঃ কৰ্কটকয়
 হাত্ ॥ চিত্রবৰ্ণঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ মন্ত্রী কথয়তি ॥

অক্কুর হইতে ভয় পাও অতএব তুমিও অক্কুর হও সে
 অক্কুর ব্যাঘ্রহইতে ভয় পায় এই হেতুক সেই মুনি অক্কুরকে
 ব্যাঘ্র করিলেন তদনন্তর মুনি সে ব্যাঘ্রকে মূষিক এ এই
 পুকার দেখেন তাহার পর সকল লোক সে মুনিকে ও
 ব্যাঘ্রকে দেখিয়া বলে এই মুনি মূষিককে ব্যাঘ্র করিয়া
 ছেন । ইহা শুনিয়া সে ব্যাঘ্র ভাবনা করিল যাবৎ
 কাল এই মুনি থাকিবে তাবৎ আগার অপযশস্কর স্বক
 পাখ্যান যাইবে না মূষিক ইহা আলোচনা করিয়া সেই
 মুনিকে নষ্ট করিবার নিগিঙে গেল তাহার পর সেই মুনি

তাহা জানিয়া পুনর্বার মূষিক হও ইহা কহিয়া মূষিক করি
লেন । অতএব আমি বলি নীচ লোক পুশ্যনিত পদ
পাইয়া ইত্যাদি । অপরও ইহা অনায়াসসাধ্য ইহা জানিও
না শুন উত্তম মধ্যম অধম অনেক মৎস্য ভক্ষণ করিয়া বক
অতিশয় লোভহেতুক পশ্চাৎ কৰ্কটের গৃহগপুযুক্ত মরিল
চিত্রবর্ণ পুশ্য করিতেছে এ কি পুকার । মন্ত্রী কহিতেছে ।

into a dog; and the dog being terrified at the tiger, at length he was transformed into a tiger. The holy man now regarded the tiger as no ways superior to his mouse. But the people who came to visit the hermit, used to tell one another, that the tiger which they saw there had been made so, by the power of the saint, from a mouse, and this being overheard by the tiger, he was very uneasy, and said to himself,—as long as this hermit is alive, the disgraceful story of my former state will be brought to my ears; saying which he went to kill his protector; but as the holy man penetrated his design with his supernatural eye, he reduced him to his former state of mouse. I repeat therefore, *One of low degree &c.* Please to attend to this also, said the minister:

A certain booby after having devoured fish of every size and quality, at length is killed from his attempting a crab out of mere gluttony.

How was that? demanded Chitra-varna; and his minister related the following story:

ଅସ୍ତି ମାଲବଦେଶେ ପଦ୍ମଗର୍ଭନାମଧେୟଂ ସରଃ ତତ୍ରୈକୋଢ଼ଦ୍ଵୋବକଃ
 ସାମର୍ଥ୍ୟହୀନଓଦ୍ଵିଗ୍ନମିବାତ୍ମାନଂ ଦର୍ଶୟିତ୍ବା ସ୍ଥିତଃ ସ ଚ କୈନ
 ଚିତ୍ କୁଳୀରେଣ ଦୃଷ୍ଟଃ ପୃଷ୍ଠସ୍ତ କିମିତି ଭବାନବାହାରତ୍ୟା
 ଗେନ ତିଷ୍ଠତି ବକେନୋକ୍ତଂ ମତ୍ସ୍ୟାମମ ଜୀବନହେତବଃ ତେ କୈବର୍ତ୍ତେ
 ରାଗତ୍ୟ ବ୍ୟାପାଦିତବ୍ୟାଈତି ବାର୍ତ୍ତାନଗରୋପାନ୍ତେ ମୟା ଶ୍ରୁତ୍ବା
 ଅତୋବର୍ତ୍ତନାଭାବାଦେବାକ୍ଷନ୍ମରଣମୁପସ୍ଥିତମିତି ଜ୍ଞାତ୍ବା
 ଆହାରେପ୍ୟନାଦରଃ କ୍ରତଃ ତତୋମତ୍ସ୍ୟରାଲୋଚିତଂ ଇହ ସମୟେ
 ଶାବଦୁପକାରକଏବାୟଂ ଲକ୍ଷ୍ୟତେ ତଦୟମେବ ଯଦା କର୍ତ୍ତବ୍ୟଂ
 ପୃଚ୍ଛତାଂ ॥ ତଥା ଗୋକ୍ତଂ ॥ ଓପକର୍ତ୍ତାରିଣା ସନ୍ଧିର୍ନ ମିତ୍ରେ
 ଣାପକାରିଣା । ଓପକାରାପକାରୌ ହି ଲକ୍ଷ୍ୟଂ ଲକ୍ଷଣ
 ମେତୟୋଃ ॥ ମତ୍ସ୍ୟାଞ୍ଜଳିଃ । ଶୋବକ କୋଽବ ରକ୍ଷଣୋପାୟଃ ବକୋ
 ବ୍ରୁତେ ଅସ୍ତି ରକ୍ଷଣୋପାୟଃ ଜଳାଶୟାନ୍ତରାଶ୍ରୟଣଂ ତବାହମେ
 କୈକଶେୟସ୍ମାନ୍ନୟାମି ॥ *❀*❀*❀*❀*❀

ମାଲବ ଦେଶେତେ ପଦ୍ମଗର୍ଭ ନାମେ ଜରୋବର ଆଛେ'ତାହାତେ
 ଶକ୍ତିରହିତ ଏକ ବୃକ୍ଷବକ ଆପନାକେ ଓଦ୍ଵିଗ୍ନେରନ୍ୟାୟ ଦେଖାଈସା
 ଥାକେ । ତାହାକେ କୌନ କର୍କଟ ଦେଖିଲ ଆର ଜିଜ୍ଞାସିଲ ତୁମି
 କେନ ଏଥାନେ ଆହାର ଥାଗ କରିସା ରହିସାଛ ବକ କହିଲ ଆ
 ମାର ପ୍ରାଣ ସ୍ଵାର୍ଗେର କାରଣ ମତ୍ସ୍ୟୋରା ତାହାରମିତେକେ କୈବ
 ଡେରା ଆସିସା ନଷ୍ଟ କରିବେକ ଏହି ବୃକ୍ଷାନ୍ତ ଆମି ନଗର ମଣିପେ
 ଶୁନିସାଛି ଅତଏବ ବର୍ତ୍ତନେର ଅଭାବ ପ୍ରୟୁକ୍ତହି ଆମାର ମରଣ ଓପ
 ହିତ ଇହାଜାନିସା ଆହାରେତେ ଅନାଦର କରିସାଛି । ତଦନନ୍ତର
 ମତ୍ସ୍ୟୋରା ଆଲୋଚନା କରିଲ ଏହି କାଳେତେ ଏହି ବାକ୍ତି ଓପ

কারকই বুঝিতেছি সেইহেতুক যাহা কর্তব্য তাহা ইহাকেই
জিজ্ঞাসা করা উচিত । বিজ্ঞেরা তাহা কহিয়াছেন উপ
কার কারি শত্রুর সহিত সন্ধি কর্তব্য অপকার কারি মিত্রের
সহিত কর্তব্য নয় যেহেতুক উপকার আর অপকার এ উভ
য়ের লক্ষণ জানিবে । মৎস্যেরা কহিল ওহে বক ইহাতে
রক্ষার কি উপায় । বকবলিতেছে রক্ষার উপায় আছে অন্য
হৃদ আশ্রয় করা সেখানে আমি এক জন করিয়া লইব ।

FABLE VII.

IN the country of Mālava there is a lake distinguished by the name of Padma-garbha, where lived an old booby, who, being deprived of his former strength, stood and feigned to appear like one who was troubled in mind, in which situation being observed by a crab at a distance, the latter asked him why he stood there, and did not look for food. You know, replied the booby, that fish is what I live upon; and I know for certain that fishermen are coming to catch them all, for, I heard this resolution from some watermen on one side of the town, so this being the case, I have lost my appetite with reflecting, that when our food is gone, death will soon follow. This being overheard by all the fish, they observed to one another, that it was proper to look out for assistance whilst they had time, and, said they, let us ask the booby himself what is best to be done; for,

One may better form a connexion with an enemy who will render one assistance, than with a friend who would do one an injury: there two should rather be distinguished according to the good or injury they do to one.

Accordingly, the fish accosted the booby, and said, Pray, master booby, tell us what means can be devised for our safety upon this occasion? There is one way to be safe, replied the artful booby, and that is, going to another pond, whither I am willing to transport you.

ମତ୍ସ୍ୟାଞ୍ଜରେବମସ୍ତୁ ତତୋଽସୌ ବକସ୍ତାନ୍ମତ୍ସ୍ୟାନେକୈକଶୋ
 ଗୀତ୍ବା ଶାଦତି ଅନନ୍ତରଂ କୁଳୀରସ୍ତମବାଚ ଭୋବକ ମାମପି
 ମତ୍ର ନୟ ତତୋବକୋପ୍ୟର୍ପୂର୍ବକୁଳୀରମାଂସାର୍ଥୀ ଶାଦରଂ ତଂ
 ଗୀତ୍ବା ସ୍ଥଳେ ଧୃତବାନ୍ କୁଳୀରୋପି ମତ୍ସ୍ୟକଣ୍ଡକାକୀଣିଂ ତତ୍
 ସ୍ଥଳମାଲୋକ୍ୟାଚିନ୍ତୟତ୍ ହାହତୋଽସ୍ମି ମନ୍ଦଭାଗ୍ୟଃ ଭବତୁ
 ଇଦାନିଂ ସମଯୋଚିତଂ ବ୍ୟବହରିଷ୍ୟାମି ॥ ଯତଃ ॥ ତାବଦ୍ଭୟା
 ଦ୍ବିଭେତବ୍ୟଂ ଯାବଦ୍ଭୟମନାଗତଂ । ଆଗତନ୍ତୁ ଭୟଂ ବୀଚ୍ଛ୍ୟ ପ୍ରହ
 ଂର୍ତ୍ତବ୍ୟମଭୀତବତ୍ ॥ ଅପରଞ୍ଚ ॥ ଅଭିଯୁକ୍ତୋଽପି ପଶ୍ୟେନ୍ନ
 କିଞ୍ଚିଦ୍ବିତମାତ୍ମନଃ । ଯୁଦ୍ଧମାନସ୍ତଦା ପ୍ରାଞ୍ଜୋନ୍ମିଷତେ ରିପୁ
 ଣା ସହ ॥ ଅନ୍ୟଞ୍ଚ ॥ ଯତ୍ରାୟୁଃସ୍ତେ ଧ୍ରୁବୋମୃତ୍ୟୁର୍ଯୁଘ୍ନେ ଜୀବିତସଂ
 ଖ୍ୟୟଃ । ତଂ କାଳମେକଂ ଯୁଦ୍ଧସ୍ୟ ପ୍ରବଦନ୍ତି ମନୋଷିଣଃ ॥ ଇତ୍ୟା
 ଲୋଚ୍ୟ କୁଳୀରସ୍ତସ୍ୟ ଗ୍ରୀବାଂ ଚିଚ୍ଛେଦ । ❀❀❀❀

୩୧୧ତେରା କହିଲ ଏହି ପୁକାର ହଉକ ତଦନନ୍ତର ଏ ବକ ସେହି
 ୩୧୨ମୋରାଦିଗେକେ ଏକେ ୨ ନହିଁଲା ଥାଏ ତଦନନ୍ତର କର୍କଟତାହାକେ
 କହିଲ ଓହେ ଆଗାକେ ଓ ସେଥାନେ ନଓ ତତ୍ପର ଉତ୍ତର ଅନୀର
 ମାଂସାର୍ଥୀ ବକ ଓ ଆଦର କରିଲା ତାହାକେ ନହିଁଲା ହୁଲେତେ
 ରାଖିଲ ଅନୀର ସେହି ସ୍ଥାନ ୩୧୩ କଣ୍ଟକ ବାଞ୍ଛୁ ଦେଖିଲା
 ଭାବନା କରିଲ ହାଏ ମନ୍ଦଭାଗ୍ୟ ଆମି ନଷ୍ଟ ହେଲାମ ରେ ହଉକ
 ଜମ୍ପୁତି ବଳୋପଯୁକ୍ତ ବ୍ୟବହାର କରିବ ସେହେତୁକ ତରୁ ହେତେ
 ସେହି ପର୍ଯ୍ୟାନ୍ତତରୁ ପାହିବେକ ସେ ପର୍ଯ୍ୟାନ୍ତ ତରୁ ଉପାସ୍ଥିତ ନା ହରୁ
 ତରୁ ଉପାସ୍ଥିତ ଦେଖିଲା ନିର୍ଭୟେର ନାୟ ପୁହାର କରିବେକ ।

অপর অভিযুক্ত ব্যক্তিব্যাপি আপনার যৎকিঞ্চিৎ হিত না দেখে তবে সুবুদ্ধি লোক বিপাকের সহিত যুদ্ধ করত নরে এবং সেখানে যদি যুদ্ধব্যতিরেকে ও অবশ্যম্ভূত হয় আর সংগ্রামেতে পুণ্য সংশয় বুঝা যায় তবে পণ্ডিতেরা সেই কালকে যুদ্ধের এক কাল করিয়া বলেন ইহা বিবেচনা করিয়া ককট তাহার গুণাকে ছেদন করিল ।

The fish, in the greatness of their fears, consented to this proposal, and their treacherous deliverer devoured them all one by one, as he took them out of the water. At length, the crab asked him to take him also, and the booby, eager to taste his delicate flesh, took him up with great marks of respect, and carried him ashore; when the crab seeing the ground covered with the bones of the fish which the booby had destroyed, cried to himself,—Alas, how unfortunate! I shall certainly be killed too, unless I can contrive some means of escaping. Let me try immediately what the occasion requires. They say,

In times of danger it is proper to be alarmed until danger be near at hand, but when we perceive that danger is near, one should oppose it as if one were not afraid.

When one attacked beholdeth no safety for himself, if he be a wise man, he will die fighting with his foe.

As out of battle death is certain, and in the field life doubtful, the learned call it *the only time of battle*.

The crab having come to this resolution, so tore the booby's throat with the pincers of his claws. that

স বকঃ পঞ্চত্বং গতঃ অতোহং ব্রবীমি ভক্ত্যযিত্বা বহুত্ব-
 ত্স্যানিত্যাदि । শৃণু ততশ্চিত্তবর্ণোঃ অবদত্ মন্বিন্ তাবত্
 মযৈতদালোচিতমস্মি অত্রাবস্থিতেন মেঘবর্ণেন রাজা ।
 যাবন্তি বস্তুনি কপূরদ্বীপস্যোত্তমানি তাবন্ত্যস্মাঃ কমুপ-
 নেতথ্যানি তেনাস্মাভির্মহাসুখেণ বিন্ধ্যাচলৈ স্প্রাতব্যং
 দূরদর্শী বিহস্যাহ দেব ॥ অনাগতবতীং চিন্তাং কৃत्वा
 যন্তু প্রচ্ছদ্যতি । স তিরস্কারমাশ্নোতি ভগ্নভাণ্ডোহি
 জায়ত্যা ॥ রাজাহ কথমেতৎ । মন্ত্রী কথয়তি অস্মি
 দেবো কোটরনাম্হি নগরে দেবশর্ম্ম নাম ব্রাহ্মণস্বেন মহা
 বিধুবসংক্রান্ত্যাং শক্তপূর্ণশরাবৈকঃ প্রাপ্তস্তমাदायासौ
 कुम्भकारस्य भाण्डपूर्णमण्डपैकदेशे रौद्रेणाकुलितः
 सुप्तः ततः शक्तरक्षार्थं हस्ते दण्डैकमादायाचिन्तयत्
 यद्यहं शक्तुशरावं विक्रीय दशकपर्दकान् प्राप्तयामि ।

সে বক পঞ্চত্ব পাইল । এই জনো আমি বলি উত্তম অধম
 মধ্যম অনেক মনে ভঙ্গন করিয়া ইত্যাদি । শুনতোহার
 পর চিত্তবর্ণ বলিল ও হে মন্ত্রী আমাকর্তৃক এই আলোচিত
 আছে কপূরদ্বীপের যত উত্তম দ্রব্য মেঘবর্ণ রাজাকর্তৃক
 লব্ধ হইয়াছে সে সকল আমারদিগের লওয়া কর্তব্য সেই
 বস্তুতে বিজ্ঞাগিরিতে অতিশয় সুখেতে আমারদিগের
 থাকা হইবে । দূরদর্শী হাঁসিয়া বলিল হে ভূপাল অনুগ-
 হিত চিন্তা করিয়া যে লোক হর্ষিত হয় সে অসম্মানকে

পায় যেমন ভগ্নভাণ্ড বুদ্ধাণ্ড ভুপতি কহিলেন এ কি কপ মন্ত্রী
কহিতেছে। দেবীকোটরসংস্কৃত নগরেতে দেবশর্মানামে বিপু
থাকেন তিনি মহাবিষুব সংক্রান্তিতে শঙ্কুপূরিত এক শরাব
পাইলেন তাহা লইয়া তিনি রৌদ্রেতে ব্যাঘলহইয়া অস্বকারের
ভাণ্ডপূর্ণগৃহের এক পুদেশেতে শয়ন করিলেন তাহার শঙ্কুর
রক্ষার নিমিত্তে হস্তেতে এক দণ্ড লইয়া চিস্তা করিলেন। যদি
আমি এই শঙ্কু শরাবকে বিক্রয় করিয়া দশ কডাকডি পাইব।

he was killed. Wherefore I repeat, *A certain booby &c.*

Attend, said the peacock king, to what I have been thinking of:—That if Cloud-colour be left governor here, all the choice things which Karpura-dwipa produces may be sent to us to enjoy in great luxury, when we shall be returned to the Vindhya mountains. The minister, laughing at these proposals, replied,—O king!

He who rejoiceth over an unaccomplished design, may meet with disgrace; like the Brahman who brake the pots and pans.

How did that happen? demanded the king; and the minister related the following story:

FABLE VIII.

IN the city of Dēvi-kōtara, there was a Brāhman, whose name was Dēva-Sarmā. At the time of the vernal equinox, he found a dish full of barley meal, which he took with him into a potter's warehouse full of earthen-ware. Being fatigued to walk in the sunshine, he threw himself upon a bed which happened to be there, and taking hold of a stick in his hands to protect his dish, he began to express his thoughts upon the occasion in this manner: If I dispose of this dish, I shall get ten Kapardakas for it;


তদাচৈব তৈঃ কপর্দকৈর্ঘটশরাবাদিকমুপক্ৰীয্য অনেকধা
 বৃদ্ধৈস্তদ্বনৈঃ পুনঃপুনঃ পূগবস্তাদিকমুপক্ৰীয্য বিক্ৰীযলভ্য
 সংখ্যানি ধনানি কৃत्वा বিবাহচতুষ্টয়ং করিष্যামি অন
 ন্তরং তাসু সপত্নীষু রূপযৌবনবতী য়া তস্যামধিকানু
 রাগং করিष্যামি সপত্ন্যোযদা ইন্দ্রং করিष्यन्ति তদা
 কোপাকুলোऽহং তা লগুডেন তাডযিष্যামীত্যभिধাযলগুডঃ
 স্তিম্নঃ তেন শক্তুশরাবশ্চূর্ণিতোমাণ্ডানি বহ্ননি ভদ্রানি
 ততস্তেন শব্দেনাগতেন কুম্ভকারেণ তথাবিধানি মা
 ণ্ডান্যবলোক্য ব্রাহ্মাণস্তিরস্থতোমাণ্ডপাদ্বিচ্ছৃতস্বাতো
 ঽহং ব্রবীমি অনাগতবতীং চিন্তামিত্যাদিততারাঙ্গা রহ
 সি মধ্রমুবাচ তাত যথা কৰ্ত্তব্যং তথোপদিশ মধ্রোব্রূতে ।

তবে এই স্থানেতেই সেই কড়িতে ঘট শরাব পুত্তি
 কিনিয়া অনেক বারেতে বৃদ্ধিপাণ্ড সেই ধনদ্বারা বারম্বার
 গুবাক বস্ত্রাদি ক্রয় করিয়া লক্ষসংখ্যক দুবিশ করিয়া
 চারি বিবাহ করিব তদনন্তর সেই সপত্নীর দিগের মধ্যে যে
 রূপযৌবনবিশিষ্ট। তাহাতে অধিকানুরাগ প্রকাশ করিব
 সপত্নীর। যখন বিবাদ করিবেক তখন ক্রোধাবিষ্ট হইয়া
 আমি তাহারদিগকে লগুড়েতে করিয়া তাড়ন করিব ইহা
 কহিয়া দণ্ডক্ষেপণ করিলেন তাহাতে শক্তু শরাব চূর্ণ

হইল অনেক ঘট ও ভাঙ্গিল। তৎপরে সেই শব্দেতে দ্রুতকা
র আসিয়া ভাঁড় সকল সেই রূপ দেখিয়া বুদ্ধকে তিরস্কার
করিল বাহির করিয়া ও দিন এতদৰ্থে আমি বলি অনুপস্থিত
চিন্তা করিয়া ইত্যাদি। তদনন্তর রাজা গৃধ্ৰকে বলিলেন
হে তাত যাহা কর্তব্য তাহা উপদেশ কর। গৃধ্ৰ বলিতেছে।

and with that sum I may purchase many pots and pans, the sale of which will increase my capital so much, that I shall be able to lay a large stock of cloth and the like; which having disposed of at a great advance, I shall have accumulated a fortune of a *lack* of money. With this I will marry four wives; and of these I will amuse myself with her who may prove the handsomest. This will create jealousy; so when the rival wives shall be quarrelling, then will I, overwhelmed with anger, hurl my stick at them, thus! Saying which, he flung his stick out of his hand with such force, that he not only brake his curious dish, but destroyed many of the pots and pans in the shop; the master of which hearing the noise, came in, and discovering the cause, disgraced the Brāhman, and turned him out of doors. I have said, therefore, concluded the minister,—*He who rejoiceth &c.*

At the conclusion of this story the king took the vulture aside, and desired him to point out what he ought to do, and the minister replied,

মদোদ্ধতস্য নৃপতে: সঙ্কীর্ণস্যেব দন্তিন: । গচ্ছন্ত্যুন্মার্গ
 যাতস্য নেতার: খলু বাচ্যতাং ॥ শৃণু দেব কিমস্মাভির্ব
 স্বদেপ্যদুর্গং ভয়ং ন কিন্তু তব প্রতাপাধিষ্ঠিতেন উপায়েন ।
 রাজাহ্ ভবতামুপায়েন । মৃধোব্রূতে যদ্যস্বদ্বচনং ক্রিয়তে
 তদা স্বদেশোগম্যতাং অন্যথা বর্ষাকালে প্রাপ্তে পুনর্বিগ্রহে
 সত্যস্মাকং পরভূমিষ্ঠানাং স্বদেশগমনমপি দুর্লভং ভবি
 শ্যতি সুখশোভায' সম্ভায গম্যতাং দুর্গং ভয়ং কীর্তিঞ্চ
 লক্ষ্যৈব মম সম্মতং তাবদেতৎ ॥ যত: ॥ যোহি ধর্ম'
 পুরস্কায় দিত্বা ভক্ত্য: প্রিয়াপ্রিয়ে । অপ্রিয়াণ্যাহ তথ্যানি
 তেন রাজা সহায়বান ॥ অন্যচ্চ ॥ সুহৃদ্বলং তথা রাজ্য
 মাত্মানং কীর্ত্তিমেব চ । যুধি সন্দেহদোলাস্থ্য কোহি
 কুর্থাৎ দ্বালিশ: ॥ **

বিপথগামী নতু সৎকীর্ত্তির নেতা যেমন নিম্নাতা পায়
 এমনি উন্মার্গগামী মদোদ্ধ রাজার নেতারা গর্হণীয়তা পায়
 শুন হে মহারাজ আমারদিগের যুক্তিতে কি দুর্গ ভয়ং ইহঁয়া
 ছে তাহা নয় কিন্তু তোমার পুতাপ ও উপায়েতে । রাজা
 কহিলেন তোমারদিগের উপায়েতে অর্থাৎ তাহা নিষ্পন্ন
 ইহঁয়াছে গৃধ্র বলিতেছে যদি আমার পরামর্শ করেন তবে
 নিজদেশে গমন করুন নতুবা বর্ষাকাল উপস্থিত হইলে
 পুনশ্চ সৎগুণ ইহঁলে বিদেশবাসি আমারদিগের নিজদেশে
 গমন ও দুর্লভ ইহঁবে সুখ ও শোভার নিমিত্তে সন্ধি করিয়া

গমন করুন দুর্গভাঙ হইল যশঃ প্ৰাপ্ত হইলেন আবার এই
মত যেহেতুক যে ব্যক্তি ধর্মকে পুরস্কার করিয়া পুত্র পুত্র
ও অপুত্রকে ত্যাগ করিয়া অপুত্র অথচ পথ্যকে বলে তা
হার সহিত রাজা সহায়ী হন । আর সুহৃৎ ও সৈন্য ও
রাজ্য ও আত্মা ও কীর্তি এই সকলকে কোন নুর্থ সংগ্রামে
তে সশয়রূপে দোলাহিত করে ।

The conductors of princes intoxicated with power, as well as of wounded or restiff elephants. get nothing but disgrace!

Please your highness, continued he, the castle hath been destroyed by us in the pride of strength; or rather, was it not by a stratagem dictated by your own glory? No, replied the king it was thy own scheme. If my advice were to be followed, said the minister, we should now return to our own country; for upon the return of the rainy season, should we have to fight the enemy again, with an equal force, in their own country, we shall find it extremely difficult to retreat home if we should have occasion. Then, for the sake of peace and glory, treat with the enemy, and let us depart! We have taken their castle, and gained renown. This is the extent of my opinion.

He is the companion of a prince, who, placing his duty before him, payeth no regard to his master's likings or dislikings, and tells him unwelcome truths.

Who, except a child, would place his friends, his army, his kingdom, himself, and his reputation, in the doubtful balance of a battle?

Besides;

অপরঞ্চ ॥ সম্ভিগ্নিচ্ছেষমেনাপি সম্ভিগ্ধোবিজযো যুধি ।
 সুন্দোপসুন্দাবন্যোন্যং নষ্টৌ তুল্যবলৌ ন কিং ॥ রাজোবাচ
 কথমেতৎ । মম্বী কথয়তি পুরা দৈত্বৌ মহৌদারৌ সুন্দো
 পসুন্দনামানৌ মহতা ক্লেশেন বৈলোক্যকামনয়া চিরা
 চ্ছন্দ্রশেখরসারাদিতবন্তৌ ততস্তথোৰ্ভগবান্ পরিতুষ্টোবর
 দৃযেথামিত্যুবাচ অনন্তরং তयोঃ সমাধিষ্ঠিতায়া সরস্ব
 ত্যা তৌবন্যদ্বক্তুকামাবন্যদম্বিহিতৌ যদ্যাবয়োৰ্ভগবান্
 পরিতুষ্টস্তদা স্থপ্রিয়াং পার্বতীং পরমেশ্বরোদদাতু অথ
 ভগবতা ক্রুদ্ধেন বরদানস্যাবশ্যকতয়া বিচারমুদযোঃ
 পার্বত্যাঃ নিৰ্ম্মায়াণ্যাত্মী প্রদাযি ততস্তস্যাঅনুরূপ
 স্তাবন্যলুপ্তাভ্যাং জগদ্ধাতিভ্যাং মনসোৎসুকাভ্যাং পাপ
 তিমিরাভ্যাং মমেত্যন্যোন্যকলহাভ্যাং প্রমাণপুরুষঃ ক
 শ্চিত্ পৃচ্ছতামিতি মতৌ কৃতাচাং । *❀❀❀❀

অপর তুল্য লোকের ও সহিত সন্ধি করিবেক যেহেতুক স
 গুণমেতে জয় সন্ধি থাকে তুল্য পরাক্রম সুন উপসুন কি পর
 স্পর নষ্ট হয় নাই । নৃপতি কহিলেন এ কি পুকার । সচিব
 কহিতেছে । পূর্বেতে সুনোপসুন নামা অতি বড় দৈত্য দুই
 জন ত্রিভুবনাভিলাষেতে অত্যন্ত ক্রোশেতে বহুতর কাল
 মহাদেবের আরাধনা করিল অনন্তর তিনি পুঙ্গব হইয়া কহি
 লেন তোমরা বর প্রার্থনা কর অনন্তর সেই দুই জনের অন্তঃ
 করণে অধিষ্ঠাত্রী স্বরস্বতী অন্য পুকার বরেষ্টু সেই দুই জন
 কে অন্য কথা বলাইলেন যে যদ্যপি আমারদিগকে আপনি

মস্তুষ্ট হইয়াছেন তবে পরমেশ্বর নিজ পত্নী গৌরীকে দেন । অনন্তর ভগবান ক্রুদ্ধ হইয়া বরদক্ষন আবশ্যকত্বহেতুক বিচার মূৰ্ত্ত সুন্দোপসুন্দকে উনার ন্যায় এক স্ত্রী নির্মাণ করি যাদিলেন তাহারপর সংসারনাশকও অজ্ঞানাস্ত্র সুন্দোপসুন্দ অন্তঃকরণের উৎসাহেতে পার্বতী তুল্য সৌন্দর্য্যোতে লুক্ক হইয়া আমার এআমারএ এই পরস্পর বিবাদ করিয়া কোন মধ্যস্থ ব্যক্তিকে জিজ্ঞাসা করি এই বুদ্ধি করিলে পর ।

One should be inclined to treat even with an enemy of equal force, when victory is doubtful, for were not Sunda and Upasunda, two giants of equal strength, killed by one another?

How was that? said the king, and the vulture relateth the following story:

FABLE IX.

IN former times there were two giants, the one called Sunda, and the other Upasunda, who wishing to conquer the three regions of the universe by the great exertions of their bodies, for a long time petitioned the deity with the crescent on his head to be propitious to their design. The god, pleased with their prayers, told them to ask a boon; but as the goddess Saraswati had the controul of these two of dreadful forms, both their original wish and design were changed, and at length they said,—If the disposer of fortune be pleased with our prayers, give us, O Supreme Being, Pārvati thy own consort! The deity, although displeased at the request, yet from the absolute necessity of granting boons, gave to the giants, who were deprived their of judgment, a woman like Pārvati. Sunda and Upasunda, eager for the ruin of the universe. blinded with ignorance, and involved in the darkness of sin, were inflamed by the beauty of her person, but as they were jealous of one another, they resolved to call upon some man of authority to determine which she should belong to;

সএব ভট্টারকোবৃদ্ধদ্বিজরূপঃ সমাগত্য তত্রোপস্থিতঃ
 অনন্তরমাভ্যাশ্রিত্য ॥ স্ববললব্ধাকস্যেযমাবধোভ
 বতি ব্রাহ্মণমপৃচ্ছতাং ব্রাহ্মণোব্রূতে । বর্ণশ্রেণোদ্বিজঃ
 পূজ্যঃ স্তবিত্যবলবানপি । ধনধান্যাধিকৌবৈশ্যঃ শূদ্রস্তু
 দ্বিজসেবয়া ॥ তৎযুবাभ्यां স্তত্রধর্মানুগোযুদ্বএব যুব
 যোনির্যমঃ ইত্যभिहितে সতি সাধুक्तমনেনেতি কৃत्वा अ
 न्योन्यतुल्यवीर्यै । समकालमन्योन्यघातेन विनाशमुप
 गतौ ॥ अतोऽहं ब्रवीमि सन्धिमिच्छेत्समेनापीत्यादि
 राजाह प्रागेव किं नोक्तं भवद्भिः । मन्त्री ब्रूते मदचनं
 किमवसानपर्यन्तं श्रुतं भवद्भिः तथापि ममसम्पत्त्या
 नायं विग्रहारम्भः साधुगुणयुक्तोऽयं हिरण्यगर्भः न विग्रा
 ह्यः ॥ तथा चोक्तं ॥ *❀*❀*❀*❀*❀

সেই ভগবান বৃদ্ধ ব্রাহ্মণ কণ হইয়া আসিয়া সেই স্থানে উপ
 নীত হইলেন । অনন্তর তাহার ব্রাহ্মণকে জিজ্ঞাসিল আন
 রা ইহাকে আপন বনেতে পাইয়াছি আগারদের দুই জনের
 মধ্যে কাহার এ হইবে । ব্রাহ্মণ বলিতেছেন জ্ঞানশ্রেষ্ঠ ব্রাহ্মণ
 পূজনীয় বলবান কত্রিয় পূজ্য ধনধান্যাদিকবৈশ্য পূজ্য
 ব্রাহ্মণ সেবাতে শূদ্র মান্য সেই নিমিত্তে তোমরা কত্রিয়
 ধর্মশাল তোমারদের যুদ্ধই নিয়ম ইহা কথিত হইলে
 পরে ইনি বিলক্ষন কহিয়াছেন ইহা কহিয়া দুই জনেতেই
 এক কালেতেই পরস্পর মারগদ্বারা বিনাশ প্রাপ্ত হইল ।

অতঃপরে আমি বলি তুমি লোকের সহিত সন্ধি করিবেক ইত্যাদি রাজা কহিলেন পূর্বেতেই কেন তোমরা বলিলে না মন্ত্রী বলিতেছে আপনি কি আমার বাক্যের শেষপর্যন্ত গুনিয়াছেন তথাপি আমার সম্মতিতে এই যুদ্ধারম্ভ নয় উত্তমগুণশালী ঐ হিরণ্যগর্ভ অর্থাৎ ইহার সহিত সংগ্রাম করণোপযুক্ত নয় তাহা কথিত আছে।

and instantly the deity, stood before them under the disguise of a venerable Brāhman We have obtained this female, said they, as a boon, and wish thee to determine which of us she should belong to. The Brāhman replied.

A Brāhman is respectable for wisdom, a Kshatriya for strength, a Vaishya if he be possessed of wealth and grain, and a Shudra for his services to the Brāhmans.

Now, seeing you two are of the second, or military order, your duty is fighting. These words made a due impression upon their minds; they fell upon each other, but as they were equal in strength and courage, they died at the same instant from the blows they received from each other. I say, therefore, *One should be inclined to treat even with one of equal force, &c.*

Hast thou not told me this before? said the king. What, said the minister, did your highness then comprehend the full extent of what I said? According to my opinion, this is not a proper time for the renewal of hostilities. King Hiranya-garbha is endued with those qualities which render him a proper person to treat with, and not to quarrel with. They say,

ସତ୍ୟାର୍ଥେ ଧାର୍ମିକାନାର୍ଥୋଦ୍ଧାରସଂଘାତବାନ୍ବଳୀ । ଅନେକ
 ଯଦୁଦ୍ଧାଜିନୀ ସନ୍ଧ୍ୟାଃସମ କୀର୍ତ୍ତିତା ॥ ସତ୍ତ୍ବୋନ୍ମୁଖାଲୟେତ୍ ସତ୍ୟ
 ସନ୍ଧିତାନୈତି ବିକ୍ରିୟାଂ । ପ୍ରାଣବାଧେପି ସୁବ୍ୟକ୍ତମାର୍ଥ୍ୟାନାୟା
 ଧ୍ୟନାର୍ଥ୍ୟତାଂ ॥ ଧାର୍ମିକସ୍ୟାଭିମୁକ୍ତସ୍ୟ ସର୍ବେଷ୍ବ ହି ପୂଜ୍ୟତେ ।
 ପ୍ରଜାନୁରାଗାହର୍ମାସ୍ତୁ ଦୁଃଖୋଚ୍ଛେଦୋଽସି ଧାର୍ମିକଃ ॥ ସନ୍ଧିଃ
 କାର୍ଯ୍ୟାପ୍ୟନାର୍ଥ୍ୟେଣ ବିନାଶେ ସମୁପସ୍ଥିତେ । ବିନା-ତସ୍ୟାଶ୍ରୟେ
 ଶାନ୍ତ୍ୟଃ କୁର୍ଯ୍ୟାନ୍ନ କାଳଯାପନଂ ॥ ସଂହତ୍ବା ତଦ୍ୟଥା ବେଣୁର୍ନିବିଡଃ
 କଣ୍ଠକର୍ତ୍ତବ୍ୟଃ । ନ ସକ୍ୟତେ ତମୁଚ୍ଛେତ୍ତୁଂ ଭ୍ରାତୃସଂଘାତବାଂସ୍ତଥା ॥
 ବାଲିନା ସହ ଯୋଦ୍ଧବ୍ୟମିତି ନାସ୍ତି ନିର୍ଦର୍ଶନଂ ପ୍ରତିବାତଂ ନହି
 ଘନଃ କଦାଚିଦୁପସର୍ପତି ॥ ଯମଦଗ୍ନେ ସୁତସ୍ୟେବ ସର୍ବଃ ସର୍ବେବ
 ସର୍ବଦା । ଅନେକଯଦୁଜୟିନଃ ପ୍ରତାପାଦେବ ଭୁଜ୍ୟତେ ॥ ❀

ଜତୀବାଦୀ ଓ ପୂଜା ଓ ଧର୍ମିଷ୍ଠ ଓ କ୍ଳୁଦ୍‌ଲୋକ ଓ ଭ୍ରାତୃସମୂହ
 ବିଶିଷ୍ଟ ଓ ବନବାନ ଓ ଅନେକ ଯୁଦ୍ଧକ୍ଷେତ୍ର ଏହି ଜାତ ବାକ୍ତି ମଞ୍ଜେ
 ଶ୍ଚ ଜତୀବାଦୀ ଜତୀକେ ପାଳନ କରେ ଅତଏବ ସେ ଗେଲହୁଁତେ
 ବିକାର ପାଏ ନା ପୂଜା ଲୋକ ପ୍ରାଣାନ୍ତେତେ ଓ ଅପୂଜା
 ତା ପାଏ ନା । ଧର୍ମିଷ୍ଠ ଲୋକେର ମକଲେହି ମାନ୍ୟ ହୁଏ ପୂଜାନ୍
 ରାଗହେତୁକ ଆର ଧର୍ମହେତୁକ ଧାର୍ମିକ ଲୋକ ଦୁଃଖହେତୁ
 ହୁଏ । ମରଣ ଉପାସ୍ଥିତ ହୁଁଲେ ନୀଚେର ସହିତ ଓ ଗେଲ କରି
 ବେକ ତାହାର ଆନୁଗତ୍ୟବାଧିରେକେ ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାରେ କାଳ
 କ୍ଷେପଣ କରିବେନା କଣ୍ଠକେତେ ଆବୃତ୍ତ ଯେ ନିବିଡ଼ ବାଂଶ ତାହାର
 କାଟି ଦୂର ନା କରିଥା ସେ ବଂଶକେ ଯେମନ ହେମନ କରିତେ

সমর্থ হয় না এইরূপ যে ভ্রাতৃসমূহবিশিষ্টলোক তাহার ভাই
সকলকে নষ্ট না করিয়া ঐ ব্যক্তিকে সারিতে পারে না ।
বলবানের সহিত যুদ্ধ করিলেই ইহা নিদর্শন নাই যেহেতুক
মেঘ কদাচ বিলোম বায়ুতে যায় না যমদগ্নি সূরির বহু
সংগ্রামজয়ি পুত্র যে পরশুরাম তাঁহার ন্যায় পুতাপহেতুক
অনেক যুদ্ধজৈতা সর্বত্র নিরন্তর সমস্তই ভোগ করে ।

There are seven descriptions with which it is deemed proper to form an alliance: men of veracity, men of honour, men of virtue, men of low degree, sometimes: such as are heads of a great fraternity, such as are powerful, and those who have been successful in many battles.

He who formeth a connexion with an honest man, from his love of truth, will not suffer thereby. And the man of family, it is very certain, will not be guilty of an unworthy action, even in the defence of life.

To the strictly just and virtuous person, every thing is annexed. The virtuous man, from his justice and the affection he hath for mankind, is the dispeller of sorrow and pain.

It is expedient to form connexions even with one of low degree, upon the approach of our own destruction, and when, without his protection, a worthy person might be ruined.

He who is the head of a confederacy of brothers, from their compactness, is as difficult to be rooted out as a bamboo surrounded by impenetrable thorns.

There is no ordinance for our contending with the strong: the clouds never pass against the wind.

From the glory of him who hath been victorious in many battles, as from the glory of the son of Jamadagni, all, at all times and every where, is enjoyed.

অনেক যুদ্ধবিজয়ী সম্ভারন যস্য মচ্ছতি । তত্ প্রতাপন
 তস্যাম্ চ সমাযান্তি শত্রবঃ ॥ তত্র তাবদ্বজ্রমিগুণৈরু
 পৈনঃ সম্ভেযোঽয়ং রাজা । চক্রবাকৌবদন্ত প্রাণিধে সর্ব
 বাবব্রজ গত্বা পুনরাগমিষ্যসি ॥ রাজা চক্রবাকং পৃষ্ট
 বান্ মম্বিন্ অসম্ভেযাঃ কতি তান্ শ্রোতুমিচ্ছামি ।
 মম্বী ব্রূতে দেব কথয়ামি শৃণু বালোহিত্যদীর্ঘরো
 গী তথা জ্ঞাত্যিবাৎসর্যকৃতঃ । মীলকো মীলজনকোলুম্বো
 লুম্বজনস্তথা ॥ বিরক্তপ্রকৃতিশ্চৈব বিষয়েষ্যতি শক্তি
 মান্ । অনেকচিত্তমম্বস্তু দেবব্রাহ্মণনিন্দকঃ ॥
 দৈবোপহৃতকশ্চৈব তথা দৈবপরাধণঃ । দুর্ভিক্ষব্যসনোপেতা
 বজ্রব্যসনসঙ্কুলঃ ॥ অদেশস্থো বজ্ররিপুর্য়ুক্তঃ কালেন
 যশ্ব ন । সত্যধর্মব্যপেতস্য বিংশতিঃ পুরুষাশ্রমী ॥ ❀

অনেক যুদ্ধজিত্য তাহার সঙ্গে মেল করে তাহার পুত্র
 গেতেই তাহার বিপদের। অরিতে বশতাপন্ন হয়। তাহা
 তে শুণেতে যুক্ত ঐ রাজা সঙ্কেয় । চক্রবাক বলিতেছে
 ওহে হুত সর্বত্র যাও গিয়া পুনর্বার আনি ও । রাজা চক্রবাক
 কে জিজ্ঞাসিলেন ও হ মন্ত্রী অসঙ্কেয় কত লোক তাহারদি
 গকে শুনিতে ইচ্ছা করি। অচিব বলিতেছে হে মহারাজ কহি
 শুন বালক ও বৃদ্ধ ও চিররোগী ও জ্ঞাতি বহিষ্কৃত ও ভীক ও
 ভীকর্দৈন্যাবিশিষ্ট ও লুপ্ত ও লোভি সমভিব্যাহত পুরুষ ও

বিরক্তম্ভাষ ও বিষয়েতে অত্যন্তাসক্ত ও অনবহিত চিত্ত
ও দেবদ্বিজনিন্দক ও দৈবোপহত ও দৈবপরায়ণ ও দুৰ্ভিক্ষকণ
বিপত্তিতে ব্যাঙ্গল ও ব্যসনিসৈন্যযুক্ত ও বিদেশস্থ ও বহু
শত্রু ও অসময়োদ্যোগী ও সত্যধৰ্মচ্যুত এই বিংশতি লোকা

Seeing he who hath been victorious in many battles meet-
eth not death, his enemies are captivated by his glory.

Then I repeat, that the royal goose, being endued with
many of these qualities, is worthy to be treated with.
The minister now orders the booby to go to the enemy's
camp, and to return with what further intelligence he
could pick up.

I now wish thee, said the peacock king, to inform me
how many there are with whom it may be improper to
enter into an alliance; and the vulture minister replied,
—I am about to tell your highness, repeating the fol-
lowing verses:

The young, the old, the long afflicted, and such as have
been excommunicated by their tribe; the fearful, and
those whose followers are timid, the covetous, and those
whose followers are covetous;

Those whose principal officers are void of attachment,
he who possesseth too much power in affairs, one who
in his counsels is of many opinions, and he who speak-
eth disrespectfully of the Gods or the Brāhmanas;

He who is naturally unfortunate, and he who is always
consulting fate; one afflicted with famine and pestilence,
and he who possesseth a disorderly army;

One who doth not stay in his own country, one who is
beset with many enemies, he who hath an army out of
time, and one who hath departed from the true religion:
these make twenty descriptions of persons,

ଯତେ: ସନ୍ଧିଂ ନ କୁର୍ହୀତ ବିଗ୍ରହୀୟେତ୍ତୁ କେବଳଂ । ଯତେ ବିଗ୍ରହ
 ଶାସ୍ତ୍ରାଦି ଲିପିଂ ସ୍ଥାନ୍ତି ସିଂଧିଂ ॥ ବାଳସ୍ୟାସ୍ତ୍ୟଗ୍ରଭାବତ୍ବାନ୍ନ
 ଶ୍ଳୋକୋଽପି ହୁନିଚ୍ଛତି । ଯୁଦ୍ଧାସୁଦ୍ଧଫଳଂ ଯସ୍ମାନ୍ ଜ୍ଞାତୁଂ ଶକ୍ତୋ
 ନ ବାଳିଶଃ ॥ ଓତ୍ସାହଶକ୍ତିହୀନତ୍ବାଦ୍ବିହୋଦୀର୍ଘମୟଶ୍ଚା ।
 ଶ୍ଵେରେବ ପରିଭୂୟେତ୍ ଦାବ୍ୟେତାବସଂଶୟଂ ॥ ସୁତ୍ରୋକ୍ତୋଽପି ଭବତି
 ସର୍ବଜ୍ଞାତିବଦ୍ଧିଃ କୃତଃ । ତେ ଜ୍ଞାତଘୋବିନିଗ୍ରନ୍ତି ଜ୍ଞାତଘତ୍ଵା
 ଶ୍ଵାସାତ୍ କ୍ରତାଃ ॥ ଭୀରୂର୍ଯୁଦ୍ଧପରିତ୍ୟାଗାତ୍ ସ୍ତବ୍ୟମେବ ପ୍ରଘଣ୍ଠୟତି ।
 ଭୀରୁକ୍ରୋଭୀରୁପୁରୁଷୈଃ ସଂଗ୍ରାମେ ତୈର୍ବିମୁଚ୍ୟତେ ॥ ଲୁଭସ୍ୟାସନ୍ନ
 ଭାଗିତ୍ବାନ୍ନ ଧୂଧ୍ୟନ୍ତେନୁସାଧିନଃ ଲୁଭ୍ଵାନୁଜୀବକୈରେବ ଦାନଭିନ୍ନୈ
 ନିହନ୍ୟତେ । ସନ୍ତ୍ୟାଜ୍ୟତେ ପ୍ରହତିଭିର୍ବିରକ୍ତପ୍ରହତିର୍ଯୁଧିଃ ॥
 ମୁକ୍ତାଭିଯୋଜ୍ୟୋଭବତି ପିଷଧେଷ୍ଠତିଶକ୍ତିମାନ୍ । ❀❀❀

ଈହାରଦେର ମହିତ ବେଳ କରିବେନା କେବଳ ମଂଗ୍ରାନ କରିବେକ
 ଈହାରା ଯୁଧାମାନ ହଇଲେ ଶୀଘ୍ର ଶତ୍ରୁର ବଳତାପନ୍ନ ହୟ ।
 ବାଳକେର ଅଗ୍ନ ବଳବ୍ରହେତୁକ ଲୋକ ମଂଗ୍ରାନ କରିତେ ଈଚ୍ଛା
 କରେ ନା । ସେହେତୁକ ଯୁଦ୍ଧାୟୁକ୍ତେର ଫଳ ଜାମିତେ ଶିଶୁ ମର୍ତ୍ତ୍ୟ
 ହୟ ନା । ଓତ୍ସାହରହିତବ୍ର ହେତୁକ ବୃଦ୍ଧ ଏବଂ ଚିରରୋଗୀ ଏହି
 ଦୁହି ଜନ ଅବଶ୍ୟ ଆପନିହି ପରିତୃତ ହୟ । ମର୍ଦ୍ଦଜ୍ଞାତି ବାହି
 କୃତ ଲୋକ ମୁଖଞ୍ଛେଦା ହୟ କେନନା ଜ୍ଞାତିରା ମହାୟ ହଇୟା
 ତାହାକେ ନଷ୍ଟ କରେ । ଭୀକ ବାଞ୍ଛି ରାଗେତେ କ୍ଳାନ୍ତ ହଇୟା ଆପନି
 ନଷ୍ଟ ହୟ । ଭୀକପୁରୁଷ ସାହାର ମର୍ତ୍ତ୍ୟବ୍ୟାହାରେ ସେ ଭୀକପୁରୁଷ
 କର୍ତ୍ତକ ପରିତ୍ୟାଜ୍ଞ ହୟ । ନିକଟେତେ ସେ ଓପସ୍ଥିତ ହୟ ଲୁକ୍ତ

জন আপনাই তাহা নয় এই নিমিত্তে তাহার অনুচরেরা
বুঝ করে না । যে স্বামির সমতিব্যাহারে লোভী লোক
থাকে তাহার। স্বত্ব হইতে স্বর্গাদি পাইলে সে স্বামিকে নষ্ট
করে যুদ্ধস্থানেতে স্বভাবস্থলোক বিরক্ত স্বভাব লোককে
পরিত্যাগ করে । বিষয়েতে অত্যন্তাসক্ত ব্যক্তি অন্যায়
সেতে নিগূহ্য হয় ।

With whom it is not proper to enter into alliance, and
whom one should do nothing but check, for if such as
these go to war, they presently fall into the power of
their enemies.

If he be a child, his people are not ready to fight, be-
cause of the insignificance of his nature, and the inabi-
lity of an infant to pay the reward, or punish, for fight-
ing or not fighting.

Be he one oppressed with age, or with some tedious
infirmity, deprived of the power of exertion, he is in-
evitably overcome of himself.

He who hath been expelled by all his kindred is easily
to be defeated. for his relations too, out of respect for
themselves, are ready to destroy him

Be he a coward, he himself will flee to avoid the battle;
and if his troops are dastards, they will forsake him in
the field.

The followers of the covetous refuse to fight, because
there is no distribution of the spoils; and where the at-
tendants are so, they mutiny for pay, and murder their
leaders.

If the principal officers are not attached, their chief is
forsaken by them in the midst of the battle; and if he
be one who hath too much power in affairs, he expect-
eth superior attention.

অনেকচিত্তমব্রুতু মেঘোমবতি সসিদ্ধা । অনবস্থিতপি
 তত্ত্বাৎ কার্য্যতঃ স উপেচ্ছতে ॥ সম্পত্তে শ্ববিপত্তে শ্ব দৈবমেব
 হি কারণ । ইতিদৈবপরাধ্যায়ব্রাত্মানমপি চেষ্টতে ॥ দুর্ভি
 স্তব্যসনৌ চৈব স্বয়মেব বিসীদতি । বলস্যসনযুক্তস্য যদ্বি
 শক্তির্ন জায়তে ॥ সদাধর্ম্মবলীয়স্বাৎ দৈবব্রাহ্মণনিন্দ
 কঃ বিশীর্ষ্যতে স্বয়ং হ্যেব দৈবোপহতকস্তথা অদেশস্তোহি
 রিপুণা স্বল্যকেনাপিহন্যতে । গ্রাহো ল্পীযানপি জলে গজে
 ন্দ্রমপি কর্ণতি ॥ বজ্রশব্দু স্তু সঞ্চলঃ শ্যেনমধ্যে কপোত
 বত্ । ঘেনৈব গচ্ছতি পথা তেনৈবাশু বিপদ্যতে ॥ অকাল
 সৈন্যযুক্তস্তু হন্যতে কালয়োধিনা । কৌশিকেন হতজ্যো
 তির্নিশাথদ্রব বায়সঃ ॥ *❖*❖*❖*❖*❖

অনবস্থিত ব্যক্তি সচিবকর্তৃক ভেদ্য হয় কেননা অনব
 স্থিতত্ব হেতুক তাহাকে মন্ত্রিরা কার্য্য হইতে ত্যাগ করে ।
 সম্পত্তির এবং বিপত্তির দৈবই কারণ । ইহা চিন্তা করত
 দৈবপরায়ণ লোক আপনাকে ও চেষ্টা করেনা দুর্ভিক্ষরূপ
 বিপত্তিতে ব্যাকুল লোক আপনিই অবসন্ন হয় । বাসনি
 সৈন্য সমভিব্যাহারি লোকের ব্যাহরণাদি সম্পন্ন হইতে
 পারেনা দেবদ্বিজনিন্দক ও দৈবোপহত ইহারা অধর্ম্মপুঙ্ক্ত
 আপনিই ব্যাকুল হয় । অরিকর্তৃক অত্যাগ্ন সৈন্যদ্বারাও
 বিদেশস্থ ব্যক্তি নষ্ট হয় । জলমধ্যেতে বৃহৎস্তিকে ও

ক্ষুদ্র জস্তীর ধরে বহুশত্রু ব্যক্তি শোণ পক্ষির মধ্যস্থিত ক
পোতের ন্যায় ভীত হইয়া যে পথেতে যায় সেই পথেতে নষ্ট
হয় যেনন নষ্ট দৃষ্ট কাক অর্দ্ধরাত্রে গেচক কর্তৃক নষ্ট হয়।

He who in his counsels is of many minds, is hateful to his ministers; and because of the unsteadiness of his mind, he is neglected by them in his necessary affairs.

Those who first study fate, and say, — Fate is the only cause of fortune and misfortune, terrify themselves.

He who is surrounded by famine and pestilence, of himself yieldeth, and he who hath a disorderly army, hath no power to fight.

As religion is always most powerful, so he who despiseth the Gods or a Brāhman, of himself goeth to nought; and so doth he who is smitten by fate.

One who is out of his own country is defeated by a very trifling enemy the smallest alligator in his own element gripeth the largest elephant.

He who hath many enemies is like a pigeon amongst kites: whatever way he turneth, he is encountered by misfortune.

If he be one who marcheth his army out of season, he is destroyed by fighting against the weather. He will suffer like the crow, who, venturing out at midnight, had his eyes picked out by an owl.

সত্যধর্মব্যপেতেন সন্দধ্যান্ন কদাচন । সসম্বিতোষ্যসাধু
 ত্বাদ্ধিরায়াতি বিক্রিয়াং ॥ অপরমপি কথয়ামি সম্বি
 বিগ্রহয়ানাसनसंश्रयात् द्वैधीभावाः षाङ्गुण्यं कर्मणा
 मारम्भोपायः पुरुषत्वे द्रव्यसम्पदेशकालविभागोऽरि
 निपातः प्रतीकारः कार्यसिद्धिश्च पञ्चाङ्गोमन्त्रः सामदा
 नभेददण्डाश्चत्वारउपायाः उत्साहशक्तिमन्त्रशक्तिप्रभु श
 क्तिश्च इति शक्तित्रयं एतत् सर्वमालोच्य नित्याविजिगी
 षवोभवन्ति महान्तः । या हि प्राणपरित्यागमूल्येनापि
 न लभ्यते । साश्रीर्নীतिविदां पश्य चञ्चलापि प्रधावति ।

সত্য ধর্মব্যুত লোকের সহিত কদাচ মেল করিবে না কেন
 না। সে লোক অসঙ্গরিদ্ধতাহেতুক অল্প কালেতেই মেলনহই
 তে অন্যথা পায়। আরও কহি সক্তি অর্থাৎ মেলন বিগ্রহ অ
 র্থাৎ পরদেশদাহলুণাদি যান অর্থাৎ বিপক্ষের পুতি যাত্রা
 আসন অর্থাৎ বিগ্রহাদির নিবৃত্তি। সম্প্রিয় অর্থাৎ দুই বলবা
 নের মধ্যস্থিতব্যক্তির এক ব্যক্তিকে বাক্যদ্বারাধন দারাদির
 সমর্পণ। দ্বৈধীভাব অর্থাৎ একের সহিত মেলন অপরের
 সহিত কলহ এই ছয় গুণ কর্ম্মারম্ভের উপায় হয় আর পুরু
 ষার্থ সম্প্রতিদেশ কালের বিবেচনাআর বৈরিগারণের পুতি

কার আর কৰ্মসিদ্ধি এই পাঁচ পুকার মন্ত্রণা হয় । সাম ও দান ও ভেদ ও দণ্ড এই চারি উপায় হয় উৎসাহশক্তি মন্ত্রণাশক্তি ও পুভাবশক্তি এই তিন শক্তি হয় এই সকল আলোচনা করিয়া বড় লোকেরা সৰ্বদা অবিজিগীষু হয় । জীবন দান রূপ মূল্যেতে যে সম্পত্তি লভ্য হয় না সে সম্পত্তি নীতিজ্ঞব্যক্তির নিকটে নিশ্চল হইয়া আপনি ধাবন করে ।

One should, on no account, enter into any connexion with one who hath departed from the faith, for although he be bound by treaty, he will, because of his own unrighteousness, break his engagement.

In addition to all this, continued the minister, I shall remind your highness of the following particulars: *Uniting, disputing, marching, halting, surrendering, separating*, are denominated the *six modes*. For the commencement of an expedition the necessities are, *men, stores, treasure, place, and time*; the possession of which is proper, as a protection against misfortune, as well as for the accomplishment of a design: they are called *the secret of five members*. *Pacifying, giving, dividing, punishing*, are distinguished by the appellation of *the four means*. *Resolution, authority, good counsel*, are denoted *the three powers*. Those sovereigns who attend to all these things, are always victorious; for, they say,

The success which is to be acquired by those who are acquainted with the rules of policy and prudence, is not to be gained by the price of abandoning life; for such knowledge causeth irresolution to fly from the body.

॥ তথা চোক্তং ॥ বিত্তং যদা यस্য সমং বিভক্তং । গৃহস্বরঃ
 সনিভৃতশ্চ মদ্রঃ । ন চাপ্রিয়ং প্রাণিষু যোব্রवीতি স সাগ-
 রান্তাং পৃথিবীং প্রয়াস্ति ॥ কিন্তু যদ্যপি মহামন্त्रিণা
 মৃগ্রেণ সম্ভানমুপন্যস্ত তথাপি ভূতজয়দর্পান্নাবমন্ত্যং
 দেব তদেবং ক্রিয়তাং সিংহলদ্রোপস্য মহাবলো নাম সার-
 সো রাজাস্থান্মিত্রজম্বুদ্বীপে পশ্চাত্ কোপং জনয়তু ॥ যতঃ ॥
 সুগুপ্তমাধায় সুসংহতেন বলেন বীরো বিচরন্নরান্তি ।
 সন্তাপয়েদেন সমং সুতপ্তস্তপ্তেন সম্ভানমুপৈতি তপ্তঃ ॥
 রাজা এবমস্তু ইতি নিগদ্য বিচিত্রনামবকঃ সুগুপ্তলেখ-
 দত্তা সিংহলদ্রোপং প্রদিতঃ অথ প্রাণিধিরান্য উবাচ
 দেব শ্রুয়তাং তত্ত্বং প্রস্তাবঃ এবম্ তত্র মৃগ্রেণোক্তং । ❀

বিজ্ঞেরা তাহা কহিয়াছেন যাহার অস্তঃকরণ সর্বদা এক
 পুকার আর গুঢ় দূত আর গুপ্ত মন্ত্রণা আর যে লোক ননু
 ঘোরদিগকে নিষ্ঠুর বাক্য কহে না সে লোক সমুদ্র পর্য্যন্ত
 পৃথিবী শাসন করে । কিন্তু যদ্যপি তাহার মহামন্ত্রী গৃধু
 মেন করিবার পুসঙ্গ করিয়াছে তথাপি জয় হইয়াছে এই
 অহঙ্কার পুযুক্ত সে রাজা অবজ্ঞা করিবে না হে ভূপাতে সেই
 হেতুক এই পুকার রুকন সিংহলদ্রোপের মহাবল নামে
 সারসরাজ আশ্বারদের সখা জম্বুদ্বীপেতে গিয়া চিত্র বর্ণের
 পাশাভাগে ক্রোধ জন্মান যেহেতুক শূর লোক সুসঙ্গ

সৈন্যের দ্বারা সাবধান হইয়া সুরক্ষিত শত্রুকে ব্যামোহ দি
বক যেহেতুক ব্যাঘ্রল ব্যক্তি অত্যন্ত ব্যাঘ্রল হইয়া ব্যাঘ্রলের
সহিত মিলন করে। রাজা বলিলেন এইরূপ হউক ইহা কহি
য়া বিচিত্র নামে বককে অত্যন্ত গুপ্ত লিপি দিয়া সিংহলদ্বী
পে পাঠাইলেন। অনন্তর চর আসিয়া বলিল হে ভূপাল
সে স্থানের পুস্তাব শুনুন সেখানে গৃধ্র এই পুকার বলিল।

He is always possessed of riches, whose followers are well attached, whose spies are concealed, and whose counsels are kept private, and he who doth not speak with unkindness to his fellow-creatures, may govern the whole world to the extremities of the ocean.

‘But please your highness, continued the minister, although peace has been proposed by that great statesman the vulture, still his master will not consent to it, because of his recent success. Then let this be done. the king of Singhala-dwipa, the Sārāsa Mahābala, is our friend; let him raise a disturbance in Jambu-dwipa, the enemy’s country.,

A wise man having practised great secrecy, marching with a well-composed army, may alarm an opponent; and he who is alarmed will make peace with him with whom he hath been at variance.

The royal goose having consented to this proposal, one Vichitra a booby was dispatched to Singhala-dwipa with a very private letter.

In the mean time, the spy returning from the peacock’s camp, said,—Please your highness, attend to what I have to inform you of. The vulture minister said to the peacock king,—

যে নিশ্চিত ব্যক্তি তাহাকে নষ্ট করিয়া কি পুরুষার্থ হে মহা
রাজ শুনুন সে সচিব পুথন দর্শনেতে জানিয়াছিল কিন্তু ঐ
রাজা মহাশয় সেই হেতুক আমি বধনা করিয়াছি। পুঞ্জেরা
তাহা কহিয়াছেন আত্মতুল্যেতে যে লোক খনকে সত্যবাদী
করিয়া জানে সেই জন সেই পুকার বধিত হয় যেমন ছাগ
লের নিমিত্তে তিন জন ধূর্তকতৃক একবুদ্ধি বধিত হইল।

Although Cloud-colour the crow was so long in the enemy's castle, what if he doth, or doth not know whether the royal goose, Hiranya-garbha, be possessed of those qualities which are necessary towards our treating with him? After this, continued the spy, the peacock king having called Cloud-colour before him, asked him what sort of a character that same royal goose, Hiranya-garbha, was, and what sort of minister he had.



To this the crow replied,—Please your highness, Hiranya-garbha is as noble as king Yudhi-shtira, and a person of great sincerity; and as to his minister, his likeness is no where to be discovered. If he be as thou hast described him, observed the king, how was it that he was deceived by thee?

The crow replied,

What great ingenuity is there in deceiving him whose confidence one hath gained? Is the term manhood his who mounteth upon the bed, and destroyeth those that are asleep?

Attend, please your highness,—I was discovered by the minister from the beginning, but the king his master, being himself one in whom the greatest confidence may be placed, was easily imposed upon by me; according to the following saying:

He who, judging by what passeth in his own breast, believeth a knave to be a person of veracity, is deceived; as the Brahman was concerning his goat.

ରାଜୋବାଚ କଥମେତତ୍ । ମେଘବର୍ଣ୍ଣଃ କଥୟତି । ଅସ୍ତି ନୌ
 ତମସ୍ୟାରଣ୍ୟେ ପ୍ରସ୍ତୁତଯଜ୍ଞଃ କସ୍ଥିତ୍ ବ୍ରାହ୍ମଣଃ ସଚ ଯଜ୍ଞାର୍ଥଂ
 ଯାମାନ୍ତରାଚ୍ଛାଗମୁପକ୍ରୀୟ ଶ୍ଲଥ୍ମେ ନୌତ୍ବା ଗଚ୍ଛନ୍ ଧୂର୍ତ୍ତଃ
 ଯେନାବଲୋକିତଃ । ତତଶ୍ଚେ ଧୂର୍ତ୍ତାଃ ଯଦ୍ୟେଷାଂ କେନାପ୍ୟୁପା
 ଯେନ ଲଭ୍ୟତେ ତଦା ମତିପ୍ରକର୍ଷେ । ଭବତି ସମାଲୋଚ୍ୟ ଟ୍ବଚ୍ଚତ୍ର
 ଯତଶ୍ଚେ କ୍ରୋଶାନ୍ତରେଣ ତସ୍ୟ ବ୍ରାହ୍ମଣସ୍ୟାଗମନଂ ପ୍ରତୀଚ୍ଛ୍ୟ
 ପଞ୍ଚ ସ୍ଥିତାଶ୍ଚତ୍ରୈକେନ ଧୂର୍ତ୍ତେନ ଗଚ୍ଛନ୍ ସ ବ୍ରାହ୍ମଣୋଽଭି
 ହିତଃ । ଯୋ ବ୍ରାହ୍ମଣ କିମିତି କୁକୂରଃ ଶ୍ଲଥ୍ମେନ ଉଚ୍ଛ୍ୟତେ ।
 ବିପ୍ରେଣୋକ୍ତଂ ନାୟଂ ଶ୍ଚା କିନ୍ତୁ ଯଜ୍ଞଚ୍ଛାଗଃ ଅଥାନନ୍ତର
 ସ୍ଥିତେ ନାନ୍ୟେନ ଧୂର୍ତ୍ତେନ ତଥୈବୋକ୍ତଂ ତଦାକର୍ଣ୍ଣ୍ୟ ବ୍ରାହ୍ମଣ
 ଶ୍ଚାଗଂ ଭୂମୌ ନିଧାୟ ମୁଞ୍ଚନ୍ନିରୀଚ୍ଛ୍ୟ ପୁନଃ ଶ୍ଲଥ୍ମେ ଶ୍ଚୂତ୍ବା
 ଦୋଳାୟମାନମତିଶ୍ଚ୍ଛଳିତଃ ॥ ଯତଃ ॥ ***

ରାଜା କହିଲେନ ଏ କି ପୁକାର ମେଘବର୍ଣ୍ଣ କହିତେଛ । ଗୋ
 ଶୁଭ ମୁନିର କାନନେତେ ଏକ ଆରକ୍ଷ ଯଜ୍ଞ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଥାକେନ
 ତିନି ଯଜ୍ଞେର ନିଗିତେ ଗୁମାସ୍ତରହୈତେ ଛାଗନ କ୍ରୟ କରିଯା
 ଶ୍ଚକ୍ଷେ ନୈୟା ଯାହିତେହିଲେନ ୈହା ତିନଜନ ଧୂର୍ତ୍ତେତେ ଦେଖିଲ ।
 ତାହାର ପର ସେହି ଶଠେରା ଯଦି ଏହି ଛାଗନ କୋନ ଉପାୟେର
 ଦ୍ବାରା ନୈତେ ପାରି ତବେ ବୁଦ୍ଧିର ଓଂକର୍ଯ୍ୟ ହୟ ୈହା ପରାମର୍ଶ
 କରିଯା ତିନବୁଝେର ତଳେତେ ଏକ କ୍ରୋଶ ଅନ୍ତରେତେ ସେହି
 ଦ୍ବିଜେର ଆଗମନ ପୁତୀକା କରିଯା ପାଥେର ମଧ୍ୟେ ଥାକିଲ ।
 ସେଥାନେ ଯାହିତେହିଲ ସେ ବ୍ରାହ୍ମଣ ତାହାକେ ଏକ ବଞ୍ଚକ କହିଲ

হে ব্রাহ্মণ কেন জকুরকে স্বেচ্ছতে করিয়া বহিতেছ ভূদেব
কহিলেন এ জকুর নয় কিন্তু যজ্ঞীয় ছাগ অনন্তর তাহার
পর ছিল যে অপর শঠ সেও ঐ পুকার কহিল। তাহা শুনিয়া
দ্বিজ ছাগলকে ভূমিতে নামাইয়া ভূয়ো২ অবলোকন
করিয়া পুনর্বার স্বেচ্ছ করিয়া চঞ্চলচিত্ত হইয়া চলিল।

Pray how was that? demanded the king; and the spy
told the following story:

FABLE X.

IN the forest of the prophet Goutama a certain Brāhman, having determined to make an offering, went to a neighbouring village and purchased a goat, which having thrown across his shoulder, he turned towards home. As he was travelling along, he was perceived by three thieves. If, said they, we could by some artifice get the goat from that man, it would be a great proof of our address. Saying this, they agreed upon their stratagem, and executed it in this manner. they stationed themselves before the Brāhman, and sat down under the trees in the road which led to his habitation, till he should come up to them. Soon after, he was accosted by one of them in this manner:—Is not that a dog? Brāhman, what is the reason thou carriest it upon thy shoulder? The Brāhman replied,—No, it is not a dog—it is a goat, which I have purchased to make an offering of. About a mile further on he met another of them, who repeating the same question, he took the goat from his shoulder, and putting it upon the ground, examined it again and again; and at length, replacing it upon his shoulder, he went on, quite staggered as it were.

মতির্দোলায়তে সত্যং সত্যমপি ললোক্তিभिঃ। ত্রিभिर्वিশ্বা
 সিতস্ত্যাসৌ স্মিয়তে চিত্রকর্ণবৎ ॥ রাজাহ কথমেতৎ ।
 স কথয়তি । অস্মি কস্মিঁস্থিহ্ননোদেশে মদোক্তটো নাম
 সিংহস্তস্য সেবকাস্তয়ঃ কাকোব্যাঘ্রো জম্বুকস্ত । অথ তৈ
 র্ভমঙ্গিঃ কস্মিদুগ্ধোদৃষ্টঃ পৃষ্টস্ত্ব কুতো ভবানাগতঃ সা
 র্থাঙ্কুষ্টঃ । সচাত্মব্রতান্তমকথয়ত ততস্তৈ নীত্বা সিংহো
 ঽসৌ সমর্পিতঃ তেনাভয়বাচং দত্বাচিত্রকর্ণ ইতি নাম ক্র
 ত্বাস্থাপিতঃ অথকদাচিত্ সিংহস্যশরীরবৈকুল্যাৎ ভূরি
 দৃষ্টিকারणाच्चाहारमलभमानাস্তে ব্যগ্রাবম্ভবুঃ ততস্তৈ
 রালোচিতং চিত্রকর্ণমেব যথা স্বামী ব্যাপাদয়তি তথা
 নুষ্ঠীয়তাং কিমনেন কলঙ্ককমুজা । ব্যাঘ্রউবাচ স্বামি
 নাভয়বাচং দত্বা অনুগৃহীতস্তত্ কথমেবং সম্ভবতি ।

যেহেতুক শঠ বাক্যেতে সুবোধ নোকের ও বুদ্ধি চঞ্চল। হয়
 যেমন চিত্রকর্ণ তিন জনকর্তৃক পুণ্ড্রবিশ্বাস হইয়া
 মরিল। রাজা কহিলেন ইহা কি কণ। সে কহিতেছে ।
 এক অরণ্যেতে মদোক্তট নামে সিংহ থাকে তাহার দাস
 তিন জন কাক ও বাঘু ও শূগাল অনন্তর তাহার। ভ্রমণ
 করিতে২ এক উষ্ট্রকে দেখিল আর জিজ্ঞাসিল তুমি কেন
 সাধি ত্যাগ করিয়া আইলা । সে নিজ বৃত্তান্ত কহিল তদ
 নন্তর উহাকে লইয়া সিংহকে সমর্পণ করিল সে অভয়
 বাক্য দিয়া চিত্রকর্ণ এই নাম করিয়া তাহাকে রাখিল ।

তাহার পর কোন দিন শরীরাপাটবপুষ্প আৰ অত্যন্ত
বৃষ্টি পুষ্প তাহারা সিংহের আহাৰ না পাইয়া ব্যাভল
হইল । তাহার পর তাহারা আলোচনা করিল যেপুকারে
চিত্রকৰ্ণকেই রাজা মারেন তাহা কর এ কণ্টকভোক্তাতে কি
পুয়োজন ব্যাঘ্র বলিল রাজা অভয় বচন দিয়া অনুগৃহ করি
য়াছেন সেই হেতুক কি মতে এমন সম্ভব হয় ।

The minds even of good men are staggered by the arguments of the wicked, but those who place confidence in them may suffer by it, like the camel Chitra-karna.

The king asked how that was, and the spy tells him the following story.

FABLE XI.

IN a certain forest there was a lion whose name was Madōtkata, and he had three attendants, a crow, a tiger, and a jackal. One day, as these three were roaming about, they met with a camel. They asked him whence he came, and whither he was travelling, and after he had given an account of himself, they introduced him to the lion, who, having given him assurances of protection, and determined that he should be called Chitra-karna, retained him in his service. Sometimes after, when the lion was out of order, his attendants were exceedingly at a loss for provisions, because for some time it had rained violently. So the crow, the tiger, and the jackal, agreed amongst themselves to contrive some way for the lion to kill the camel; for, said they, what is that thorn-eater to us? Our master, observed the tiger, having given him assurances of safety, and taken him under his protection, then how can this be brought about?

কাকোব্রূতে ইহ সময়ে পরিচোণঃ স্বামী পাপমপিকরিষ্যতি
 ॥ যতঃ ॥ ত্যজেত্ শুধার্ভো মহিলাং স্বপুত্রং খাদেত্ শুধার্ভো
 ভুজগী স্বমণ্ডং । বুমুচ্ছিতঃ কিং ন কৰোতি পাপং চীর্ণা
 নরানিচ্ছকরণাভবন্তি ॥ অন্যচ্ছ ॥ মত্তঃ প্রমত্তশ্চো
 ন্মত্তঃ শ্রান্তঃ ক্রোধোবুমুচ্ছিতঃ । লুব্ধো ভীরুস্বরাযুক্তঃ
 কামুকশ্চ ন ধৰ্ম্মবিত্ ॥ ইতি সञ्চিন্ত্য সৰ্বে সিংহান্তিকং
 জরমুঃ সিংহেনোক্তং আহারার্থং কিञ্চিত্ প্রাপ্তং তৈরুক্তং
 যত্নাদপি ন প্রাপ্তং কিञ্চিত্ । সিংহেনোক্তং কোঽধুনা জীৱনো
 পায়ঃ কাকো বদতি দেব স্বাধীনাহারপরিত্যাগাৎ সৰ্ধ
 নাশোঽয়মুপস্থিতঃ ॥ সিংহেনোক্তং অবাহারঃ কঃ স্বাধী
 নঃ । কাকঃ কণে কথয়তি চিত্রকর্ণে ইতি ॥ সিংহো ভূমি
 স্পৃষ্ট্বা কণে স্পৃশতি অময়বাচং দত্ত্বা ধৃতোঽয়মস্মাভিঃ ।

কাক বলিতেছে এ সময়েতে অনাহারেতে ক্লিষ্টে পুত্ৰ পাপ ও
 করিবেন । যেহেতুক ক্ষুধাতুর লোক আপন স্ত্রী ও পুত্রকে ও
 ত্যাগ করে বৃত্তান্তিত মপা নিজ অণ্ডকে ভক্ষণ করে ক্ষুধার্ত
 ব্যক্তি কোন পাপ না করে কেননা আহারপুযুক্ত ক্লিষ্ট লোক
 নির্দয় হয় অপর যদিরা পানাদি দ্বারা মত্ত ও অকৃতাবধান
 ও বাতুল ও ভ্রমযুক্ত ও ক্রুদ্ধ ও ক্ষুধাতুর ও লোভী ও ভীক ও
 নব্বর ও কামাতুর ইহারা ধৰ্ম্মজ্ঞ নয় ইহা ভাবনা করিয়া
 মরুনে সিংহের নিকটে গেল । সিংহ বলিল ভক্ষণের নিমিত্তে
 কিছু পাইয়াছ । তাহারা বলিল পুষ্যামেতে ও কিঞ্চিৎ পাই

নাই সিংহ কহিল সপুতি আমারদের পুণ্যধারণের উপায়
কি কাক বলিতেছে নিজায়ত্ত ভোজন পরিত্যাগপুষ্ট এ
সর্বনাশ উপস্থিত সিংহ কহিল। এখানে কোন আহর আপ
নার অধীন বায়স কর্ণেতে কহিতেছে চিত্রকর্ণসিংহ হস্তদ্ব
য়ের দ্বারা ভূমিস্পর্শ করিয়া দুই কর্ণস্পর্শ করিতেছে এবং
কহিতেছে আমরা ইহাকে অভয় বাক্য দিয়া রাখিয়াছি।

To which the crow replied,—At such a time as this, when our master's health is upon the decline for want of food, he will not scruple to commit a sin; for they say,

A man, when oppressed with hunger, will abandon his own wife and offspring; a female serpent, when distressed for food, will devour her own eggs. What crimes will they not commit who are pinched with hunger! Men pining for food become destitute of pity and compassion.

Those who are intoxicated either with liquor or pleasure, the lazy, the passionate, the hungry, the covetous, the fearful, the hasty, and libertines, have no knowledge of justice.

This being proved to the satisfaction of all parties, away they went to the lion; who, the moment he saw them, demanded if they had brought him any thing to eat. They replied, Sir, with all our endeavours, we have not been able to procure the smallest trifle. Then what means are there now left for my support? cried the lion. Sir, replied the crow, from your refusing the food which you have in your power, we are all like to perish. What is there here for me to eat? eagerly demanded the lion. The camel! replied the crow, whispering it in the lion's ear. The noble beast at this proposal, touching the ground, and then his two ears, in abhorrence, exclaimed,—Having, at our first interview given him assurances of my protection,

তত্ কথমেব সম্ভবতি । তথা চ ॥ ন ভূপ্রদানং ন সুবর্ণ
 দানং ন গোপ্রদানং ন তথান্নদানং । যথা বদন্তীহ মহা
 প্রদানং সর্ঘেষু দানেষ্বভয়প্রদানং ॥ অন্যত্র ॥ সর্ঘকামসমৃ
 দ্বস্য অশ্বমেধস্য যত্ ফলং । তত্ ফলং লভতে সম্যক্
 রচিত্তে শরণাগতে ॥ কাকো ব্রূতেনাসৌ স্বামিনা ব্যাপাদ
 যিতব্যঃ কিল্বস্মাভিরেব তথা কৰ্ত্তব্যং যথাসৌ স্বদেহ
 দানমঙ্গীকরোতি । সিংহস্তত্ শুত্বা তূষণীং স্থিতঃ ততো
 লব্ধ্যবকাশঃ কূটং কৃৎবা সর্ঘানাদায় সিংহান্তিকং গতঃ
 অথ কাকেনোক্তং দেব যত্নাদপ্যাহারোন প্রাপ্তঃ অনেকোপ
 বাসখিन्नঃ স্বামী তদিদানীং মদীয়মাংসমুপভুজ্যতাং
 ॥ যতঃ ॥ প্রকৃতিঃ স্বামিনা ত্যক্তা সমৃদ্ধাপি ন জীবতি ।
 অপি ধনন্তরি বৈ যঃ কিং করোতি গতাযুধঃ ॥ *

তবেকি মতে এতাদৃশ সম্ভব হয় তাহা বিজ্ঞেরা কহিয়াছেন।
 সংসারেতে সকল দানের মধ্যে অভয়দানকে যেমন মহাদান
 করিয়া বলেন তেমন ভূমিদানকে বলেন না সুবর্ণ দানকে
 বলেন না গোদানকে বলেন না অন্নদানকে বলেন না ।
 অপরসর্ঘাভিনাষদায়ক অশ্বমেধ যজ্ঞের যে ফল সে সমস্ত
 ফল শরণাপন্ন ব্যক্তিকে রক্ষা করিলে পায় । কাক বলি
 তেছে পুভু আগনি ইহাকে নষ্ট করিবেন না কিন্তু আমরা
 সেই পুকার করিব যে পুকারে আগনিই ও নিজ শরীর দান
 স্বীকার করে সিংহ তাহা শুনিয়া চুপ করিয়া থাকিল অনন্তর

অবকাশক্রমেতে কাক কপটকরিয়া সকলকে লইয়া সিংহের সম্মিথিতে গেল তাহার পর কাক কহিল হে মহারাজ যত্নেতে ও খাদ্য দ্রব্য পাইলাম না বহুতর উপবাসেতে পুতু কৃশ হইয়াছেন অতএব সম্প্রতি আমার মাংস ভোজন করুন স্বামিকর্তৃক অমাত্য লোক পরিত্যক্ত হইয়া ঐশ্বর্য্য শালী হইলে ও বাঁচে না কেন না ধমন্তরি বৈদ্য ও গতায়ুর কি করিতে পারে ।

how can he now be treated thus? They say,

Nor the gift of cattle, nor the gift of land, nor the gift of bread, nor the gift of milk, is to be compared with that which men call the greatest of all gifts: the gift of assurance from injury!

Again:

He who hath defended one who had claimed his protection, receiveth the full reward which is the fruit of an Aswa-mēdha sacrifice, rendered more worthy by the addition of every thing which is estimable!

The crow replied,—Under these circumstances it is not proper that your highness should put him to death; but suppose we so contrive, that he shall consent to offer his own body? The lion hearing this, remained silent; but the crow, finding an opportunity, made a pretence to carry all his friends and the camel before him; when he addressed him in this manner:—Please your highness, as we can find nothing for you to eat, rather than my master shall fast, let him satisfy his hunger with all the flesh upon my poor body; for,

When nature is forsaken by her lord, be she ever so great, she doth not survive. Although Dhanwantri be the physician, when life is departed, what can he do?

॥ କିଞ୍ଚ ॥ ଶ୍ଵାମିମୂଳାଭବନ୍ତ୍ୟେବ ସର୍ବା: ପ୍ରକୃତୟ: ଶ୍ଵଳୁ ।
 ସମୂଲେଷ୍ଵପି ପ୍ରକ୍ତେଷୁ ପ୍ରୟତ୍ନ: ସଫଳୋତ୍ପତ୍ତୀ ॥ ସିଂହେନୋକ୍ତଂ ବରଂ
 ପ୍ରାଣପରିତ୍ୟାଗେନ ପୁନରୋଦ୍ଘି କର୍ମ୍ମାନି ପ୍ରପତ୍ତି: । ଅମ୍ବୁକୋ
 ନାପି ତଥୋକ୍ତଂ ॥ ତତ: ସିଂହେନୋକ୍ତଂ ମୈବ । ଅଥବ୍ୟାପ୍ତେଣୋକ୍ତଂ
 ମଦେହେନ ଜୀବତୁ ଶ୍ଵାମୀ । ସିଂହେନୋକ୍ତଂ ନ କଦାଚିଦେବମୁଚିତଂ ।
 ଅଥ ଚିତ୍ରକର୍ତ୍ତ୍ତାପି ଜାତବିଶ୍ଵାସଃ କ୍ଷୁଦ୍ରଦୈବାତ୍ମାନମାହ ତତଃ
 ହୃଦୟାନ୍ତେନ ବ୍ୟାପ୍ତେଣାସୌ କୁଚ୍ଚିଂ ବିଦାର୍ଯ୍ୟ ବ୍ୟାପାଦିତ: ସର୍ବେର୍ଭ
 ଚିତ୍ତ: ଅତୋଽହଂ ବ୍ରବୀମି ମତିର୍ଦୌଳାୟତେ ସତ୍ୟମିତ୍ୟାଦି ।
 ତତଃ ତୃତୀୟଧୂର୍ତ୍ତବଚନଂ ଶ୍ରୁତ୍ବା ଶ୍ଵମତିଭ୍ରମଂ ନିଶ୍ଚିତ୍ୟ ଛାଗଂ
 ତ୍ୟକ୍ତା ବ୍ରାହ୍ମଣ: ଶ୍ଵାତ୍ବା ଗୃହଂ ଯଥୌ ସ ଛାଗଶ୍ଚୈଧୂର୍ତ୍ତେ ନୀତ୍ବା
 ଭୀତ: ଅତୋଽହଂ ବ୍ରବୀମି ଆତ୍ମୌପମ୍ୟେନ ଯୋବେତ୍ତୀତ୍ୟାଦି ॥

ଅନାତପୁତ୍ରତା ଜନ୍ମନ୍ତୁ ପୁତ୍ରତରଦେବ ମୂଳ ସାମୀହି ହୟ ।
 ମୂଳ ବୃକ୍ଷେତେହି ଲୋକେର ପୁରୀଶ ମକଳ ହୟ ସିଂହ କହିଲ
 ଜୀବନ ପରିତ୍ୟାଗ ଓ ଭାଲ ତଥାପି ଏତଦ୍ରୂପ କର୍ମ୍ମେତେ ପୁରୀଶ
 ଭାଲ ନୟ । ଶୃଗାଳ ଓ ତାହା କହିଲ ତଦନନ୍ତର ସିଂହ କହିଲ
 ଏମନ ନା ତାହାର ପର ବ୍ୟାଘ୍ର କହିଲ ଆମାର ଶରୀରେତେ ପୁତ୍ର
 ବାଚୁନ ସିଂହ ବାଲିଲ କଦାଠି ଈହା ଉପଯୁକ୍ତ ନୟ । ଚିତ୍ରକର୍ତ୍ତ୍ତା ଓ
 ଜାତପୁତ୍ରୟ ହୈୟାସେ ପୁକାର ଆପନାକେ କହିଲେନ ତାହାର
 କଥାତେ ସେହି ବ୍ୟାଘ୍ର ଉଦ୍ଧୃତବିଦାରଣ କରିୟା ଉଦ୍ଧାକେ ନଷ୍ଟ କରି
 ଯା ଥାହିଲ । ଏହି ନିମିତ୍ତ ଆମି ବାଲି ଧନବାକ୍ୟେତେ ଉଦ୍ଧୃତ

কেন ও বুদ্ধি চঞ্চল হয় । অনন্তর তৃতীয়ধূর্তের বাক্য শুনিয়া আপন বুদ্ধিভ্রম নিশ্চয়করিয়া ছাগলকে ত্যাগ করি যাবাক্ষণ শ্রান করিয়া ঘরে গেলেন । ধূর্তেরা ঐ ছাগলকে লইয়া ভক্ষণ করিল । অতএব আমি বলি আত্ম তুল্যেতে যে লোক ইত্যাদি ।

All honours and endowments have their foundations in the sovereign; but although trees have their roots, their being fruitful dependeth upon man's exertion.

The lion nobly replied,—It is better to abandon life entirely, than to proceed in such an act as this! The jackal next offered himself; but the lion generously refusing; the tiger said, I live, O master, by my body! This never can be proper! said the noble beast, and, last of all, the camel, in whom was created the fullest confidence, offered himself as the rest had done; and instantly the tiger tore open his sides; and being thus cruelly murdered, he was devoured by them all. I say therefore,—*The minds even of good men &c.*

At length, said the spy, concluding the story of the three thieves, the Brāhman having heard the third thief like the former two, insist upon it, that he had a dog upon his shoulder, was convinced that it was a dog; and so, leaving his goat behind him, which the thieves presently took away and made a feast of, the good man washed himself and went home. Whence, I say,—*He who, judging by what passeth in his own breast, &c.*

রাজাহ মেঘবর্ণঃ কথং শত্রুমধ্যে ত্বয়া চিরমুখিতং কথং বা
 তেষামনুনয়ঃ কৃতঃ । মেঘবর্ণ উবাচ দেব স্বামিকাখ্যা
 থিনা স্বপ্রযোজনবশাদ্বা কিং ন ক্রিয়তে ॥ পশ্য ॥
 লোকো বহতি কিং রাজন্ শিরসা দগ্ধুমিন্ধনং । স্নাত্ব
 নাপি বৃক্ষাংগি নদী বেলা নিব্রুন্ততি ॥ তথা চোক্তং ॥
 স্নাত্বেনাপি বহেৎ শত্রুন্ কার্য্যমাশায বুদ্ধিমান্ । যথা
 বৃহেন সর্পেণ মণ্ডুকা বিনিপাতিতাঃ ॥ রাজাহ কথমে
 তত্ । মেঘবর্ণঃ কথয়তি অস্তি জীর্ণোদ্যানে মন্দ্রবিষপ
 নাম সর্পঃ সোতিজীর্ণতয়া আহারমপ্যগ্নেষ্টিমত্মমঃ সর
 স্তীরে পতিত্বা স্থিতঃ ততোদূরাং কেচিচ্চাণ্ডুকেন দৃষ্টঃ
 পৃষ্টস্ব কিমিতি ত্বমাহারং নান্নেষ্যসি সর্পোঽবদৎ গচ্ছ
 ত্বদ্র মম মন্দ্রভাগ্যস্য প্রপ্নেহ কিং ॥ ❀❀❀❀

রাজা বলিলেন মেঘবর্ণ তুমি কি পুকারে বিপদের মধ্যে
 চিরকাল বাস করিয়াছিল। কি পুকারে বা তাহারদিগের
 বিনয় করিয়াছিল। । মেঘবর্ণ বলিল মহা রাজ আমির
 কার্য্যের নিমিত্তে আর আপনার কার্য্যের নিমিত্তে লোক কি
 না করে দেখ। পোড়াইবার নিমিত্তে লোক মাথায় করিয়া
 কাঠকে বহন করে নদীস্থল বৃক্ষমূল জালন করত উৎপাটন
 করে তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন সুবোধ লোক নিজ কার্য্যের
 নিমিত্তে শুভ্রকে ক্ষুদ্রদেশেতে করিয়া বহন করো যে রূপ বৃক্ষ
 জপমণ্ডুকের দিগকে নষ্ট করিল রাজা কহিলেন এক পুকার

মেঘবর্ণ করিতেছে। জীর্ণোদ্যানেতে মন্দবিষ নামে এক সর্প থাকে সে অত্যন্ত বার্ককাবছাপুষ্ট আহার অন্বেষণ করি তেও অসমর্থ পুষ্করিনীর তীরে পড়িয়া থাকে তাহার পর দূর হইতে কোন মণ্ডুক দেখিল এবং জিজ্ঞাসা করিল কেন তুমি ভোজনের তত্ত্ব কর না। ভুজঙ্গ কহিল ও হেমিত্র মন্দ ভাগ্যের আমার জিজ্ঞাসাতে কি পুয়োজন।

Cloud-colour, said the peacock king to the crow, how couldst thou remain so long a time amongst the enemy? And how didst thou recommend thyself? Please your highness, replied the crow, what is there not done by servants who have their master's affairs at hearts, or from a power derived from one's own necessities?



Do not men, O king, bear burning wood upon their heads, and the force of rivers, simply by washing their roots, sweep trees away?

When a wise man findeth an occasion, he may bear away his enemy upon his shoulder, as it were, just like the old serpent who killed the frogs.

How did that happen? said the peacock king; and the crow related the following story:

FABLE XII.

THERE was an old serpent, by name Manda-visarpa, who, because of his great age, being unable to seek food for himself, threw himself down the bank of a pond, where he remained, till a certain frog seeing him at a distance, asked him what was the reason he did not hunt about for food? Leave me! cried the serpent, what occasion hast thou to enquire into the story of such an unfortunate wretch as I?

ততঃ সংজ্ঞানকৌতুকঃ সচ ভেকঃ সর্বথা কথ্যতামিত্যাঙ্ক
 সর্পেণাখ্যাহ ভদ্র ব্রহ্মপুত্রবাসিনঃ শ্রীত্রিযস্য কৌণ্ডিন্যস্য
 পুত্রোবিংশতিবর্ষীয়ঃ সর্বগুণসম্পন্নঃ দুর্দৈবান্ধম নৃশংসস্ব
 মাধাৱহুঃ তং পুত্রং সুশীলনামানং মৃতমালোক্য মূর্চ্ছিতঃ
 কৌণ্ডিন্যঃ পৃথিষ্ঠাং লুলোঠ । অনন্তরং ব্রহ্মপুত্রবাসিনঃ
 সর্বৈ বাম্ভবা স্তত্রাগত্য উপবিষ্টাঃ ॥ তথা চোক্তাং ॥ উত্সবে
 ব্যসনে যুদ্ধে দুর্ভিক্ষে রাষ্ট্রবিপ্লবে । রাজদ্বারে শ্মশানে চ
 যস্মিষ্ঠতি সবাম্ভবঃ ॥ তত্র কপিলো নাম স্নাতকোঽবদত্
 স্তরে কৌণ্ডিন্য মূঢ়োহসি তেনৈবং বিলপসি । শৃণু । ক্রোড়ী
 কৰোতি প্রথমং যথা জাতমনিত্যতা । ধাত্রীব জননী
 পশ্চাৎতথা শোকস্য কঃ ক্রমঃ ॥ ***

তদনন্তর সেই ভেক মৃতহলী হইয়া ইহা কহিল যে তুমি অব
 শ্য কহ তুজ ব্রবলিল হেতদু বুদ্ধপুত্রবাসি শ্রোত্রিয় কৌণ্ডিন্য
 ব্রাহ্মণের বিংশতিবর্ষবয়স্ক অশেষ গুণালঙ্কৃত পুত্রকে দুর্দৈব
 পুয়ুক্তখলস্বভাবহেতুক আমি দংশন করিয়াছি সেই সুশাল
 নামে পুত্রকে মৃতদেখিয়া কৌণ্ডিন্য মূর্চ্ছিত হইয়া মৃত্তি
 কাতে গড়াগড়ি দিতেছেন । তাহার পর বুদ্ধপুত্রবাসি সমস্ত
 বন্ধু লোকেরা সেস্থানে আসিয়াবসিল বিজ্ঞেরা তাহা কহি
 য়াছেন উৎসবেতে ও বিপ্লবকালেতে ও সংগ্রামেতে ও দুর্ভি
 ক্ষেতে ও দেশোপদ্রবেতে ও রাজস্থানেতে ও শ্মশানেতে যে

থাকে সেই মিত্র তাহাতে কপিলনামে স্নাতক বলিলেন অমর
কোণ্ডিন্য তুমি মুখ এই নিমিত্তে রোদন করিতেছিস শুন মাতৃ
কতক ক্রোড়করণের পূর্বে যেমন খাদী কোলে করে এমনি
জন্মিবামাত্র সকলের পুথমত অনিত্যতা অঙ্কে করে পশ্চাৎ
জননী পুভৃতির ক্রোড়ে করে হাতে শোকের বিষয় কি।

The frog, who was not a little pleased to find his enemy in distress, desired him, by all means, to make him acquainted with the cause of his trouble. You must know then, said the serpent, that here in the town of Brāhman-pura, the son of one Kown-dinya a Brāhman, in the twentieth year of his age, and endued with every virtue and accomplishment, by the will of fate, was sometime since bitten by cruel me! His father beholding his beloved son Susila, for that was his name, lying dead, fell mad for grief, and rolled himself upon the ground. In the mean time, the people of the city, his kindred, friends, and connexions, all came and sat down upon the spot where he lay.—They say,

He is a friend who attendeth one at a feast, in affliction, in famine, in disputing with an enemy, at the king's gate, and in the cemetery.

Amongst the rest, there was a certain pilgrim, whose name was *Kapila*, by whom the father of the youth was thus addressed: art thou deprived of reason, Kowndinya, that thou thus lamentest the dead? Hear me!

First, the nurse lays the new born child in her lap (there is no stability): and then the mother. What use is there in sorrow?

ତଥା ॥ ଶ୍ଵାଗତାଃ ପୃଥିବୀପାଳାଃ ସମୈବ୍ୟବତ୍ତବାହନାଃ ।
 ବିଧେୟସାକ୍ଷିଣୀ ଯେଷାଂ ଭୂମିରପ୍ୟାପି ତିଷ୍ଠତି ॥ ଅପରଞ୍ଚ ॥
 କାୟଃ ସନ୍ନିହିତାପାୟଃ ସମ୍ପଦଃ ପଦମାପଦାଂ । ସମାଗମାଃ
 ସାପଗମାଃ ସର୍ବମୃତ୍ୟୁାଦିଭଞ୍ଜରାଂ ॥ ପ୍ରତିକ୍ଷଣମୟକାୟଃ ଶ୍ଵୀୟ
 ମାଣୋନ ଶୁଦ୍ଧ୍ୟନ୍ତେ । ଆମକୁଲ୍ମଭବାଲ୍ମସ୍ଥୋ ବିଶୀର୍ଣ୍ଣଃ ସନ୍ ବି
 ଭାବ୍ୟତେ ॥ ଆସନ୍ନତରତାମେତି ସୃତ୍ୟୁର୍ଜ୍ଜନୋର୍ଦିନେ ଦିନେ । ଆତ୍ମା
 ତଂ ନୀୟମାନସ୍ୟ ବଦ୍ୟସ୍ତେବ ପଦେ ପଦେ ॥ ଅନିତ୍ୟଂ ଯୌବନଂ ରୂପଂ
 ଜୀବିତଂ ଦ୍ରବ୍ୟସଞ୍ଚୟଃ । ଐଶ୍ଵର୍ଯ୍ୟଂ ପ୍ରିୟସମ୍ବାସୋମହୋତ୍ତରଂ ନ
 ପଞ୍ଚିତଃ ॥ ଯଥା କାଷ୍ଠଞ୍ଚ କାଷ୍ଠଞ୍ଚ ସମେ ଯାତାଂ ମହୋଦଧୌ ।
 ସମେତ୍ୟ ଚ ବ୍ୟପେୟାତାଂ ତଦ୍ଭଞ୍ଜୁତସମାଗମଃ ॥ ଯଥା ହି ପଥକଃ
 କଞ୍ଚିଦ୍ଦ୍ଵିଷ୍ଟାୟାମାଶ୍ରିତ୍ୟ ତିଷ୍ଠତି । ବିଶ୍ରାମ୍ୟ ଚ ପୁନର୍ଗଚ୍ଛେତ୍ତଦ୍ଭଞ୍ଜୁ
 ତସମାଗମଃ ॥ ଅନ୍ୟଞ୍ଚ ॥ ପଞ୍ଚଭିର୍ନିର୍ମିତେ ଦେହେ ପଞ୍ଚତ୍ଵଞ୍ଚ ପୁନ
 ଗତେ । ଶ୍ଵାଂ ଶ୍ଵାଂ ଯୋନିମନୁପ୍ରାପ୍ତେ ତବ କା ପରିବେଦନା ॥ ❀

ଏବଂ ଜେନାମାଗନ୍ତୁ ବାହନ ମହିତପୃଥିବୀ ପତିରା କୋଥାସ୍ତ୍ର ଗିସ୍ତା
 ଛେନ ଯାହାରାଦିଗେର ବିଚ୍ଛେଦ ମାକ୍ଷିଣୀ ପୃଥିବୀ ଅନ୍ୟାପି ଆଛେ
 ନ । ଅପର ଶରୀର ଗ୍ରହଣ କରିଲେ ଅବଶ୍ୟାନଥେ ହସ୍ତ ଆର ମମ୍ପତିହି
 ବିପତ୍ତିର ଶ୍ଵାନ ଆର ଧନାଦିର ଉପାର୍ଜନହେ ବାସ୍ତ୍ର ଏହି ଶରୀର ଅନୁ
 କ୍ରମ କ୍ଷୀଣ ହେତେଛେ ହେବା ବୁଦ୍ଧା ଯାସ୍ତ୍ର ନା କିନ୍ତୁ ଜଳମଧ୍ୟାହ୍ନ ଆନ
 କଳନେର ନାସ୍ତ୍ର ବିଶୀର୍ଣ୍ଣ ହେୟା ନଥେ ହସ୍ତ ନୀୟମାନ ହସ୍ତବା ପଞ୍ଚର
 ମାଦେଃ ଛେଦନ ଯେମନ ନିକଟ ହସ୍ତ ଏହିକର୍ମ ସମ ଦିନେଂ ପ୍ରାଗିର

নৈকটা পাইতেছেন । যৌবন রূপ জীবন ধনসঞ্চয় ঐশ্বর্য
মিত্রের সহিত আলাপ এসকলই অস্থির এই হেতুক জ্ঞানবান
লোক তাহাতে মুগ্ধ হয় না । সমুদ্রেতে নানা দেশস্থ দুই
কাণ্ডেতে যেমন মিলন হয় মিলিয়া অন্য দেশে যায় সেই
পুকার পুষ্কিরদের সনাগম অপর পঞ্চভূত করণক নির্মিত
যে কলেবর সে পুনর্বীর পঞ্চভূ পাইলে পরে আপন কাল
গেতে লীন হয় তাহাতে শোক কি ।

Where are those sovereigns of the world, with all
their numerous armies and splendid equipage, of whose
departure the earth, even now, beareth testimony?


In the body is concealed its decay, prosperity is suc-
ceeded by adversity, and our meetings are soon follow-
ed by separations. Thus every thing in nature is pro-
duced with that which will destroy it!

Is not this body seen to waste, perceptibly, away? Is
not its gradual consumption plainly to be discovered,
as of water standing in a crude vessel?

Youth and beauty, riches and stores of worldly goods;
with the society of those we love, and even life itself,
are all of short duration! Then not the wise man therein
be fascinated.

As two planks floating on the surface of the mighty
receptacle of the waters, meet, and having met, are se-
parated for ever; so do beings in this life come together,
and presently are parted.

Upon the reduction of a body composed of five elements
to those five principles, and each of those elements to
its own womb, what cause is there for lamentation?

আঁতঃ কুরুত জন্তুঃ সম্বন্ধান মনসঃ প্রিয়ান । তাব
 ন্তাপি স্খলন্তে হৃদয়ে শোকশঙ্কবঃ ॥ নাচমত্যন্তস
 ম্বাসিলভ্যতে যেন কোনচিত্ । অপি স্তেন শরীরেণ কিমুতা
 ন্যেন কোনচিত ॥ অপি চ ॥ সংযো গোহি বিযোগস্য সংসূচ
 যতি সম্ভব । অনতিক্রমণীয়স্য জন্মমৃত্যোরিবাগমং ॥
 আপাতরমণীয়ানাং সংযোগানাং প্রিযৈঃ সহ । অপথ্যানা
 নিবান্নানাং পরিণামোতিদারুণঃ ॥ অপরচ্ছ ॥ ব্রজন্তিন
 নিবর্তন্তে শ্রোতাংসি সরিতাং যথা । আচুরাদাচ মর্ত্যানাং
 তথারায়হনী সदा ॥ সুখাস্বাদপরোচক্ষুঃ সংসারে সত্স
 মাগমঃ । সবিযোগাবসানত্বাৎ দুঃখানাং ধুরি যুজ্যতে ॥
 অতএব হি নেচ্ছন্তি সাধবঃ সত্সমাগমং । যদ্বিযোগাসি
 লুনস্য মনসোনাস্তি ভেষজং ॥
 

লোক পুণ্যাদি যত সম্বন্ধকে মনের পিয় করে সেই সকল
 সম্বন্ধকে পুণ্যাদির নাশ হইলে শোকরূপ শঙ্কু করিয়া পুতি
 দ্বা রাখে । এতাদৃশ অত্যন্ত পুণ্য যে কোন লোকের সহিত
 কর্তব্য নয় নিজ দেহের সহিত ও কর্তব্য নহে অন্যের সঙ্গে
 কি এবং অপরিহার্য জন্ম মৃত্যুর সমাগম যেমন অবশ্য
 হয় এই রূপ পুণ্য মিত্রাদির মিলন তাহরদিগের বিচ্ছেদ অব
 শ্য করে । পুণ্যের সহিত আপাততঃ সুখাবহযেমন তাহার
 শেষ কঠিন হয় যেমন জপথ্য অগ্নের পরিণাম দাক্ষণ অপন্ন
 নদী সকলের শ্রোত যে পুকার বহিয়া যায় পুনঃ করিয়া

॥ ह्रीं नमो भगवते ॥

আইসে না সেই পুকার রাত্রি ও দিন মনুষ্যের দিগের পর
মায়ু লইয়া যায় পুনর্বার আইসে না পৃথিবীতে সুখদায়ক
যে উত্তম লোকের সহিত মিলন সে পশ্চাৎ বিচ্ছেদহেতুক
দুঃখসমূহ দায়ক হয় এই নিমিত্তে উত্তম লোকেরা সাধু
লোকের সমাগম বাঞ্ছা করেনা যেহেতুক যাহার বিচ্ছেদ
কপ খড়্গেতে ছিন্ন যে চিত্ত তাহার ঔষধ নাই।

As many tender connexions as the animal man formeth for himself, so many thorns of sorrow are there ingrafted in his heart.

This is not a place for any one long to cohabit with another; nay, not even with his own body: then how can he expect it with another?

The dissolution of a body foretelleth a new birth: thus the coming of death, which is not to be passed over, is as the entrance into life.

The dissolution of the delightful connexions we form with those we love, is as dreadful as the total change to those who are become incurably blind.

But as brooks run on to join their rivers, and do not turn back; so the days and nights seize mortals' lives, and proceed eternally.

The society of good, which contributeth so much to the relish of happiness in this world, is joined in the yoke of troubles, because its end is separation.

Hence it is that the wise avoid the acquaintance of good men; for there is no remedy for the mind afflicted with the sorrow of separation.

সুকৃতান্যপি কৰ্ম্মাণি রাজভিঃ সগরাদিভিঃ । অথ নান্যেব কৰ্ম্মাণি তে চাপি প্রলয়ং গতাঃ ॥ সচ্ছিন্ত্য সচ্ছিন্ত্য তমুগ্রদণ্ডং মৃত্যুং মনুষ্যস্য বিচক্ষণস্য । বর্ষাম্বুসিক্তা ইব চৰ্ম্মবন্ধাঃ সৰ্ব্বপ্রযত্নাঃ শিথিলীভবন্তি ॥ যামেব রাত্রিं প্রযস্মাসুপৈতি গৰ্ভে নিবাসী নরবীরলোকঃ । ততঃ প্রমৃত্যুস্বলিতপ্রয়াসঃ স প্রত্যহং মৃত্যুসমীপমেতি ॥ অতঃ সংসারং বিচারয় শোকোऽয়মজ্ঞানস্য প্রপঞ্চা ॥ পশ্য অজ্ঞানং কারণং ন স্যাদ্বিযোগো যদি কারণং । শোকো দিনেষু গচ্ছত্সু বর্হিতামপয়াতি কিং ॥ তদব্রাহ্মানমনুসম্যেহি শোকচৰ্চ্চাং পরিহর ॥ যতঃ ॥ অকাণ্ডপাতজাতানামস্তাণাং সৰ্ম্মভেদনাং । গাढশোকপ্রহারাণামচিন্তেব মহৌষধী ॥ ততস্তদ্বচনং নিশ্শম্য প্রবুদ্ধ ইব কৌণ্ডিন্য উত্থায়া ব্রवीত্

সগর পুভূতি রাজারা সুকৃত কৰ্ম্ম করিয়াছিলেন অনন্তর সেই সকল ক্রিয়া এবং সেই সকল রাজারা ও বিনাশ পাইয়াছেন । বৃষ্টির জলেতে আর্দ্র হইয়া চৰ্ম্ম বন্ধন যজ্ঞপশিথিল হয় তজ্জপ সেই উগ্ৰদণ্ড যমকে স্মরণ করিয়া সাধু লোকেরদের পুয়াস সকলশিথিল হয় উত্তম লোকগর্ভেতে বাস করিয়া পুথন রাত্রিতে যে দুঃখ পায় সেই অবধি ঐ লোক আয়াসশালী হইয়া পুতিদিন মৃত্যুতুল্য দুঃখ সহকরে অতএব সংসার বিবেচনা কর এই শোক অজ্ঞানের কার্য্য । দেখ অজ্ঞান যদি শোকের হেতু না হয় বিচ্ছেদই কারণ হয়

তবে অধিক দিন গেলে পর শোক বাড়ুক যায় কেন সেই
হেতুক এখন আত্মানুসন্ধান কর শোক চর্চা পরিত্যাগ কর
যেহেতুক কাণ্ডপতন ব্যতিরেকে জাত অথচ নন্দ্যছেদি এত
দূশ যে নিবিড় শোকরূপ অস্ত্র পুহার তাহার ভাবনা না
করাই উত্তম ঔষধ। তদনন্তর তাহার বাক্য শুনিয়া সুপ্তো
থিতের ন্যায় কৌণ্ডিন্য উঠিয়া বলিলেন ।

Many noble and pious works were performed by Sagar and other ancient kings, but, alas! both they and their works are gone to decay.

When he hath considered, and reconsidered, that severe punishment death, all the endeavours of the wit of man become as lax as skins of leather sprinkled by the rain!

Every hero of the human race, from the first night of his residence in the womb, day by day approacheth death.

Then pay no attention to this world, continued the good pilgrim, for sorrow is a proof of ignorance. Observe,

If separation be the cause, and ignorance be not the cause, how is it, that after days have passed away, sorrow is changed into childishness?

Wherefore, compose thy troubled mind, and dispel all thought of grief; for they say,

Not to think is the grand remedy, when our children are untimely born, and against those weapons of deep sorrow, which penetrate the heart.

The afflicted Kowndinya, roused by these words, got up as it were from trance, and cried,—

তদল্লমিদানীং মৃচ্ছনরকবাসেন বনমেব গচ্ছামি ॥
 কপিলঃ পুনরাহ । বনেপি দোষাঃ প্রবলন্তি রাগিণাং মৃচ্ছ
 পিষ্ণেन्द्रিয়নিগ্রহস্থলপঃ । অকুস্তিতে কৰ্ম্মাণি যঃ প্রবৰ্ত্ততে
 নিষ্পত্তরাগস্য মৃচ্ছং তপোবনং ॥ যতঃ ॥ দুঃখিতোপি চরে
 দ্বৰ্ম্মং যত্র কুত্রাশ্রমে রতঃ । স্বপ্নঃ সৰ্বেষু ভূতেষু লিঙ্গং ধৰ্ম্ম
 কারণং ॥ উক্তম্ ॥ দৃশ্যর্থং ভোজনং যेषাং সন্তানার্থম্
 মৈথুনং । বাক্ সত্যবচনার্থায় দুর্গাণ্যপি তরন্তি তে ॥ তথা
 হি ॥ আত্মা নদী সন্ধ্যমপুণ্যতীৰ্থাঃ সত্যোদকা শীলত
 টাদ্যোৰ্ম্মিঃ । তত্রাভিষেকং কুরু পাণ্ডুপুত্র ন বারিণা শু
 দ্ধ্যতি চান্তরাত্মা ॥ বিশেষতম্ ॥ জন্মমৃত্যু জীরাভ্যাধি
 বেদনাভিরুপদ্রুতং । সংসারমিদমুত্থন্নমসারং ত্যজতঃ সুখং

এই নিমিত্তে এখন সংসাররূপ নরকে বাস করা বৃথা অল্প
 গ্যেতে গমন করিব কপিল পুনর্বার কহিলেন রাগালোকের
 দেব কাননেতে ও দোষ প্ৰভব হয় গেছেতে ও পঞ্চ ইন্দ্রিয়ের
 যে দমন করা সেই তপস্যা যে ব্যক্তি অনিন্দিত কার্য্যেতে
 প্ৰবৃত্ত হয় সেই বৈরাগি লোকের গৃহই তপোবন যেহেতুক
 সকল পুণিতে তুলাদুষ্ট লোক যে কোন আশ্রমেতে থাকি
 য়া দুঃখিত হইয়া ও ধৰ্ম্মাচরণ করে কেন না রক্তবস্ত্র ধারণা
 দিকপ চিহ্ন পুণ্যের জনকনহে । বিজ্ঞকর্তৃক তাহা কথিত
 আছে পুণ্যধারণের জন্যে যাহারদিগের ভোজন এবং অপ
 তোর কারণ জীসংসার এবং যাতার্থ্যের নিমিত্তে বাক্য তাহা

রা বিপৎ ও তরে তাহারপুমাণ কহিতেছেন আত্মা নদী স্ব-
রূপ ইন্দ্রিয় নিগূহ পুণ্য তীর্থ স্বরূপ শীল তট স্বরূপ দয়া তর-
ঙ্গ স্বরূপ হে যুধিষ্ঠির এতরূপ নদীতে অভিষেক কর অন্তঃ-
করণ কেবল জলেতে স্বচ্ছ হয় না বিশেষতঃ জন্ম মৃত্যু
জরা রোগ ব্যথা ভয় এই সকলেতে উপক্রম যে এই অসার
সংসার ইহাকে ত্যাগ যে করে তাহারি সুখ হয় ।

Since it be so, enough of dwelling in the hell of houses!
I will presently retire into the wilderness! Hold, my son,
replied the benevolent Kapila.

Those who yield to their passions will experience evils,
even in the wilderness. To restrain the five organs of
perception, even in a house, is doing penance. The hab-
itation of him whose passions are well regulated, and
who proceedeth but in such actions as are irreproach-
able, is as the wilderness of penitence.

For they say,

The afflicted even should practise the duties of religi-
on, whatever mode of life they may choose, and wher-
ever their abode may be; and our conduct should be
equal unto all beings, for distinctions are not authorised
by religion.

Again:

Those who eat but to support life, who cohabit but
for the sake of progeny, and who speak but to declare
the truth, surmount difficulties.

Again:

Suppose thyself a river and a holy pilgrimage in the
land of Bhārata, of which truth is the water, good ac-
tions the banks, and compassion the current; and then,
O son of Pāndu, wash thyself therein, for the inward
soul is not to be purified by common water.

And thou shouldst pay particular attention to this saying:

There is ease for him who quitteth this world, which is
totally destitute of good, and overwhelmed with birth,
death, old age, sickness, and sorrow.

॥ ଯତ: ॥ ଦୁ:ଖମେବାସ୍ତି ନ ସୁଖं ଯସ୍ମାନ୍ନଦୁପଲବ୍ଧ୍ୟତେ ।
 ଦୁ:ଖାର୍ତ୍ତସ୍ୟ ପ୍ରତୀକାରେ ସୁଖସଂଜ୍ଞା ବିଧିୟତେ ॥ କୌଣ୍ଡିନ୍ୟୋ
 ବ୍ରୁତେ ଏବମେବ । ତତୋଽହଂ ତେନ ଶୋକାକୂଳେନ ବ୍ରାହ୍ମଣେନ ଶମ୍ଭ୍ର:
 ଯଦଦ୍ୟାରମ୍ଭ୍ୟ ମଣ୍ଡୁକାନାଂ ବାହନଂ ଭବିଷ୍ୟତୀତି । କପିଳୋ
 ବ୍ରୁତେ ସମ୍ପ୍ରତ୍ୟୁପଦେଶାସହିଞ୍ଚୁର୍ଭବାନ୍ ଶୋକାବିଞ୍ଚିତେ ହୃଦୟଂ
 तथापि कार्यं शृणु । सङ्गः सर्वात्मना त्याज्यः स च त्यक्तुं
 न शक्यते । स सङ्गिः सह कर्त्तव्यः सतां सङ्गो हि भेषजं
 ॥ अन्यच्च ॥ कामः सर्वात्मना हेयः सचोद्घातुं न शक्यते ।
 स्वभार्यां प्रति कर्त्तव्यः सैव तस्य हि भेषजं ॥ एतच्छ्रुत्वा
 स कौण्डिन्यः कपिलोपदेशाभृतप्रशान्तशोकानलौघथा
 विधि दण्डग्रहणं कृतवान् अतो ब्राह्मणशपान्मण्डू
 कान् वोढुमत्र तिष्ठामि । *❀*❀*❀*❀❀

ସେହେତୁକ ଦୁଃଖଇଁ ଆଛି ସୁଖ ନାହିଁ ସେ ଗିଗିତେ ଦୁଃଖଇଁ ଅନୁ
 ଭୂତ ହଇଁତେଛେ ଦୁଃଖେର ଅନୁଭବ ସେନା କରା ତାହା କେହି ସୁଖ
 କରିয়া ବଳି । କୌଣ୍ଡିନ୍ୟା ବଳିତେଛେନ ଏହି ବଟେ ୨ । ତଦ
 ନନ୍ତର ସେହି ଶୋକାର୍ତ୍ତ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଆମାକେ ଅଭିଶାପ କରିଲେନ
 ସେ ଆଜି ଅବଧି ତୁମି ଭେକେଦେର ବାହନ ହଇବା । କପିଳ ବଳି
 ତେଛେନ ଈଦାନୀ ତୋମାର ଅନ୍ତଃକରଣ ଶୋକାବିଞ୍ଚିତ ହଇଯାଛେ
 ଅତଏବ ଆମାର ଉପଦେଶ ଗ୍ରହଣ କରିତେ ପାର ନାହିଁ तथापि
 बाह्य कर्त्तव्य ताहा ଶୁନ ସର୍ବପୁକାରେ ଆସକ୍ତି ଥାଗ କରିବେକ
 किञ्च ताहाକେ ଥାଗ କରିତେ ଶକ୍ତ ହୁଅ ନା ଅତଏବ साधूने

কের সঙ্গ করা উচিত যেহেতুক সতের সঙ্গই ঔষধ । অপর
অভিলাষ সর্বথা ত্যাগ করণোপযুক্ত যদি তাহাকে ত্যাগ ক
রিতে সমর্থ না হয় তবে নিজ পত্নীর পুতি করিবেক যেহে
তুক সেই তাহার ঔষধ । ইহা শুনিয়া সেই কৌণ্ডিন্য কপি
লের উপ দেশরূপ অনূতেতে নষ্ট শোকান্নি হইয়া শাস্ত্রানু
সারে সন্ন্যাস গৃহণ করিলেন । অতএব ভূদেবের অভিশাপ
প্ৰযুক্ত মণ্ডুকদিগকে বহিবার নিমিত্তে এ স্থানে আছি ।

Pain is a thing of certain existence, but not ease; whence it is observed, that the term ease is applied as a sort of remedy for one in pain.

To all this, continued the serpent, the afflicted father only replied,—‘Even so it is’ but presently after the poor Brāhman in the height of his sorrow denounced this curse against me, the author of his trouble,—that henceforward, I should be doomed to carry frogs about upon my back as a beast of burden! After which, Kapila said again —Your heart is still tormented with sorrow, and my instructions have been of no avail to you, but hear what ought to be done

Society should be avoided with all the efforts of the mind, but if it be not in one’s power to avoid it, acquaintance should be formed with the good alone, for the company of good men is the remedy.

Again.

The tender passion should be avoided with all the resistance of the mind, but if it be not possible to conquer it, it should be indulged towards a wife alone, for she is the proper remedy

Kowndinya having heard this, and being by the salutary counsel of Kapila quite cured of his affliction, took the staff according to the usual forms; and poor I, concluded the serpent, he here under the power of a Brāhman’s curse ready to carry any frog that shall choose to mount upon my back!

অনন্তরং তেন মণ্ডুকেন গত্বা মণ্ডুকনাথস্য জনপদনা
 ম্নেঃস্যে তত্ কথিতং ততোসাবাগত্য মণ্ডুকনাথস্য
 সর্পস্য পৃষ্ঠমারূढবান্ সচ সর্পস্য পৃষ্ঠে ঠত্বা চিত্রপদ
 ক্রমং বদ্যাম পরেদ্যস্থলিতুমসমর্থস্য মণ্ডুকনাথোঃস্বদত্
 কিমদ্য ভবান্ মন্দগতিঃ সর্পোব্রুতে দেব আহারবিরহাদ
 সমর্থোহস্মি।মণ্ডুকনাথোঃস্বদত্ অস্মদাজ্ঞয়া মণ্ডুকান্
 মদ্য ততোঃমহীতোঃস্য মহাপ্রসাদ ইত্যুক্তা ক্রমশো মণ্ডু
 কান্ ছাদিতবান্ অথ নির্মণ্ডুকং সরোবিলোক্য মণ্ডু
 কনাথোপি তেন ছাদিতঃ । অতোঃহং ব্রবীমি স্কন্ধেনাপি
 বহেচ্ছবুনিত্যাदि । দেব যাত্বিদানীং পুরাটশাখ্যান
 কথনং সর্বথা সম্ভেয়োঃস্য হিরণ্যগর্ভরাজা সম্ভীয
 তামিতি মে মতিঃ । রাজোবাচ কোঃস্যং ভবতোবিচারঃ

তাহার পর সেই ভেক গিয়া জনপদ নামে মণ্ডুকরাজের
 অগ্রেতে তাহা কহিল তদনন্তর ঐ মণ্ডুকনাথ আসিয়া সেই
 সর্পের পৃষ্ঠে আরোহণ করিল ঐ সর্প তাহাকে পৃষ্ঠেতে
 করিয়া বিচিত্র গতিতে ভ্রমণ করিতে লাগিল পরদিবস
 তাহাকে চলিতে অসক্ত দেখিয়া মণ্ডুকস্বামী বলিল অদ্য
 কেন তুমি গমন সমর্থ সর্প বলিতেছে হে মহারাজ অনাহার
 প্রযুক্ত অসমর্থ হইয়াছি ভেকরাজ কহিলেন আমার আত্মা
 তে মণ্ডুক ভোজন কর তদনন্তর আমি বড় অনুগৃহ পাই
 লাম ইহা কহিয়া অল্পে ভেকেরদিগকে খাইল তাহার

পর সে নির্মগ্ন কজলাশয় দেখিয়া মগ্ন ক রাজাকে ওখাই
ল। অতএব আমি বলি সুবোধ লোক নিজ কার্যের নিমি
ত্তে শত্রুকে ও স্কন্ধেতে করিয়া ইত্যাদি। হে মহারাজ এখন
ইতিহাস কখন যাউক ঐ হিরণ্যগর্ভ রাজা সর্বপুকারে সন্ধের
এই আশ্রয়স্থান। রাজা বলিলেন তোমার এ পরামর্শ কি।

The frog who had been attentive to this long story, upon hearing the last words of the serpent, went away to inform the chief of the pool of it, who soon after making his appearance, the serpent placed him upon his back and carried him about, keeping a gentle easy pace. The king of the frogs was so pleased with his ride, that he came again the next day; but upon finding the serpent unable to carry him, and asking him what was the cause of his weakness, the artful animal replied, that he was totally deprived of his strength for want of food. Upon this the frog ordered him to be fed, every day, with as many of his subjects as he might choose; and the serpent having, by degrees, eaten all the frogs which were to be found in the pond, at length devoured his benefactor. I repeat, therefore, said the crow,—*When a wise man &c.*

Let us have done with the repetition of old stories, observed the minister. In my opinion, said he, Hiranyagarbha is worthy of our alliance, and therefore I advise, that a treaty be formed with him. Sir, said the king, is this your opinion?

যতোজিতস্তাবদ্যমস্মাভিস্তুতোযদ্যস্মত্বেবচা বসতি
 তদাস্তাং নোচেদিমৃচ্ছতাং । অত্রান্তরে জম্বুদ্বীপাদাগত্য
 শুকনোক্তং দেবসিংহলদ্বীপস্য সারসো রাজা সंप্রতি জম্বু
 দ্বীপমাক্রম্যাবতিষ্ঠতে । রাজা সমম্ভ্রমং ব্রূতে কিং কিং শুকঃ
 পূর্বোক্তং কথয়তি মৃধ্নঃ স্বাগতমুবাচ সাধুরেচক্রবাক
 মদ্বিন সর্ব্বজ্ঞ সাধু সাধু । রাজা সক্রোপমা হ আস্তাং
 তাবদ্যং গত্বা তমেব সমূলমুন্মূলয়ামি । দূরদর্শো বিহ
 স্যাহ । ন শরন্মেঘবৎ কার্য্যং বৃথৈব ঘনগর্জিতং । পরস্যার্থ
 মনর্থম্বা প্রকাশয়তি নো মহান ॥ অপরঞ্চ । একদা ন
 বিমৃচ্ছীয়াৎ বজ্রবাজাতিঘাতিনঃ । সদর্পোপ্যুরংগঃ কীটৈ
 বজ্রভিনার্শ্যতে ধ্রুবং ॥ দেব কিমিতি বিনা সম্ভানং গমন
 মস্তু যতস্তদাস্মত্বস্বাত্ প্রকোপোঽনেন কর্ত্তব্যঃ । *

যেহেতুক আগরা উহাকে জয় করিয়াছি সেই হেতুক
 যদ্যপি আমাদেৱ অনুগত হইয়া বসতি করে তবে থাকক
 নতুবা যুদ্ধ করুক । ইতোমধ্যে জম্বু দ্বীপহইতে আসিয়া শুক
 কহিল হে রাজাধিরাজ সিংহলদ্বীপের সারস রাজা সম্প্র
 তি জম্বুদ্বীপকে আক্রমণ করিয়া আছে । রাজা ব্যস্ত হইয়া
 বলিতেছে কি কি শুক পুনর্বার তাহা কহিতেছে । গৃধ্র
 অন্তঃকরণে কহিতেছেন সাধু রে চক্রবাক অমাত্য সর্ব্বজ্ঞ
 সাধু । নৃপতি শরোষ হইয়া কহিলেন এই হিরণ্যগর্ভ
 থাকুক সম্প্রতি যাঁইয়া তাহারেই মূলের সহিত উন্মূলন
 করি । দূরদর্শী হাস্য করিয়া কহিলেন শরৎ কালীন মেঘে

রন্যায় নিরর্থগর্জন করা উচিত নহে উত্তম লোক পরের কার্যকে কিম্বা অকার্যকে পুকাশ করে না । অপর রাজা এক কালেতে অনেক বিপক্ষের সহিত সংগ্রাম করিবে না কেন না বলবান সর্প ও বহুতর কীটকর্ক অবশ্য নষ্ট হয় হে ভূপাল মিলন ব্যতিরেকে কি গমন আছে যেহেতুক আমারদের পশ্চাৎ ঐ হিরণ্যগর্ভ ক্রোধ করিবেক ।

He has been defeated by us, and therefore he is at liberty to remain where he is, provided he consent to be our vassal; otherwise I command him to be attac'ed! Just as the king said this, the parrot came in from Jambu-dwipa, and informed his master the peacock, that the Sārasa, who was king of Singhala-dwipa, had lately invaded his country, and was still there What is it thou sayest? cried the king in great confusion. The parrot repeated the news just before mentioned. Well done, minister Chakravāka! said the vulture within himself, well done! Whilst the peacock in great anger cried,—Let him stay there till I come, and I will extirpate him with his whole generation! To which the minister *Far-see* smiling, replied,

There is no necessity for imitating an autumnal cloud! The thunder of the heavens our chief displayeth, whether on some account, or no account, is of equal inefficacy.

They say,

A king should not dispute with too many enemies at a time; for even the proud serpent is inevitably destroyed by large swarms of wasps.

Are we then, Sir, continued the minister, to march back without concluding a peace? If we do, said he, I think Hiranya-garbha will assail our rear.

অপরঞ্চ । যোঽর্থতত্ত্বমবিজ্ঞায় ক্রোধস্যৈব বশং গতঃ । স
 তথা তপ্যতে মূढোব্রাহ্মণেনকুলাদ্যথা ॥ রাজাহ কথমে
 ততাদূরদর্শী কথয়তি অস্থ্যুজ্জয়িন্যাং মাধবো নাম বি
 প্রসস্য ব্রাহ্মণী প্রসূতা বালাপত্যস্য রক্তার্থং ব্রাহ্মণম
 বস্থাপ্য স্নাতুং গতা অথ ব্রাহ্মণায় রাজঃ পার্বণশ্রাদ্ধং
 দাতুমাচ্ছানমাগতং তচ্ছুত্বা ব্রাহ্মণঃ সহজদারিদ্রাদচি
 ন্তয়ত্ যদি সত্বরং ন গচ্ছামি তদান্যঃ কিস্তি শ্রুত্বা
 শ্রাদ্ধং গ্রহীষ্যতি । যতঃ । আদানস্য প্রদানস্য কৰ্ত্ত
 ব্যস্য চ কৰ্ম্মণঃ । চিপ্রমক্রিয়মাণস্য কালঃ পিবতি
 তদ্রসং ॥ কিন্তু বালকস্তাচ্চ রক্তকোনাস্তি তত্ কিঙ্ক
 রামি যাতে চিরকালপালিতমিসং নকুলং পুত্রনির্বিশেষং
 বালকরক্তায়াং অবস্থাপ্য গচ্ছামি তথা কৃত্বা গতঃ ।

অপর যে ব্যক্তি যথার্থ নিকপণ না করিয়া কোপের
 বশভূত হয় সে লোক ঐ কপ উত্তপ্ত হয় যেমন গূর্থবুদ্ধি
 নহন ইহাতে ব্যাঘ্রন ইহিয়াছিল । রাজা কহিলেন এ কি
 পুকার দূরদর্শী কহিতেছে । উজ্জয়িনীতে মাধবনাম এক
 বুদ্ধি থাকেন তাহার বুদ্ধি শিশুসন্তানের রক্ষার কারণ
 দ্বিজকে রাখিয়া স্নান করিতে গেলেন । অনন্তর বুদ্ধিকে
 রাজার পার্বণ শ্রাদ্ধে ভোজন করিবার নিমিত্তে আহ্বান
 আইল তাহা শুনিয়া বুদ্ধি দারিদ্র্য স্বভাব প্রযুক্ত ভাবনা
 করিলেন যদি শীঘ্র না যাই তবে অন্য কেহ শুনিয়া শ্রাদ্ধীয়

দুবা গুহণ করিবেক যেহেতুক ধনাদির গুহণ ও ধনাদির হান ও অন্য২ করণোপযুক্ত কর্ম এই সকলকে যদি শীঘ্র না করে তবে কাল তাহারদিগের রস পান করেন এ স্থানে বালকের রক্ষক নাই এই নিমিত্তে কি করি যাউক এখন ন জনকে পুত্র তুল্য করিয়া বহুকাল পালন করিয়াছি অতএব শিশুরক্ষণেতে স্থাপন করিয়া যাই তাহা করিয়া গেলেন ।

He who falleth into the power of anger before he hath made himself acquainted with another's merits, may have cause to be sorry for it; like the foolish Brahman after he had killed his weasel

How was that? demanded the king; and his minister Far-see related the following story:

FABLE XIII.

AT Ujjayini there lived a Brāhman whose name was Mādhava His wife having been lately brought to bed, left her husband in charge of the infant, whilst she went to perform her ablutions As soon as she was gone, the king sent for the Brāhman to perform the ceremonies of the *parvana shraddha* (or rites) to the manes of his ancestors The Brāhman, on account of his poverty, began to reflect in this manner: If I don't go directly, said she, some one else, having heard of it, will go and take away my share of the good things:—They say,

Time drinketh up the essence of every work which should be done, and is not done quickly, whether it be an act of receiving, or an act of giving away.

But, continued he, I have no one to take care of the child, then what am I to do, unless, indeed, I place this my long-beloved weasel there, who is as dear to me as the child itself, and then venture to go? In short, he did so, and went his way to the king's feast.

৭ে ভাবনা করিয়া দুঃখিত হইয়া অতিশয় বিষন্নতা পাইলেন । এই নিমিত্তে আমি বলি যে ব্যক্তি যথার্থ নিকৃপণ না করিয়া কোপেরিবশাভূত হয় ইত্যাদি । অপর কাম ও ক্রোধ ও মোহ ও লোভ ও মান ও মদ এই ছয় বর্গকে ত্যাগ করিবেক ইহারদিগকে ত্যাগ করিলে রাজা সুখী হয় । রাজা কহিলেন হে মন্ত্রী তোমার এই স্থির অমাত্য বলিতেছে এই পুকারই ।

It happened that soon after the Brāhman left the house, as the weasel was passing near the child, he saw a black serpent gliding towards it, which he killed, and partly devoured; and when he saw his master returning, the affectionate little animal ran to meet him, with his mouth and legs all covered with blood; and he rolled himself upon the ground at the Brāhman's feet in a very extraordinary manner; but the good man seeing him in such a condition, and hastily concluding that he had murdered his child, without further enquiry, put the poor weasel to death. In short, when the Brāhman went towards his child, and found it alive and well, and, at the same time, discovered the mangled remains of the black serpent upon the floor near it, the proofs of his weasel's merit and fidelity were so evident, that he suffered the most bitter pangs of sorrow and remorse. I repeat therefore, continued the minister,—*He who falleth into the power of anger, &c.* They say,

A man should avoid these six evils: lust, anger avarice, pleasure, pride, and rashness; for, free of these, he may be happy.

The peacock king replied,—So, minister, this is thy determination, is it? Even so! said he.

যতঃ । স্মৃতিশ্চ পরমার্থেষু বিতর্কো জ্ঞাননিশ্চয়ঃ ।
 দৃঢ়তা মন্ত্রগুণিষ্য মন্নিহঃ পরমোগুণঃ ॥ তথা চ ।
 সহস্রাবিদধীত ন ক্রিয়ামবिवেকঃ পরমাপদাং পদং ।
 বৃণুতে হি বিমৃশ্য কারিণং গুণলুম্বাঃ স্বয়মেব
 সম্পদঃ ॥ তদেব যদিদানীমস্মদ্বচনং ক্রিয়তে তদা
 সম্ভায গম্যতাং । যতঃ । যদ্যপ্যুপায়াশ্চত্বারোনির্দিষ্টাঃ
 সাধ্যসাধনে । সংখ্যামাত্রং ফলন্তেষাং সিদ্ধিঃসান্নি যব
 স্থিতা ॥ রাজাহ কথমেবং সম্ভবতি । মন্ত্রী ব্রূতে দেব সত্বরং
 ভবিষ্যতি । যতঃ । মৃদুটবৎ সুখমেয়োদুঃসম্ভানশ্চ দুর্জ
 নোভবতি । সুজনস্তু কনকঘটবৎ দুর্ভেদ্যশ্চাশু সম্ভেদ্যঃ ॥
 অপরশ্চ । অজ্ঞঃ সুখমারাধ্যঃ সুখতরমারাধ্যতে বিশেষ
 যজ্ঞঃ । জ্ঞানলুম্বুর্বিদগ্ধং ব্রহ্মাপি তং নরং ন রঞ্জয়তি ॥

যেহেতুক উত্তম কার্যাবিশয়েতে আরণ ও বিতর্ক ও অব
 ধারণ ও দৃঢ়তা অর্থাৎ কর্তব্য। কর্তব্যের নিশ্চয়ও গোপনে
 মন্ত্রণ। এই সকল সচিবের বড় গুণ। তাহা জান অকস্মাৎ কার্য
 করিবে না। কেমনা বিবেচনারাহিতা অত্যন্ত বিপদের স্থান
 আর পরামর্শপূর্বক কর্ম কর্তাকে গুণলোভি সম্পত্তির। আপ
 নারাই পান এইহেতুক হে ভূপাল যদ্যপি এখন আমার কথা
 কর তবে মেল করিয়া চল যেহেতুক কার্যসাধনেতে যদ্যপি
 চারি উপায়কথিত আছে তথাপি তাহারদের ফল গণনামাত্র
 কিন্তু সমতাতেই সিদ্ধি ব্যবস্থিত হইয়াছে। রাজা কহিলেন

কি পুকার একপ সম্ভব হয় সচিব বলিতেছে হে নৃপতে ঝটি
তি হইবে যেহেতুক দুষ্ট ব্যক্তি নৃভাণ্ডের ন্যায় আয়াসেতে
ভেদ্য হয় আর দুঃখেতে সঙ্কেয় হয় সাধু লোক স্বর্ণপাত্রের
ন্যায় আয়াসেতে ভেদ্য হয় ত্বরিতে সঙ্কেয় হয় । অপর
অজ্ঞানী লোক সুখেতে উপাস্য হয় বিশেষজ্ঞ লোক অতি
শয় সুখেতে আরাধ্য হয় যাহার বুদ্ধির লেশ ও নাই সে
মনুষ্যকে বুদ্ধা ও অনুরক্ত করিতে পারেন না ।

The best qualities for a minister are justice, thorough investigation, wise determination, firmness, and secrecy.
Yet more:

Rashness in any undertaking should not be permitted; for the want of due investigation is the foundation of the greatest misfortunes. That success which merit is deserving of, attendeth of itself upon him who acteth with due deliberation.

Then, if what I say is worthy of attention, peace should be concluded, for,

Although four means are mentioned for the accomplishment of the work, the result of the whole number is uniting in peace.

But, said the king, how may that be presently effected? Please your highness, replied the minister, it shall be brought about speedily. They say,

A bad subject is like an earthen vessel, easily to be broken, and hard to be united; and a good one like a vessel of gold, not easily to be broken, and not difficult to be reunited.

A fool enjoys pleasure; but he who distinguishes with judgment, enjoys more delight. Even Brahmā cannot controul a man who has not even a particle of divine knowledge.

বিশেষতচ্চাযং ধর্মজ্ঞো রাজা সর্বজ্ঞো মন্ত্রী চ । জ্ঞাতমে
 তন্মযা পূর্বং মেঘবর্ণবচনাত্তত্ কৃতকার্যসন্দর্শনাচ্চ ।
 যতঃ । কর্ম্মানুমেযাঃ সর্বত্র পরোচ্চে গুণবৃত্তয়ঃ ।
 তস্মাত্ পরোচ্চবৃত্তানাম্ ফলৈঃ কর্ম্মানুভাব্যতে ॥ রাজাহ
 অলমুত্তরোত্তরেণ যথাভিপ্রেতমনুধীযতাং এতন্মন্ত্র
 যিত্বা মৃধোমহামন্ত্রী তত্র যথার্হং কৰ্ত্তব্যমিত্যুক্তা দুর্গা
 ম্যন্তরং চলিতঃ ততঃ প্রলিধিবকেনাগত্য রাজোহিরণ্য
 গৰ্ভস্থ নিবেদিতং দেব সন্धि কৰ্ত্তুং মহামন্ত্রী মৃধোঽস্মক
 সমাপমাগচ্ছত্ । রাজহংসোব্রতে সন্धि ন পুনঃ সন্धिনা
 কেতচ্চিদভ্রাগন্তব্যং ॥ সর্বজ্ঞো বিহত্যা হ দেব ন শঙ্কাস্যদ
 মেতৎ যতোসৌ মহাশযোদূরদর্শী অথ বা স্থিতিরিখং
 মন্দমতীনাং কদাচিত্ শঙ্কৈব ন ক্রিয়তে ॥ তথা হি ॥

বিশেষতঃ এই রাজা । ধর্মীঃ আর মন্ত্রী সর্বজ্ঞ ।
 রাজা বলিলেন মেঘবর্ণের বাক্যদ্বারা আর মেঘবর্ণকর্তৃক
 কৃত কার্য্য দ্বারা আমি ইহা জানিয়াছি যেহেতুক সর্বত্র
 পরোচ্চতে কর্ম্মের দ্বারা গুণ অনুমেয় হয় সেইহেতুক
 ফলের দ্বারা কর্ম্মের অনুভব কর্তব্য । রাজা কহিলেন
 উত্তর পুত্ৰোত্তর ব্যর্থ যাহা অভিলষিত তাহা কর এই মন্ত্রণা
 করিয়া মহামন্ত্রী গৃধ্র সেখানে যাহা করণোপযুক্ত হয়
 তাহা করিব ইহা কহিয়া দুর্গমধ্যে গেলেন তাহার পর
 পুণিধি বক আসিয়া হিরণ্যগর্ভ রাজাকে নিবেদন করিল

হে ভূপাল সন্ধি করিবার কারণ মহানন্দী গুপ্তু আশ্রিতদের
সম্মিধানে আসিয়াছে। রাজহংস বলিতেছেন পুনর্বার
সন্ধান করিতে কে আসিয়াছে সর্বজ্ঞ হাস্য করিয়া কহিলেন
হে মহারাজ এ শঙ্কাম্পদ নহে যেহেতুক ইনি দূরদর্শী মহা
শয় কিম্বা নিবুদ্ধিরদের এই কপে অবস্থান কদাপি শঙ্কাই
করে না তাহা জান।

Especially, continued the minister, as both the king and his minister are exceedingly well informed of things in general: for this I knew from the beginning, as well from the reports of the crow Cloud-colour, as from a single review of their conduct

The virtue and conduct of an absent person are, on all occasions, to be estimated by his works; wherefore one should weigh the actions of those who are out of sight by the effect.

Let us have done with these answers and replies, cried the king, and let that which is most preferable be pursued. At length the minister, agreeable to his own counsel, went forth and waited near the castle, whilst a messenger ran to the royal goose Hiranya-garbha, and informed him, that the minister of the peacock king was coming to treat for peace; but the former, still suspecting something, said to his own minister, Know-all, —This again must be some spy or other coming to impose upon us! Please your highness, replied Know-all, laughing as he spoke, there is great room for suspicion, for this same noble person who is coming, is one who can see a great way; else suspicion, which is the proof of a weak mind, should never be indulged.

সরসি বজ্রশস্ত্রাচ্ছায়ে স্ফুটান্ পরিবচ্ছিতঃ কুমুদবি
 টপান্বেষী হংসোনিশাসু বিচক্ষণঃ । ন দশতি পুনস্তারা
 শঙ্কী দিবাপি সিতোত্পলং কুহকচকিতোলোকঃ সত্যে
 পায়মপেक्षতে ॥ দুর্জ্জনদ্বিতমনসঃ সুজনেষ্বপি নাস্তি
 বিশ্বাসঃ । বালঃ পায়সদগ্ধোদধ্যপি ফুট্কৃতং ভুঙেক্ত ॥
 তদেব যথাশক্তি তত্পূজার্থং রত্নোপহারাदিসামগ্রী
 সুসজ্জা ক্রিয়তাং তথানুষ্ঠিতে সতি স মৃগধামত্নী দুর্গদ্বা
 রাচ্চক্রবাकेण উপগম্য সৎকৃত্যানীয রাজদর্শনং কারি
 তোদত্তাসনে চোপবিষ্টঃ । চক্রবাक उवाच युष्मदायत्तं
 सर्वं स्वेच्छোपभुज्यतामिदं राज्यं । রাজহংসোব্রূতে एव
 मेव । दूरदर्शी कथयति एवमेवैतत् किन्त्विदानीं वज्र
 प्रपञ्चवचनं निम्प्रयोजनं ॥ *❀*❀*❀*❀❀

বুদ্ধিমান হংস অনুদ নগালের অন্বেষণ করিতে২ রাতি
 কালে সরোবরে অনেক নক্ষত্রের পুতিবিশ্ব দর্শনপুযুক্ত
 বঞ্চিত হইয়া দিবাভাগেতে ও তারা শঙ্কাবিশিষ্টে হইয়া
 গুরুপদ্যুকে ও দংশন করে না কেননা কাপট্য বঞ্চিত
 লোক যথার্থেতে ও বিপদ জ্ঞান করে । দুষ্টলোককর্তৃক দূষি
 তাভুক্তকরণ নোকেস সূজনেতে পুতায় নাই পরমান্নেতে
 দধি যে বালক সে দধিকে ও কুঁদিয়া ভোজন করে সেইহে
 তুক হে মহারাজ সামর্থ্যানুসারে তাহার সম্মানের নিমিত্তে
 রত্ন উপহার পুত্তি সামগ্রী পুষ্পত কখন । তাহা করিলে

পরে চক্রবাক গৃধ্রসন্নিধানে গিয়া সম্মানপূর্বক গড়ের দ্বার
 হইতে আনিয়া রাজার সাক্ষাৎ করাইলেন পরে দস্তাসনে
 গৃধ্র বসিলেন। চক্রবাক বলিল এসমস্তই তোমাদের আয়
 ত্ত্ব আপন ইচ্ছাতে এই রাজ্য উপভোগ কর রাজহংস বলি
 তেছেন এই পুকারই বটে দূরদর্শী কহিতেছে ইহা এই বটে
 কিন্তু সম্প্রতি অনেক পুণঞ্চ বাক্য পুয়োজন নাই ॥

A wary goose having been once deceived by an enemy, whilst sitting in a very thick shade, in a lake, looking after the lotus plant, no more regardeth the cooling flower which is distressed by the appearance of day, and afraid of the stars Thus it is with the people of this world, having been once deceived, they suspect deceit in truth itself!

Then, continued the minister, let a present, consisting of jewels, rich dresses, and the like, the best we can afford, be provided for him as a compliment. This being done accordingly, the minister, Know-all, went out and received the vulture, Far-see, in front of the castle, with every mark of respect; and presently, conducted him into the presence of the royal goose, where he was permitted to be seated in a chair of state. Great minister, said Know-all, addressing himself to the vulture, now dispose of these your dominions according to your wish! Even so! added the royal goose. So be it! replied the vulture, but, said he, at present much negotiation is unnecessary; for they say,

যতঃ। লুপ্তমর্থেন গৃহীয়াৎ স্তম্ভমঞ্জলিকৰ্ম্মণা
মূলং কন্ডোঁনুত্তেন যাযাতথ্যেন পণ্ডিতং ॥ অন্যচ্চ ।
সঙ্গায়েন হরেন্মিত্রং সম্ভমেণ তু বাম্ভবান। স্ত্রীমৃত্যৌ দান
মানাভ্যাং দাত্বিণ্যেনেতরাঙ্গনান্ ॥ তদিদানীং সন্ধ্যা
গম্যতাং মহাপ্রতাপশ্চিববর্ণোঁরাজা । চক্রবাকোব্রূত
যথাসন্ধ্যায কাৰ্য্যং তদপ্যুচ্যতাং । রাজহংসোব্রূতেকতি
প্রকারাঃ সন্ধ্যীনাং সম্ভবন্তি । গৃহোব্রূতেকথয়ামি
শ্রুয়তাং । বলীয়সাভিযুক্তস্তু নৃপোনান্যপ্রতিক্রিয়ঃ ।
আপন্নঃ সন্নিম্নিচ্ছেৎ কুর্ঘাণঃ কালযাপনং ॥ কপাল
উপহারস্ব সন্তানঃ সঙ্গতস্তথা । উপন্যাসঃ প্রতীকারঃ
সংযোগঃ পুরুষান্তরঃ ॥ অদৃষ্টনরআদিষ্ট আত্মাদিষ্ট
উপগ্রহঃ । পরিক্রমস্তথোদ্বগ্নস্তথা চ পরমূষণঃ ॥ ❀

যেহেতুক লোভী লোককে ধনদ্বারা দাস্তিক জনকে অঞ্জলি
করণের দ্বারা মূৰ্খকে ছনের দ্বারা পণ্ডিতকে যাথার্থ্যের দ্বারা
বশকরিবেক । অপর মিত্রকে পুঁতিতে বান্ধবকে সন্মানিতে
পুঁত্রে দান ও সন্মানিতে ইতর লোককে সারল্যেতে বশ
করিবেক সেই নিমিত্তে মেল করিয়া যাও কেননা চিত্রবণ
রাজা মহাবলপরাক্রম । চক্রবাক বলিতেছে যে কপাল
নকর্ভব্য তাহা কহ । রাজহংস বলিতেছেন সন্ধি কত পু
কার হয় গুঁধু কহিতেছেন কহি শুনুন বলবান কৰ্ত্তৃক অভি
যুক্ত রাজা পুঁতীকারান্তরে অসমর্থ হইলে বিপদগুস্ত হইয়া

काल क्षेपण करत सद्धि करिते चेष्टा करे कपाल ओ उपहार ओ सन्तान ओ सङ्गत ओ उपन्यास ओ पुतीकार ओ संयोग ओ पुरुषांतर ओ अदृष्टनर ओ आदिष्ट ओ आत्मादिष्ट ओ उपगुरु ओ परिक्रय ओ उच्छ्रय ओ परतूषण ओ ।

One should receive the covetous with gifts, the proud with joined hands, and the like tokens of submission, the ignorant with passages of poetry, and the wise and learned with whatever is suitable to their character.

Again

A friend should be received with sincerity, relations with respect, women with gifts and compliments, and others with whatever is proper.

Then let peace be presently concluded, that the most illustrious king Chitra-varna may depart, added the vulture Inform us, said the minister Know-all, how peace is to be made. How many species of connexions and alliances are there? demanded the king. I am about to tell you, said the vulture, so please to attend.

When a king hath been overcome by one stronger than himself, no further opposition should be made, and the unfortunate party should sue for peace with all possible expedition.

Those who are acquainted with the nature of forming connexions and alliances, declare, that there are sixteen species, thus denominated.

Kapāla,	Adṛiṣṭta-nara,
Upahāra,	Adiṣṭta,
Santāna	Atmā-diṣṭta,
Sang-gata,	Upagraha,
Upaṇyāsa,	Paṇikraya,
Pratikāra,	Uch-channa,
Sang-yōga,	Paṇabhūshana,
Purushāntara,	Skandhōpanēya.

স্বামীপনেয়ঃ সম্বিশ্ব ষোড়শৈতে প্রকীৰ্ত্তিতাঃ । ইতি ষোড়
শক প্রাক্তঃ সম্বিঃ সম্বিবিচক্ষণাঃ ॥ কপালসম্বির্বিচক্ষণঃ
কেবলং সমসম্বিতঃ । সম্প্রদানাদ্ভবতি য উপহারঃ স
উচ্যতে ॥ সন্তানসম্বির্বিজ্ঞেয়োদারিকাদানপূৰ্বকঃ । স
দ্বিস্তু সঙ্গতঃ সম্বিমৈত্রীপূৰ্ব উদাহৃতঃ ॥ যাবদায়ুঃ প্রমাণ
স্তু সমানার্থপ্রয়োজনং । সম্যক্তৌ বা বিপক্তৌ বা কারণে
র্থান ভিত্তিতে ॥ সঙ্গতঃ সম্বিরেবাযং প্রকৃষ্টত্বাৎ সুবর্ণবৎ ।
তথান্যৈঃ সম্বিকুশলৈঃ কাঞ্চনঃ স উদাহৃতঃ ॥ দ্রব্যাত্মা
কার্য্যসিদ্ধিন্তু সমুদ্রিষ্য ক্রিয়েত যঃ । স উপন্যাসকুশলৈ
রূপন্যাস উদাহৃতঃ ॥ ময়াস্যোপকৃতং পূৰ্ব্বে সমাপ্যেষ
করিষ্যতি ॥ ইতি যঃ ক্রিয়তে সম্বিঃ প্রতীকারঃ স উচ্যতে ॥

স্বামীপনেয় এই ষোল পুকার সন্ধি হয় সন্ধি পণ্ডি
তেরা এই ষোড়শ পুকার সন্ধি কহেন কেবল সমতাতে
যে মিলন হয় তাহাকে কপাল সন্ধি করিয়া জানিবা
ধনাদি দ্বারা যে মেল হয় তাহাকে উপহার করিয়া বলি
দাসী বেশাদি দান দ্বারা যে মেল সে সন্তান সন্ধি । মিত্রতা
পূৰ্বক যে সন্ধি তাহাকে পণ্ডিতেরা সঙ্গত সন্ধি করিয়া বলেন
যাবজ্জীবনপর্য্যন্ত উভয়েরি এক বিষয় এক পুয়োজন
সম্পত্তিতেই বা বিপত্তিতেই বা কোনহ কারণ পুযুক্ত
ভিন্ন হয় না এই সঙ্গত সন্ধি উত্তমতাহেতুক সুবর্ণের ন্যায়
অতএব সন্ধিজ্ঞ নোকেরা তাহাকে কাঞ্চন সন্ধি করিয়া

বলেন। ধন ও নিজকার্য্য নিস্পত্তিকে উদ্দেশ করিয়া যে মেল করে তাহাকে উপন্যাসকুশলেন্না উপন্যাস করিয়া বলেন। আনি পূর্বে ইহার উপকার করিয়াছি আমারো এ লোক করিবেক এই মেলকে পুতীকার করিয়া বলি।

The Kapāla union is understood to be that where the parties simply form a connexion upon an equal footing. The Upahāra is when there is a gift from one of the parties.

The Santāna union is conceived to be that in forming which one of the parties delivereth up his family as a preliminary. The Sang-gata alliance is declared to be that which is formed with worthy men upon the foundation of friendship,

Which is not to be broken by any accidents, whose purposes are the same in prosperity and adversity, and the measure of whose duration is the length of life.

This Sang-gata union, because of its superior excellence, may be compared to gold; and by others, who are acquainted with the doctrine of forming connexions, it is called *the golden union*.

The upanyāsa alliance is declared, by those who are acquainted with that mode of uniting, to be that which is concluded upon terms pointed out by one of the parties.

The alliance which is formed upon this principle, *I have formerly rendered him assistance, he shall now do so to me*, is denominated the Pratikāra mode.

অন্যত্র উপকারং করোম্যস্য সমাখ্যেষ করিম্যতি । অথ
 চাপি প্রতীকারোরামসুগ্রীবযোরিব ॥ একার্থাং সম্যগু
 দিষ্য ক্রিয়াং যত্র হি গচ্ছতি । সমং হি ততঃপ্রমাণেন স
 চ সংযোগ উচ্যতে ॥ আবযোর্থ্যধমুদ্বৈকু মদর্থঃ সাধ্যতা
 মिति । যস্মিন্ পণ্যস্তু ক্রিয়তে স সমিধিঃ পুরুষান্তরঃ ॥
 ত্বয়ৈকেন মদীযোঽর্থঃ সম্প্রসাধ্যস্বসাবিতি । যত্র শত্রুঃ পণ্য
 কুর্যাৎ সোদৃষ্টপুরুষঃ স্মৃতঃ ॥ যত্র ভূম্যেকদেশেন পণ্যেন রিপু
 বার্জিতঃ । সমীযতে সমিধির্বিদ্বিঃ সচাদিষ্টউদাচ্ছতঃ ॥
 স্বসৈন্যেন তু সম্ভানমাভ্যাদিষ্টউদাচ্ছতঃ । ক্রিয়তে প্রাণ
 রক্ষার্থং সর্বদানাদুপগ্রহঃ ॥ কোষাংশেনাঙ্ককোষেণ সর্বকো
 ষেণ বা পুনঃ শিষ্টস্য প্রতিরক্ষার্থং পরিক্রয়উদাচ্ছতঃ ॥

আর আমি ইহার উপকার করিতেছি এও আমার করিবে
 এই যে প্রতীকার শ্রীরাম সুগ্রীবের ন্যায় । যেখানে এক কার্য
 কে উদ্দেশ্য করিয়া তার পুণ্যের সহিত গমন করে তাহাকে
 সংযোগ করিয়া বলি । তোমারও আমার সহিত সেনাপতি
 দ্বারা আমার কার্য নিষ্পন্ন কর ইহা कहিয়া বাহাতে গণ করে
 সেই সন্ধি পুরুষান্তর সন্ধিনামক হয় কেবল তোমার কর্তৃক
 আমার এইঅর্থ সুসাধ্য হইবে একপ যে স্থলে শত্রু গণ করে
 তাহাকে অদৃষ্ট পুরুষ করিয়া বলেন । যেখানে শত্রু কর্তৃক
 গুরু হইয়া ভূম্যেকদেশ পণ্যেতে যে মেল হয় তাহাকে
 সন্ধি সন্ধি বলি । আপন সৈন্যের সহিত বিপক্ষের

সাথে যে মেল করে তাহাকে আত্মাদিষ্ট করিয়া বলি জীবন রক্ষার কারণ সর্বস্বদানেতে যে মিলন করে তাহাকে উপগৃহ করিয়া বলি । অবশিষ্ট পুষ্টি রক্ষার নিমিত্তে কোষস্থ কিয়ৎ পরিমিত স্বর্ণরূপোর দানদ্বারা কিম্বা অর্দ্ধ স্বর্ণরূপ্য দুব্য দানদ্বারা কিম্বা সমস্ত সুবর্ণ রূপ্য দানদ্বারা যে মেল করে তাহাকে পরিক্রয় করিয়া বলি ।

This also is called *Pratikāra*: *I will render him assistance, and he shall do the same to me.* Such was the alliance formed between Rāma and Sugriva.

It having been made to appear, that an expedition hath but one object, and upon these grounds a treaty is entered upon with united authority, it is called *Sang-yōga*.

The *Parushāntara* is an alliance formed upon this principle,—*Let my purpose be effected by the prime of both our armies, and in settling which there is a price fixed.*

The *adrishta-nara* is, when a treaty is formed on such a proposal as this:—*My purpose is to be effected by thee alone,* in which also there is a price fixed.

When a treaty is formed upon one party's quitting his enemy for a fine of a portion of his lands, it is denominated *ādishta*.

The conjunction formed with one's own army is called *ātma-dishta*, and that for the preservation of life, is denominated *upagraha*.

When a moiety, or even the whole, of the treasure is surrendered to save the rest of the property, the treaty is stiled *Paṅkraya*;

মুবা সারবতীনান্তু দানাৎসুচ্যতে । মূম্ব্যুত্থফল
 দানেন সর্ব্বেষু পরমূষণঃ ॥ প্রতিচ্ছিন্নং ফলং যত্র প্রতিস্কম্যে
 ন দোষতে । স্কম্যোপনেয়ং তং প্রাজ্ঞঃ সন্धिঃ সন্ধিবিচক্ষণাঃ ।
 পরস্পরোপকারস্তু মৈত্রীসম্বন্ধকস্তথা । উপহারস্ব বিশ্লে
 যাশ্চত্বারস্যৈব সন্ধ্যয়ঃ ॥ একএবোপহারস্তু সন্ধিরেব মতো
 নম । উপহারবিভেদাস্তু সর্ব্বৈ মৈত্রীবিবর্জিতাঃ ॥ অভিযো
 ক্তা বলীয়স্বাদলম্বান নিবর্ত্ততে । উপহারাঘৃতে তস্মাত্
 সন্ধিরন্যোন বিদ্যতে । চক্রবাকউবাচ ॥ অযং নিজঃ পরো
 বেতি গণনা লঘুচেতসাং । উদারচরিতানান্তু বসুধৈব
 কুটুম্বকং ॥ অপরস্ব । মাটবত্ পরদারেণ পরদ্রব্যেণ লোষ্ট্র
 বত্ ॥ আত্মবত্ সর্ব্বভূতেষু যঃ পশ্যতি স পণ্ডিতঃ ॥

উত্তম ভূমিদানপুযুক্ত যে সন্ধি হয় তাহাকে উচ্ছন্ন করিয়া
 বলি। ভূম্যুৎপন্ন ভূমিশস্যাদানদ্বারা যে মেল হয় তাহার নাম
 পর ভূষণ । যে স্থলে ভূম্যুৎপন্ন শস্যকে পুত্রেতে বহন
 করিয়া দেয় সন্ধি পণ্ডিতেরা তাহাকে স্কম্যোপনেয় করিয়া
 বলেন । আর পরস্পরোপকার ও মিত্রতা ও সম্বন্ধক ও উপ
 হার এই চারিপ্রকার সন্ধি হয়। আবার সম্মতিতে উপহারই
 এক সন্ধি কেননা উপহার ব্যতিরিক্ত সকল সন্ধিই মিত্রতা
 রহিত । আর অভিযোক্তা অর্থাৎ বাদী বল পুযুক্ত রাজ্য গৃহ
 গ না করিয়া নিবর্ত্ত হয় না অতএব উপহার ব্যতিরেকে অন্য
 প্রকার সন্ধি নাই । চক্রবাক বলিল এই লোক আশ্রয়

এই জন আত্মীয় নহে এ পুকার গণনা ক্ষুদ্রান্তঃকরণ লোকের
মহচ্চরিত্রকজনের পৃথিবীস্থ যাবল্লোকই অন্তরঙ্গ । অপর
পরপত্নীতে মাতৃতুল্য অন্য ধনেতে ডেলার ন্যায় সকল
প্ৰাণিতে আত্মসদৃশ যে দেখে সেই পণ্ডিত ।

and when the consideration be the most valuable part of the lands, the term is uch-channa.

When the purchase of peace is made with a gift of the whole of the fruits of the earth, it is called Parabhushana; and, lastly, when by a gift of the fruits which have been gathered, willingly borne upon the shoulder, Skandhōpanēya.

There are also these four distinctions of alliance: *That of reciprocal assistance, that of friendship, that of relationship, and that which is purchased with a gift.*

In my opinion, upahāra is the only one mode of alliance; for besides it, all other connexions are void of friendship.

The conqueror, from his being the strongest, is not wont to retreat without having gained something; whence no other mode than the upahāra is known to him.

The minister Know-all replied,—Hear this!

To say, *This is one of us, or this is a stranger*, is the mode of estimating practised by trifling minds. To those of more generous principles, the whole world is but as one family!

Again:

He who regardeth another's wife as his mother, another's goods as clods of earth, and all mankind as himself, is a philosopher.

রাজাহ্ ভবন্তোমহান্তঃ পণ্ডিতাশ্চ তদবাস্যাকং যথা
 কার্যমপদিশ্যতাং। মম্বো ব্রুতে অাঃ কিমেবমুচ্যতে। আধি
 ব্যাধিপরীতাপাদয় শ্রোবা বিনাশিনে। কোহি নাম শরো
 রায় ধর্মোপেতং সমাচরেৎ ॥ জলান্তশ্চন্দ্রচপলং জীবিতং
 খলু দেহিনাং। তথাবিধমিতি জ্ঞাত্বা শশ্বত্ কল্যাণমাচ
 রেৎ ॥ মৃগতৃণাসমং বোদ্ধ্য সংসারং স্রণমঙ্গুরং। সজ্জনৈঃ
 সঙ্গতং কুর্যাৎ ধর্মায চ সুখায় চ ॥ তন্মম সম্মতেন
 তদেব ক্রিয়তাং। যতঃ। অশ্বমেধসহস্রাণি সত্যঞ্চ তুলয়া
 ধৃতং ॥ অশ্বমেধসহস্রাঙ্নি সত্যমেবাতিরিচ্যতে ॥ অতঃ
 সত্যাভিধানদিব্যপুরঃসরযোরপ্যনयोर्भूपालयोः काञ्चना
 भि धानसन्धिर्विधीयतां। *❀*❀*❀*❀*❀*

রাজা কহিলেন তোমরা বড় লোক আর জ্ঞানি এই হেতুক
 এখন আমার দিগের যাঁহা কর্তব্য তাঁহা কহ। অমাত্য বলি
 তেছে আঃ কি এ কহিতেছ। মানসপাড়া ও রোগের সন্তাপ
 পুষ্কু অদ্য কিম্বা কল্য বিনাশ শালী'যে কলেবর তাহার
 কারণ কোন লোক অধর্মাচরণ করে শরীরিরদের পুণ জল
 মধ্যস্থ চন্দ্রের পায়চঞ্চল ইহা নিশ্চয় এইহেতুক তদ্রূপ জ্ঞানি
 য়া পুনঃ পুণ্য নুষ্ঠান করিবেক। মৃগতৃণার ন্যায় সংসারকে
 কণ বিবৃংসি জানিয়া ধর্মের কারণ ও সুখের নিমিত্তে সাধু
 লোকেরদের সহিত সঙ্গ করিবেক। সেই নিমিত্তে আমার
 অভিমতেতে তাঁহাই কর যেহেতুক সহস্র অশ্বমেধযজ্ঞ আর

সত্য বাক্য এই দুই তুলাতে ধৃত হইয়াছে তাহাতে সহস্রঅশ্ব
মেধহইতে সত্যই অতিরিক্ত হইলেন এইহেতুক সত্য করণ
ভিধান দিব্য পূর্বক এই দুই রাজার সুবর্ণসংজ্ঞক সন্ধি হউক।

You are a philosopher, said the royal goose to the vulture, and therefore I desire you will point out what is to be done in this affair Your highness is pleased to compliment, replied the minister *Fai-see*. The poet says,

What name shall we give to him who inhabiteth a body destitute of justice, when that body, to-day or to-morrow, is subject to death by the sever of sickness or sorrow?

When we consider this world in the light of a thirsty deer in a moment to be destroyed, it is proper to form connexions with good people, for the sake of virtue, and for the sake of happiness.

Then, continued the vulture, the business should be settled according to this saying, which corresponds with my own opinion.

Truth being weighed against a thousand *Aswa-mēdha* sacrifices, was found to be of more consequence than the whole thousand offerings.

Wherefore, let the name of **TRUTH** be the divine precedent for both, and each of us; and let the alliance between us be that which is distinguished by the title of **THE GOLDEN UNION** !

ସର୍ବଶୋଭୁତେ ଏବମସ୍ତୁତତୋରାଜହଂସେନ ରାଜା ବତ୍ସା
 ଲହାରୋପହାରै: ସ ମନ୍ତ୍ରୀ ଦୂରଦର୍ଶୀ ପୂଜିତ: ପ୍ରହୃଷ୍ଟମନାଞ୍ଚ
 ଶ୍ରଦ୍ଧାକ୍ତଂ ଗୃହୀତ୍ବା ରାଜୋମଧ୍ୟୁରସ୍ୟ ସମ୍ମିଧାନଂ ଗତ: ତତ୍ତ୍ୱ
 ଶିବବର୍ଣ୍ଣେନ ରାଜା ସର୍ବଶୋଭଦ୍ରବଚନାଦ୍ଭଜ୍ଜମାନଦାନପୁର:
 ସରଂ ସମ୍ମାପିତ: ତଥାବିଧଂ ସନ୍ଧିଂ ଶ୍ଵୀକୃତ୍ୟ ରାଜହଂସସମୀପଂ
 ପ୍ରସ୍ଥାପିତ:। ଦୂରଦର୍ଶୀ ବ୍ରୂତେ ଦେବ ସିଂହଂ ନ: ସମୌହିତମି ଦାନୀଂ
 ଶ୍ଵସ୍ଥାନମେବ ବିନ୍ଧ୍ୟାଚଳେ ବ୍ୟାଢ୍ୟତ୍ୟ ପ୍ରତିଗମ୍ୟତାଂ । ଅଥ ସର୍ବେ
 ଶ୍ଵସ୍ଥାନଂ ପ୍ରାପ୍ୟ ମନୋଭିଳାଷିତଂ ଫଳଂ ପ୍ରାପ୍ନୁବନ୍ତିତି । ବିଷ୍ଣୁ
 ଶର୍ମଣୋକ୍ତଂ ଅପରଂ କିଂ କଥୟାମି କଥ୍ୟତାଂ । ରାଜପୁତ୍ରା ଋଚୁ
 ଶ୍ଚବ ପ୍ରସାଦାଦ୍ରାଜ୍ୟବ୍ୟବହାରାନ୍ନଂଜ୍ଞାତଂ ତତ: ସୁହିତ୍ତେ ଭୂତାବ
 ଧଂ । ବିଷ୍ଣୁଶର୍ମାବାଚ ଯଦ୍ୟପ୍ୟେବଂ ତଥାପି ଅପରମପୀଦମସ୍ତୁ।।


ସର୍ବଜ୍ଞ ବଳିଲେନ ଏହି ହଉକ ତଦନନ୍ତର ରାଜା । ରାଜହଂସକର୍ତ୍ତାକ
 ବଜନା ଭରଣୋପଚାରଦ୍ଵାରା ଏ ଦୂରଦର୍ଶୀ ଅଗାଧା ସନ୍ମାନିତ ହୁଏ।
 ପୁକୁଳାସ୍ତୁ:କରଣ ହୁଏ। ଚକ୍ରବାକକେ ଲେଉଟା ନୟନରାଜେର ମନା
 ପେଗେଲେନାମେ ଜ୍ଞାନେ ରାଜାଧିରାଜ ଶ୍ରୀଚିତ୍ରବର୍ଗ ଗୁଧୁବାକାପୁରୁଷ
 ଅନେକ ଦାନ ସନ୍ମାନ ପୂର୍ବକ ସର୍ବଜ୍ଞକେ ମନ୍ତ୍ରାଧା କରିଥା ମେହି
 ଖୁବ୍ବାର ମନ୍ତ୍ରି ଶ୍ରୀକାର କରିଥା ରାଜହଂସ ସମ୍ମିଧାନେ ପୁରଣ କରି
 ଲେନ । ଦୂରଦର୍ଶୀ କହିତେଛେ ହେ ନହାରାଜାଧିରାଜ ଏଥନ ଆମା
 ରାଜେର ଅଭିଳାଷିତ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ହୁଏନ ନିଜ ଜ୍ଞାନବିଦ୍ୟାପର୍ବତେହି
 କିରିଆ ଚଳ । ଅନନ୍ତର ମକଳେ ଆପନେ ଜ୍ଞାନେ ଗିଆ ମନୋ
 ବାଞ୍ଛିତ ଫଳ ପାଏଲେନ । ବିଷ୍ଣୁଶର୍ମା କହିଲେନ ଆମକି କହିବ

তাঁহা কহ । রাজনন্দনেরা কহিলেন তোমার অনুগৃহেতে
রাজ ব্যবহার অবগত হইলাম আমরা সুখী হইলাম । বিষ্ণু
শর্মা বলিলেন যদিপি এইকপ তথাপি আর ও এইকপ হউক ।

The minister Know-all having signified his approbation of the proposed terms, Far-see was complimented with a present of rich cloth and jewels; and being exceedingly rejoiced at the event of his negotiations, he took his leave of the royal goose, and returned with the minister Know-all, into the presence of his own sovereign. The peacock king ratified the peace, and, at the instance of the vulture, entered into a conversation with Know-all, in which he paid him many compliments; at the conclusion of which the latter had leave to depart, and he presently repaired to the camp of the royal goose.

The minister Far-see now tells his master, that as their designs were happily accomplished, it was advisable to direct their march towards home, the mountains of Vindhya. His advice was followed, and the whole army arrived at their respective habitations to enjoy in peace those fruits their hearts most longed for.

Now declare, said Vishnu-Sarmā to his royal pupils, what more I am to tell you! Through the great condescension of our reverend master, replied the young princes, being made acquainted with every thing which relates to the royal department of negotiation, we are satisfied. May this conclusion render you equally so said Vishnu-Sarmā, repeating these lines:

সন্धिঃ সৰ্বমহী ভূজাং বিনয়িনাস্তল প্রমোদঃ সদা
 সন্তঃ সন্তুনীরাপদঃ সুকৃতিনাং কীৰ্ত্তিচির বর্দ্ধতাং ।
 নীতির্দ্বারবিলাসিনীব সমমং বচঃস্থলে সংস্থিতা বক্ত্র
 যম্বতু মদ্বিণামহরচোভূয়ান্মহানুত্তমঃ ॥ ইতি হিতো
 পদেশে সন্ধিনাম চতুর্থকথাসংগ্রহঃ সমাপ্তঃ ॥ **

রাজাসকলের সর্বদা পরম্পর একা হউক আর যিনয়
 শালিলোকেদের অনুকণ আমোদ হউক আর সুকৃতির
 দেব যশ উত্তরোত্তর বাড়ুক আর বারাকনার ন্যায় নীতি
 নিরন্তর বক্রস্থলেতে থাকিয়া। সচিবেরদের মুখচুসন করুন
 ঐ পুকারে পুতি দিন মহোৎসব হউক ।

ইতি হিতোপদেশ সমাপ্ত ॥

May peace for ever yield happiness to all the victori-
 ous possessors of the earth! May just men be for ever
 free from adversity, and the fame of those who do good
 long flourish! May prudence, like a glorious sun, shine
 continually on your breasts! May the earth, with all her
 vast productions, long remain for your enjoyment!

THE END OF THE SANDHI

अथ हितोपदेशस्याशुद्धशुद्धपत्रं

मित्रलाभे

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
कोधन्यो	कोधन्यो	१०	१
खगाः	खवः	२०	३
यलायितुं	पलायितुं	३०	५
परित्यक्ता	परित्यक्ता	४०	३
जालं	जालं	४०	६
बहिर्गमाः	विहङ्गमाः	४०	७
यताः	गताः	६८	५
अभ्यागतो	अभ्यागतो	८८	१२
परञ्च	अपरञ्च	९०	२
करप्रप्ते	करप्राप्ते	११२	८
नियुक्तं	नियुक्तं	११८	५
नृग	भृग	११८	११
दीर्घरवाः	दीर्घरवः	१२२	३
आत्मनः	आत्मनः	१२४	१३

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
समुद्रयो	समुद्रयो	१२६	८
विमुखाः	विमुखाः	१३२	५
तृ	त्वं	१३४	४
हरण्यको	हिरण्यको	१३६	८
मन्थरस्र	मन्थरस्य	१३६	८
कुट्टल	कुट्टमल	१३६	१३
भर्त्तति	भर्त्तरि	१४०	६
मुत्सृज्य	मुत्सृज्य	१५०	६
शर्वथा	सर्वथा	१७८	११
चञ्चा	चञ्चा	१८४	१३
स्वपत्या	स्वपत्या	२२६	५
व्यथानस्र	व्यथमानः	२२६	८
ममुचितं	मनुचितं	२३०	१०
स्नातच्य	स्नातच्य	२६४	३
विहृत	विहृत	२६०	८
वलवानसि	वलवानसि	२६०	१०
नाह	नाह	२६०	१२
शत्रौच	शत्रौच	२६४	११
ज्या	त्याज्या	२६६	४

अशुद्धं *	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
तिन्दन्ति	निन्दन्ति	३०४	११
क्राण्डं	काण्डं	३०८	७
तमभिमुखं	तदभिमुखं	३०८	८
दुर्वृत्तिं	दुर्वृत्तं	३२२	६
वत्क्र	वक्त	३३४	६
वत्क्र	वक्त	३३४	८
व्यसनोमो	व्यसनोयो	३३६	९
सामस्तै	समस्तै	३४०	६
कण्टक	कण्टक	३६२	१०
भिन्द्या	भिन्द्या	३६४	८
वकेनागत्य	वकेनागत्य	३८८	४
त्यक्तं	त्यक्तुं	४००	१०
स्वाम्यगात्य	स्वाम्यमात्य	४१०	६
ग्राहयित्वा	ग्राहयित्वा	४१२	५
विद्यधरी	विद्याधरी	४१३	८
महोभूजां	महोभुजां	४१४	
वृत्तं	वृत्ते	४१५	६
यद्वि	योद्धुं	४६	
षाङ्गुण्यं	षङ्गुणाः	४५८	

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
उपन्यसं	उपन्यस्तं	४६०	४
द्वीपस्य	द्वीपस्य	४६०	५
चित्रवर्ण	चित्रवर्ण	४६६	७
नाश्यात	नश्यात	४६०	११
ब्रूते	ब्रूते	४६८	६
ग्रामवन्निति	ग्रामवन्नति	५१२	८

